शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

2022-23

कक्षा : द्वादशी

संस्कृत (केन्द्रिकम्)

मार्गदर्शनः

श्री अशोक कुमार
सचिव (शिक्षा)

श्री हिमांशु गुप्ता
निदेशक (शिक्षा)

डा0 रीता शर्मा
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एवं परीक्षा)

समन्वयकः

श्री संजय सुभाष कुमार
उप शिक्षा निदेशक (परीक्षा)

श्रीमती सुनीता दुआ
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री राज कुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री कृष्ण कुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में **राजेश कुमार**, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2, पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा **मुद्रक :** सुप्रीम ऑफसेट प्रेस, 133, उद्योग केन्द्र, EXT.-1, ग्रेटर नोएडा, उ.प.

ASHOK KUMAR
IAS

सत्यमेव जयते

सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष : 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187 Telefax : 23890119
e-mail : secyedu@nic.in

MESSAGE

Remembering the words of John Dewey, "Education is not preparation for life, education is life itself, I highly commend the sincere efforts of the officials and subject experts from Directorate of Education involved in the development of Support Material for classes IX to XII for the session 2022-23.

The Support Material is a comprehensive, yet concise learning support tool to strengthen the subject competencies of the students. I am sure that this will help our students in performing to the best of their abilities.

I am sure that the Heads of School and teachers will motivate the students to utilise this material and the students will make optimum use of this Support Material to enrich themselves.

I would like to congratulate the team of the Examination Branch along with all the Subject Experts for their incessant and diligent efforts in making this material so useful for students.

I extend my Best Wishes to all the students for success in their future endeavours.

(Ashok Kumar)

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail: diredu@nic.in

MESSAGE

"A good education is a foundation for a better future."
- Elizabeth Warren

Believing in this quote, Directorate of Education, GNCT of Delhi tries to fulfill its objective of providing quality education to all its students.

Keeping this aim in mind, every year support material is developed for the students of classes IX to XII. Our expert faculty members undertake the responsibility to review and update the Support Material incorporating thelatest changes made by CBSE. This helps the students become familiar with the new approaches and methods, enabling them to become good at problem solving and critical thinking. This year too, I am positive that it will help our students to excel in academics.

The support material is the outcome of persistent and sincere efforts of our dedicated team of subject experts from the Directorate of Education. This Support Material has been especially prepared for the students. I believe its thoughtful and intelligent use will definitely lead to learning enhancement.

Lastly, I would like to applaud the entire team for their valuable contribution in making this Support Material so beneficial and practical for our students.

Best wishes to all the students for a bright future.

(HIMANSHU GUPTA)

Dr. RITA SHARMA
Additional Director of Education
(School/Exam)

सत्यमेव जयते

Govt. of NCT of Delhi
Directorate of Education
Old Secretariat, Delhi-110054
Ph. : 23890185

D.O. No. PS/Addl.DE/Sch/2022/131
Dated: 01 सितम्बर, 2022

संदेश

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार का महत्वपूर्ण लक्ष्य अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा निदेशालय ने अपने विद्यार्थियों को उच्च कोटि के शैक्षणिक मानकों के अनुरूप विद्यार्थियों के स्तरानुकूल सहायक सामग्री कराने का प्रयास किया है। कोरोना काल के कठिनतम समय में भी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए संबंधित समस्त अकादमि समूहों और क्रियान्वित करने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक की सहायक सामग्रियों में सी.बी.एस.ई के नवीनतम दिशा–निर्देशों के अनुसार पाठयक्रम में आवश्यक संशोधन किए गए हैं। साथ ही साथ मूल्यांकन से संबंधित आवश्यक निर्देश भी दिए गए हैं। इन सहायक सामग्रियों में कठिन से कठिन सामग्री को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया गया है ताकि शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों को इसका भरपूर लाभ मिल सके।

मुझे आशा है कि इन सहायक सामग्रियों के गहन और निरंतर अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में गुणात्मक शैक्षणिक संवर्धन का विस्तार उनके प्रदर्शनो में भी परिलक्षित होगा। इस उत्कृष्ट सहायक सामग्री को तैयार करने में शामिल सभी अधिकारियों तथा शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देती हूँ।

रीता शर्मा

(रीता शर्मा)

शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

संस्कृत

कक्षा : द्वादशी

निःशुल्क वितरण हेतु

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

Constitution of India

Part IV A (Article 51 A)

Fundamental Duties

It shall be the duty of every citizen of India —

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

*(k) who is a parent or guardian, to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

Note: The Article 51A containing Fundamental Duties was inserted by the Constitution (42nd Amendment) Act, 1976 (with effect from 3 January 1977).

*(k) was inserted by the Constitution (86th Amendment) Act, 2002 (with effect from 1 April 2010).

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**[SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC]** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the [2][unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949 do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

---

1. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

सहायकसामग्रीनिर्मातृणां सूची

समन्वयक:	डॉ. भास्करानन्द बिडालिया, उप-प्रधानाचार्य, (19930063) वैद्य पंडित खुशीराम सर्वोदय बाल विद्यालय, नांगल ठाकरान, दिल्ली-39 **लेखकमण्डल-** डॉ. आभा झा, प्रवक्त्री (19940516) गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-16 डॉ. ऋता शर्मा, प्रवक्त्री (19941071) सर्वोदय विद्यालय, ईस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली डॉ. अनिल कुमार, प्रवक्ता (20072355) राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, टीकरी बॉर्डर, नई दिल्ली डॉ. शंकर दत्त पाण्डेय, प्रवक्ता (20102096) सर्वोदय बाल विद्यालय, नंबर 2, मंडावली, दिल्ली-92 डॉ. अजय कुमार, प्रवक्ता (20130015) मुसद्दीलाल राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, नरेला, दिल्ली-40

पुरोवाक्

सम् उपसर्गपूर्वकात् 'कृ' धातौ 'क्त' प्रत्यये कृते 'संस्कृतम्' शब्दः निष्पद्यते। 'संस्कृतम्' अर्थात् व्याकरणनियमैः परिष्कृतम् असाधुत्वादिदोषैः रहितम् इति भावः। या भाषा व्याकरणनियमाननुसृत्य संस्कृता सकलदोषरहिता च वर्तते सैव संस्कृतभाषा। इयं भाषा सुरवाणी, देववाणी, गीर्वाणवाणी, सुरभाषा, आर्यभाषा, देवभाषा इत्यादिभिः नामभिः चापि लोके प्रथिता अस्ति। अत एवोक्तं महाकविना दण्डिना –

''संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः''

भावाभिव्यक्तिरेव भाषायाः प्रमुखं प्रयोजनम्। मानवः मनसि समुत्पन्नान् विचारान् भावनाः च सार्थकैः शब्दैः लिखितसंकेतैः वा प्रकटयति। एतस्मिन्नेव भावाभिव्यञ्जनक्रमे संस्कृतभाषायाः विकासोऽभूत्। विश्वस्यादिमासु भाषासु संस्कृतभाषा परिगण्यते। अस्यामेव चत्वारः वेदाः, षडङ्गानि, चतुर्दशविद्याः, षड्दर्शनानि नानाशास्त्राणि च रचितानि सन्ति। अस्मात् संस्कृतं न केवलं भाषा प्रत्युत समग्रं जीवनदर्शनमेव वर्तते। अस्याः प्रभावः न केवलं भारतीयासु भाषासु प्रत्युत वैदेशिकीषु भाषासु चापि द्रष्टुं शक्यते। अस्यां न केवलं धार्मिकसाहित्यं लिखितमस्ति अपितु नैतिकं, ज्ञानवर्धकं, मनोरञ्जकं लोकोपकारकं वैज्ञानिकं साहित्यमपि प्रचुरतया प्राप्यते।

संस्कृतभाषा न केवलं प्राचीना अपितु वैज्ञानिकी भाषा खल्वेषा। अस्याः ध्वनिविज्ञानं विलक्षणं वर्तते। भाषावैज्ञानिकानां मतेनापि एषा सर्वश्रेष्ठा भाषा। अस्यां यल्लिख्यते तदेवोच्चारितं भवति। संगणकस्यापि कृते सर्वथोपयोगित्वात् चैतस्याः वैज्ञानिकत्वं सिद्ध्यति। एषा प्रायः विश्वस्य सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति। विश्वस्यानेके विद्वांसः संस्कृतस्य प्रभावेण प्रभाविताः सन्तः अस्याः अध्ययनं कृतवन्तः तत्तद्भाषासु च संस्कृतग्रन्थानामनुवादं विहितवन्तः। अतोऽस्याः महत्वं सर्वदा सर्वथा चाक्षुण्णमस्ति। संस्कृतविषये प्रोक्तं केनचित् कविना यत्–

संस्कृते संस्कृतिर्ज्ञेया संस्कृते सकलाः कलाः।
संस्कृते सकलं ज्ञानं संस्कृते किन्न विद्यते।।

डॉ. भास्करानन्दः बिडालिया
उप-प्रधानाचार्यः

प्रास्ताविकम्

दिल्लीसर्वकारेण संस्कृतभाषायाः महत्वं निरीक्ष्य विद्यालयेषु संस्कृतस्य पठन-पाठनं व्यवस्थितमस्ति। एकादशद्वादशकक्षयोरपि संस्कृतस्य पठनं पाठनं च राजकीयेषु विद्यालयेषु केन्द्रिकविषयरूपेण विधीयते प्रायः। एतदर्थं प्रोक्तयोः कक्षयोः कृते राष्ट्रीय-शैक्षिकानुसन्धान-प्रशिक्षणपरिषदा रचितं 'भास्वती'ति नामकं भागद्वयात्मकं पुस्तकं पाठ्यसामग्रीरूपेण निर्धारितमस्ति। शिक्षकाणां प्रशिक्षणार्थं समये समये राज्य-शैक्षिकनुसन्धान-प्रशिक्षण-परिषदा अनयोः पाठ्यपुस्तकयोः भावार्थ-सरलार्थ-अन्वयादिबोधार्थं प्रयासः क्रियते किन्तु तत्सर्वं शिक्षककेन्द्रितं भवति। एषा पाठ्यसामग्री छात्राणां कृतेऽपि सुगमा, सुबोधा, सुलभा च स्यादिति संस्कृतानुरागिणां छात्राणां शिक्षकाणाञ्चाकाङ्क्षा आसीत् बहुकालात्। अधुना दिल्लीसर्वकारः छात्राणां शिक्षकाणां च मनोरथमिमं पूरयितुं प्रयतमानः वर्तते। प्राथम्येन कार्यमेतत् कैश्चित् कार्यान्तरव्यापृतैरपि संस्कृतशिक्षकैः शिक्षिकाभिश्च विधीयते इत्यतोऽत्र न्यूनाधिक्यं संभाव्यत एव।

केन्द्रीयमाध्यमिकशिक्षासंघट्टनेन परीक्षादृष्ट्या प्रश्नपत्रस्य यत् प्रारूपं विन्यस्तमस्ति तदनुरूपमेव एषा सहायकसामग्री सज्जीकृता शिक्षक-शिक्षिकाभिः। पाठ्यपुस्तकस्य सकलानां पाठानां विशदं विवरणं परीक्षानुरूपं तु विहितमेव, प्रश्नानां विन्यासोऽपि तथा विहितः यथा छात्राणामधिकाधिकोऽभ्यासः भवेत्। अपठितांशावबोधानां, रचनात्मकानां कार्याणां, व्याकरणिकानां तत्त्वानां, साहित्यकाराणां साहित्यिकानां तत्त्वानाञ्चापि पर्याप्तः अभ्यासः छात्रहितेच्छया पुस्तकेऽस्मिन् समावेशितः। नूतनं प्रश्नपत्रप्रारूपं सर्वथा हृदि निधाय शिक्षक-शिक्षिकाभिः प्रतिप्रश्नं विकल्पानां समावेशोऽपि कृतोऽस्ति। सन्धि-समास-प्रत्यय-उपपद-वाच्यादिषु व्याकरणिकेषु तत्त्वेषु न केवलं पाठ्यपुस्तकोदाहरणानां चयनं कृतमपितु नियमोल्लेखोऽपि विहितः, येन छात्राः याथातथ्येन विषयवस्तुनः अवबोधनं कुर्युः।

एषा सामग्री न केवलं छात्रेभ्यः प्रत्युत शिक्षकेभ्योऽपि पथप्रदर्शनं विधास्यतीति धिया पुस्तकमिदं संग्रथितम्। एषा संस्कृतजिज्ञासूनां कोमलमतीनां छात्राणां कियदिवोपकारं करिष्यतीति स्वयमेव समूहन्तां सुधियः। स्वल्पीयसेन कालेन ग्रथिते ग्रन्थेऽस्मिन् याः काः अपि त्रुटयः स्युः ताः क्षन्तव्याः सन्ति सुधीभिः। एतस्य पुस्तकस्य परिष्काराय विदुषां परामर्शाः स्वागतार्हाः। पर्यन्ते सामग्रीलेखने विषयविशेषज्ञानां शिक्षकाणां शिक्षिकाणां च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां व्यवहराम्यहम्।

डॉ. भास्करानन्दः बिडालिया
उप-प्रधानाचार्यः

विषय-सूची

क्रम संख्या	विषय सामग्री	पृष्ठ संख्या
1.	सहायक–सामग्री निर्मातृणां सूची	(xi)
2.	पुरोवाक्	(xii)
3.	प्रास्ताविकम्	(xiii)
4.	विषयसूची	(xiv)
5.	संशोधितः पाठ्यक्रमः परीक्षानिर्देशाश्च	(xv–xxiv)
6.	'क' भागः – अपठित – अवबोधनम्	(1–17)
7.	'ख' भागः – रचनात्मकं कार्यक्रम्	(18–51)
	(i) पत्रलेखनम् – औपचारिकम् / अनौपचारिकम्	
	(ii) कथापूर्तिः	
	(iii) संवादपूर्तिः	
	(iv) अनुवादकार्यम्	
8.	'ग' भागः – अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्	(52–130)
	(i) सन्धिः	
	(ii) समासाः	
	(iii) प्रत्ययाः	
	(iv) उपपदविभक्तिप्रयोगः	
9.	'घ' भागः – (I) पठितावबोधनम्	(131–202)
	(i) प्रथमः पाठ – अनुशासनम्	
	(ii) तृतीयः पाठः – मातुराज्ञा गरीयसी	
	(iii) चतुर्थः पाठः – प्रजानुरञ्जको नृपः	
	(iv) पञ्चमः पाठः – दौवारिकस्य निष्ठा	
	(v) षष्ठः पाठः – सूक्तिसौरभम्	
	(vi) सप्तमः पाठः – नैकेनापि समं गता वसुमती	
	(vii) नवमः पाठः – मदालसा	
	(viii) एकादशः पाठः – कार्याकार्यव्यवस्थितिः	
10.	'घ' भागः (II) संस्कृत–साहित्येतिहासपरिचयः	(203–252)
	(i) पाठ्यपुस्तकस्य–पाठानां सन्दर्भग्रन्थाः	
	(ii) महाकाव्यं–गद्यकाव्यं–चम्पूकाव्यं च	
	(iii) नाट्यसाहित्यम्	
11.	परिशिष्टम्	

कक्षा – द्वादशी

संस्कृतम् (केन्द्रिकम्) (कोड सं. 322)

पाठ्यक्रमः परीक्षानिर्देशाश्च (2022-23)

भाष्यते व्यवहारादिषु प्रयुज्यते इति भाषा। मानवः स्वमनसि विद्यमानान् विचारान्,भावनाः अनुभूतिं च अर्थयुक्तैः ध्वनिभिः लिखितसङ्केतैः च अभिव्यञ्जयति सा भाषा। भाषा अभिप्रायप्रकटनस्य साधनम्। वस्तुतः लोके द्वयोः मनुष्ययोः मध्ये परस्परम् अवबोधनाय, भावग्रहणाय, भावविनिमयाय च भाषया विना न अन्यत् स्पष्टतमं सरलतमं च साधनं विद्यते। लोके बहव्यः भाषाः सन्ति यासु संस्कृतभाषा अतिप्राचीनतमा समृद्धा च अस्ति। संस्कृतभाषायाम् एव सन्ति ऋग्यजुस्सामाथर्वाः चत्वारः वेदाः, शिक्षा, व्याकरणं, निरुक्तं, ज्योतिषं, छन्दः कल्पः चेति षडङ्गानि, चतुर्दशविद्याः, विज्ञानम्, आयुर्वेदः, योगशास्त्रादयः ग्रन्थाः। अतः संस्कृतं केवलं भाषा न अपितु किञ्चन जीवनदर्शनम् इति। इयं विद्या (भाषा) भारतीयानां प्रतिष्ठात्मिका कामधेनुः समस्तज्ञानप्रदात्री, ऐक्यप्रदात्री, धर्मार्थकाममोक्षप्रदात्री च अस्ति। सृष्टेः आदितः अद्यावधिः यत् शिक्षणं ज्ञानविज्ञानं च अस्ति तत् सर्वं अस्यां भाषायामेव सन्निहितम् अस्ति। अतिसूक्ष्मभावनां प्रकटयितुं स्पष्टीकर्तुं संस्कृतं विना नैव अन्यत्र विद्यते सामर्थ्यम्। भारतीयं सर्वस्वं विश्वस्य समग्रं तत्त्वं च अस्यां भाषायाम् अस्ति।

संस्कृतस्य भाषावैज्ञानिकत्त्वम् – ऐतिहासिक-वर्णनात्मक-तुलनात्मकाध्ययन-द्वारा भाषायाः प्रकृतेः, विकासोत्पत्तेः संरचनायाः अध्ययनपूर्वकं सर्वेषां विषयाणां सैद्धान्तिकः निर्णयः भाषाविज्ञानेन क्रियते। भाषाविज्ञान-नामकशास्त्रे शब्दानाम् उत्पत्तिः, वाक्यानां संरचना इत्यादीनां विषयाणां विचारः क्रियते। भाषाविज्ञानस्य सम्बन्धः सर्वेषां मानवानां भाषाभिः सह अस्ति। एवं भाषाविज्ञाने ध्वनेः, ध्वनि-उच्चारणोपयोगिनां स्वरयन्त्रमुखजिह्वादि-अङ्गानां प्रकृति-प्रत्ययादीनां, संज्ञासर्वनाम-क्रिया-विशेषणादीनां नामाख्यात-उपसर्जननिपातानां पदपदार्थविषयकाणां विकारादीनां विकारमूलककारकाणाम् अन्येषां विविधविषयाणाञ्च अध्ययनं क्रियते। भाषाविज्ञाने संस्कृतभाषा-विषयक-वर्णोत्पत्ति-सिद्धान्तस्य अतीव वैज्ञानिकं निरूपणं कृतं वर्तते।

विश्वस्य सर्वासु भाषासु संस्कृतभाषा प्राचीनतमा अस्ति। प्रायः सर्वासु भाषासु संस्कृतपरकशब्दाः उपलभ्यन्ते। संस्कृतभाषा भारतीयभाषाणां जननी इति कथ्यते। सर्वासु भारतीयभाषासु संस्कृतभाषा अन्तर्लीना अस्ति इति सर्वे अङ्गीकुर्वन्ति।

भारतदेशः बहुभाषी देशोऽस्ति। अस्मिन् देशे अनेकतायाम् एकतावर्धिनी भाषेयं सामाजिकसमरसतायै जीवनविकासाय च आवश्यकी वर्तते। संस्कृतस्य सांस्कृतिकं महत्त्वं वर्णयन्तः विद्वांसः कथयन्ति "भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा, संस्कृतिमूलं संस्कृतम्, साहित्यं संस्कृतिवाहकञ्च इति।" एषा संस्कृतिः न केवलं भारतस्य अपि तु विश्वस्य मुकुटायमाना अस्ति। उक्तं च -

सत्यमहिंसादिगुणैः श्रेष्ठा विश्वबन्धुत्वशिक्षिका।
विश्वशान्तिः सुखधात्री भारतीया हि संस्कृतिः॥
संस्कृते संस्कृतिर्ज्ञेया संस्कृते सकलाः कलाः।
संस्कृते सकलं ज्ञानं संस्कृते किन्न विद्यते॥

एवं संस्कृतभाषा परिनिष्ठिता, दोषरहिता, सरला, गभीरा, यथार्था वैज्ञानिकी च भाषा अस्ति। सम्प्रति युगेस्मिन् प्रमुखैः उद्देश्यैः संस्कृतभाषा शिक्षणीया अस्ति।

शिक्षणोद्देश्यानि –

* वसुधैव-कुटुम्बकम् इति भावनाविकासः।
* भारतीयभाषाणां संरक्षणम्।
* संस्कृतभाषया सम्प्रेषणकौशलविकासः।

* परस्परं संस्कृतसम्भाषणेन भावविनिमयः।
* संस्कृत-भाषया एव संस्कृत-शिक्षणम्।
* श्रवण-भाषण-पठन-लेखनेति चतुर्णां भाषिक-कौशलानां विकासः।
* बौद्धिकविकासपुरस्सरम् आध्यात्मिकनैतिकज्ञानम्।
* मानसिकविकासानन्दानुभूतिः रसानुभूतिश्च।
* भारतीयसंस्कृतेः संरक्षणं ज्ञानवर्धनञ्च।
* आत्मानुशासनसंस्थापनार्थम्
* भाषाशिक्षणकौशलानि वर्धनाय नैपुण्यप्राप्तिः।
* परस्परं वार्तालापमाध्यमेन भावविनिमयः।
* संस्कृतसाहित्यस्य अध्ययनेन ज्ञानानन्दस्य अनुभूतिः।
* मानवजीवनस्य विकासपूर्वकं कल्याणम्।
* संस्कृतभाषया छात्राणां सर्वविधविकासः।

शिक्षणप्रविधयः -

* संस्कृतमाध्यमेन सम्भाषणविधिना शनैः शनैः संस्कृतशिक्षणं सम्भविष्यति। गतिवर्धनाय संस्कृताध्यापकैः धैर्येण स्वकीयाध्यापन-कार्यक्रमाणां नियोजनम्। रुचिकरभाषाभ्यासेन भाषिकोपलब्धिः। भाषिकाभ्यासाय वार्तालाप-कथाश्रवण-वादविवाद-संवाद-वर्णनपरकप्रतियोगिताभिः भाषाशिक्षणं कारयितुं शक्यते।
* विभिन्नप्रामाणिकसंस्थानां कार्यक्रमाः साहित्यसामग्र्यश्च प्रयुज्य उत्तमशिक्षणं कर्तुं शक्यते।
* संस्कृतभाषया उपलब्ध-दृश्य-श्रव्य-सामग्री-माध्यमेन भाषाभ्यासः।
* विभिन्नपाठ्यसामग्रीद्वारा शिक्षकः स्वकीयं शिक्षणकार्यं रुचिकरं कर्तुं शक्नोति।
* भाषाशिक्षकः छात्रान् स्नेहपूर्वकम् (आत्मीयभावेन) पाठयेत्।
* अद्यतनपूर्वकं साहित्यकोश-शब्दकोश-सन्दर्भग्रन्थानां सहायतया छात्राणां तत्परतावर्धनम्।
* प्राचीनार्वाचीनयोर्मध्ये समन्वयस्थापनद्वारा नूतनशिक्षणविधिभिश्च संस्कृतशिक्षणम्।

कौशलानि-

* **श्रवणकौशलम्** – भावाधिग्रहणाय ध्वन्यात्मकं भाषायाः प्रथमं कौशलम् इदम्। अस्य साधनानि- गुरुमुखम्, आकाशवाणी, दूरवाणी, परिवारसदस्याः, समाजः, कक्ष्याः, ध्वनिमुद्रणयन्त्रम्, दूरदर्शनम् इत्यादीनि।
* **भाषणकौशलम्**- भावाभिव्यक्तये ध्वन्यात्मकं भाषायाः इदं द्वितीयं कौशलम्। वाग्-रूपं भावप्रकटनम् एव भाषणम्, परिसरप्रभावेण आधारेण वा भाषणशक्तिः जायते।
* **पठनकौशलम्** – भावाधिग्रहणाय लिप्यात्मकं भाषायाः तृतीयं कौशलम् इदम्। (अर्थग्रहणपूर्वकं स्पष्टरूप-वाचनम् इत्यर्थः)
* **लेखनकौशलम्**- भावाभिव्यक्तये लिप्यात्मकं भाषायाः चतुर्थं कौशलम् इदम्। (ध्वनिरूपे विद्यमानं भाषांशं लिपिरूपे अवतारणं लेखनम् इति उच्यते)
* ज्ञानात्मक-अवबोधनात्मक-अनुप्रयोगात्मक-विश्लेषणात्मक-संश्लेषणात्मक-मूल्याङ्कनात्मक-लक्षिताधिगमनविशेषाः।

कक्षा – द्वादशी (2022-23)

संस्कृतम् (केन्द्रिकम्) (कोड सं. 322)

आहत्य-अङ्काः - 80+20

आहत्य-कालांशाः – 210

वार्षिकमूल्याङ्कनाय निर्मिते प्रश्नपत्रे भागपञ्चकं भविष्यति –

'क' भागः अपठित – अवबोधनम्	**10 अङ्काः**	**20 कालांशाः**
'ख' भागः रचनात्मक– कार्यम्	**15 अङ्काः**	**30 कालांशाः**
'ग' भागः अनुप्रयुक्त – व्याकरणम्	**20 अङ्काः**	**60 कालांशाः**
'घ' भागः	**35 अङ्काः**	
(i) पठितावबोधनम् **(25 अङ्काः)**		**85 कालांशाः**
(ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः (10 अङ्काः)		**25 कालांशाः**

भागानुसारं विषयाः अङ्कविभाजनञ्च 80 अङ्काः

क्र. सं.	**विषयाः**	**प्रश्नप्रकाराः**	**मूल्यभारः**
	'क' भागः **अपठित – अवबोधनम्**		
1.	अपठितः गद्यांशः (80-100 शब्दपरिमितः)	अति-लघूत्तरात्मकौ पूर्णवाक्यात्मकौ शीर्षकम् (लघूत्तरात्मकः) भाषिककार्यम् (बहुविकल्पात्मकाः)	1×2=2 2×2=4 1×1=1 1×3=3
		पूर्णभारः	**10 अङ्काः**
	'ख' भागः **रचनात्मक – कार्यम्**		
2.	पत्रम्	निबन्धात्मकः	5
3.	लघुकथापूर्तिः/वार्तालापे एकपक्षपूरणम्	निबन्धात्मकः	5
4.	संस्कृतभाषया अनुवादः ।	पूर्णवाक्यात्मकः	**5**
		पूर्णभारः	15 **अङ्काः**
	'ग' भागः **अनुप्रयुक्त – व्याकरणम्**		
5.	सन्धिः	लघूत्तरात्मकाः	1×6=6
6.	समासः	बहुविकल्पात्मकाः	1×5=5

7.	प्रत्ययाः	बहुविकल्पात्मकाः	1×6=6
8.	उपपदविभक्तिप्रयोगः	बहुविकल्पात्मकाः	1×3=3
		पूर्णभारः	20 **अङ्काः**
'घ' भागः **(i) पठित – अवबोधनम्**			
9.	गद्यांशः	अति-लघूत्तरात्मकौ पूर्णवाक्यात्मकौ लघूत्तरात्मकौ (भाषिककार्यम्)	½×2=1 1×2=2 1×2=2
10.	पद्यांशः	अति-लघूत्तरात्मकौ पूर्णवाक्यात्मकौ लघूत्तरात्मकौ (भाषिककार्यम्)	½×2=1 1×2=2 1×2=2
11.	नाट्यांशः	अति-लघूत्तरात्मकौ पूर्णवाक्यात्मकौ लघूत्तरात्मकौ (भाषिककार्यम्)	½×2=1 1×2=2 1×2=2
12.	भावार्थे रिक्तस्थानपूर्तिः / शुद्धभावार्थचयनम्	निबन्धात्मकः / लघूत्तरात्मकः	1×3=3
13.	अन्वयः	निबन्धात्मकः	1×3=3
14.	प्रदत्तवाक्यांशानां सार्थकं संयोजनम् ।	लघूत्तरात्मकः	½×4=2
15.	प्रदत्तपङ्क्तिषु प्रसङ्गानुसारं पदानाम् अर्थलेखनम् ।	लघूत्तरात्मकः	½×4=2
		पूर्णभारः	**25 अङ्काः**
'घ' भागः **(ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः**			
16.	भास्वतीपाठ्यपुस्तकस्थ-पाठानां सन्दर्भग्रन्थाः, रचयितारः तेषां रचनाः च (1+1+1)	लघूत्तरात्मकाः	1×3=3
17.	महाकाव्यम्, गद्यकाव्यम्, चम्पूकाव्यम्	लघूत्तरात्मकाः	1×3=3
18.	नाट्यतत्त्वानां मुख्यविशेषतानां परिचयः	लघूत्तरात्मकाः	1×4=4
		पूर्णभारः	**10 अङ्काः**
		सम्पूर्णभारः	80 **अङ्काः**

प्रश्नपत्र-प्रारूपम् /संरचना

कक्षा – द्वादशी (2022-23)

संस्कृतम् (केन्द्रिकम्) कोड् सङ्ख्या - 322

प्रश्नप्रकारः	प्रश्नानां सङ्ख्या	विभाग-सङ्ख्या	प्रतिप्रश्नम् अङ्कभारः	आहत्याङ्काः
बहुविकल्पात्मकाः 1अङ्कः	3+5+6+3=17	4	1	17
अति-लघूत्तरात्मकाः ½अङ्कः	2+2+2=6	3	½	3
अति-लघूत्तरात्मकाः 1 अङ्कः	2=2	1	1	2
निबन्धात्मकः ½ अङ्कः (रिक्तस्थानपूर्तिमाध्यमेन)	10+10=20	2	½	10
निबन्धात्मकः. 1 अङ्कः	3+3=6	2	1	6
पूर्णवाक्यात्मकः 1अङ्कः	2+2+2+5=11	4	1	11
पूर्णवाक्यात्मकः 2अङ्कौ	2=2	1	2	4
लघूत्तरात्मकाः ½ अङ्कः	4+4=8	2	½	4
लघूत्तरात्मकाः 1अङ्कः	1+6+2+2+2+3+3+4=23	8	1	23
			आहत्याङ्काः	80

संस्कृतपाठ्यक्रमः (केन्द्रिकम्) कोड् सङ्ख्या - 322

कक्षा-द्वादशी (2022-23)

वार्षिकं मूल्याङ्कनम्

'क' भागः **अपठित – अवबोधनम्**	**(10 अङ्काः)**
1. एकः अपठितः गद्यांशः 80-100 शब्दपरिमितः गद्यांशः, सरलकथा ➢ एकपदेन पूर्णवाक्येन च अवबोधनात्मकं कार्यम् (2+4) ➢ समुचितशीर्षकलेखनम् (1) ➢ अनुच्छेद – आधारितं भाषिकं कार्यम् (3) भाषिककार्याय तत्त्वानि - ✓ वाक्ये कर्तृ – क्रिया पदचयनम् ✓ विशेषण – विशेष्य चयनम् ✓ पर्याय – विलोमपद – चयनम् ✓ सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः	10
'ख' भागः **रचनात्मकं कार्यम्**	**(15 अङ्काः)**
2. औपचारिकम् अनौपचारिकं पत्रम्/प्रार्थनापत्रम् (मञ्जूषायाः सहायतया रिक्तस्थानपूर्तिं कृत्वा पूर्णं पत्रं लेखनीयम्)	5
3. लघुकथा (शब्दसूचीसाहाय्येन, रिक्तस्थानपूर्ति-माध्यमेन)/वार्तालापे एकपक्षपूरणम् 4 हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखितानां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादः	5 5
'ग' भागः **अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्**	**(20 अङ्काः)**
5. पाठाधारिताः सन्धिविच्छेदाः – (2+2+2) ➢ स्वरसन्धिः ➢ व्यञ्जनसन्धिः ➢ विसर्गसन्धिः	6
6. पाठाधारित-समासाः विग्रहाः च – ➢ अव्ययीभावः, द्विगुः, द्वन्द्वः, तत्पुरुषः, कर्मधारयः, बहुव्रीहिः	5
7. प्रत्ययाः - (प्रकृतिप्रत्यय-संयोजनं वियोजनञ्च) (अ) कृत्- क्त, क्तवतु, तव्यत्, अनीयर्, शतृ, शानच्, क्तिन् (आ) तद्धित- मतुप्, इन्, ठक्, त्व, तल् (इ) स्त्री-प्रत्ययाः – टाप्, ङीप्	6 3

8. उपपदविभक्तिप्रयोगः (पाठ्यपुस्तकम् आधृत्य)	
'घ' भागः **(i) पठितावबोधनम्**	**(25 अङ्काः)**
9. गद्यांशम् अधिकृत्य अवबोधनात्मकं कार्यम् प्रश्नप्रकाराः – एकपदेन पूर्णवाक्येन च प्रश्नोत्तराणि भाषिककार्यम् – ➢ वाक्ये कर्तृ – क्रिया पदचयनम् ➢ विशेषण – विशेष्य चयनम् ➢ पर्याय – विलोमपद – चयनम् ➢ सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः	5
10. पद्यांशम् अधिकृत्य अवबोधनात्मकं कार्यम् प्रश्नप्रकाराः – एकपदेन पूर्णवाक्येन च प्रश्नोत्तराणि भाषिककार्यम् – ➢ वाक्ये कर्तृ – क्रिया पदचयनम् ➢ विशेषण – विशेष्य चयनम् ➢ पर्याय – विलोमपद – चयनम् ➢ सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः	5
11. नाट्यांशम् अधिकृत्य अवबोधनात्मकं कार्यम् प्रश्नप्रकाराः – एकपदेन पूर्णवाक्येन च प्रश्नोत्तराणि भाषिककार्यम् – ➢ वाक्ये कर्तृ – क्रिया पदचयनम् ➢ विशेषण – विशेष्य चयनम् ➢ पर्याय – विलोमपद – चयनम् ➢ सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः	5
12. भावार्थे रिक्तस्थानपूर्तिः / प्रदत्ते भावार्थत्रये शुद्धभावार्थचयनम्	3
13. प्रदत्तेषु अन्वयेषु रिक्तस्थानपूर्तिः	3
14. प्रदत्तवाक्यांशानां सार्थकं संयोजनम् ।	2
15. प्रदत्तपङ्क्तिषु प्रसङ्गानुसारं पदानाम् अर्थलेखनम् ।	2 2
'घ' भागः **(ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः**	**(10 अङ्काः)**
16. भास्वतीपाठ्यपुस्तकस्थ-पाठानां सन्दर्भग्रन्थाः, रचयितारः तेषां रचनाः च (1+1+1)	3
17. महाकाव्यम्, गद्यकाव्यम्, चम्पूकाव्यम्	3
18. नाट्यतत्त्वानां मुख्यविशेषतानां परिचयः	4

आहत्याङ्काः - 80 अङ्काः

परीक्षायै निर्धारिताः पाठाः

पाठ्यस्तकम् – भास्वती - द्वितीयो भागः			
पाठसङ्ख्या	**पाठनाम**	**पाठसङ्ख्या**	**पाठनाम**
प्रथमः पाठः	अनुशासनम्	षष्ठः पाठः	सूक्तिसौरभम्
तृतीयः पाठः	मातुराज्ञा गरीयसी	सप्तमः पाठः	नैकेनापि समं गता वसुमती
चतुर्थः पाठः	प्रजानुरञ्जको नृपः	नवमः पाठः	मदालसा
पञ्चमः पाठः	दौवारिकस्य निष्ठा	एकादशः पाठः	कार्याकार्यव्यवस्थितिः

पाठसङ्ख्या	**पाठनाम**
चतुर्थ अध्याय	महाकाव्य
सप्तम अध्याय	गद्य काव्य एवं चम्पू काव्य
नवम अध्याय	नाट्य साहित्य

पुस्तकानि

- भास्वती - द्वितीयो भागः (पाठ्यपुस्तकम्) रा. शै. अनु. प्र. परि. द्वारा प्रकाशितम् ।
- व्याकरणसौरभम् (संशोधितसंस्करणम्) रा. शै. अनु. प्र. परि. द्वारा प्रकाशितम् ।
- रचनानुवादकौमुदी (सहायकपुस्तकम्) कपिलदेवद्विवेदीलिखितम् विश्वविद्यालयप्रकाशनम्, वाराणसी ।
- संस्कृतसाहित्यपरिचयः (सन्दर्भपुस्तकम्) (संशोधितसंस्करणम्) रा. शै. अनु. प्र. परि. द्वारा प्रकाशितम् ।
- वेदपारिजात (अतिरिक्ताध्ययनार्थम्) रा. शै. अनु. प्र. परि. द्वारा प्रकाशितम् ।

****

आन्तरिक-मूल्याङ्कनम्

(20 अङ्काः)

उद्देश्यानि

- ❖ छात्राणां सृजनात्मकक्षमतायाः विकासः।
- ❖ श्रवण-भाषण-पठन-लेखनकौशलानां विकासः।
- ❖ चिन्तनक्षमतायाः आत्मविश्वासस्य च संवर्धनम्।

क्र. सं.	गतिविधयः	उदाहरणानि	अङ्काः	निर्देशाः	मूल्याङ्कनबिन्दवः
1.	**आवधिक-परीक्षाः (पीरियोडिक् - असैस्मैंट)**	लिखितपरीक्षा	05	विद्यालयेन समये समये लिखितपरीक्षाणाम् आयोजनं करणीयं भवति।	परीक्षासु यत्र विद्यार्थिनः श्रेष्ठाः अङ्काः स्युः तयोः द्वयोः परीक्षयोः एव अधिभारः ग्रहीतव्यः। अपि च आवधिकपरीक्षासु अपि प्रश्नेषु आन्तरिकविकल्पाः देयाः। मूल्याङ्कनसमये यदि छात्रः सर्वान् प्रश्नान् उत्तरति तर्हि छात्रहिताय यत्र अधिकाः अङ्काः सन्ति तेषाम् एव मूल्याङ्कनं करणीयम्।
2	**बहुविधमूल्याङ्कनम्**	❖ कक्षायां पाठितस्य पाठस्य लघुमूल्याङ्कनम् ❖ निर्गतपत्राणि ❖ प्रश्नोत्तरी ❖ मौखिकी परीक्षा ❖ प्रतियोगिताः ❖ प्रश्नमञ्चस्यायोजनम्	05	कक्षायां पाठित-पाठस्य विषयस्य वा बहुविधं मूल्याङ्कनम् अपेक्षितम् अस्ति। अनेन विद्यार्थिनां विविधकौशलानां मूल्याङ्कनं भवेत्।	❖मौलिकता ❖विषयसम्बद्धता ❖शुद्धता ❖समयबद्धता ❖प्रस्तुतीकरणम्
3.	**निवेशसूचिका (पोर्टफोलियो)**	❖ कक्षाकार्यम् ❖ सामूहिक-मूल्याङ्कनम् ❖ स्वमूल्याङ्कनम् ❖ विद्यार्थिनः विषयगताः उपलब्धयः	05	विद्यार्थिभिः कक्षायां कृतानां कार्याणाम् उपलब्धीनां च संरक्षणं संयोजनं च सञ्चिकायां पत्रावल्यां वा करणीयम्। एतेन समग्रं मूल्याङ्कनं प्रमाणिकत्वेन भवितुं शक्नोति।	❖ सुलेखः ❖ तथ्यात्मकता ❖ प्रामाणिकता ❖ समयबद्धता

4.	**भाषा-संवर्धनाय गतिविधयः** **(क) श्रवण-भाषण-कौशलम्**	❖ कथा ❖ संवादः/ वार्तालापः ❖ भाषणम् ❖ नाटकम् ❖ वार्ताः ❖ आशुभाषणम् ❖ संस्कृतगीतानि ❖ श्लोकोच्चारणम् ❖ प्रहेलिकाः	05	❖ छात्राः कामपि कथां श्रावयितुं शक्नुवन्ति। ❖ शिक्षकः कमपि विषयं सूचयित्वा परस्परं संवादं कारयितुं शक्नोति। ❖ दूरदर्शने वार्तावली इत्याख्यः संस्कृत-कार्यक्रमः प्रसारितः भवति तं द्रष्टुं छात्राः प्रेरणीयाः। ❖ श्रवण-कौशल-मूल्याङ्कनाय शिक्षकः स्वयम् अपि कथां श्रावयित्वा ततः सम्बद्ध-प्रश्नान् प्रष्टुं शक्नोति।	❖ उच्चारणम् ❖ शुद्धता ❖ समयबद्धता ❖ प्रस्तुतीकरणम् (आरोहावरोह-गतियति-प्रयोगः)
	(ख) लेखनकौशलम्	❖ विविधविषयान् आधृत्य मौलिकलेखनम् यथा– देशः, माता, पिता, गुरुः, विद्या पर्यावरणम्, योगः, समयस्य सदुपयोगः, शिक्षा, अनुशासनम् इत्यादयः। ❖ शैक्षिकभ्रमणस्य संस्कृतेन प्रतिवेदनलेखनम्। ❖ दैनन्दिनीलेखनम्। ❖ सङ्केताधारितं कथालेखनम्। ❖ भित्तिपत्रिकायाः निर्माणम्। ❖ श्रुतलेखः। ❖ सूक्तिलेखनम्।		❖ छात्राः यथाशक्यं कक्षायामेव लेखनकार्यं कुर्युः। ❖ टिप्पणी- पुस्तिकायाः निर्माणम्। ❖ वैयक्तिकपरीक्षणम्।	❖ विषय-सम्बद्धता ❖ शुद्धता (विशेषतः पञ्चमवर्णस्यप्रयोगः) ❖ समयबद्धता ❖ सुलेखः ❖ प्रस्तुतीकरणम्
	अवधातव्यम् –उपर्युक्त-गतिविधयः उदाहरणरूपेण प्रदत्ताः सन्ति। एतदतिरिच्य एतादृशाः अन्यगतिविधयः अपि भवितुमर्हन्ति।				

(संशोधित सहायक सामग्री-संस्कृत
(केन्द्रिक) कूट संख्या 322)
'क' भाग:
अपठित अवबोधनम् पूर्णांका: 10

1. अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा दत्त- प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत

एकदा शरीरस्य सर्वाणि इन्द्रियाणि हस्तौ, पादौ, मुखं, नासिका, कर्णौ इत्यादीनि मिलित्वा अचिन्तयन् "वयं सर्वे प्रतिदिनं परिश्रमं कुर्म: परम् एतत् उदरं सर्व स्वीकरोति, स्वयं किमपि कार्यं न करोति। अद्यप्रभृति वयमपि कार्यं न करिष्याम:। "एवं चिन्तयित्वा सर्वाणि अङ्गानि कार्यम् अत्यजन्। पादौ स्थिरौ भूत्वा अतिष्ठताम्। हस्तौ निश्चलौ अभवताम्। मुखम् अन्नकणम् अपि न प्राविशत्। एवं द्वे दिने व्यतीते जाते। शनै:-शनै: सर्वाणि अंगानि शिथिलानि अभवन्। कार्यशक्ति: क्षीणा अभवत्। कथमपि सर्वे पुन: मिलित्वा विचारम् अकुर्वन्

"अहो! अस्माकं प्रमाद:। भुक्तस्य अन्नस्य पाचनं तु उदरमेव करोति। एतद् एव अस्मभ्यं शक्तिं ददाति। अस्य कृपया एव वयं जीवाम:। अत: अस्माभि: सर्वै: उदरेण सह सहयोग: करणीय:।" नूनं संहति: एव कार्यसाधिका।

(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) 1/2 × 4 = 2

(i) को निश्चलौ अभवताम्?

(ii) इन्द्रियै: केन सह सहयोग: करणीय:?

(iii) एवं कति दिने व्यतीते जाते?

(iv) का क्षीणा अभवत्?

(v) कस्य पाचनम् उदरं करोति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्) 2 × 2 = 4

(i) एकदा सर्वाणि इन्द्रियाणि मिलित्वा किम् अचिन्तयन्?

(ii) कौ स्थिरौ भूत्वा अतिष्ठाम्?

(iii) सर्वे पुन: मिलित्वा किं विचारम् अकुर्वन्?

(इ) गद्यांशस्य समुचितं शीर्षक लिखत। 1×1=1

(ई) निर्देशानुसारम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) 'आलस्यम्' इत्यस्य विलोमपदं किम्?

(1) निद्रा (2) परिश्रमः

(3) प्रमादः (4) शनैः-शनैः ।

(ii) 'चरणौ' इत्यर्थे कः शब्दः अनुच्छेदे प्रयुक्तः?

(1) पादौ (2) हस्तौ

(3) इन्द्रियाणि (4) अङ्गानि

(iii) 'सर्वाणि अङ्गानि कार्यम् अत्यजन्' अत्र क्रियापदं किम्?

(1) 'सर्वाणि (2) अङ्गानि

(3) अत्यजन् (4) कार्यम्

(iv) 'भुक्तस्य अन्नस्य' अत्र विशेषणपदं किं ?

(1) भुक्तस्य (2) अन्नस्य

(4) पाचनं (4) उदरमेव

2. अधोलिखितं अपठित गद्यांशं पठित्वा प्रदत्त - प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत-

पूर्णांकाः 10

प्रकृतिः मनुष्यस्य उपकारिणी। मनुष्यैः सह तस्याः शाश्वतः सम्बन्धः। सा विविधरूपेषु अस्मिन् जगति आत्मानं प्रकटयति। पशवः, पक्षिणः वनस्पतयः च तस्याः एव अंगानि। निराशाः असहायाः जनाः तस्याः एव आश्रयं प्राप्नुवन्ति । सा स्वमनोहरेण सौन्दर्येण नीरसं हृदयम् अपि सरसं करोति । सूर्यः चन्द्रः च तस्याः नेत्रे। शस्य -श्यामला एषा भूमिः, विविधाः औषधयः सकलानि खनिजानि च प्रकृतेः एव शोभा। सा तु नित्यम् एव एतैः साध नैः सर्वेषाम् उपकारं करोति परम् अधन्यः अयं जनः कृतज्ञतां विहाय असाधुसेवितं पथं गच्छति, विविधानि कष्टानि च अनुभवति। नरः शाश्वतं सुखं वाञ्छति चेत् तर्हि प्रकृतेः प्रतिकूलं कदापि न आचरेत् इति।

(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) ½×4=2

(1) प्रकृतिः कस्य उपकारिणी?

(2) सूर्यः चन्द्रः च प्रकृतेः के?

(3) नरः कीदृशं सुखं वाञ्छति?

(4) शस्य श्यामला का?

(5) कस्याः प्रतिकूलं कदापि न आचरेत्?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) 2×2=4

(1) प्रकृतेः अङ्गानि कानि?

(2) कीदृशाः जनाः प्रकृतेः आश्रयं प्राप्नुवन्ति?

(3) प्रकृतिः स्वमनोहरेण सौन्दर्येण किं करोति?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षक लिखत। 1×1=1

(ई) निर्देशानुसारम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(1) "सा विविधरूपेषु अस्मिन् जगति आत्मानं प्रकटयति" अत्र 'सा' इति सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्?

(i) प्रकृतिः (ii) भूमिः

(iii) औषधयः (iv) वनस्पतयः

(2) "नित्यः" इत्यस्य कः पर्यायशब्दः अनुच्छेदे प्रयुक्तः?

(i) सुखं (ii) शाश्वतम्

(iii) प्रतिकूलं (4) कदापि

(3) "नरः शाश्वतं सुखं वाञ्छति" अत्र कर्तृपदं किम्?

(i) नरः (ii) वाञ्छति"

(iii) सुखं (iv) शाश्वतम्

(4) "असाधुसेवितं पथं" अत्र विशेष्यपदं किम्?

(i) विहाय (ii) असाधुसेवितं

(iii) पथम् (iv) कृतज्ञतां

3. परीक्षायाः दिनानि अतिविचित्राणि भवन्ति । यथा-यथा परीक्षाकालः समीपम् आयाति तथा छात्राणां हृदयगतिः वर्धते। परीक्षा प्रायः छात्रेभ्यः भयप्रदा एव प्रतीयते। अस्मिन् काले न निद्रैव आयाति। बुभुक्षापि सम्यक्प्रकारेण नानुभूयते। कदाचित् कस्मिंश्चित् विषये अभ्यासाल्पता कदाचिच्च अन्यस्मिन् । मस्तिष्कः सदैव तनावयुक्तः एव प्रतीयते। न केवल छात्राणाम् अभिभावकानामपि दशा एतादृशी एव भवति। परन्तु ये छात्राः कक्षायां दत्तावधानाः तिष्ठन्ति वर्षस्य प्रारम्भात् एवं पठितस्य अभ्यासं कुर्वन्ति। ते सर्वथा शान्तमनसा सरलतया च उत्तमाङ्कैः परीक्षाम् उत्तरन्ति। अतः सर्वैः छात्रैः एवमेव आचरणीयम्।

(अ) एकपदेन उत्तरत (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) ½×4=2

(1) परीक्षाकाले का न आयाति?

(2) कस्याः दिनानि अतिविचित्राणि भवन्ति?

(3) कः सदैव तनावयुक्तः एव प्रतीयते?

(4) वर्षस्य प्रारम्भात् पठितस्य किं करणीयम्

(5) परीक्षाकाले केषां हृदयगतिः वर्धते?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्) 2×2=4

(1) परीक्षाकाले किं किं भवति?

(2) कीदृशाः छात्राः उत्तमाङ्कैः परीक्षाम् उत्तरन्ति?

(3) परीक्षा प्रायशः छात्रेभ्यः कीदृशी प्रतीयते?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत। 1×1=1

(ई) निर्देशानुसारम् उत्तरत (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(1) "ये छात्राः कक्षायां दत्तावधानाः तिष्ठन्तिष अत्र क्रियापदं किम्?

(i) छात्राः (ii) कक्षायां

(iii) दत्तावधानाः (iv) तिष्ठन्ति

(2) "मस्तिष्कः तनावयुक्तः" अनयोः विशेष्यपदं किम्?

(i) मस्तिष्कः (ii) तनावयुक्तः

(iii) सदैव (iv) प्रतीयते

(3) "यथा-यथा परीक्षाकालः समीपम् आयाति" अत्र कर्तृपदं किम्?

(i) परीक्षाकालः (ii) समीपम्

(iii) यथा-यथा (iv) आयाति

(4) "दूरम्" इत्यस्य विलोमपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत?

(i) समीपम् (ii) परीक्षाकालः

(iii) सदैव (iv) यथा-यथा

4. जीवने धनस्य अत्यधिक महत्त्वम् अस्ति। धनेन जीवननिर्वाहः भवति। धनं विना वयं कथं भोजनम् अपि प्राप्तुं शक्नुमः? परन्तु यदि लोभेन वयं अन्धाः भूत्वा अधिकाधिकं धनं प्राप्तुम् अनुचितसाधनानां प्रयोगं कुर्मः तर्हि तेन धनेन दुःखमेव भविष्यति । तस्य रक्षणे एव समयो व्यतीतो भवति। कोऽपि तद् हरिष्यति इति चिन्ता प्रतिक्षणं वर्धते। अभिमानः विवेकं नाशयति कुत्सितधनस्य प्रच्छादनाय महान् क्लेशो भवति। अतः वयम् उचितसाधनैः एव धनार्जनं कुर्याम, कस्मै अपि ईर्ष्यां न कुर्याम अपितु यथाशक्ति ये असहायाः सन्ति तेषां साहाय्यं कुर्याम। त्यागेन एव धनस्य संरक्षणं भवति। त्यागपूर्वकम् उपभोगेन एव वयं जीवने आनन्दं प्राप्तुं शक्नुमः अन्यस्य धनं प्रति कदापि अस्माभिः लोभो नैव कर्तव्यः।

(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) ½×4=2

(1) जीवननिर्वाहः केन भवति?

(2) अभिमानः कं नाशयति?

(3) कस्य प्रच्छादनाय महान् क्लेशो भवति?

(4) धनस्य रक्षणे कः व्यतीतो भवति?

(5) केन धनस्य संरक्षणं भवति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) 2×2=4

(1) कीदृशेन धनेन दुःखमेव भवति?

(2) अस्माभिः कं प्रति लोभो न कर्तव्यः?

(3) वयम् उचितसाधनैः किं कुर्याम?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत $1\times1=1$

(ई) निर्देशानुसारम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नत्रयम्) $1\times3=3$

(1) "वयं जीवने आनन्दं प्राप्तुं शक्नुमः" अत्र क्रियापदं किम्?

(i) शक्नुमः (ii) जीवने

(iii) प्राप्तुं (iv) वयं

(2) "महान् क्लेशो" अनयोः विशेष्यपदं किम्?

(i) महान् (ii) प्रच्छादनाय

(iii) क्लेशो (iv) भवति

(3) "तस्य रक्षणे एव समयो व्यतीतो भवति" अत्र "तस्य" इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(i) धनेन (ii) धनस्य

(iii) धनं (iv) धनाय

(4) "दुःखम्" इत्यस्य पर्यायपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत?

(i) आनन्दं (ii) क्लेशः

(iii) लोभो (iv) असहायाः

5. सूर्यवंशे दधीचिनामा नृपः अभवत्। एकदा देवासुराणां मध्ये युद्धोऽभवत्। देवाः युद्धे अशक्ताः आसन्। ते भगवतः विष्णोः समीपम् गतवन्तः। विष्णुना उक्तं - यदि महर्षेः दधीचेः अस्थिभ्यः वज्रं निर्मायेत तदा तेन वज्रेण असुराः पराजिताः भविष्यन्ति। ततः इन्द्रः ब्राह्मणवेश धारयित्वा दधीचेः पुरतः तस्य अस्थीनि अयाचत। दधीचिः उक्तवान् - हे विप्र! मदीयं शरीरं नश्वरम् अस्ति। अनेन यदि केषामपि उपकारः भवेत् तदाहम् आत्मानं धन्यं मन्ये। एवम् उक्त्वा सः योगबलेन स्वप्राणान् अजहात्। इन्द्रः तस्य अस्थिभिः वज्रनिर्माणं कृत्वा वृत्रासुरं हतवान् असुरेषु च विजयं प्राप्तवान्। अद्यापि मानवामानां शरीरस्य च दानं संसारस्य उपकाराय आवश्यक वर्तते परं दधीचिसमाः त्यागिनः जनाः लोके अधुना न दृश्यन्ते।

(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) $\frac{1}{2}\times4=2$

(1) कस्मिन् वंशे दधीचिनामा नृपः अभवत्?

(2) दधीचिः योगबलेन कान् अजहात्?

(3) देवाः कस्य समीपम् गतवन्तः?

(4) इन्द्रः कं हतवान्?

(5) ब्राह्मणवेशं धारयित्वा कः अस्थीनि अयाचत?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)

(1) केषां मध्ये युद्धः अभवत्?

(2) विष्णुना देवाः किम् उक्तम्?

(3) दधीचिः इन्द्रं किम् उक्तवान्?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत। 1×1=1

(ई) निर्देशानुसारम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(1) "तेन वज्रेण असुराः पराजिताः भविष्यन्ति। अत्र क्रियापदं किम्?

(i) तेन (i) भविष्यन्ति

(iii) असुराः (iv) पराजिताः

(2) "महर्षेः दधीचेः" अनयोः विशेष्यपदं किम्?

(i) महर्षेः (ii) अस्थिभ्यः

(iii) दधीचेः (iv) वज्रं

(3) "एवम् उक्त्वा - सः योगबलेन स्वप्राणान् अजहात्।" अत्र 'सः' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(i) दधीचेः (ii) दधीचये

(iii) दधीचिना (iv) दधीचिः

(4) "राजा" इत्यस्य पर्यायपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत?

(i) देवाः (ii) असुराः

(iii) नृपः (iv) इन्द्रः

6. भारतीया संस्कृतिः कर्मसिद्धान्तं प्रतिपादयति। जीवाः कर्मवशात् विविधाः योनीः लभन्ते। मनुष्ययोनि लब्ध्वा यदि कश्चित् जीवः धर्मार्थकामनया सामञ्जस्यं स्थापयित्वा

जीवनं निर्वहति तदा सः पुनरागमनचक्रात् विमुक्तो भूत्वा मोक्षं लभते। विश्वस्य सर्वासु अपि संस्कृतिषु भारतीया संस्कृतिः प्राचीनतमा वर्तते। समन्वयात्मकस्वभावात् सहिष्णुताप्रकर्षत्वात् च अनन्तान् भीषणतमान् प्रहारान् सोढ्वा अपि एषा जीवति । भारतीया संस्कृतिः सर्वेषां देशानां जातीनां च कल्याणं कर्तुं सक्षमाऽस्ति।

(अ) एकपदेन उत्तरत- (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) ½×4=2

(1) भारतीया संस्कृतिः किं प्रतिपादयति?

(2) का संस्कृतिः प्राचीनतमा वतर्ते?

(3) जीवाः कथं/कस्मात् विविधाः योनीः लभन्ते?

(4) जीवः कस्मात् विमुक्तः भूत्वा मोक्षं लभते?

(5) जीवः पुनरागमनचक्रात् विमुक्तो भूत्वा किं लभते?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(1) कदा मनुष्यः पुनरागमनचक्रात् विमुक्तो भूत्वा मोक्षं लभते?

(2) भारतीया संस्कृतिः किं कर्तुं सक्षमाऽस्ति?

(3) भारतीया संस्कृतिः कान् अपि सोढ्वा जीवति?

(ई) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

(इ) **यथानिर्देशम् उत्तरत**

(1) लभन्ते इति क्रियायाः कर्तृपदम् किम्?

(क) योनिः (ख) विविधाः

(ग) कर्मवशात् (घ) जीवाः

(2) "समर्था इति पदस्य अत्र किं पर्यायपदम्?

(क) सर्वासु (ख) सहिण्णुता

(ग) सक्षमा (घ) स्वभावा

(3) "परतंत्रः इति पदस्य अत्र किं विलोमपदम्?

(क) मोक्षः (ख) जीवः

(ग) विमुक्तः (घ) संस्कृतिः

(4) 'देशानाम्' अस्य पदस्य विशेषणं किम्?

(क) भारतीया (ख) सर्वेषाम्

(ग) संस्कृतिः (घ) जातीनाम्

7. सायंकाले अस्ताचलं प्रति गच्छन् भगवान् सूर्यः चिन्तितः अभवत्-"मयि गते सम्पूर्णः संसारः अन्धकारे निमग्नः भविष्यति। लोकानां व्यवहारः कथं चलिष्यति? मां विना सर्वे जीवाः दुःखम् अनुभविष्यन्ति।" तस्य एतं भावं विज्ञाय एकः लघुदीपः निवेदितवान् -"भगवन्! अलं चिन्तया। यद्यपि मम प्रकाशः क्षीणः तथापि जनानां सेवायाम् अहं यथाशक्ति स्वजीवनं समर्पयिष्यामि, कार्याणि च साधयिष्यामि।" प्रसङ्गेयं शिक्षयति यदस्माभिरपि स्वकर्तव्यस्य निर्वाहो यथाशक्ति कर्तव्यः। कदापि एतन्न चिन्तनीयं यदहं लघुः एषः दीर्घः। मम कार्यं सुकरं तस्य कार्यं दुष्करमिति। यस्मिन् समाजे सर्वे जनाः प्रसन्नमनसा आत्मकर्तव्यं पालयन्ति सः समाजः सदैव उन्नतिमधिगच्छति।

(अ) एकपदेन उत्तरत- (केवल प्रश्नचतुष्टयम्)

(1) सायंकाले अस्ताचलं कः गच्छति?

(2) सूर्ये गते संसारः कस्मिन् निमग्नः भविष्यति?

(3) अस्माभिः कस्य निर्वाहः कर्तव्यः ?

(4) कस्य प्रकाशः क्षीणः अस्ति?

(5) जीवाः किम् अनुभविष्यन्ति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्) 2×2=4

(1) अस्ताचलं प्रति गच्छन् सूर्यः किं चिन्तयति?

(2) सूर्यस्य भाव विज्ञाय लघुदीपः किं निवेदितवान्?

(3) कीदृशः समाजः उन्नतिम् अधिगच्छति?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत। 1×1=1

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत-(केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(1) 'दीर्घः' इत्यस्य विलोमपदम् अनुच्छेदे किं प्रयुक्तम्?

(i) क्षीणः (ii) लघुः

(iii) कार्याणि (iv) अन्धकारे

(2) 'लोकम्' इत्यस्य पर्यायपदम् अनुच्छेदे किं प्रयुक्तम्?

(i) प्रकाशः (ii) संसारः

(iii) समाजे (iv) जनानां

(3) 'सर्वे जीवाः' अनयोः विशेष्यपदं किम्?

(i) सर्वे (ii) दुःखम्

(iii) विना (iv) जीवाः

(4) "सः समाजः सदैव उन्नतिम् अधिगच्छति" अत्र क्रियापदं किम्?

(i) अधिगच्छति (ii) समाजः

(iii) उन्नतिम् (iv) सदैव

8. संसारे सर्वाधिकभाषासु अनूदितः ग्रन्थोऽस्ति श्रीमद्भगवद्गीता। गीतायाः एकः प्रसिद्धः श्लोकांशोऽस्ति-"यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः"। अस्याः पंक्तेः अर्थः अस्ति यथा श्रेष्ठाः ज्येष्ठाः समाचरन्ति तथैव कनिष्ठाः अपि व्यवहरन्ति। यदि शिक्षकाः विद्वांसः, विनम्राः संयमादिगुणोपेताः च भवन्ति तेषां छात्राः तान् आदर्शान् मत्वा तेषां गुणानाम् अनुसरणं कर्तुं प्रयतन्ते। मातापितरौ यथा सन्ततिं पालयतः शिक्षयतः च, स्वजीवने अपि यथा व्यवहरतः तथैव सन्ततयः अपि गुणान् अङ्गीकुर्वन्ति । अत एव श्रेष्ठानां जनानां, वरिष्ठानां नागरिकाणां, नेतृणाम्, अभिनेतृणां क्रीडकानां च इदं प्रमुखं कर्तव्यं भवेत् यत् ते स्वचरित्रस्य निर्मलतां रक्षेयुः परोपकारादिकर्मसु च निरताः भवेयुः। यतः सामान्यजनाः तान् आदर्शान् मन्यन्ते।

(अ) एकपदेन उत्तरत-(केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) $1\times1=1$

(1) सर्वाधिकभाषासु अनूदितः ग्रन्थः कः?

(2) यथा श्रेष्ठाः समाचरन्ति तथा के व्यवहरन्ति?

(3) छात्राः गुणानां किं कर्तुं प्रयतन्ते?

(4) मातापित्रोः गुणान् के अंगीकुर्वन्ति?

(5) वयं कस्य निर्मलतां रक्षेम?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) $2\times2=4$

(1) 'यद्यदाचरति श्रेष्ठः' अस्याः पंक्तेः अर्थः कः?

(2) श्रेष्ठानां, वरिष्ठानां क्रीडकानां च कर्तव्यं किं भवेत्?

(3) छात्राः कान् आदर्शान् मत्वा अनुसरणं कुर्वन्ति?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। 1×1=1

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत-(केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(1) 'अनूदितः ग्रन्थः' अनयोः विशेषणपदं किम्?

(i) ग्रन्थः (i) अनूदितः

(iii) संसारे (iv) गीतायाः

(2) 'यथा श्रेष्ठाः ज्येष्ठाः समाचरन्ति' अत्र क्रियापदं किम्?

(i) श्रेष्ठाः (ii) ज्येष्ठाः

(iii) यथा (iv) समाचरन्ति

(3) 'पुस्तकम्' इत्यस्य पर्यायपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

(i) पंक्तेः (ii) ग्रन्थः

(ii) शिक्षकाः (iv) विद्वांसः

(4) 'सामान्यजनाः तान् आदर्शान् मन्यन्ते' अत्र कर्तृपदं किम्?

(i) सामान्यजनाः (ii) तान्

(iii) आदर्शान् (iv) मन्यन्ते

9. एकत्वभावनया यत्कार्यं क्रियते तद् 'एकता' इति कथ्यते। एकतया मानवः बलवान् भवति। एकतया समाज, राष्ट्र जगत् च उन्नतिपथम् आरोहति । अद्यत्वे अतीवावश्यकता वर्तते। यस्मिन् देशे एकतायाः अभावो भवति सः देशः स्वकीयां स्वतन्त्रता रक्षितुं नैव शक्नोति। अस्माकमपि देशः एकतायाः अभावात् चिरं परतन्त्रः आसीत्, परं यदा भारते एकत्वभावना समुत्पन्ना तदा भारतं स्वातन्त्र्यम् अलभत । एकतायाः प्रभावः जडवस्तुषु अपि दृश्यते। जलबिन्दवः सम्मिल्य नदीरूपं धारयन्ति। क्षुद्रतन्तवः अपि मिलित्वा यदा रज्जुरूपं धारयन्ति तदा ते बलशालिनं गजम् अपि नियन्त्रयितुं समर्थाः भवन्ति । यदा अस्माकं विचारा,

मनांसि गमनं, भाषणं संकल्पश्च एकत्वभावनया परिपूर्णाः भवन्ति, तदा न किमपि असाध्यं भवति। संसारस्य प्राचीनतमे ग्रन्थे ऋग्वेदे अयमेव सन्देशः "संगच्छध्वं संवदध्वम्" इत्यादिमन्त्रेण मानवकल्याणाय प्रदत्तः ।

(अ) एकपदेन उत्तरत- (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) ½×4=2

(1) एकतया कः बलवान् भवति?

(2) क्षुद्रतन्तवः मिलित्वा किं रूपं धारयन्ति?

(3) कया समाजः राष्ट्रं च उन्नतिपथम् आरोहति?

(4) कः एकतायाः अभावात् चिरं परतन्त्रः आसीत्?

(5) के सम्मिल्य नदीरूपं धारयन्ति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) 2×2=4

(1) भारतं कदा स्वातन्त्र्यम् अलभत?

(2) कदा किमपि असाध्यं न भवति?

(3) संसारस्य प्राचीनतमे ग्रन्थे कः सन्देशः प्रदत्तः?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत-(केवलं प्रश्नत्रयम्)

(1) दुर्बलः इत्यस्य विपर्ययपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

(i) अभावात् (ii) बलवान

(iii) असाध्यं (iv) गमनं

(2) प्राचीनतमे ग्रन्थे अनयोः विशेषणपदं किम्?

(i) ग्रन्थे (ii) ऋग्वेदे

(iii) प्राचीनतमे (iv) संसारस्य

(3) ते बलशालिनं गजम् अपि नियन्त्रयितं समर्थाः भवन्ति अत्र 'ते' इति पदं केभ्यः प्रयुक्तम्?

(i) क्षुद्रतन्तवः (ii) गजम्

(iii) बलशालिनं (iv) समर्थाः

(4) 'तदा भारतं स्वातन्त्र्यम् अलभत' अत्र क्रियापदं किम्?

(i) भारतं (ii) स्वातन्त्र्यम्

(iii) श्तदा (iv) अलभत

10. वर्तमानयुगं यन्त्राणां युगमस्ति। वैज्ञानिकाः सञ्चार-साधनेष्वपि प्रतिदिनं नवीनतमान् आविष्कारान् कुर्वन्ति येन सन्देशप्रेषणे अधिकतमा सुविधा स्यात्। जङ्गमवाणी (मोबाइल फोन) तादृशम् एव लोकप्रियं यन्त्रम्। बालाः, वृद्धाः, पुरुषाः, महिलाः, नागरिकाः, ग्रामीणाः वा सर्वेषां पार्श्वे एतत् यन्त्रं प्राप्यते। यानानि आरूढ़ाः, कार्यालयेषु कार्यं कुर्वन्तः, मार्गेषु चलन्तः, सभागारेषु प्रवचनं श्रृण्वन्तः जनाः अस्याः ध्वनिं श्रुत्वा वार्तामग्नाः भवन्ति। शिशुः जङ्गमवाण्या एव क्रीडति, जागर्ति स्वपिति च। अविवेकपूर्णः अस्याः प्रयोगः कार्येष् व्यवधानं करोति। मार्गेषु दुर्घटनाः भवन्ति। सत्यमस्ति यत् आविष्कारः कदापि हानिकारः न परन्तु तस्य दुष्प्रयोगेण जीवनस्य शान्तिः नश्यति। स्वास्थ्यस्य समयस्य च हानिः भवति। वस्तुतः वयं यन्त्रस्य अधीनाः न स्याम अपितु यन्त्रम् अस्माकम् अधीनं स्यात्। ते एवं बुद्धिमन्तः ये विज्ञानस्य सदुपयोगं कुर्वन्ति।

(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) ½×4=2

(1) वर्तमानयुगं केषां युगम् अस्ति?

(2) शिशुः कया क्रीडति?

(3) दुष्प्रयोगेण कस्य शान्तिः नश्यति?

(4) वयं कस्य अधीनाः न स्याम?

(5) लोकप्रियस्य यन्त्रस्य नाम किम्?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) 2×2=4

(1) के खलु बुद्धिमन्तः?

(2) आविष्कारस्य दुष्प्रयोगेण किं किं भवति?

(3) केषां पार्श्वे एतत् यन्त्रं प्राप्यते?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत-(केवलं प्रश्नत्रयम्)

(1) 'नवीनतमान् आविष्कारान्' अनयोः विशेषणपदं किम्?

(i) सन्देशप्रेषणे (ii) सुविधा

(iii) आविष्कारान् (iv) नवीनतमान्

(2) 'न्यूनतमा' इत्यस्य विलोमपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

(i) अधिकतमा (ii) नवीनतमान्

(iii) हानिकारः (iv) आविष्कारः

(3) 'शिशुः जङ्गमवाण्या एवं क्रीडति' अत्र कर्तृपदं किम्?

(i) जङ्गमवाण्या (ii) शिशुः

(iii) क्रीडति (iv) एवं

(4) 'तस्य दुष्प्रयोगेण जीवनस्य शान्तिः नश्यति' अत्र क्रियापदं किम्?

(i) तस्य (ii) दुष्प्रयोगेण

(iii) नश्यति (iv) जीवनस्य

उत्तराणि

1. (अ) एकपदेन उत्तरत

(1) हस्तौ (2) उदरेण

(3) द्वे (4) कार्यशक्तिः

(5) अन्नस्य

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(1) एकदा सर्वाणि इन्द्रियाणि मिलित्वा अचिन्तयन् यत् वयं सर्वे प्रतिदिनं .... कार्यं न करिष्यामः।

(2) पादौ स्थिरौ भूत्वा अतिष्ठताम्।

(3) सर्व पुनः मिलित्वा विचारम् अकुर्वन् 'अहो! अस्माकं प्रमादः ..... सहयोगः करणीयः।

(इ) संहतिः कार्यसाधिका। संगठने शक्तिः इत्यादयः।

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत

(1) परिश्रमं (2) पादौ

(3) अत्यजन् (4) भुक्तस्य

2. (अ) एकपदेन उत्तरत

(1) मनुष्यस्य (2) नेत्रे

(3) शाश्वतम् (4) भूमिः

(5) प्रकृतेः

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(1) पशवः, पक्षिणः वनस्पतयः च प्रकृतेः अंगानि सन्ति।

(2) निराशाः असहायाः प्राप्तुवन्ति।

(3) प्रकृतिः स्वमनोहरेण

(इ) प्रकृतिः इत्यादयः।

(ई) यथानिदेशम् उत्तरत

(1) प्रकृतिः (2) शाश्वतम्

(3) नरः (4) पथम्

3. (अ) एकपदेन उत्तरत

(1) निद्रा (2) परीक्षायाः

(3) मस्तिष्कः (4) अभ्यासम्

(5) छात्राणाम्

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(1) परीक्षाकाले न निद्रैव.....तनावयुक्तः एव प्रतीयते।

(2) ये छात्राः कक्षायां दत्तावधानाः... उत्तमाङ्के परीक्षाम् उत्तरन्ति।

(3) परीक्षा प्रायशः छात्रेभ्य; भयप्रदा एव प्रतीयते।

(इ) परीक्षा/परीक्षाकालः/परीक्षादिनानि इत्यादयः।

(ई) यथानिदेशम् उत्तरत

(1) तिष्ठन्ति, (2) मस्तिष्कः

(3) परीक्षाकालः (4) समीपम्

4. (अ) एकपदेन उत्तरत

(1) धनेन (2) विवेकम्

(3) कुत्सितधनस्य (4) समयः

(5) त्यागेन

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(1) यदि लोभेन वयम् अन्धा.....धनेन दुःखमेव भविष्यति।

(2) अस्माभिः अन्यस्य धनं प्रति लोभो न कर्तव्यः।

(3) वयम् उचितसाधनैः एव धनार्जनं कुर्याम।

(इ) धनस्य महत्त्वम् । धनस्य उपयोगः इत्यादयः।

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत

(1) शक्नुमः (2) क्लेशो

(3) धनाय (4) क्लेशः

5. (अ) एकपदेन उत्तरत

(1) सूर्यवंशे (2) स्वप्राणान्

(3) विष्णोः (4) वृत्रासुरम्

(5) इन्द्रः

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(1) देवासुराणां मध्ये युद्धः अभवत्

(2) विष्णुना उक्तम् यदि महर्षेः दधीचे ..... पराजिता भविष्यन्ति।

(3) दधीचिः इंद्रम् उक्तवान् हे विप्र मदीयं..... आत्मानं धन्यं मन्ये।

(इ) परोपकारः, महर्षिः दधीचिः

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत

(1) भविष्यन्ति, (2) दधीचेः,

(3) दधीचये (4) नृपः

6. (अ) एकपदेन उत्तरत- (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्)

(1) कर्मसिद्धान्तम् (2) भारतीया संस्कृतिः

(3) कर्मवशात् (4) पुनरागमनचक्रात्

(5) मोक्षम्

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(1) मनुष्ययोनि लब्ध्वा यदि कश्चित् जीवः धर्मार्थकामनया सामञ्जस्यं स्थापयित्वा जीवनं निर्वहति तदा सः पुनरागमनचक्रात् विमुक्तो भूत्वा मोक्षं लभते।

(2) भारतीया संस्कृतिः सर्वेषां देशानां जातीनां च कल्याणं कर्तुं सक्षमाऽस्ति।

(3) भारतीया संस्कृतिः अनन्तान् भीषणतमान् प्रहारान् अपि सोढ्वा जीवति

(इ) भारतीया संस्कृतिः

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत

(1) जीवाः, (2) सक्षमा,

(3) विमुक्तः, (4) सर्वेषाम्

7. (अ) एकपदेन उत्तरत

(1) सूर्यः (2) अन्धकारे

(3) स्वकर्तव्यस्य (4) लघुदीपस्य

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(1) अस्तङ्गतः सूर्यः चिन्तयति यत् मयि गते .....दुःखम् अनुभविष्यन्ति।

(2) सूर्यस्य भावं विज्ञाय लघुदीपः निर्वेदितवान् - 'भगवन्! अलं..... साधयिष्यामि।

(3) यस्मिन् समाजे सर्वे .....उन्नतिमधिगच्छति।

(इ) कर्तव्यपालनम्/लघुदीपः इत्यादयः।

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत

(1) लघुः, (2) संसारः,

(3) जीवाः (4) अधिगच्छति

8. (अ) एकपदेन उत्तरत

(1) श्रीमद्भगवद्गीता (2) कनिष्ठाः

(3) अनुसरणम् (4) सन्ततयः

(5) स्वचरित्रस्य

9. (अ) एकपदेन उत्तरत

(1) मानवः (2) रज्जुरूपम्

(3) एकतया (4) देशः

(5) जलबिन्दव;

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(1) यदा भारते एकत्वभावना..... भारते स्वतन्त्र्यम् अलभत।

(2) यदा अस्माकं विचाराः मानांसि..... न किमपि असाध्यं भवति।

(3) संसारस्य प्राचीनतमे ग्रन्थे..... संगच्छध्वं ..... मानवकल्याणाय प्रदन्न

(इ) एकता/एकत्वभावना इत्यादयः।

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत-

(1) बलवान् (2) प्राचीनतमे

(3) क्षुद्रतन्तवः (4) अलभत

10. (अ) एकपदेन उत्तरत-

(1) यन्त्राणाम् (2) जङ्गमवाण्या

(3) जीवनस्य (4) यन्त्रस्य

(5) जङ्गमवाणी (मोबाइल फोन)

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(1) ते एव बुद्धिमन्तः ये विज्ञानस्य सदुपयोगं कुर्वन्ति।

(2) आविष्कारस्य दुष्प्रयोगेण जीवनस्य शान्तिः नश्यति समयस्य च हानिः भवति

(3) बालाः वृद्धाः पुरूषाः

(इ) जङ्गमवाणी इत्यादयः।

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत–

(1) नवीनतमान् (2) अधिकतमा

(3) शिशुः (4) नश्यति

'ख' भाग

रचनात्मकं कार्यम्

पत्रलेखनम् **(5 अङ्काः)**

कथा-पूर्तिः/संवादपूर्तिः **(5 अङ्काः)**

अनुच्छेद- लेखनम् । हिन्दी वाक्यानां संस्कृत अनुवादः **(5 अङ्काः)**

1. पत्रलेखनम् 'पत्र' प्राचीनकाल से ही हमारे विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम रहा है। वर्तमान काल में पत्रों के स्वरूप में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। हम यहाँ विशेष रूप से कुछ परीक्षोपयोगी पत्रों का अध्ययन करेंगे । पत्र- पूर्ति के सन्दर्भ कुछ ध्यातव्य बिन्दु निम्नलिखित हैं

1. सम्बोधन

(क) बड़ों के लिए- मान्याः, माननीयाः, श्रद्धेयाः, पूज्याः, पूजनीयाः, पूज्यवराः, आदरणीयाः मान्यवराः आदि।

(ख) मित्र, बराबर वालों के लिए- प्रियवर!, मित्रवर!, सुहृदवर !, प्रिय !, बन्धुवर!, प्रियबन्धो!, प्रिय सुहृद्! आदि।

(ग) छोटों के लिए-प्रिय!, आयुष्मान्!, चिरञ्जीव आदि।

(घ) अपरिचितों । अधिकारियों के लिए-महोदयाः !, महाशयाः !, मान्याः !, माननीयाः !, मान्यवराः ! आदि।

2. अभिवादन

(क) बड़ों के लिए-चरणयोः नमामि, सादरं प्रणमामि ,चरणयोः प्रणामाः आदि।

(ख) मित्रों / बराबर वालों के लिए-सप्रेम नमस्ते, सादरम् अभिवादये, सादरं नमामि आदि।

(ग) छोटों को-दीर्घायुः भव, यशस्वी भव, आयुष्मान् भव, सदा सुखी भव, धीमान् भव, चिरञ्जीव आदि।

(घ) अपरिचितों को-सादरम् अभिवादये, सादरं नमस्ते आदि।

3. पत्र-समापन के समय

(क) बड़ों के लिए-भवताम् आज्ञाकारी, भावत्कः, भवदीयः, भवतां कृपाकांक्षी, भवतां स्नेहभाजनः आदि।

(ख) मित्रों / बराबर वालों के लिए-शुभेच्छुः, हितैषी, सुहृद्, उत्तराभिलाषी, भवतां मित्रम् आदि।

(ग) छोटों के लिए-शुभाकांक्षी, शुभेच्छुः, त्वदीयः,, भवदीयः, शुभचिन्तकः आदि।

(घ) अपरिचितों के लिए-भवदीयः, उत्तराभिलाषी आदि। परीक्षा में दिए जाने वाले पत्र में रिक्त स्थान दिए जाते हैं। छात्रों द्वारा उन रिक्त स्थानों को समुचित शब्दों द्वारा पूरित किया जाता है। यहाँ उसी पद्धति के अनुसार पत्रों के कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं ध्यातव्य है कि

पत्र के प्रश्न को ध्यान से पढ़ना चाहिए।

प्रश्न भाग में भी उत्तर के अनेक संकेत मिल जाते हैं। लिखने वाला, पाने वाला, लेखक का स्थान, पाने वाले का स्थान, मुख्य विषय आदि का पता प्रश्न भाग से भी चल जाता है। उदाहरण भवान् अनुरागः(पत्र भेजने वाला ,अन्त में आएगा)। भवन्मित्रं शेखरः (पत्र प्राप्त करने वाला,अभिवादन के पश्चात) स्वनगरमण्डले चित्रकला प्रतियोगितायां प्रथम पुरस्कार लब्धवान्तं वर्धापयितुं लिखिते

खण्डः 'ख' : रचनात्मकं कार्यम् उदाहरणानि

प्रश्नः पत्रलेखनम् : मञ्जूषापदैः रिक्त-स्थानपूर्तिं कृत्वा पत्रं पुनः लिखत-

(½×10=5)

1. भवान् अनुरागः। भवन्मित्रं शेखरः स्वनगरमण्डले चित्रकला-प्रतियोगितायां प्रथमं पुरस्कारं लब्धवान्। तं वर्धापयितुं लिखिते पत्रे मञ्जूषापदैः रिक्त-स्थानपूर्तिं कृत्वा पत्रं पुनः लिखत्- (10×½=5)

दिल्लीनगरस्य, पूर्वमण्डलम्।

दिनाङ्कः

प्रिय सखे। (i) .....

प्रेम नमः। भवान् अस्मिन् वर्षे (ii) ..... चित्रकला प्रतियोगितायां (iii) ..... मण्डलानि पराजित्य प्रथम पुरस्कार (iv) ....। एतदर्थं मनसि अहं (v) ..... हर्षमनुभवामि । भवान् प्रायशः विचारमग्नो (vi) ..... अतएव तव चित्रे ते भावाः समागताः यान् (vii) ..... निर्णायकाः तुभ्यं प्रथमं स्थानं दत्तवन्तः। एतस्मिन् विषये तव (viii).....अभिवादनार्थौ तव उत्साहं वर्धयितुं सदैव संलग्नौ। (ix).....तौ प्रति निवेदय अभिवादनम्। आशासे यद् भवान् अग्रिमवर्षे स्वदेशे प्रतियोगितासु प्रथममेव स्थानं लप्स्यते। तव भगिन्यैः शुभाशिषः।

भवताम्

(x) ..... सखा

अनुरागः

मञ्जूषा : मम, स्वनगरमण्डलेषु, महान्तम्, सर्वाणि, लब्धवान्, भवति, पितरौ, दृष्ट्वा, शेखर! अभिन्नः

2. भवान् विवेकः। भवतः मित्रं शुभम् ऊन-एकोनविंशतिवर्षीयां क्रिकेटप्रतियोगितां विजित्य आगतः। स्वानुभवान् वर्णयन् भवान् स्वपितरं प्रति पत्रं लिखति । तस्मिन् पत्रे विद्यमानानि रिक्तस्थानानि मञ्जूषापदसहायतया पूरयित्वा पुनः लिखतु।

प्रतिभाविकासविद्यालयः,

पश्चिमविहारः।

दिनांकः .....

प्रातः स्मरणीयाः (i).....

सादरं (ii).....

अत्र सर्वं कुशलम्। तत्रापि सर्वे (iii).....सन्तु इति ईश्वरं (iv)..... आनन्दप्रदः (v).....अस्ति यद् मम मित्रम् (vi).....ऊन-एकोनविंशतिवर्षीयां क्रिकेटप्रतियोगितायां (vii).....भूत्वा प्रतिनिवृत्तः। अतः अहं महान्तं (viii) ..... अनुभवामि। आशासे यत् स भूयो भूयःबहवीः (ix)..... विजेष्यते। भवानपि तस्मै वर्धायनपत्रं लिखतु।

मातृचरणयोः साभिवादनं प्रणामाः, राधिकाये शुभाशिषः।

भवता (x).....

विवेकः ।

मञ्जूषा–प्रतियोगिताः, वशंवदः, पितृचरणाः, प्रार्थये, प्रणामाः, परितोषम्, विजयी, समाचारः, शुभम्, कुशलिनः

3. भवतः नाम सक्षमः छात्रावासे व भवान् वसति। अजन्ता–अलोरा–गुहावर्शनार्थं शैक्षिकयात्रायै गन्तुम् इच्छन्ति।धनप्रेषणार्थं पितरं प्रति लिखितं पत्रं मंजूषायां प्रदत्तैः उचितशब्दैः पूरयित्वा उत्तरपुस्तिकायां पुनः

लिखत।

22, कारि छात्रावासः

(i).....

तिथिः 2/1/2022

परमादरणीयाः (ii).....

सादरं प्रणमामि।

सविनयं (iii) ..... यत् मम त्रैमासिकी परीक्षा समाप्तिं गता। मम (iv) .....

शोभनानि अभवन्। अस्मिन (v) ..... अहं गृहं न आगमिष्यामि, यतः विद्यालयेन एकस्याः (vi) ..... प्रबन्धः कृतः। एषा अजन्ता एलोरागुहानां दर्शनाय आयोजिता अस्ति। यात्राव्ययार्थं (vii) ..... रूप्यकाणि प्रेषयन्तु भवन्तः । शेषं सर्वं कुशलम्। मम (viii) ..... अग्रजाय च सादरं (ix) .....

भवदीयः (x) .....

सक्षमः।

मञ्जूषा–निवेदयामि, प्रियपुत्रः, शैक्षिकयात्रायाः, पंचशतम्, कालिकातातः, शरदवकाशे, जनन्यै, उत्तरपत्राणि, पितृमहाभागाः, प्रणामाः

4. भवान् राधारमणः दिल्लीनगरे मयूरविहारक्षेत्रे निवसति। स्वक्षेत्रे पेयजलस्य सुव्यवस्था कारयितुम् मण्डलस्य

स्वास्थ्याधिकारिणम् प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायाम् प्रदत्तपदैः पूरयत।

सेवायाम्

(i) .....

मयूरविहारः, दिल्ली।

महोदय,

सविनयं निवेदनं अस्ति यत् अहं भवतः ध्यानं मयूरविहारक्षेत्रे (ii) ..... अपर्याप्त-जलापूर्तिम् प्रति आकृष्टं कर्तुम् इच्छामि। अस्मिन् (iii) ..... प्रातःकाले केवलं सार्धवादनं एव (iv) ..... जलं आगच्छति। सायंकाले अपि पेयजलस्य आपूर्तिः अनियमिता एव भवति। (v) ..... अशुद्धम् च पेयजलं पीत्वा अत्रत्याः नागरिकाः (vi) ..... भवन्ति। स्थानीयाधिकारिणम् (vii) ..... निवेदितं परं अद्यापि अस्मिन् विषये न कोऽपि (viii) ..... द्य ग्रीष्मकाले तु जलसंकटं अति कष्टकरम। अतः प्रार्थये यत् अस्माकम् क्षेत्रे पेयजलस्य सुव्यवस्थां (ix) ..... कुर्वन्तु। भवताम् विशेषः (x) ..... भविष्यति।

सधन्यवादम्

भवदीयः

राधारमणः (क्षेत्रीयः सचिवः)

दिनांक : .....

मञ्जूषा- पेयजलस्य, क्षेत्रे, रूग्णाः, सुधारः, बहुवारं, यथाशीघ्रं, अनुग्रहः, स्वास्थ्याधिकारी, नलकूपेषु दुर्गन्धयुक्त

5. विद्यालयत्यागप्रमाणपत्रहेतोः प्राचार्य प्रति प्रार्थनापत्रम्। मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि

पूरयत।

परीक्षाभवनम्,

दिनांकः

प्राचार्य महाभागाः,

मान्याः (i).....

भवतां (ii) ..... निवेदनम् अस्ति यत् अस्मिन् वर्षे (iii) .... भगिनी अध्ययनाय जयपुरं (iv) ..... अहम् अपि (v)..... ..... पठनाय गन्तुम् (vi) ..... अतः (vii) .... प्रार्थ्यन्ते यत् (viii) विद्यालयत्यागस्य (ix).....प्रयच्छन्तु। सधन्यवादम्।

(x)..... शिष्यः,

प्रियव्रतः

मञ्जूषा–भवदीयः, प्रणामाः, प्रमाणपत्रम्, मह्यम्, सेवायाम्, मम, गता, इच्छामि, तत्र, भवन्तः

6. भवान्, राहुलः, छात्रावासे वसति। शारदीये अवकाशे भवतां विद्यालये संस्कृतसम्भाषणशिविरं प्रचलिष्यति अतः भवान् गृहं न गमिष्यति इति सूचयन् पितरं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषापदसहायतया पूरयित्वा उत्तर पुस्तिकायां पुनः लिखत

नर्मदा छात्रावासः,

नवोदयविद्यालयः,

(i) .....

परमपूज्यपितृमहाभागाः,

(ii) .....

तिथिः

अत्र अहं कुशली । तत्रापि भवन्तः सर्वे (iii) ..... इति मन्ये। क्षेत्र मम पठनं (iv).....प्रचलति। अर्धवार्षिकी परीक्षा (v) .....। मम विद्यालये शारदीये अवकाशे (vi).....प्रचलिष्यति । अतः अहम्

अवकाशदिनेषु गृहम् आगन्तुं न (vii)..... । भवतां दर्शनेन अहं वञ्चितः भवामि इति खेदः, तथापि शिविरेण मम (viii).....भविष्यति इति नास्ति सन्देहः ।

(x).....अपि मम वन्दनानि । स्वकीयं क्षेमसमाचारं सूचयन्तु इति ।

भवदीयः पुत्रः

मञ्जूषा–सम्यक्, शक्नोमि, ज्ञानवर्धनम्, जयपुरतः, कुशलिनः, मातृचरणयोः, राहुलः, सादरवन्दनानि, समाप्ता, संस्कृतसम्भाषणशिविरम्

7. भवान् प्रदीपः। स्वविद्यालयस्य वर्णनं कुर्वन् मित्रं प्रति लिखिते पत्रे रिक्तस्थानानि मञ्जूषायां प्रदत्त शब्दैः पूरयित्वा पत्रं पुनः लिखत–। (½×10=5)

परीक्षाभवनम्

दिल्लीतः

तिथिः..

प्रिय (i)..... विवेक,

(ii).....

अत्र कुशलम् तत्रास्तु। अहम् अधुना निजविद्यालयस्य वर्णनं कर्तुम् (iii) ....। मम विद्यालयस्य भवनम् अतीव (iv).....अतीव (v) .... चास्ति। एषः विद्यालयः अति प्रसिद्धः अस्ति। (vi)..... ..... अस्य परीक्षा परिणामः अत्युत्तमः भवति।सर्वे (vii).....परिश्रमशीलाः सन्ति। (viii).....अपि अत्र अनुशासनप्रियाः सन्ति। (ix)..... ..... पुनः लेखिष्यामि ।

भवतः (x).....

प्रदीपः,

मञ्जूषा– सप्रेम नमः, विशालम्, मित्रम् ,सुन्दरम्, इच्छामि, अस्य, अध्यापकाः विस्तरेण, छात्राः, मित्र

8. भवान् प्रणवः। चेन्नईनगरे छात्रावासे स्थित्वा अध्ययनं करोति। छात्रावासे स्वदिनचर्यायाः वर्णनम् कुर्वन् स्वमातरं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पूरयित्वा पुनः लिखत। (½×10 =5)

(i).....

तिथिः.....

पूजनीये मातः

सादरं प्रणामाः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु । भवत्याः पत्रम् प्राप्य मनसि (ii).....जातः यत् पितृमहोदयः इदानीम् (iii)..... स्वस्थोऽस्तिःसः मम स्वास्थ्यस्य (iv).....च विषये चिंतितः आसीत। परं चिन्तायाः न कोऽपि विषयः। अहम् प्रतिदिनं प्रातः चतुर्वादने(v)..... .....व्यायामं कृत्वा (vi).....पठामि। ततः स्नात्वा दुग्धादिकं च पीत्वा पादोनसप्त -वादने विद्यालयं गच्छामि। द्विवादने (vii).....आगत्य भोजनं कृत्वा विश्रामं करोमि। सार्ध चतुर्वादने उत्थाय गृहकार्यं करोमि। संस्कृतविषये अहम् (viii) ..... परिश्रमं करोमि । पितृमहाभागानाम् (ix).....प्रणामाः कथनीयाः।

भवत्याः प्रियः पुत्रः

(ix).....

मञ्जूषा- विद्यालयात् सन्तोषः, अध्ययनस्य, घण्टाद्वयम्, विशेषतया चरणयोः, छात्रावासतः, उत्थाय, प्रणवः, पूर्णरूपेण

9. सुजाता दिल्लीमहानगरे वसति ।तस्याः सखी लता चेन्नईनगरे निवसति । सुजातायाः विद्यालये पर्यावरणविषये एका गोष्ठी संजाता । गोष्ठी वर्णयन्ती सुजाता गायत्र्यै पत्रं लिखति मंजूषातः समुचितपदानि चित्वा पत्रं पूरयन्तु -

20, वसन्तविहारः

नवदिल्लीतः

तिथिः 20-1-2021

(i).....लते।

नमस्ते!

हयः अस्माकं विद्यालये (ii).....एका महत्त्वपूर्णा गोष्ठी अभवत्। तत्र महानगरेषु वर्धमानं प्रदूषणं दृष्ट्वा पर्यावरणस्य (iii).....उपायानां विषये चर्चा अभवत। गोष्ठ्यां वक्तृणां विचारसारः आसीत् यत् गृहात् बहिः, (iv)..... रथ्यासु च अवकरः न क्षेपणीयः। (v)..... समये समये जलशुद्धिः करणीया। मार्गेषु, उद्यानेषु, विद्यालयेषु च अधिकाधिकं (vi).....आरोपणीयाः। जनजागरणार्थं "वृक्षो रक्षति रक्षितः" "जलम् एव जीवनम्" एतादृशानि महावाक्यानि पट्टिकासु लिखित्वा यत्र तत्र (vii).....ध्वनिप्रदूषणं निवारयितुं ध्वनिप्रसारकयन्त्राणां (viii)..... प्रयोगः करणीयः। अस्मिन् विषये भवत्याः विद्यालये किं किं भवति इति मां विस्तरेण लिखतु।पितरौ (ix).....

भवत्याः सखी

(x).....

मञ्जूषा– सुजाता, नदीजलेषु, स्नेहस्निग्धे, पर्यावरणविषये, न्यूनतमः, वृक्षाः, रक्षणाय, वन्दनीयौ, टङ्कनीयानि, जलप्रदूषण-निवारणाय,

10. क्रीडोपस्कराणाम् आपूर्त्यै प्राचार्य प्रति पत्रम्।

परीक्षाभवनम्

दि. 15/02/2022

श्रीमन्तः,

(i).....प्रणामाः।

(ii).....निवेदनम् अस्ति यत् (iii).....विद्यालयस्य क्रीडापरिषदः (iv).....अस्मि। अहं (v).....ध्यानाकर्षणं क्रीडोपस्कराणाम् (vi).....करोमि। अनेन छात्राणाम् (vii)..... बाधितो भवति। अस्मिन् (viii).....शीघ्रं (ix).....करणीया इति (x)----------

भवदीयः शिष्यः,

मोहनः

अनुक्रमांकः 27

मञ्जूषा- प्रार्थना, सादरम्, व्यवस्था, प्रतिनिधिः, सेवायाम्, अहम्, भवताम्, आपूत्य, अभ्यासः, विषये।

प्रश्नः कथापूर्तिः

कथा संस्कृत गद्य साहित्य की एक बहुत ही रोचक विधा है ।

प्राचीन काल से ही हमें संस्कृत साहित्य में आदि को कथा संग्रह उपलब्ध होते हैं लोक साहित्य में भी कथा का विशेष महत्व है।

परीक्षा की दृष्टि से प्रश्न पत्र में आने वाली कथा मंजूषा में दिए गए शब्दों की सहायता से पूर्ण की जाती है

कथा को बहुत ध्यान से पढ़कर तत्पश्चात मंजूषा में दिए गए शब्दों को पढ़ें प्रत्येक वाक्य में ध्यान से देखें

कि रिक्त स्थान में कर्ता, क्रिया अथवा मंजूषा में दिया गया उपयुक्त शब्द किस प्रकार कथा को पूर्ण करेगा

रिक्त स्थान के आगे या पीछे के शब्दों को ध्यान से देखें उसके विभक्ति वचन एवं शब्द के लिंग को जान लेने के पश्चात मंजूषा के शब्दों का चयन करें।

उदाहरण-1. मञ्जूषा-लिखितपदानां साहाय्येन अधोलिखितायां लघुकथायां रिक्तस्थानानि पूरयित्वा कथां पुनः लिखत- (½×10=5)

एकदा एकः कलाकारः स्वचित्राणां (i).....अकरोत्। तां द्रष्टुं नगरस्य (ii). .....जनाः समागच्छन्। सर्वे मानवाः तां प्रदर्शनी दृष्टवन्तः। तत्र (iii)..... एका बाला। सा (iv).....अन्ते एक चित्रं दृष्टवती यत्र मुखं तु केशाच्छन्नम् पादयोः च आस्ताम् (v).....।मूले च लिखितम् अवसरः। सकलाः जनाः तु न अजानन् किमपि। बाला तु तं चित्रकारं तद् विषये (vi).....। कलाकारः अवदत् एषोऽवसरोऽस्ति। बाला आच्छन्नस्य मुखस्य विषये यदा अपृच्छत् तदा सोऽवदत्-सर्वेषां जीवने अवसरः (vii).....आगच्छति परं सामान्याः जनाः तं न (viii).... ..... प्रगतिं च न कुर्वन्ति। बाला पुनः तत्पादयोः पक्षविषयेऽपि पृष्टवती- 'कथमेतौ

पक्षौ पादयोः?' कलाकारः अवदत् 'अवसरः' पक्षौ प्रक्षिप्य यदा गच्छति तदा न प्रत्यावर्तते। बाला चित्रस्य रहस्यं (ix).....तस्मादेव (x).....प्रगतेः अवसरं प्रतीक्षितुं

प्रारभत ।

मञ्जूषा- दिनात्, अपृच्छत्, प्रदर्शनीम् , चित्रस्य, शतशः, पक्षी, परिचिन्वन्ति, ज्ञात्वा, आगता, प्रदर्शनीवत्

उदाहरण 2. मञ्जूषा-लिखितपदानां साहाय्येन अधोलिखितायां लघुकथायां रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पुनः लिखत। (½×10=5)

कश्चित् श्रेष्ठिपुत्रः पितुः मृत्योः अनन्तरं तस्य धनस्य स्वामी भूत्वा धनस्य (i)..... .....अकरोत्। ईदृशं किमपि पापं नासीत् यत् तेन न (ii).....। इदृशं मादकद्रव्यं नासीत् यत् तेन न सेवितम्। एकदा एकः महात्मा तम् अवदत्-प्रिय (iii)..... लक्ष्मीः तु चञ्चला भवति अतः प्रथमम् आयसाधनाय प्रयत्नं कुरु अपि च धनस्य (iv). ..... कुरु इति, दीनानां सहायतां कुरु इति । कुपितः श्रेष्ठिपुत्रः अवदत्- (v). .....किं भविष्यति इति विचार्य अद्यतनीयं सुखं न त्यजामि इति। महात्मा उक्तवान्। 'प्रिय मित्र! एवम् (vi).....स्वास्थ्यधनम् अपि नष्टं भविष्यति' इति। सःश्रेष्ठिपुत्रः न अमन्यत। (vii)..... सः मार्गेषु (viii)..... याचते स्म। तस्य शरीरे (ix).....जाताः। तेभ्यः रुधिरं स्रवति स्म। महात्मा अतीव दुःखी अभवत्। तेन उक्तम्-नूनम् (x).....विषन्मूलम् ।

मञ्जूषा- सदुपयोगं, व्रणाः, रोटिकाखण्डान्, श्वः, अपव्ययं, दुर्व्यसनैः, कालान्तरे, बन्धो, असंयमः आचरितम्

3. मञ्जूषा-प्रदत्त-शब्दसूचीसाहाय्येन लघुकथायां रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पुनः लिखत ।

सुदामा (i).....मित्रम् आसीत्। सः सर्वप्रथमं (ii).....श्रीकृष्णेन सह (iii).....एतौ मिलित्वा गुरोः समीपम् एकादश (iv).....अपठताम्। कालक्रमेण वासुदेवः द्वारिकायाः नृपः अभवत। सुदामा तु (v).....एव आसीत्।

सः श्रीकृष्णदर्शनाय (vi).....अगच्छत्। द्वाररक्षकाः तं राजसभां अनयन्। बाल्यबन्धुः वासुदेवः तस्य (vii).....अकरोत्। श्रीकृष्णः सुदाम्नः (viii)..... प्रदत्तान् तण्डुलान् अखादत्। दारिद्र्यस्य (ix).....श्रीकृष्णः तस्मै ऐश्वर्यं (x).....। ?

मञ्जूषाः- अयच्छत्, दरिद्रः, अमिलत्, श्रीकृष्णस्य, द्वारिकाम्, भार्यया, निवारणाय, आलिङ्गनम्, गुरुकुले, वर्षाणि

4. मञ्जूषाप्रदत्तपदानां साहाय्येन अधोलिखितायां लघुकथायां रिक्तस्थानानि पूरयित्वा कथा पुनः लिखत (½×10=5)

श्रवणकुमारस्य मातापितरौ अतिवृद्धौ (i).....तौ श्रवणकुमारं तीर्थाटनाय निवेदितवन्तौ। श्रवणः तौ (ii).....नीत्वा तीर्थाटनाय प्रस्थितः । एकदा रात्रौ सः तमसा (iii).....तटे विश्रामाय स्थितवान् । तदानीम् एव राजा दशरथः तमसातटे मृगयार्थम् आगतः। रात्रौ श्रवणः मातापित्रोः पिपासा-शान्त्यर्थं (iv)..... आदाय नदीतटम् आगतः। जलपूरणकाले घटशब्दं गजशब्दं मत्वा दशरथः (v)..... बाणं मुक्तवान्। अनेन (vi)..... श्रवणकुमारः मृतः। (vii)..... "एतद् दृष्ट्वा चिन्तितः अभवत् । सः जलपूर्ण घटं गृहीत्वा श्रवणस्य पित्रोः समीपम् अगच्छत्, (viii)..... च अतिष्ठत्। पितृभ्यां पृष्टः सः सर्वं वृत्तम् (ix)..... ..... पुत्रवियोग-दुःखितौ तौ दशरथाय शापम् अदत्तां यत् सोऽपि (x)..... दुःखी सन् मृत्युं प्राप्नुयात्।

मञ्जूषाः-तुलायाम्, नद्याः, आस्ताम्, शब्दभिदम्, राजा तूष्णीम्, घटम्, बाणेन, अकथयत्, पुत्रवियोगे

5. अधोलिखितां लघुकथां प्रदत्त-शब्दसूचीसाहाय्येन पूरयित्वा पुनः लिखत

आसीत् पुरा शिविनामकः महादानी (i).....राजा। एकदा देवाधिपतिः शक्रः अग्निदेवः च तस्य (ii)..... परीक्षितम् ऐच्छताम्। शक्रः (iii)..... अग्निदेवः च श्येनस्य रूपम् अधारयताम्। एकदा (iv)..... शिविः उद्याने विहरति

स्म। तदैव श्येनः कपोतं हन्तुम् (v).....। भयभीतः कपोतः प्राणरक्षार्थं शिवेः (vi)..... आगच्छत् प्राणरक्षार्थं च प्रार्थयत्। तदैव श्येनः अपि तत्रागच्छत्। सः अकथयत् अयं कपोतः मम (vii).....अस्ति,अतः मह्यं देहि। करुणापरः राजा अकथयत्-अयं कपोतः मम शरणम् आगतः। अस्य रक्षा मम (viii)..... अस्ति। श्येनः (ix)..... कपोतस्य भारसमं स्वमांसं मह्यं यच्छ। राजा शिविः सेवकैः आनीतायां तुलायां स्वमांसं स्थापयितुम् आरभत। परं कपोतस्य भारस्तु अधिकः एवासीत् । तदा राजा स्वयमेव (x).....अतिष्ठत्। इदं दृष्ट्या प्रसन्नौ शक्रः इन्द्रः च स्ववास्तविकं स्वरूपम् अधारयताम् राजे वर च अयच्छताम् ।

मञ्जूषाः- कपोतस्य, राजा, शरणम्, दानशीलताम्, धर्मः, शरणागतवत्सलः, समागतः, आहारः, तुलायाम्, अवदत्

6. अधोलिखितां लघुकथां प्रदत्त-शब्दसूचीसाहाय्येन पूरयित्वा पुनः लिखत

परिश्रमेण एव (i)..... सिध्यन्ति। अभ्यासेन जनाः कार्ये चतुराः भवन्ति।एकदा एकः(ii).....आसीत्। तस्य राज्ये एकः शत्रुः आक्राम्यत् । शत्रोः (iii)..... ..... अजयत्। नृपः एकस्याम् गुहायाम् अन्तर्हितः। तत्र सः एकाम् पिपीलिकाम् अपश्यत्। सा भित्तिम् (iv)..... यत्नम् अकरोत्। सा अधः अपतत्। सा पुनः (v)..... ..... अकरोत् पुनः श्च अपतत्। सा वारं-वारं च अभ्यासम् अकरोत्। अन्ते च भित्तिम् आरोढुं सफला जाता। नृपः अवागच्छत् यदि सः अपि(vi).....प्रयत्नं करिष्यति तदा सः (vii).....जेष्यति। सः तस्य शत्रोः उपरि पुनः(viii)..... अकरोत् अन्ते च विजयी अभवत्। अतः यदि वयम् अपि सदा(ix).....पुनः पुनः अभ्यासं च करिष्यामः तर्हि अवश्य (x).....भविष्यामः। परिश्रमेण हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

मञ्जूषाः- सेना, कार्याणि, प्रयत्नम्, आरोढुं, नृपः, आक्रमणम्, अवश्यम, परिश्रमम्, सफलाः ,वारं-वारं।

7. **अधोलिखितां लघुकथां प्रदत्त-शब्दसूचीसाहाय्येन पूरयित्वा पुनः लिखत- (½×10=5)**

एकदा कश्चित् नरः आखेटाय अगच्छत्। सः सर्वं दिनं (i).....अभ्रमत्, किन्तु कम् अपि पशुं न अलभत्।सायंकाले यदा स्वगृहं प्रति आगच्छति स्म, (ii)..... .....सः एकां पुत्रसहितां हरिणीम् अपश्यत्। सः (iii)..... अश्वारूढ़ तस्याः अनुसरणम् अकरोत् किन्तु सा (iv).....कुत्रचित् अदृश्या अभवत्। ततः सः तस्याः शावकं (v).....अश्वस्य पृष्ठे बद्धवान्। पुनः (vi).....आरुह्य सः नरः किञ्चित् दूर (vii)..... अपश्यत् यत् पुत्रस्नेह (viii)..... ..सा मृगी अपि पुत्रम् अनुसरति स्म। सः अचिन्तयत्- एषा हरिणी स्वप्राणमोहं त्यक्त्वा पुत्र (ix).....इच्छति, अहो, एतां निराशां न करिष्यामि इति विचार्य सः मृगीशावकम् अमुञ्चत्। हरिणी (x).....

अभवत्।

मञ्जूषाः- वने, मृगी, नरः, गृहीत्वा, व्याकुला, तदा, गत्वा,अश्वम्, रक्षितुम्, प्रसन्ना

8. पुरा गुजरातप्रदेशे एकस्मिन् ग्रामे एकं (i).....गुरुकुलम् आसीत् । तत्र द्विशतं छात्राः गुरुभ्यः अनेकान् विषयान् (ii).....पठन्ति स्म । तेषां भोजनादिव्यवस्थाम् एका नगरस्थिता संस्था (iii).....। एकदा संस्थाधि कारिणः छात्रेभ्यः एकं वैद्यं प्रेषितवन्तः। सः त्रीन् मासान् तत्र अवसत्। किन्तु (iv)..... रुग्णः तस्य समीपे चिकित्सायै न आगच्छत्। (v)..... .... प्रधानाचार्यम् अपृच्छत्-किम् अत्र कोऽपि रोगी न भवति? (vi)..... विहस्य अवदत् वैद्यराज! अस्य एकम् रहस्यम् अस्ति। अत्र सर्वे तदा भोजनं (vii). .....यदा ते तीव्रक्षुधाम् अनुभवन्ति। यदा तेषां भोजनेन तृप्तिः भवति, ततः पूर्वम् एव ते (viii).....त्यजन्ति। एतत् एव एतेषां (ix)..... रहस्यम। भवान् जानाति एव यत् स्वस्थाः नराः औषधं न सेवन्ते। तद्वचनं श्रुत्वा वैद्यः हसित्वा अवदत्-अत्र (x).....उपयोगः न अस्ति।अहं गच्छामि। नमस्कारः। यत्र रोगः तत्र वैद्यः।

मञ्जूषाः- गुरुकुलम् ,अकरोत् ,कोऽपि,स्वास्थ्यस्य, पठन्ति, कुर्वन्ति, भोजनं, वैद्यराजः प्रधानाचार्यः,

9. अधोलिखितां कथां मञ्जूषायाः सहायतया पूरयित्वा उत्तरपुस्तिकायां पुनः लिखत।

सकदा गुरुः द्रोणाचार्यः दुर्योधनम् (i).....आदिशत् "वत्स ! नगरे सर्वाधिकं गुणवन्तं जनम् अन्विष्य (ii)..... दुर्योधनः (ii).....आसीत्। सः सर्वत्र (iv)..... आगच्छत् अवदत् च - भगवन् ! (v).....गुणवत्तरः कोऽपि नास्ति इति।" आचार्यः पुनः युधिष्ठिरम् आहूय (vi)....."वत्स ! संसारे सर्वाधिकं गुणहीनं जनम् (vii)..... आनय इति।" युधिष्ठिरः आगत्य अवदत्- 'प्रभो ! मत्तः गुणहीनः संसारे कोऽपि नास्ति।' आचार्यः(viii)..... आशीषम् अयच्छत् - प्रियपुत्र ! तव कीर्तिः कदापि न (ix).....नूनं सत्यमेव उच्यते - यथा दृष्टिः (x).....सृष्टिः ।

मञ्जूषाः-अहङ्कारी, अन्विष्य, नंक्ष्यति, आहूय, भान्त्वा, आदिष्टवान्, तथा, आनय, मत्तः, युधिष्ठिराय।

10. अधोलिखितां लघुकथां प्रदत्त-शब्दसूचीसाहाय्येन पूरयित्वा पुनः लिखत- (½×10=5)

जिह्वायाः माधुर्यं स्वर्गं प्रापयति, जिह्वायाः (i).....नरके पातयति। एकः एव शब्दः जीवनं विभूषयेत् अन्यः एकः शब्दः जीवनं (ii).....। एकदा द्वयोः धनिनोः मध्ये विवादः उत्पन्नः जातः तौ (ii)..... गतौ। एकः धनिकः अचिन्तयत् अहं लक्षं (iv).....न्यायाधीशाय यच्छामि इति । सः स्यूते लक्ष रुप्यकाणि (v).....न्यायाधीशस्य गृहं गतवान्। न्यायाधीशः तस्य- मन्तव्यं ज्ञात्वा (vi)..... .....अभवत्। धनिकः (vii).....भोः मत्सदृशाः लक्षरुप्यकाणां (viii)..... ..... दुर्लभाः एव। न्यायाधीशः अवदत् -लक्षरुप्यकाणां दातारः कदाचित् अन्ये अपि भवेयुः परन्तु लक्षरुप्यकाणां निराकर्तारः मत्सदृशाः अन्ये (ix).....एव । अतः कृपया गच्छतु । न्यायस्थानं मलिनं मा (x).....। लज्जितः धनिकः धनस्यूतं गृहीत्वा ततः निर्गतः ।

मञ्जूषाः-कटुता, न्यायालयं, दातारः, स्थापयित्वा, नाशयेत्, रुप्यकाणि, क्रुद्धः, विरलाः,अवदत्, कुरु

अथवा

संवादपूर्तिः

अधोलिखितं संवादं पूरयत

संवाद 1.

लता - राधिके! प्रातःकाले एव सज्जीभूय कुत्र गन्तुं सन्नद्धा?

राधिका : 1. .....

लता - विद्यालयम् ! अस्यां वेशभूषायाम्? तव गणवेशः कुत्राऽस्ति?

राधिका - 2. .....

लता - अहा ! काव्यालिस्पर्धा! बहुशोभनम्। स्पर्धा तव विद्यालये एव अस्ति अपरस्मिन् विद्यालये वा?

राधिका 3. .....

लता - त्वम् प्रतियोगितायां सम्यक् रूपेण प्रस्तुतिं कुर्याः इति मम शुभकामना।

राधिका - 4. .....

लता - 5. .....

संवाद 2

राहुलः - अभिनव ! नमोनमः! चिरात् दृष्टोऽसि?

अभिनव 1. .....

अभिवादये तरुण! भवता सह मिलित्वा प्रसन्नोऽस्मि।

तरुणः - 2. .....

राहुलः--भवान् किं करोति?

तरुणः--अहं संस्कृतसाहित्ये स्नातकोत्तरपरीक्षा सम्पाद्य आगतोऽस्मि

राहुलः- 3. .....

तरुण: -किमर्थम्?

राहुल: - 4. .....

तरुण: - संस्कृतपठनेन सह वैज्ञानिकप्रविधीनाम् उपयोगे न कोऽपि दोष: ! अहं तु सर्वाणि वैज्ञानिकोपकरणानि उपयोजयामि ।

राहुल:--शोभनम्। 5. .....

संवाद 3.

माता - पुत्र! त्वम् अधुना किं पठसि?

पुत्र: - 1. .....

माता--किम काऽपि परीक्षा अस्ति संस्कृतस्य ?

पुत्र : 2. .....

माता--अतीव शोभनम् ! अभ्यासं कृत्वा सोत्साहं स्पर्धायां भागग्रहणं कुरु।

पुत्र : 3. .....

माता - प्रथमं श्लोकानाम् अर्थान् अवबोध, तत: स्मरणं कुरु। एवम् न विस्मरिष्यसि।

पुत्र : 4. .....

माता--आगच्छ पुत्र ! अहम् सर्वेषां श्लोकानाम् अर्थमपि अवबोधयामि,सस्वरवाचनं चापि शिक्षयामि।

पुत्र:--(प्रसन्नतया) 5. .....

(कथयित्वा आलिङ्गति)

संवाद 4.

मोहन: - नमोनम: पितृव्य! कथमस्ति भवान्?

पितृव्य: - अहम् सम्यक् अस्मि अपि यूयं स्वस्था: स्थ?

1. .....

मोहन: - आम् पितृव्या! प्रदूषणस्य स्थिति: तु गभीरा सञ्जाता।

अतएव 2. .....

पितृव्य:--अवकाश:! परमनेन किं भविष्यति? 3. .....

मोहनः - इदं तु सत्यम्। सर्वकारः प्रदूषणनिवारणाय अन्यानपि उपायान् करोति।

पितृव्यः- 4. .....

मोहनः - आम् पितृव्य! सर्वकारेण तु अनेके उपायाः कृताः जनाः सार्वजनिकवाहनानां प्रयोगाय प्रेरिताः, समविषमनियमानां प्रयोगेण वाहनयातायातं न्यूनीकरणीयम् इति निर्देशितम्

पितृव्यः --वत्स! त्वमपि स्वास्थ्यरक्षणाय तत्परो भव।

5. .....

संवाद 5.

रमेश प्रसादः -अभिवादये महोदय!

प्रधानाचार्यः -नमोनमः, किमागमनप्रयोजनम्?

रमेश प्रसादः - 1. .....

प्रधानाचार्यः - परं सत्रस्य मध्ये प्रवेशः कथं संभवो भविष्यति?

रमेश प्रसादः - 2. .....

प्रधानाचार्यः -अस्तु, पश्यामि अहं किं कर्तुं शक्नोमि? भवान् किं करोति? छात्रस्य माता वा किं करोति?

रमेश प्रसादः - 3. .....

प्रधानाचार्यः - सा शिक्षिता अस्ति न वा ?

रमेश प्रसादः - 4. .....

प्रधानाचार्यः- इदं तु बहुशोभनम्। शिक्षिता माता 5. .....

संवाद 6.

प्रवीरः- मनोज महोदय! चिन्तित इव प्रतीयसे? किं कारणं खलु ?

मनोजः- 1. .....

अहम् तस्य व्यवहारेण उद्विग्नतामनुभवामि ।

प्रवीरः- किम् सः आरंभतः एव उद्दण्डः आसीत् ?

मनोजः- 2. .....न जाने इदानीं सः किमर्थम् एवम् आचरति? इति न जाने।

प्रवीरः- 3. .....

मनोजः- कक्षायां पञ्चाशत् छात्राः भवन्ति । किम् एकैकमुपरि ध्यानं संभवमस्ति?

प्रवीरः- 4. .....

परम् यदि कोऽपि असामान्यमाचरति, तर्हि तस्य व्यवहारोपरि तु अवधानं दातव्यमेव।

मनोजः- शोभनं कथयसि 5. .....

संवाद 7

शुभंकरः- माधवि! त्वम् अल्पाहारार्थं किम् आनीतवती असि?

माधवी 1. .....

अनुरागः- अहम् ओदनं द्विदलं च आनीतवान् अस्मि।

शुभंकरः- मम माता मह्यं रोटिकां तुम्बीफलशाकं च दत्तवती,

परम् - 2. .....

लता--मम पार्श्वे आलुकस्य चिप्सं शीतलपेयं चास्ति।

3. .....

शुभंकर--आम्, मह्यं शीतलपेयं रोचते।

आशीषः- 4. .....

किं विस्मृतं त्वया यत् चिप्सादिकं जंकभोज्यवस्तूनि स्वास्थ्याय हितकराणि न भवन्ति।

शुभंकरः- यद्वस्तु अस्मभ्यं न रोचते, तत् वयं कथं खादेम?

आशीषः-- सर्वदा तथ्यमिदं स्मरणीयं यत् 5. .....

संवाद 8

आचार्यः- प्रणव! किं त्वं स्वजीवनलक्ष्यं निर्धारितवान्?

प्रणवः-आम् गुरवः। 1. .....

आचार्यः- 2. .....

चिकित्सको भूत्वा जनसेवां करिष्यसि ।

प्रणवः- महोदय! चिकित्साक्षेत्रे बहुधनार्जनस्यापि अवसरः प्राप्यते।

3. .....

आचार्यः- किम् धनार्जनाय विदेशगमनमेव तव जीवनोद्देश्यम् ?

4. .....

प्रणवः- आचार्य! किं स्वप्रतिभायाः उपयोग कृत्वा सुविधाकांक्षा नोचिता?

आचार्यः- अनुचिता नास्ति सुविधानां धनानां च इच्छा, परं

2. .....

संवाद 9

प्रवीरः- श्वः अस्माकं समावर्तनसंस्कारः (farewel ceremony) अस्ति। न जाने कथं द्रुतगत्या वर्षाणि व्यतीतानि ।

अतुलः- 1. .....

प्रवीरः अहं तु अभियन्तृ-विज्ञानं पठिष्यामि।

देवेशः- मया तु चिकित्साविज्ञानं पठिष्यते ।

नीलिमाः - 2. .....

वैष्णवीः- अहं "मधुबनीचित्रकला" इत्यस्य प्रशिक्षणं प्राप्य कुटीरोद्योगं चालयिष्यामि।मह्यं चित्रांकनम् अतीव रोचते।

अतुलः- 3. .....

मण्डनः- अस्मिन् कीदृशम् आश्चर्यम् ?

4. .....

देवेशः- त्वमपि मण्डन! तव गणितक्षेत्रे दक्षतां दृष्ट्वा त्वयि भविष्यस्य गणितज्ञं पश्यामि अहम्। त्वं कृषिकार्यं करिष्यसि?

मण्डनः- 2. .....

अवनीशः- सम्यक् कथितम्। अधुना तु सर्वकारेण भूमिस्वास्थ्यपत्रम् (soil health card)अपि प्रदीयते, येन भूमिस्वास्थ्यपरीक्षणं भवति।

सर्वे- भूमेः अपि स्वास्थ्यस्य परीक्षणम्? (हसन्ति)

ण्डनः- अथ किम् ? भूमेः अपि स्वास्थ्यपरीक्षणं कर्तव्यम्।

संवाद 10

अभिषेकः- मातः! गृहात् बहिः अवकर प्रक्षिप्तः अस्ति। कः प्रक्षिप्तवान् अवकरम् ?

माताः 1. .....

किमभवंत्? त्वं किमर्थं पृच्छसि?

अभिषेकः- मातः! किं गृहाभ्यन्तरं मार्जनेन एव स्वच्छताकार्यं समाप्यते खलु?

माताः- 2. .....

अभिषेकः-- मातः ! मार्गमुभयतः अवकराणां पर्वत इव दृश्यते, तस्य मालिन्यम् अस्माकं

श्वासे अवरोधं जनयति। एते 3. .....

अतएव अस्माभिः अस्माकं परिवेशः स्वच्छ करणीयः।

माताः - त्वं सुष्ठु भणसि। परं किमहम् एकाकिनी एव मार्गस्य परिष्करणं करवाणि?

अभिषेकः- 4. .....

माता- शोभनं वत्स! पर सद्यः एव तब मनसि स्वच्छतायाः संकल्पः कथम् आगतः?

अभिषेकः- 5. .....

अनुवादकार्यम्

किसी भाषा में कही या लिखी गई बात का दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद कहलाता है। अनुवाद करते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक होता है

कर्ता -अर्थात जो कार्य कर रहा हो।

जैसे- छात्रा पठति।

बालकः हसति।

त्वं गच्छसि।

अहं पठामि।

यहां छात्रा, बालकः, त्वम्, अहम् आदि कर्ता हैं।

क्रिया- जिससे कुछ करने या होने का बोध हो, वह क्रिया होती है। उपरोक्त वाक्यों में पठति, हसति, गच्छसि, पठामि आदि क्रिया हैं।

पुरुष और वचन- अनुवाद के लिए तीनों पुरुषों और वचनों का ज्ञान भी जरूरी होता है इससे कर्ता और क्रिया का समन्वय शुद्ध रूप से संभव होता है। एक बार इस तालिका पर दृष्टि डालते हैं

प्रथम पुरुष एकवचनम्-बालकः, बालिका,सः, सा, एषः, एषा, कः, का, तत्- ..... खादति/ पठति/हसति/गच्छति।

प्रथम पुरुष द्विवचनम्- बालकौ, बालिके, को, के, तौ, ते ,एतौ, एते .... खादतः/पठतः/हसतः/गच्छतः,

प्रथम पुरुष बहुचनम्- बालकाः,बालिकाःके, काःते, ताः, एते,

एताः..... खादन्ति/ पठन्ति/हसन्ति/गच्छन्ति।

मध्यम पुरुष एकवचनम्- त्वम् ..... खादसि/ पठसि/हससि/ गच्छसि।

मध्यम पुरुष द्विवचनम्-युवाम् .....खादथः/ पठथः/हसथः/गच्छथः ।

मध्यम पुरुष बहुचनम्-यूयम्.....खादथ/ पठथ/हसथ/ गच्छथ।

उत्तम पुरुष एकवचनम्- अहम्.....खादामि/ पठामि/हसामि/ गच्छामि।

उत्तम पुरुष द्विवचनम् आवाम्.....खादावः/ पठावः/हसावः/गच्छावः।

उत्तम पुरुष बहुचनम्-वयम्.....खादामः/ पठामः/हसामः/गच्छामः।

लिंङ्ग- संस्कृत में 3 लिंङ्ग होते हैं ।अनुवाद के लिए इनका भी ज्ञान आवश्यक है।

पुल्लिंग- बालकः गजः, शिक्षकः, सः,कः, मनुष्यः आदि।

स्त्रीलिंग-बालिका, शिक्षिका, आचार्या, सा,का, लता आदि।

नपुंसक लिंङ्ग- पत्रम्, पुष्पम्, वारि, तत्, एतत् आदि।

कारक की विभक्तियों का ज्ञान भी अनुवाद में सहायक होता है द्यकारक के सामान्य नियमों और उपपद विभक्तियों के ज्ञान से किसी वाक्य का शुद्ध संस्कृत अनुवाद संभव होता है।

लकार- क्रियापदों के प्रयोग के लिए लकार का ज्ञान भी आवश्यक है।

अभ्यासाः आइए इन बिंदुओं को आधार बनाकर कुछ परीक्षोपयोगी हिंदी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करते हैं

वर्तमानकालिक वाक्यः

1. मोहन खीर खाता है –मोहनः पायसं खादति।
2. लता गीत गाती है– लता गीतं गायति।
3. किसान खेत जोतते हैं– कृषकाः क्षेत्रं कर्षन्ति।
4. दो बच्चे दौड़ते हैं– बालकौ धावतः ।
5. खिलाड़ी गेंद खेलते हैं –क्रीडकाः कन्दुकेन खेलन्ति।
6. दो महिलाएं पानी लाती हैं– महिले जलम् आनयतः।
7. वे सब नृत्य करती हैं– ताः नृत्यं कुर्वन्ति/नृत्यन्ति।
8. वह क्या करता है ?–सःकिं करोति?
9. वे दोनों बातें करते हैं –तौ गल्पं कुरुतः।
10. वे लोग पाठ पढ़ते हैं –ते पाठं पठन्ति।
11. यह बालिका सुन्दर है– एषा बालिका सुंदरी अस्ति।
12. ये दोनों घूमती हैं –एते भ्रमतः।
13. ये सभी लेख लिखती हैं– एताः लेखं लिखन्ति।
14. वहां कौन है ?–तत्र कः/का अस्ति ?
15. कौन गीत गाती है ?–का गीतं गायति?
16. कक्षा में कितने छात्र हैं –कक्षायां कति छात्राः सन्ति?
17. यह कैसा व्यवहार है?– अयं कीदृशः व्यवहारः?
18. वह कहां जाता है –सः कुत्र गच्छति?
19. तुम भ्रमण करते हो– त्वं भ्रमसि।
20. तुम दोनों क्या खाते हो?– युवां किं खादथः?
21. मैं अखबार पढ़ती हूं/ पढ़ता हूं –अहं समाचारपत्रं पठामि।
22. हम दोनों गांव जाते हैं– आवां ग्रामं गच्छावः।
23. हम लोग परिचर्चा करते हैं– वयं परिचर्चा कुर्मः।
24. मैं बनारस में रहता हूं –अहं वाराणसीनगरे वसामि।

25. कक्षाओं में छात्र पढ़ते हैं- कक्षासु छात्राः पठन्ति।

26. जंगल में पशु रहते हैं- वने पशवः वसन्ति ।

27. परीक्षा पास है- परीक्षा समीपम् वर्तते।

28. हम सब परिश्रम करते हैं -वयं परिश्रमं कुर्मः।

29. परिश्रमी ही सफलता पाते हैं- परिश्रमिणः एव सफलतां लभन्ते।

उपपद-विभक्ति- आधारित अनुवाद द्वितीया विभक्ति

30. आरक्षी पीड़ित की रक्षा करता है -आरक्षी पीड़ितं रक्षति।

31. सुरेश गांव जाता है- सुरेशः ग्रामं/ ग्रामं प्रति गच्छति।

32. विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं -विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति।

33. गांव के समीप नदी बहती है- ग्रामं निकषा नदी वहति।

34. विद्यालय के दोनों ओर उद्यान हैं- विद्यालयम् उभयतः उद्याने स्तः।

35. पृथ्वी के नीचे जल है-पृथ्वीम् अधोऽधः जलम् अस्ति।

36. विद्या के बिना जीवन व्यर्थ है -विद्यां विना जीवनं व्यर्थम्।

37. वह पिता से धन मांगता है-सः पितरं धनं याचते।

38. रसोइया चावल पकाता है- पाचकः तण्डुलान् पचति।

39. शिष्य शिक्षक से प्रश्न पूछता है -शिष्यः शिक्षकं प्रश्नं पृच्छति।

40. शिक्षक धर्म का उपदेश देते हैं- शिक्षकः धर्मम् उपदिशति।

41. हम देश की रक्षा करते हैं-वयं देशं रक्षामः।

42. हम राष्ट्रभक्त को नमस्कार करते हैं-वयं राष्ट्रभक्तं नमामः।

तृतीया विभक्ति

43. माता के साथ पुत्री बाजार जाती है- मात्रा सह पुत्री आपणं गच्छति।

44. मैं मित्र के साथ उद्यान में घूमती हूं -अहं मित्रेण सह उद्याने भ्रमामि।

45. तुम साइकिल से जाते हो- त्वं विचक्रिकया गच्छसि।

46. तुम दोनों कलम से लिखते हो- युवां कलमेन/लेखन्या लिखथः।

47. तुम लोग विमान से जाते हो- यूयं विमानेन गच्छथ।

48. ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती- ज्ञानेन विना मुक्तिः न भवति।
49. कोलाहल करना व्यर्थ है -अलं कोलाहलेन।
50. ज्ञान से हीन व्यक्ति पशु के समान होता है-ज्ञानेन हीनः नरः पशुभिः समानः भवति।
51. धैर्य से शून्य व्यक्ति उत्तेजित होता है -धैर्येण शून्यः नरः उत्तेजितः भवति।
52. वह धन के लिए परिश्रम करता है -सः धनेन हेतुना परिश्रमं करोति।
53. पुत्र पिता के समान है -पुत्रः पित्रा समः अस्ति।
54. ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं है-ज्ञानेन सदृशं पवित्रं किमपि नास्ति।
55. अध्ययन के समान निधि नहीं है-अध्ययनेन समः निधिः नास्ति।
56. अर्जुन कृष्ण के समान पराक्रमी थे-अर्जुनः कृष्णेन तुल्यः पराक्रमी आसीत्।
57. सूरदास नेत्रों से अन्धे थे-सूरदासः नेत्राभ्याम् अन्धः आसीत्।
58. जय एक पैर से लंगड़ा है- जयः पादेन खञ्जः अस्ति।

चतुर्थी विभक्ति

59. दादा जी घूमने के लिए जाते हैं- पितामहः भ्रमणाय गच्छति।
60. शिक्षक छात्र को पुस्तक देते हैं -शिक्षकः छात्राय पुस्तकं यच्छति।
61. धनी निर्धन को रुपए देता है -धनिकः निर्धनाय रुप्यकाणि ददाति।
62. सफलता के लिए परिश्रम करो- सफलतायै परिश्रमं कुरु।
63. आचार्य को नमस्कार है- आचार्याय नमः।
64. शिष्य का कल्याण हो-शिष्याय स्वस्ति।
65. मुझे लड्डू अच्छा लगता है-मह्यं मोदकं रोचते।
66. शिक्षक छात्र को पुस्तक देते हैं-शिक्षकः छात्राय पुस्तकं यच्छति।
67. पिता पुत्र पर क्रुद्ध होता है- पिता पुत्राय कुप्यति।
68. वह मित्र को कथा कहता है-सः मित्राय कथां कथयति।
69. पुत्री माता को निवेदन करती है-पुत्री मात्रे निवेदयति।
70. मेरे पास मित्र के सौ रुपए उधार हैं-अहं मित्राय शतं धारयामि।

पञ्चमी विभक्तिः

71. वृक्ष से पत्ते गिरते हैं -वृक्षात् पत्राणि पतन्ति

72. हम बाघ से डरते हैं -वयं व्याघ्रात् बिभेमः।
73. पुस्तकालय से बाहर जाओ- पुस्तकालयात् बहिः गच्छ।
74. शिशु अंधकार से डरता है-शिशुः अन्धकारात् बिभेति ।
75. मैं शेर से डरता हूं-अहं सिंहात् बिभेमि।
76. आरक्षी दुष्ट से रक्षा करता है-आरक्षी दुष्टात् रक्षति।
77. वीर शत्रुओं से रक्षा करता है-वीरः शत्रुभ्यः त्रायते।
78. कर्तव्य में आलस्य मत करो-कर्तव्यात् प्रमादं मा कुरु।
79. गङ्गा हिमालय से निकलती है-गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।
80. शिष्य शिक्षक से पढ़ता है-शिष्यः शिक्षकात् पठति।
81. गांव के पूरब में नदी बहती है-ग्रामात् पूर्व नदी वहति।
82. भारत के उत्तर में हिमालय है- भारतात् उत्तरे हिमालयः अस्ति।
83. राम श्याम से कुशल है-रामः श्यामात् कुशलः।।
84. गीता सीता से निपुण है-गीता सीतायाः निपुणा ।
85. विद्या से बुद्धि श्रेयस्कर होती है- विद्यायाः बुद्धिःश्रेयसी।
86. वह घर के बाहर कूड़ा फेकता है:-सः गृहात् बहिः अवकरं क्षिपति।
87. तालाब के समीप वृक्ष हैं-सरोवरात् अन्तिकं वृक्षाः सन्ति।
88. वह बचपन से चंचल है-शैशवात् प्रभृति सः चञ्चलः अस्ति।
89. अच्छा मित्र पाप से बचाता है-सन्मित्रं पापात् निवारयति ।

षष्ठी विभक्ति

90. अर्जुन के समान कोई भी वीर नहीं है-अर्जुनस्य तुल्यः/समः । सदृशः/समानः कोऽपि वीरः न अस्ति।
91. मजदूर धन के लिए परिश्रम करता है- श्रमिकः धनस्य कृते परिश्रमं करोति।
92. घर के अंदर मत जाओ-गृहस्य अन्तः मा गच्छ।
93. बालकों के बीच झगड़ा होता है-बालकानां मध्ये कलहः भवति।
94. वृक्ष के ऊपर पक्षी रहता है -वृक्षस्य उपरि खगः वसति।
95. वृक्ष के नीचे फल हैं-वृक्षस्य अधः फलानि सन्ति।

96. गांव के सामने मंदिर है-ग्रामस्य पुरतः मन्दिरम् अस्ति।

97. घर के पीछे वृक्ष हैं-गृहस्य पृष्ठतः वृक्षाः सन्ति।

98. गांव के दक्षिण में विद्यालय है-ग्रामस्य दक्षिणतः विद्यालयः अस्ति।

99. कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं- कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।

100. विद्यार्थियों में रमेश श्रेष्ठ है- विद्यार्थिनां रमेश श्रेष्ठः।

101. मेरा नाम अविनाश है- मम नाम अविनाशः अस्ति ।

102. मेरा घर जयपुर में है -मम गृहं जयपुरनगरे अस्ति।

103. हम मित्र के घर जाते हैं -वयं मित्रस्य गृहं गच्छामः ।

सप्तमी विभक्तिः

104. सुरेखा गाने में कुशल है-सुरेखा गाने कुशला अस्ति।

105. अनुज मल्लयुद्ध में प्रवीण है-अनुजः मल्लयुद्धे प्रवीणः अस्ति।

106. शिखर मूर्तिकला में पटु है-शिखरः मूर्तिकलायां पटुः अस्ति।

107. सैनिक मित्रों के लिए अच्छा और शत्रुओं के लिए बुरा होता है- सैनिकः मित्रेषु साधुः, रिपुषु च असाधुः।

108. माता पुत्र को प्यार करती है- माता पुत्रे स्निह्यति।

109. अधिकारी कर्मचारियों पर विश्वास करता है-अधिकारी कर्मचारिषु विश्वसिति।

110. बालिका मोबाइल की इच्छा रखती है- बालिका चलदूरभाषयन्त्रे अभिलषति ।

111. शिक्षक के जाते ही छात्र भाग गए-शिक्षके गते छात्राः पलायिताः।

112. माता के जाते ही शिशु बाहर चला गया-मातरि गतायां शिशुः बहिः अगच्छत्। कुछ

भूतकालिक वाक्यों का अनुवाद

113. उसने पाठ पढ़ा-सः/सा पाठम् अपठत्।

114. गीता ने लेख लिखा- गीता लेखम् अलिखत्।

115. तुम घर गए -त्वं गृहम् अगच्छः ।

116. मैंने कथा सुनी-अहं कथाम् अशृण्वम्।

117. वे लोग घूमने गए- ते भ्रमणाय अगच्छन्।

118. प्यासे ने पानी पिया–तृषार्तः जलम् अपिबत्।

119. रमेश ने गीत गाया– रमेशः गीतम् अगायत्।

120. तुमने रोटी खाई– त्वं रोटिकाम् अखादः।

121. उन दोनों ने नृत्य किया–तौ अनृत्यताम्।

122. खिलाड़ी अच्छा खेले–क्रीडकाः शोभनतया अखेलन्। भूत कालिक वाक्यों का अनुवाद करते समय क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग भी किया जा सकता है। पर;ध्यातव्य है कि वहां क्रिया में भी लिङ्ग में अंतर आ जाता है। जैसे

123. राम ने रावण को मारा– रामः रावणं हतवान्।

124. उसने फल तोड़ा–सः फलं त्रोटितवान्।

125. सीता ने कथा सुनी– सीता कथां श्रुतवती।

126. माता ने भोजन पकाया– माता भोजनं पक्ववती।

127. वे घर गए– ते गृहं गतवन्तः ।

128. बालिकाओं ने गीत गाया–बालिकाः गीतं गीतवत्यः।

129. छात्रा ने लेख लिखा–छात्रा लेखं लिखितवती।

130. उसने सफलता प्राप्त की–सः सफलतां प्राप्रवान्/सा सफलता प्राप्तवती।

131. मैंने पाठ याद किया– अहं पाठं स्मृतवान/स्मृतवती।

132. वे घर गए– ते गृहं गतवन्तः । कुछ भविष्यत्कालिक वाक्यों का अनुवाद

133. मैं घर जाऊंगा द्यजाऊंगी–अहं गृहं गमिष्यामि।

134. तुम भविष्य में क्या करोगे –त्वं भविष्ये किं करिष्यसि?

135. क्या तुम मुझे किताब दोगे? –किं त्वं मह्यं पुस्तकं दास्यसि?

136. बालक भोजन करेगा–बालकः भोजनं करिष्यति।

137. माली वृक्ष सीचेंगे –मालाकाराः वृक्षान् सिञ्चयिष्यन्ति।

138. मजदूर कार्य करेंगे–श्रमिकाः कार्यं करिष्यन्ति।

139. गायक गीत गाएंगे–गायकाः गीतं गास्यन्ति।

140. अभिनेता अभिनय करेंगे– अभिनेतारः अभिनयं करिष्यन्ति।

141. किसान खेत जोतेंगे– कृषकाः क्षेत्रं कर्षयिष्यन्ति।

142. वे प्रवचन सुनेंगे- ते प्रवचनं श्रोष्यन्ति।

143. तुम इस समय क्या करोगे?- त्वम् अधुना किं करिष्यसि?

144. मैं चित्र देखूगा- अहं चित्रं द्रक्ष्यामि।

145. तुम लोग प्रश्न पूछोगे -यूयं प्रश्न प्रक्ष्यथ। आज्ञार्थे वाक्यप्रयोगः

146. वह पुस्तक पढ़े-सः पुस्तकं पठतु। लिखताम।

148. वे लोग दूध पिएँ-ते दुग्धं पिबन्तु।

149. तुम वस्त्र धोओ-त्वं वस्त्राणि प्रक्षालय।

150. तुम दोनों नगर जाओ-युवां नगरं गच्छतम्।

151. तुम लोग कार्य समाप्त करो-यूयं कार्यं समापयत।

152. मैं मन्त्र बोलूँ-अहं मन्त्रं वदानि।

153. तुम लोग व्यर्थ झगड़ा मत करो- यूयं वृथा कलहं मा कुरुत।

154. कोलाहल मत करो-कोलाहलं मा कुरु। विध्यर्थे वाक्यप्रयोगः (विधिलिङ्लकारे वाक्यप्रयोगः)

155. छात्र को ध्यान से पढ़ना चाहिए-छात्रः ध्यानेन पठेत्।

156. दो बालिकाओं को संगीत सीखना चाहिए-बालिके संगीतं शिक्षेताम्।

157. आप लोग शोर न करें-भवन्तः कोलाहलं न कुर्युः।

158. तुम्हें पाठ पढ़ना चाहिए-त्वं पाठं पठेः।

159. तुम दोनों को श्लोक पढ़ना चाहिए-युवां श्लोकं पठेतम्।

160. तुम लोगों को कार्य शीघ्र समाप्त करना चाहिए-यूयं शीघ्रं कार्यं समापयेत।

161. मुझे घर जाना चाहिए-अहं गृहं गच्छेयम्।

162. हम दोनों को लेख लिखना चाहिए-आवां लेखं लिखेव।

163. हम लोगों को भोजन परोसना चाहिए-वयं भोजनं परिवेषयेम।

उत्तराणि

2. पत्रलेखनम्- उत्तराणि

1. (i) शेखर! (ii) स्वनगर-मण्डलेषु (iii) सर्वाणि (iv) लब्धवान् (v) महान्तम् (vi) भवति (vii) दृष्ट्वा (viii) पितरौ (ix) मम (x) अभिन्नः

2. उत्तराणि दिनांकः 09.1.2022 (i) पितृचरणाः (ii) प्रणामाः (iii) कुशलिनः (iv) प्रार्थये (v) समाचारः (vi) शुभम् (vii) विजयी (viii) परितोषम् (ix) प्रतियोगिताः (x) वशंवदः।

3. उत्तराणि- (i) कालिकातातः (ii) पितृमहाभागाः (iii) निवेदयामि (iv) उत्तरपत्राणि (v) शरदवकाशे (vi) शैक्षिकयात्रायाः (vii)पंचशतम् (viii) जनन्यै (ix) प्रणामाः (x) प्रियपुत्रः

4. (i) स्वास्थ्याधिकारी, (ii) पेयजलस्य, (ii) क्षेत्रे, (iv) नलकूपेषु, (v) दुर्गन्ध युक्तं, (vi) रूग्णाः (vii) बहुवारं (viii) सुधारः (ix) यथाशीघ्रं (x) अनुग्रहः।

5. उत्तराणि- (i) प्रणामाः (ii) सेवायाम् (iii) मम (iv) गता (v) तत्र (vi) इच्छामि (vii) भवन्तः (viii) मह्यम् (ix) प्रमाणपत्रम् (i) भवदीयः

6. उत्तराणि- (i) जयपुरतः (ii) सादरवन्दनानि (iii) कुशलिनः (iv) सम्यक् (v) समाप्ता (vi) संस्कृतसम्भाषणशिविरम् (vii) शक्नोमि (viii) ज्ञानवर्धनम् (ix) मातृचरणयोः (x) राहुलः

7. उत्तराणि- (i) मित्र (ii) सप्रेम (iii) इच्छामि (iv) विशालम् (v) सुन्दरम् (vi) अस्य (vii) छात्राः (viii) अध्यापकाः (ix) विस्तरेण (x) मित्रं

8. उत्तराणि- (i) छात्रावासतः (ii) सन्तोषः (iii) पूर्णरूपेण (iv) अध्ययनस्य (v) उत्थाय (vi) घण्टाद्वयम् (vii) विद्यालयात् (viii) विशेषतया (ix) चरणयोः (x) प्रणवः।

9. उत्तरम्- (i) स्नेहस्निग्धे, (ii) पर्यावरणविषये, (iii) रक्षणाय, (iv) नदीजलेषु, (v) जलप्रदूषण-निवारणाय, (vi) वृक्षाः (vii) टङ्कनीयानि,
(viii) न्यूनतमः, (ix) वन्दनीयौ, (x) सुजाता

10. उत्तरम्- (i) सादरम्, (ii) सेवायाम्, (iii) अहम्, (iv) प्रतिनिधि, (v) भवताम्, (vi) आपूत्य, (vii) अभ्यासः (viii) विषये, (ix) व्यवस्था, (x) प्रार्थना।

3. कथापूर्तिः उत्तराणि -

उदाहरण 1. (i) प्रदर्शनीम् (ii) शतशः (iii) आगता (iv) चित्रस्य (v) पक्ष

(vi) अपृच्छत् (vii) प्रदर्शनीवत् (viii) परिचिन्वन्ति (ix) ज्ञात्वा (x) दिनात्।

उदाहरण 2. उत्तराणि-(i) अपव्ययम् (ii) आचरितम् (iii) बन्धो (iv) सदुपयोगम् (v) श्वः (vi) दुर्व्यसनैः (vii) कालान्तरे (viii) रोटिकाखण्डान् (ix) व्रणाः (x) असंयमः

उदाहरण 3. उत्तराणि-(i) श्रीकृष्णस्य (ii) गुरुकुले (iii) अमिलत् (iv) वर्षाणि (v) दरिद्रः (vi) द्वारिकाम् (vii) आलिङ्गनम् (viii) भार्यया (ix) निवारणाय (x) अयच्छत्

उदाहरण 4. उत्तराणि-(i) आस्ताम् (ii) तुलायाम् (iii) नद्याः (iv) घटम् (v) शब्दभिदम् (vi) बाणेन (vii) राजा (viii) तूष्णीम् (ix) अकथयत् (x) पुत्रवियोगे

उदाहरण 5. उत्तराणि-(i) शरणागतवत्सलः (ii) दानशीलताम् (iii) कपोतस्य (iv) राजा (v) समागतः (vi) शरणम् (vii) आहारः (viii) धर्मः (ix) अवदत् (x) तुलायाम्

उदाहरण 6. उत्तराणि- (i) कार्याणि (ii)नृपः (iii)सेना (iv)आरोढुं (v)प्रयत्नम् (vi)वारं-वारं (vii) अवश्यम् (viii)आक्रमणम् (ix)परिश्रमम् (x) सफलाः

उदाहरण 7. उत्तराणि- (i) वने (ii) तदा (iii) नरः (iv)मृगी (v)गृहीत्वा (vi)अश्वम् (vii) गत्वा (viii)व्याकुला (ix) रक्षितुम् (x)प्रसन्ना

उदाहरण 8. उत्तराणि- (i)गुरुकुलम् (ii)पठन्ति (iii)अकरोत् (iv)कोऽपि (v) वैद्यराजः (vi)प्रधानाचार्यः (vii)कुर्वन्ति, (viii)भोजनं (ix)स्वास्थ्य स्य (x) मम

उदाहरण 9. उत्तराणि- (i)आहूय (ii) आनय (iii) अहङ्कारी (iv)भान्त्वा (v)मत्तः (vi) आदिष्टवान् (vii)अन्विष्य (viii)युधिष्ठिराय (ix)नंक्ष्यति (x) तथा

उदाहरण 10. उत्तराणि- (i)कटुता (ii)नाशयेत् (iii)न्यायालयं (iv)रIयकाणि

(v)स्थापयित्वा (vi)-क्रुद्धः (vii)अवदत् (viii)दातारः (ix) विरलाः (x) कुरु

संवादपूर्तिः उत्तराणि

संवाद 1

1. अहं विद्यालयं गच्छामि।
2. अद्य काव्यालि- प्रतियोगिता अस्ति, अहं प्रतियोगितायां भागं ग्रहीतुं सज्जीभूय गच्छामि।
3. विदयालये नास्ति स्पर्धा, वयं शिक्षिकया सह अपरं विद्यालयं गमिष्यामः।
4. धन्यवादः भगिनि।
5. शुभाऽस्ते सन्तु पन्थानः ।

संवाद 2

1. अहं मातुलगृहं गतवान् आसम्। अयं मम मातुलपुत्रः तरुणः । एनम् मिलतु ।
2. अहमपि प्रसन्नोऽस्मि
3. परं भवन्तं दृष्ट्वा तु नः प्रतीयते यत् भवान् संस्कृतच्छात्रः।
4. भवान् आधुनिकैः वस्त्रैः सज्जः, बहुमूल्यं च चलदूरभाषयन्त्रं धारयन् आधुनिक इव प्रतीयते।
5. मम मनसः भ्रान्तिरियम् अपगता यत् संस्कृताध्येतारः रूढिवादिनः भवन्ति ।

संवाद 3

1. अहं संस्कृत श्लोकान् कण्ठस्थीकरोमि।
2. परश्वः संस्कृतश्लोकोच्चारण प्रतियोगिता वर्तते।
3. परमहं श्लोकान् स्मृत्वा अपि विस्मरामि न जाने कीदृशी प्रस्तुतिः भविष्यति?
4. मातः!मां श्लोकानाम् अर्थान् अवबोधय।
5. मातः। अतीव स्नेहमयी असि त्वम। अहं त्वयि भृशं स्निह्यामि।

संवाद 4

1. देहल्यां पर्यावरणप्रदूषणेन स्थितिः भयङ्करी अस्ति इति श्रुतं मया।
2. विद्यालयेषु अपि त्रिदिवसीयः अवकाशः घोषितः।
3. प्रदूषणस्य दुष्प्रभावः तु बालैः सह वयस्कानामपि स्वास्थ्ये भवति।

4. सर्वकारेण सह सामान्यजनैः अपि प्रदूषणवारणस्य प्रयत्नः करणीयः।
5. अपरिहार्यस्थितौ एव गृहात् बहिः गच्छ।यावत् वायौ हानिकारकाणि तत्त्वानि सन्ति,तावत् पर्यन्तं गृहे तिष्ठ।

संवाद 5

1. अहं भवतां विद्यालये स्वपुत्रस्य प्रवेशार्थम् निवेदन कर्तुम् आगतोऽस्मि ।
2. अहं स्थानान्तरितो भूत्वा अत्रागतोऽस्मि, अतएव सत्रस्य मध्ये प्रवेशार्थं प्रार्थये।
3. अहं केन्द्रसर्वकारे वित्तविभागे सहायकाधिकारी अस्मि। मम पत्नी एका गृहिणी अस्ति। सा गृहस्य सर्वाणि कार्याणि सम्पादयति।।
4. आम् महोदय! सा स्नातकपरीक्षोत्तीर्णा अस्ति।
5. शिशोः आचारव्यवहारेण समं शैक्षिकप्रगतेः अपि अवधानं कर्तुं समर्था भवति।

संवाद 6

1. द्वित्राभ्यां मासाभ्यां एक छात्रः उद्दण्ड इव आचरति ।
2. न, न, सः तु अतीव विनयशीलः आसीत्।
3. किं त्वं तस्य परिवर्तितव्यवहारस्य कारणम् अन्विष्टवान्?
4. सर्वेषामुपरि तु व्यक्तिगतावधानं न संभवम्।
5. अहं मनोवैज्ञानिकरीत्या तस्य व्यवहारस्य कारणं ज्ञास्यामि।

संवाद 7

1. मम अल्पाहारपात्रे रोटिका, पनसशाकं चास्ति।
2. मह्यं न रोचते रोटिका, शाकं च।
3. किं तुभ्यं रोचते?
4. अयैव शिक्षिका संतुलिताहारविषये पाठितवती ।
5. रुचिकरं भोजनं सर्वदा स्वास्थ्यप्रदं न भवति।

संवाद 8

1. अहं चिकित्साविज्ञानं पठिष्यामि।

2. उत्तम जीवनलक्ष्यम्।
3. अहं तु चिकित्सको भूत्वा विदेशे जीवनं यापयिष्यामि, इति मम मनसि बलवती इच्छा अस्ति ।
4. भारते अध्ययनं कृत्वा विदेश पलायिष्यसे? किमिदम् उचितम् ? ..
5. स्वदेशं प्रति स्वकर्तव्यस्य उपेक्षा न करणीया।

संवाद 9

1. द्वादशकक्षानन्तरं त्वं कस्मिन् क्षेत्रे भविष्यनिर्माणं करिष्यसि?
2. अहं वस्त्रालंकरणविज्ञानं पठिष्यामि।
3. अहो महदाश्चर्यम्! कक्षाया: सर्वाधिका मेधाविनी छात्रा चित्रकलाक्षेत्रे भविष्यनिर्माणं करिष्यति?
4. अहमपि कृषिविज्ञानं पठित्वा कृषिकार्यं करिष्यामि।
5. अय किम्? वैज्ञानिकरीत्या कृषिकार्यं कृत्वा अहं देशस्य कृषिसम्पद: विकासे योगदानं करिष्यामि।

संवाद 10

1. अहमेव गृहस्य मार्जनं कृत्वा अवकर बहि: प्रक्षिप्तवती ।
2. सर्वे स्वगृहमेव परिष्कुर्वन्ति।
3. अवकरा: अनेकान् रोगान् अपि जनयन्ति।
4. वयम् आरम्भं कुर्म:, शनै: शनै: अन्ये अपि अस्मिन् पुनीतकर्मणि सहयोगिन: भविष्यन्ति।
5. अय विद्यालये स्वच्छताया: महत्त्वविषये आचार्या पाठितवती।

नोट: ये उत्तर केवल छात्रों के अवबोधन और अभ्यास के लिए दिए गए हैं ।यदि छात्र अपनी इच्छा से कोई दूसरा उत्तर देना चाहें, तो उन्हें अवश्य प्रोत्साहित करें, ताकि परीक्षा में मंजूषा न होने की स्थिति में वे स्वयं अपनी इच्छानुसार वाक्यों का संस्कृत अनुवाद कर रिक्त- स्थान की पूर्ति कर सकें।

'ग' भाग

अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्

(i) सन्धि :

परः सन्निकर्षः संहिता

दो या दो से अधिक वर्गों की समीपता के कारण उनमें जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

जैसे- विद्या+ आलयः- विद्यालयः

वार्षिक + उत्सवः- वार्षिकोत्सवः

देव +ईशः- देवेशः

तरु + छाया -तरुच्छाया

जगत्+ ईशः- जगदीशः

बालकः+अयम्- बालकोऽयम्।

सन्धि के तीन भेद होते हैं -स्वर- सन्धि, व्यंजन- सन्धि और विसर्ग- सन्धि । इस अध्याय में हम तीनों सन्धियों पर संक्षेप में विचार करेंगे और पाठ में आए हुए उदाहरणों को समझने का प्रयास करेंगे। 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी जितनी सन्धियाँ हैं, यहाँ हम उस पर संक्षेप में चर्चा करेंगे और पाठों में आए हुए उदाहरणों का अभ्यास करेंगे। इन उदाहरणों का अभ्यास करके छात्र आसानी से अच्छे अंक ला सकेंगे।

स्वर-संधिः- जब स्वर का स्वर से मेल होता है और उस मेल के कारण उनमें विकार उत्पन्न होता है, तो वहाँ स्वर सन्धि होती है। स्वर के स्वर से मेल का तात्पर्य है प्रथम पद का अंतिम अक्षर और बाद वाले पद का पहला अक्षर दोनों ही स्वर होना चाहिए, तभी स्वर सन्धि होगी। इस सन्धि के दीर्घ, गुण, वृद्धि,यण, अयादि ,पूर्वरूप और पररूप आदि भेद होते हैं ।

दीर्घ सन्धिः

अ/आ+आ/आ- आ

इ/ई+इ/ई- ई

उ/ऊ/उ/ऊ- ऊ

ऋ+ऋ– ऋ

गुण सन्धिः

अ/आ+इ/ई– ए

अ/आ+उ/ऊ– ओ

अ/आ+ऋ/ॠ– अर्

अ/आ+लु– अल्

वृद्धि सन्धिः

अ/आ+ए/ऐ– ऐ

अ/आ+ओ/औ– औ

यण सन्धिः

इ/ई+असमान स्वर – य्

उ/ऊ+असमान स्वर – व्

ऋ/ॠ+असमान स्वर – र्

ऌ+असमान स्वर – ल्

अयादि सन्धिः ए+असमान स्वर – अय्

ऐ+असमान स्वर – आय्

ओ+असमान स्वर – अव्

औ+असमान स्वर – आव्

पूर्वरूप सन्धि :

अ+अ – Sए

ओ+अ – Sऔ

पररूप सन्धि :

उपसर्ग का अ+ए – ए.

उपसर्ग का अ+ओ – ओ

व्यञ्जन सन्धि- जब स्वर का व्यञ्जन से अथवा व्यजन का व्यञ्जन से मेल होने पर विकार हो तो ,वहां व्यञ्जन सन्धि होती है। इसके कुछ भेदों पर दृष्टिपात करते हैं

परसवर्ण(अनुस्वार) सन्धि-यदि पद के अंत में **म्** हो और उसके बाद कोई व्यञ्जन वर्ण हो तो म् का अनुस्वार हो जाता है । जैसे- हरिम् + वन्दे- हरिं वन्दे

म् + व्- अनुस्वार

पाठम् + पठति- पाठं पठति

चित्रम्+ पश्यति- चित्रं पश्यति

यदि पदान्त म् के परे कोई वर्गीय व्यंजन हो तो उस व्यञ्जन का पञ्चम वर्ण विकल्प से होता है ।

जैसे -त्वम् करोषि-त्वं करोषि/त्वङ्करोषि

रिपुम्+जयति- रिपुं जयति /रिपुञ्जयति

नदीम्+ तरति- नदीं तरति/नदीन्तरति

छत्व सन्धि(श् को छ)- यदि **श्** के पहले पदान्त में किसी वर्ण का प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण हो या र्, ल, व् अथवा ह हो तो **श्** स्थान पर **छ्** हो जाता है।

जैसे -एतत्+ शोभनम्- एतच्छोभनम्

तत्+श्रुत्वा- तच्छ्रुत्वा

तत्+शिव:- तच्छिव:

जगत्+ शत्रु:- जगच्छत्रु:

तुगागम(च का आगम)- यदि ह्रस्व स्वर के बाद छ आए तो छ के पूर्व च् का आगम होता है।

जैसे तरु + छाया- तरुच्छाया

अनु+छेद:- अनुच्छेद:

परि +छेद:- परिच्छेद:

लक्ष्मी + छाया -लक्ष्मीच्छाया

अनुनासिक- वर्गीय व्यञ्जन के बाद अनुनासिक आने पर वर्गीय व्यञ्जन को अपने वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है।

जैसे- सत् + मतिः- सन्मतिः

वाक् + मयम्- वाङ्मयम्

जगत्+ नाथः- जगन्नाथः

सत् + निधानम- सन्निधानम्

जश्त्व-यदि पदान्त वर्गों के प्रथम वर्गों से परे कोई स्वर अथवा व्यंजन(वर्गों का तीसरा, चौथा वर्ण अथवा य्, र, ल, व्, ह्) में से कोई वर्ण हो तो क्रमशः उसी वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है।

जैसे-दिक् + गजः- दिग्गजः

अच्+अन्तः- अजन्तः

सुप्+अन्तः- सुबन्तः

जगत्+ईशः-जगदीशः

सत्+आचारः-सदाचारः

वाक्+ ईशः- वागीशः

षट्+आननः- षडाननः

विसर्ग- सन्धिः

यदि विसर्ग के उपरांत स्वर अथवा व्यञ्जन हो तो उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह विसर्ग सन्धि कहलाता है।

जैसे अतः +एव- अतएव

रजः+ गुणः- रजोगुणः

नमः+ते- नमस्ते

रविः + उदेति -रविरुदेति आदि।

उत्व-अः+वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण या य, र ,ल या व हो तो विसर्ग का उ हो जाता है और अ के साथ उ के जुड़ने के कारण ओ जाता है।

जैसे बालकः+ हसति-बालको हसति।

मनः+ रथः- मनोरथः

यशः+ गानम्- यशोगानम्

मनः+ हरः--मनोहरः

यदि विसर्ग के पहले और बाद में भी **'अ'** हो तो विसर्ग का **'उ'** हो जाता है और अ तथा उ का गुण **ओ** हो जाता है। साथ ही अगले अ के स्थान पर अवग्रह चिन्ह S लग जाता है।

जैसे कः+ अपि-कोऽपि

मोहनः+ अगच्छत्- मोहनोऽगच्छत्।

सत्व

स्वरः+ च/छ- श्

स्वरः+ ट्/ठ- ष्

स्वरः+ त्/थ्- स्

जैसे- नमः+ते-नमस्ते

धनुः+ टंकारः- धनुष्टंकारः

कः+ चन--कश्चन

विसर्ग+श,ष,स्- विकल्प से श,ष, और स् होता है।

जैसे दुः+ शासनम्- दुःशासनम्/दुश्शासनम्

निः+संदेहः- निः संदेहः/निस्संदेहः नराः+षट्- नराःषट/नराष्षट्

रुत्व-यदि विसर्ग से पहले अ या आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो और विसर्ग के बाद कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवा वर्ण या य, र् ,ल, व् अथवा ह् हो तो विसर्ग का र् हो जाता है।

जैसे -भानुः + अयम्- भानुरयम्

मुनिः + गतः- मुनिर्गतः

सृष्टिः+ एषा- सृष्टिरेषा

वायो:+ इव- वायोरिव

यदि र् के बाद र् हो तो पहले र् का लोप हो जाता है और र् के पूर्व के स्वर का दीर्घ हो जाता है।

जैसे- निर् + रोग:- नीरोग:

गिरि:+ रम्य:- गिरीरम्य:

अंतर्राष्ट्रिय:- अंताराष्ट्रिय:

निर्+ रस:- नीरस:

लोप: -यदि विसर्ग से पहले **अ** हो और विसर्ग के बाद **अ** के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे- अत: + एव-अतएव

राम: + इच्छति- रामइच्छति

क:+ उवाच- क उवाच।

यदि विसर्ग से पहले आ हो और बाद में यदि वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व,ह् या कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है ।

जैसे -नरा:+ आयान्ति- नरा आयान्ति

ता:+नमन्ति- ता नमन्ति

मयूरा:+ नृत्यन्ति- मयूरा नृत्यन्ति

यदि एतद् और तद् के बाद यदि ह्रस्व अ को छोड़कर कोई अन्य वर्ण हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है ।

जैसे -स:+ वदति -स वदति

एष:+ आदेश -एषआदेश:

स:+जयति - स जयति

अभ्यासः

अधोलिखितविक्येषु रेखाङ्क्तपदानां स्थूलपदानां सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कृत्वा लिखत

प्रथमः पाठः

1. वेदमनूच्य आचार्योऽन्तेवासिनम् अनुशास्ति।
2. यान्यनवद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि।
3. युक्ता आयुक्ताः ते ब्राह्मणाः अनुसरणीयाः।
4. यान्यस्माकं सुचरितानि यानि त्वयोपास्यानि। ,
5. स्वाध्यायान्मा प्रमदः ।
6. एषा वेद+उपनिषद्।
7. प्रजातन्तं मां वि+अवच्छेत्सीः।

तृतीयः पाठः

8. एकशरीरसंक्षिप्ता पृथिवी रक्षितव्या + इति।
9. शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा।
10. वनगमननिवृत्तिः पार्थिवस्य+एव तावत्।।
11. कुत उत्पन्नोऽयं दोषः ।
12. अन्यैः नृपैः न+उपपादितम्।
13. उदर्केण गुणेन+अत्र भवितव्यम्
14. यस्याः शक्रसमः+भर्ता।
15. तया भरतोऽभिषिच्यतां राज्य इत्युक्तम्।
16. शुल्के विपणितं राज्यं पुत्रार्थे यदि याच्यते।
17. अपूर्वः खल्वस्यायासः।
18. गृह्णातु+आर्यपुत्रः।
19. दत्तान् वल्कलांस्तावदानय।
20. तावन्मम बालभावःस एव ।
21. हन्त!अस्मान् अविज्ञाय+उपालभसे।

22. मया+एकाकिना किल गन्तव्यम्।

चतुर्थ पाठः

23. वैवस्वतो मनुर्नाम मनीषिणां माननीयः।
24. प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
25. शैशवेभ्यस्तविद्यानां रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये द्य
26. आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव।
27. त्यागाय सम्भृत+अर्थानाम्।
28. रघूनामन्वयं वक्ष्ये तनुवाक्+विभवः+ अपि
29. आर्तस्य यथौषधम्।
30. सः पिता पितरः+ तासाम् केवलं जन्महेतवः।
31. त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदगुलीवोरगक्षता।

पञ्चमः पाठः

32. दौवारिकः गम्भीरस्वरेणैवम् अवादीत्।
33. दौवारिकः+तु तमाकृष्य नयन्नेव प्रचलितः द्य
34. न वयं शिवगणास्तादृशाः।
35. दीपस्य समीपमागत्य सन्यासिनोक्तम्।
36. वयं ब्रह्मणः+अपि+आज्ञां न प्रतीक्षामहे।
37. प्रभूणाम् आज्ञाम् उत्+लङ्य आयातीति आक्रुश्यते
38. सत्यपि दीपप्रकाशे कमप्यनवलोकयन् सः अवादीत्।
39. परं भवान् निज परिचयम् अददत्+ एव+ आयाति +इति+आक्रुष्यते।
40. सत्यं क्षान्तोऽयमपराधः।
41. संवृत्ते किञ्चिदन्धकारे दौवारिकः आगतं प्रत्यागतं च करोति स्म।

षष्ठः पाठः

42. रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहुः।

43. अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्रम्।
44. यस्य न+अस्ति+अन्ध एव सः।
45. चिरं निमग्नोऽपि सुधासमुद्रे न मन्दरः मार्दवमभ्युपैति।
46. मानं लभन्तेऽतितरां जगत्याम्।
47. शूरं कृतजं दृढ़सौहृदञ्च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ।
48. कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीनिषेवते।
49. अनेक संशय+उच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
50. शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः ।
51. क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।

सप्तमः पाठः

52. तदा + अहं तु जीवन्नपि मृतः भविष्यामि।
53. सेतुर्येन महोदधौ विरचितः ।
54. सः यदा पञ्चवार्षिकस्तदा मुञ्जः राजा अभूत्।
55. किमपि वक्तुकामोऽस्मि।
56. न+एकेन+अपि समं गता वसुमती।
57. यद्यपि देवादेशः प्रमाणम् द्य
58. पिता हि+आत्मनः जरां ज्ञात्वा अचिन्तयत्।
57. सिन्धुलः तत्+उत्सङ्गे भोजमात्मानं मुमोच।
60. एतत्+निशम्य वत्सराजः उत्थाय नृपं प्रावोचत्।
61. भोजः+च+अपि चिरं प्रजाःपालितवान्।

नवमः पाठः

62. इत्युक्त्वा ऋतध्वजः तूष्णीम् अतिष्ठत्।
63. कटु सत्यं खलु+एतत्।
64. लक्ष्मीस्तु तव दासी भविष्यति।
65. अवसरः+अयम् आत्मानं प्रकाशयितुम् ।

66. अत्रैव स्थित्वा श्रोष्यामि ।

67. मद्गार्हस्थ्यं तु त्वत्+अधीनं भविष्यति।

68. स्वप्रकृत्यनुकूलः वरः अपि प्राप्यते।

69. रमणीय्नाम् आलाप इव श्रूयते

एकादशःपाठः

70. अहम् आसुरीष्वेव योनिषु क्षिपामि।

71. अज्ञानं च+अभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।

72. निबन्धायासुरी सम्पद् मता।

73. दम्भो दर्पः+ अभिमानः+च क्रोधः पारुष्यमेव च।

74. यक्ष्ये दास्यामीति इति+अज्ञानविमोहिताः।

75. ततो यान्ति+अधमां गतिम्

76. सिद्धः+ अहं बलवान् सुखी।

उत्तरमाला

प्रथमः पाठः

1. आचार्यः+अन्तेवासिनम्
2. यानि+अनवद्यानि
3. युक्ताः+आयुक्ताः
4. यानि + अस्माकम्
5. स्वाध्यायात्+मा
6. वेदोपनिषद्
7. व्यवच्छेत्सीः

तृतीयः पाठः

8. रक्षितव्येति
9. शरीरे +अरिः
10. पार्थिवस्यैव
11. उत्पन्नः + अयम्
12. नोपपादितम्
13. गुणेनात्र
14. शक्रसमो भर्ता
15. इति+उक्तम्
16. पुत्र+अर्थे
17. खलु+अस्य+आयासः
18. गृह्णात्वार्यपुत्रः
19. वल्कलान्+तावत्+आनय

20. तावत्+मम
21. अविज्ञायोपलभसे
22. मयैकाकिना

चतुर्थ पाठः

23. मनुः + नाम
24. भूति+अर्थम्
25. शैशवे+अभ्यस्तविद्यानां
26. आसीत्+महीक्षिताम्+आद्यः
27. सम्भृतार्थानाम्
28. तनुवाग्विभवोऽपि
29. यथा+औषधम्
30. पितरस्तासाम्
31. प्रियः+ अपि+आसीत्+ अङ्गुली+इव+ उरगक्षता

पञ्चमः पाठः

32. गम्भीरस्वरेण+एवम्
32. दौवारिकस्तु
33. शिवगणाः+ तादृशाः
35. सन्यासिना+ उक्तम्
36. ब्रह्मणोऽप्याज्ञाम्
37. उल्लङ्घ्य
38. कम्+अपि+ अनवलोकयन्
39. परिचयमददेवाऽयातीत्याक्रुष्यते
40. क्षान्तः+ अयम्+अपराधः
41. किञ्चित्+ अन्धकारे

षष्ठः पाठः

42. बुधाः+तत्+आहुः
43. प्रलपति+अजस्रम्
44. नास्त्यन्ध
45. निमग्नः+ अपि
46. लभन्ते+ अतितराम्
47. दृढ़सौहृदम्+च
48. कर्माणि+ आरभमाणम्
49. संशयोच्छेदि
50. सहस्रैः+ अपि
51. व्यसनेषु+ असक्तम्

सप्तमः पाठः

52. तदाहम्
53. सेतुः+येन
54. पञ्चवार्षिकः+तदा
55. वक्तुकामः+अस्मि
56. नैकेनापि
57. देव+आदेशः
58. ह्यात्मनः
59. तदुत्संगे

60. एतन्निशम्य
61. भोजश्चापि

नवमः पाठः

62. इति+उक्त्वा
63. खल्वेतत्
64. लक्ष्मीः+तु
65. अवसरोऽयम्
66. अत्र+एव
67. त्वदधीनम्
68. स्वप्रकृति+अनुकूलः
69. आलापः+इव

एकादशःपाठः

70. आसुरीषु+एव
71. चाभिजातस्य
72. निबन्धाय+आसुरी
73. दर्पोऽभिमानश्च
74. इत्यज्ञानविमोहिताः
75. यान्त्यधमाम्
76. सिद्धोऽहम्

(ii) समासः

समसनं समासः

जब दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से तीसरा, नया, संक्षिप्त और विभक्तिरहित पद का निर्माण होता है, तो उसे समास कहते हैं। समास का शाब्दिक अर्थ संक्षेप होता है। संस्कृत में संक्षेपण भाषा –सौंदर्य के लिए अत्यधिक आवश्यक और चामत्कारिक माना जाता है। जिस प्रकार सन्धि में विच्छेद होता है, उसी प्रकार समास में विग्रह होता है ।समास के मूलतः चार भेद होते हैं – अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व और बहुव्रीहि समास। कर्मधारय और द्विगु समास तत्पुरुष के ही भेद हैं, परन्तु संस्कृत साहित्य में इनके अनेक उदाहरण पाए जाते हैं। इन उदाहरणों की संख्या के आधार पर उन्हें स्वतंत्र समास की संज्ञा दी गई है।

हम इस अध्याय में परीक्षा के लिए उपयोगी समासों और उनके भेदों पर चर्चा करेंगे

अव्ययीभाव समास– "पूर्वपदप्रधानः अव्ययीभावः"– जिस समास में पहला पद प्रधान होता है और वह पहला पद निश्चित रूप से अव्यय होता है, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

जैसे यथाशक्ति–शक्तिम् अनतिक्रम्य

उपगङ्गम्-गङ्गाया: समीपम्

सचक्रम्-चक्रेण सहितम्

अनरूपम्-रूपस्य योग्यम

अनुरथम्- रथस्य पश्चात्

निर्मक्षिकम्-मक्षिकाया: अभाव:

प्रत्येकम्- एकम् एकम्

द्वन्द्व समास:- "उभयपदप्रधान: द्वंद्व:" जिस समास में दोनों ही पद बराबर रूप से प्रधान होते हैं, वह द्वंद्व कहलाता है।

इतरेतर द्वन्द्व :

जैसे- रामलक्ष्मणौ- राम: लक्ष्मण: च

रामसीते- राम: च सीता च।

पत्रपुष्पफलानि-पत्रं च पुष्पं च फलं च।

समाहार: द्वन्द्व:

पाणिपादम्-पाणी च पादौ च,तेषां समाहार:

अहोरात्रम्-अहश्च रात्रिश्च,तयो: समाहार:

अहिनकुलम्-अहिश्च नकुलश्च

तत्पुरुष समास:- "उत्तरपदप्रधान: तत्पुरुष:" जिस समास में बाद वाला पद प्रधान होता है उसे तत्पुरुष कहते हैं।

जैसे-ग्रामगत:- ग्रामं गत:

बाणहत:-बाणेन हत:

यज्ञबलि:-यज्ञाय बलि:

वृक्षपतितम्- वृक्षात् पतितम्

राजपत्र:- राज्ञ: पुत्र:

कार्यनिपुण:-कार्ये निपुण:

बहुव्रीहि समासः- "अन्यपदप्रधानः बहुव्रीहिः" जिस समास में न पहला पद प्रधान होता है और न बाद वाला पद ,बल्कि कोई तीसरा अन्य पद प्रधान होता है वह बहुव्रीहि समास होता है।

जैसे-सामान्य बहुव्रीहिः

पीताम्बरः -पीतम् अम्बरं यस्य सः

नीलकण्ठः- नीलः कण्ठः यस्य सः

लम्बोदरः- लम्बः उदरः यस्य सः

मुग्धमतिः- मुग्धा मतिः यस्य सः

वीरपुरुषः-वीराः पुरुषाः यस्मिन्।

व्यधिकरण बहुव्रीहिः

गदापाणिः - गदा पाणौ यस्य सः

चन्द्रमौलिः- चन्द्रः मौलौ यस्य सः

सहपूर्वःबहुव्रीहिः

सपरिवारः-सह परिवारेण यः सः

सकर्मकः-सह कर्मणा यः सः

सपुत्रः-सह पुत्रेण यः सः

नञ् बहुव्रीहिः

अपुत्रः-नास्ति पुत्रः यस्य सः

अनूदरीः-न उदरं यस्याः सा

प्रादि बहुव्रीहिः

निर्दयः-निर्गता दया यस्मात्

निष्करुणः-निर्गता करुणा यस्मात्

उपमानपूर्वपदः बहुव्रीहिः

गजाननः-गजस्य आननम् इव आननं यस्य सः

पाषाणहृदयः- पाषाण इव हृदयं यस्य सः

कर्मधारय समासः-जिस समास में विशेषण- विशेष्य या उपमान- उपमेय भाव हो वह समास कर्मधारय होता है।

जैसे- कृष्णसर्पः- कृष्णः च असौ सर्पः

नीलोत्पलम्- नीलं च तत् उत्पलम्

जीर्णोद्यानम्- जीर्णं च तत् उद्यानम्

पीताम्बरम्- पीतं च तत् अम्बरम्

घनश्यामः- घन इव श्यामः

कमलमुखम्- कमल इव मुखम्

द्विगु समासः- "संख्यापूर्वो द्विगुः" और "समाहारो द्विगुः"--जिस समय समास में पहला पद संख्यावाची हो और समाहार अर्थ बोधित होता हो , वह द्विगु समास होता है।

जैसे त्रिभुवनम्- त्रयाणां भुवनानां समाहारः

पञ्चवटी- पञ्चाना वटाना समाहारः

सप्तर्षिः- सप्तानां ऋषीणां समाहारः

अष्टाध्यायी- अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः नवरात्रम्- नवानां रात्रीणां समाहारः

अभ्यासः

2. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां/स्थूलपदानां समुचितं समस्तपदं विग्रहवाक्यं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत

प्रथमः पाठः

1. यानि <u>अनवद्यानि</u> कर्माणि तानि सेवितव्यानि

   (क) न वद्यानि (ख) अन् अवद्यानि (ग) न अवद्यानि

2. यत्र <u>कर्मणि विचिकित्सा</u> स्यात् ।

   (क) कर्मविश्वासः (ख) कर्मविचिकित्सा (ग) कर्मणः द्विविधा

3. एषा वेदोपनिषद।

   (क) वेदे उपनिषद् (ख) <u>वेदानाम् उपनिषद्</u> (ग) वेदोपरान्तम् उपनिषद्

4. यानि अस्माकं सुचरितानि, तानि सेवितव्यानि ।

(क) शोभनानि चरितानि

(ख) शोभनं चरितानि

(ग) शोभनानि चरितानि यस्य सः

5. धर्मकामाः यथा वर्तेरन् तथा वर्तेथाः।

(क) धर्मे कामाः

(ख) धर्मे कामाः येषां ते

(ग) धर्माः कामाः च

6. माता एव देवो यस्य भव।

(क) मातृदेवः (ख) मातादेव (ग) पितरौ

7. अतिथिदेवो भव।

(क) अतिथिः एव देवः यस्य सः

(ख) अतिथिः एव देवः

(ग) अतिथिः च देवः च

8. प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः।

(क) प्रजायाः तन्तुम् (ख) प्रजा एव तन्तः

(ग) प्रजा च तन्तःच

तृतीयः पाठः

9. धैर्यसागरः लक्ष्मणः केन क्षोभितः द्य

(क) धैर्येण सागरः (ख) धैर्यस्य सागरः (ग) धैर्याय सागरः

10. अहं लोकं युवतिरहितं कर्तुम् वाञ्छामि

(क) युवतिभिःरहितम् (ख) युवतिभ्यः रहितम् (ग) युवतिं रहितम् ।।

11. लक्ष्मणः यथाशक्ति प्रतिरोधं करोति द्य

(क) शक्तेः अनुसारेण (ख) यथा शक्तिम् (ग) शक्तिम् अनतिक्रम्य

12. ललाटपुटसंस्थिता लक्ष्मणस्य भृकुटिः।

(क) ललाटे स्थितः पुटः

(ख) ललाटस्य पुटे संस्थिता

(ग) ललाटे पुटः यस्य सः

13. मे बाल-भावः स एव ।

(क) बालस्य भावः (ख) बाल्ये भावः (ग) बाल्यकालः

14. क्रमप्राप्ते हृते राज्ये भुवि शोच्यासने नृपे।

(क) क्रमे प्राप्ते (ख) क्रमात् प्राप्ते (ग) क्रमस्य प्राप्ते

15. लक्ष्मणः सक्रोधम् अवादीत्

(क) क्रोधेन सहितम (ख) क्रोधात् सहितम् (ग) क्रोधस्य सहितम्

16. वनगमनात् निवृत्तिः पार्थिवस्य।

(क) वननिवृत्तिः (ख) वनगमनम् (ग) वनगमननिवृत्तिः

17. अहं युवतिरहितं लोकं कर्तुं कृतनिश्चयः।

(क) कृतः निश्चयः यस्य सः

(ख) कृतः निश्चयः येन सः

(ग) कृतं निश्चयं यस्य सः

18. किं क्षमा निर्मनस्विता?

(क) निर्गता मनस्विता यस्याः सा

(ख) निर्गता मनस्विता यस्मिन् सा

(ग) मनस्विताया: अभावः

19. एकस्मिन् शरीरे संक्षिप्ता पृथ्वी रक्षितव्येति।

(क) एकशरीरा (ख) शरीरसंक्षिप्ता (ग) एकशरीरसंक्षिप्ता

20. सुमित्रामातः !इतस्तावत्।

(क) सुमित्रा माता यस्य सः

(ख) सुमित्रा माता

(ग) सुमित्रायाः माता

चतुर्थःपाठः

21. दुष्टः <u>उरगक्षता</u> अगुलीव त्याज्यः द्य

(क) उरगेण क्षता (ख) उरगस्य क्षता (ग) उरगे क्षता

22. तस्य गुणाः <u>गुणानुबन्धित्वात्</u> सप्रसवाः इव।

(क) गुणानाम् अनुबन्धित्वात्

(ख) गुणेषु अनुबन्धित्वात्

(ग) गुणैः सह अनुबन्धित्वात्

23. दिलीपस्य गुणाः <u>सप्रसवाः</u> इवद्य

(क) समानः प्रसवः येषाम्

(ख) समानः च प्रसवः च

(ग) समानः प्रसवः

24. <u>अनन्यशासनाम्</u> उर्वी शशास।

(क) न अस्ति अन्यस्य शासनं यस्यां,ताम्

(ख) अस्ति अन्यस्य शासनं यस्यां,ताम्

(ग) न अस्ति अन्यस्य शासनम्

25. त्यागाय <u>सम्भृतार्थानाम्</u>।

(क) सम्भृताः अर्थाः यैः तेषाम्

(ख) सम्भृताः अर्थाः

(ग) सम्भृतानाम् अर्थानाम्

26. <u>तनूवाग्विभवः</u> अपि अहं रघुणामन्वयं वक्ष्ये।

(क) तन् वाग्विभव यस्य सः

(ख) तनु वाग्विभवम्

(ग) तनः वाग्विभवः यत्र

27. <u>आकारसदृशप्रज्ञः</u> प्रज्ञया सदृशागमः।

(क) आकारेण सदृशी प्रज्ञा

(ख) आकारः एव प्रज्ञा यस्य सः

(ग) आकारेण सदृशी प्रज्ञा यस्य सः

28. त्यागाय मितं <u>भाषन्ते ये तेषाम्</u>।

(क) मितभाषिणाम् (ख) मितभाषी (ग) मितभाषिणः

पञ्चमः पाठः

29. कथं संयासिनोऽपि <u>कठोरभाषणैः</u> तिरस्करोषि?

(क) कठोरैः भाषणैः

(ख) कठोरस्य भाषणैः

(ग) कठोरं भाषणैः

30. सः <u>साक्षेपम्</u> अवोचत्।

(क) आक्षेपेण समम् (ख) आक्षेपेण तुल्यम् (ग) आक्षेपेण सहितम्

31. स एव <u>उचितम् अनतिक्रम्य</u> व्यवहरिष्यति।

(क) यथोचितम् (ख) सोचितम् (ग) यदोचितम्

32. <u>प्राप्तपरिचयपत्राः</u> एव प्रविशन्ति।

(क) प्राप्तं परिचयपत्रं यैः ते

(ख) प्राप्तं परिचयपत्रं यस्मात् सः

(ग) प्राप्त परिचयपत्रम् येन सः

33. त्वादृशाः एव <u>पुरस्कारभाजनानि</u> भवन्ति।

(क) पुरस्कारस्य भाजनानि

(ख) पुरस्कारे भाजनानि

(ग) पुरस्काराय भाजनानि

34. अधुनैव <u>परिष्कृतं पारदभस्म</u> तुभ्यं दास्यामि।

(क) उपपारदभस्म (ख) परिष्कृतपारदभस्म (ग) परिष्कृतपारदभस्मस्य

35. महाराजस्य सन्ध्यायाः उपासनायाः च समये भवादृशानां प्रवेशसमयः भवति।

(क) सन्ध्यायां उपासनासमये

(ख) सन्ध्या –उपासनायाःसमये

(ग) सन्ध्योपासनसमये

36. ये उत्कोचलोभेन स्वामिनं वञ्चयन्ति ते नीचाः भवन्ति।

(क) उत्कोच एव लोभः यस्य सः

(ख) उत्कोचस्य लोभेन

(ग) उत्कोचम् अनतिक्रम्य

षष्ठः पाठः

37. दीर्घप्रयासेन कृतं हि वस्तु।

(क) दीर्घात् प्रयासेन (ख) दीर्पण प्रयासेन (ग) दीर्घ प्रयासेन

38. कर्णामृतं सूक्तीनां रसं विमुच्य दोषेषु यत्नः ।

(क) सुरसम् (ख) सूक्तिसौरभम् (ग) सूक्तिरसम्

39. अपण्डितानां अज्ञतायाः छादनं स्वायत्तम् एकान्तगुणम्।

(क) स्व आयत्तम् (ख) स्वस्मिन् आयत्तम् (ग) स्वस्य आयत्तम्

40. निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः।

(क) केलये वनम् (ख) केलोः वनम् (ग) वनं च केलिः च

41. उत्साहेन सम्पन्नम् अदीर्घसूत्रम्।

(क) उत्साहसम्पन्नम् (ख) उत्साहयुक्तम् (ग) उत्साहाभावः

42. कर्णाभ्याम् अमृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु यत्नः ।

(क) कर्णामृतम् (ख) कर्णे अमृतम् (ग) कर्णाय अमृतम्

43. निरीक्षते कण्टकजालमेव।

(क) कण्टकाणां जालम् (ख) कण्टकात् जालम् (ग) कण्टके जालम्

44. एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।

(क) विद्यया युक्तेन (ख) विद्यायाःयुक्तेन (ग) विद्यया रहितेन

45. शूरं कृतज्ञं दृढ़सौहृदं च।

(क) कृतस्य विस्मरणं करोति यः तम्

(ख) कृतं जानाति यः तम्

(ग) कृतस्य ज्ञाता

46. पाण्डित्येन सम्भृता मतिः यस्य सः मितप्रभाषी भवति।

(क) पाण्डित्यसम्भृतमतिः

(ख) पण्डितमतिः

(ग) पाण्डित्येनसम्भृतमतिः

सप्तमः पाठः

47. तत्किमपि यथेच्छं पृच्छ।

(क) इच्छायाः अनुसारेण

(ख) यथा इच्छा

(ग) इच्छाम् अनतिक्रम्य

48. राजाज्ञा पालनीया एव इति।

(क) राजायाः आज्ञा

(ख) राज्ञः आज्ञा

(ग) राजस्य आज्ञा

49. आत्मनःवधस्य योजनां ज्ञात्वा भोजः कथितवान।

(क) वधस्ययोजनाम् (ख) वधयोजनाम् (ग) वधाय योजनाम्

50. राजन्! पुत्रवधो न कदापि हिताय भवति इति।

(क) पुत्रस्य वधः (ख) पुत्राय वधाय (ग) पुत्राय वधे

51. अपराधेन सह अपि मे वचः क्षन्तव्यम्।

(क) अपराधसमम् (ख) अपराधम् (ग) सापराधम्

52. कृतयुगस्य अलङ्कारभूतः मान्धाता गतः ।

(क) कृतालंकारः

(ख) युगालंकारः

(ग) कृतयुगालङ्कारभूतः

53. सेतुर्येन महोदधौ विरचित क्वासौ दशास्यान्तकः?

(क) दश आस्यानि यस्य,तस्य अन्तकः

(ख) दशास्य अन्तकः

(ग) दशान्तकःएव यः

54. येन महान् चासौ उदधिः विरचितः!

(क) महानोदधिः (ख) महान् उदधिः (ग) महोदधिः

नवमःपाठः

55. परस्परमनुव्रतौ पतिपत्न्यौ त्रिवर्ग साधयतः द्य

(क) पतिः च पत्नी च

(ख) पति च पत्नयौ च

(ग) पती च पत्नयौ च

56. स्वशिशूनां चरित्रनिर्माणं मातुराधीनम् ।

(क) चरित्रेण निर्माणम्

(ख) चरित्रस्य निर्माणम्

(ग) चरित्रात् निर्माणम्

57. गृहस्थाश्रमः अपि एका प्रयोगशाला वर्तते।

(क) प्रयोगस्य शाला (ख) प्रयोगेण शाला (ग) प्रयोगाय शाला

58. युधि स्थिरः स्वपत्नी हारितवान्।

(क) युधिस्थरः (ख) युधस्थिरः (ग) युधिष्ठिरः

59. अहं ब्रह्मविद्यां सरसां विधाय शिशुभ्यः शिक्षणं प्रदास्यामि।

(क) रससहिताम् (ख) रसेन सहिताम् (ग) सर साम्

60. अहं विवाहबन्धनं स्वीकर्तुं न इच्छामि ।

(क) विवाहात् बन्धनम् (ख) विवाहस्य बन्धनम् (ग) विवाहेन बन्धनम्

61. संसारे <u>विभिन्न प्रकृतिका:</u> पुरुषा: वसन्ति ।

(क) विभिन्ना प्रकृतय:येषां ते

(ख) विभिन्ना एव प्रकृतय:

(ग) विभिन्ना प्रकृतय: यस्य स:

62. राजकुमारी <u>सर्वविद्यानिष्णाता</u> जाता

(क) सर्वाया: विद्याया: निष्णाता

(ख) सर्वासु विद्यासु निष्णाता

(ग) सर्वया विद्यया निष्णाता

63. <u>यथाप्रकृति</u> वर:अपि प्राप्यते ।

(क) यथा प्रकृते:

(ख) प्रकृतिम् अनतिक्रम्य

(ग) प्रकृत्या: अनुरूपम्

64. <u>ज्ञानोदधि:</u> अनन्तपार: ।

(क) ज्ञानस्य उदधि: (ख) ज्ञाने उदधि: (ग) ज्ञानम् उदधि:

65. <u>पितरौ</u> सभाजयितुं गमिष्याव: द्य

(क) मातरं च पितरं च

(ख) मातरि पितरि च

(ग) मातरौ पितरौ च

66. <u>धर्मार्थकामा:</u> उपासनीया: ।

(क) धर्मश्च अर्थश्च कामश्च

(ख) धर्मे अर्थे कामे च

(ग) धर्मस्य अर्थस्य कामस्य च

67. <u>प्रकृते: सौन्दर्यम्</u> अवलोकयन् ऋतध्वज: प्रविशति।

(क) प्रकृतसौन्दर्यम् (ख) प्रकृतिसौन्दर्यम् (ग) प्रकृते सौन्दर्यम्

एकादशः पाठः

68. तान् नरेषु अधमान आसुरीषु योनिषु क्षिपामि।

(क) नराधमान् (ख) नरधमान् (ग) नरेषुधमान्

69. परमात्मा अनश्नन् एव अभिचाकशीति।

(क) अन् अश्नन् (ख) अन् श्नन् (ग) न अश्नन्

70. अभयं सत्वसंशुद्धिः ज्ञानयोगव्यवस्थितिः द्य

(क) सत्वस्य संशुद्धिः (ख) सत्वे संशुद्धिः (ग) सत्वात् संशुद्धिः

71. यक्ष्ये दास्यामि इति अज्ञानविमोहिताः।

(क) अज्ञानी विमोहिताः

(ख) अज्ञानेन विमोहिताः

(ग) अज्ञानता च विमोहिता च

72. उग्रकर्माणः क्षयाय प्रभवन्ति।

(क) उग्रं च कर्म च

(ख) उग्रं च तत् कर्म

(ग) उग्रं कर्म येषां ते

73. अनेकचित्तविभ्रान्ताः अशुचौ नरके पतन्ति।

(क) अनेकत्र चित्तं विभ्रान्तं येषां ते

(ख) अनेकेषु चित्तं विभ्रान्तम्

(ग) अनेकं च चित्तं च विभ्रान्तः च

उत्तरमाला

प्रथमः पाठः

1. यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि

(ग) न अवद्यानि

2. यत्र कर्मणि विचिकित्सा स्यात् ।

(ख) कर्मविचिकित्सा

3. एषा वेदोपनिषद्।

(ख) वेदानाम् उपनिषद्

4. यानि अस्माकं सुचरितानि,तानि सेवितव्यानि ।

(क) शोभनानि चरितानि

5. धर्मकामाः यथा वर्तेरन् तथा वर्तेथाः ।

(ख) धर्मे कामाः येषां ते

6. माता एव देवो यस्य भव।

(क) मातृदेवः

7. अतिथिदेवो भव।

(क) अतिथिः एव देवः यस्य सः

8. प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः।

(क) प्रजायाः तन्तुम्

तृतीयः पाठः

9. धैर्यसागरः लक्ष्मणः केन क्षोभितः द्य

(ख) धैर्यस्य सागरः ।

10. अहं लोकं युवतिरहितं कर्तुम् वाञ्छामि ,

(क) युवतिभिःरहितम् ।

11. लक्ष्मणः यथाशक्ति प्रतिरोधं करोति।

(ग) शक्तिम् अनतिक्रम्य ।

12. ललाटपुटसंस्थिता लक्ष्मणस्य भृकुटिः।

(ख) ललाटस्य पुटे संस्थिता

13. मे बाल-भावः स एव ।

(क) बालस्य भावः

14. 23.क्रमप्राप्ते हृते राज्ये भुवि शोच्यासने नृपे।

(क) क्रमे प्राप्ते

15. लक्ष्मणः सक्रोधम् अवादीत्

(क) क्रोधेन सहितम्

16. वनगमनात् निवृत्तिः पार्थिवस्य।

(ग) वनगमननिवृत्तिः

17. अहं युवतिरहितं लोकं कर्तुं कृतनिश्चयः ।

(ख) कृतः निश्चयः येन सः

18. किं क्षमा निर्मनस्विता?

(क) निर्गता मनस्विता यस्याः सा

19. एकस्मिन् शरीरे संक्षिप्ता पृथ्वी रक्षितव्येति।

(ग) एकशरीरसंक्षिप्ता

20. सुमित्रामातः !इतस्तावत्।

(क) सुमित्रा माता यस्य सः

चतुर्थःपाठः

21. दुष्टः उरगक्षता अगुलीव त्याज्यः द्य

(क) उरगेण क्षता

22. तस्य गुणाः गुणानुबन्धित्वात् सप्रसवाः इव।

(ग) गुणैः सह अनुबन्धित्वात्

23. दिलीपस्य गुणाः सप्रसवाः इव।

(क) समानः प्रसवः येषाम्

24. अनन्यशासनाम् उर्वी शशास।

(क) न अस्ति अन्यस्य शासनं यस्यां, ताम्

25. त्यागाय सम्भृतार्थानाम्।

(क) सम्भृताः अर्थाः यैः तेषाम्

26. तनुवाग्विभवः अपि अहं रघूणामन्वयं वक्ष्ये।

(क) तनु वाग्विभवं यस्य सः

27. आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः ।

(ग) आकारेण सदृशी प्रज्ञा यस्य सः

28. त्यागाय मितं भाषन्ते ये तेषाम्।

(क) मितभाषिणाम्

पञ्चमः पाठः

29. कथं संयासिनोऽपि कठोरभाषणैः तिरस्करोषि?

(क) कठोरैः भाषणैः

30. सः साक्षेपम् अवोचत्।

(ग) आक्षेपेण सहितम्

31. स एव उचितम अनतिक्रम्य व्यवहरिष्यति।

(क) यथोचितम्

32. प्राप्तपरिचयपत्राः एव प्रविशन्ति।

(क) प्राप्तं परिचयपत्रं यैः ते

33. त्वादृशाः एव पुरस्कारभाजनानि भवन्ति।

(क) पुरस्कारस्य भाजनानि

34. अधुनैव परिष्कृतं पारदभस्म तुभ्यं दास्यामि।

(ख) परिष्कृतपारदभस्म

35. महाराजस्य सन्ध्यायाः उपासनायाः च समये भवादृशानां प्रवेशसमयः भवति।

(ग) सन्ध्योपासनसमये

36. ये उत्कोचलोभेन स्वामिनं वञ्चयन्ति ते नीचाः भवन्ति।

(ख) उत्कोचस्य लोभेन

षष्ठः पाठः

37. दीर्घप्रयासेन कृतं हि वस्तु।

(ख) दीर्घेण प्रयासेन

38. कर्णामृतं सूक्तीनां रसं विमुच्य दोषेषु यत्नः ।

(ग) सूक्तिरसम्

39. अपण्डितानां अज्ञतायाः छादनं स्वायत्तम् एकान्तगुणम्।

(ख) स्वस्मिन् आयत्तम्

40. निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः।

(क) केलये वनम्

41. उत्साहेन सम्पन्नम् अदीर्घसूत्रम्।

(क) उत्साहसम्पन्नम्

42. कर्णाभ्याम् अमृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु यत्नः ।

(क) कर्णामृतम्

43. निरीक्षते कण्टकजालमेव।

(क) कण्टकाणां जालम्

44. एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।

(क) विद्यया युक्तेन

45. शूरं कृतजं दृढ़सौहृदं च।

(ख) कृतं जानाति यः तम्

46. पाण्डित्येन सम्भृता मतिः यस्य सः मितप्रभाषी भवति।

(क) पाण्डित्यसम्भृतमतिः

सप्तमः पाठः

47. तत्किमपि यथेच्छं पृच्छ ।

(ग) इच्छाम् अनतिक्रम्य

48. राजाज्ञा पालनीया एव इति।

(ख) राज्ञः आज्ञा

49. आत्मनः वधस्य योजनां ज्ञात्वा भोजः कथितवान्।

(ख) वधयोजनाम्

50. राजन्! पुत्रवधो न कदापि हिताय भवति इति।

(क) पुत्रस्य वधः

51. अपराधेन सह अपि मे वचः क्षन्तव्यम्।

(ग) सापराधम्

52. कृतयुगस्य अलङ्कारभूतः मान्धाता गतः।

(ग) कृतयुगालङ्कारभूतः

53. सेतुर्येन महोदधौ विरचित क्वासौ दशास्यान्तकः ?

(क) दश आस्यानि यस्य,तस्य अन्तकः

54. येन महान् चासौ उदधिः विरचितः!

(ग) महोदधिः

नवमःपाठः

55. परस्परमनुव्रतौ <u>पतिपत्न्यौ</u> त्रिवर्गं साधयतः ।

(क) पतिः च पत्नी च

56. स्वशिशूनां <u>चरित्रनिर्माणं</u> मातुराधीनम् ।

(ख) चरित्रस्य निर्माणम्

57. गृहस्थाश्रमः अपि एका <u>प्रयोगशाला</u> वर्तते।

(क) प्रयोगाय शाला

58. <u>युधि स्थिर</u>ः स्वपत्नी हारितवान् ।

(ग) युधिष्ठिरः

59. अहं ब्रह्मवियां सरसां विधाय शिशुभ्यः शिक्षणं प्रदास्यामि।

(ख) रसेन सहिताम्

60. अहं विवाहबन्धनं स्वीकर्तुं न इच्छामि ।

(ख) विवाहस्य बन्धनम्

61. संसारे विभिन्नप्रकृतिकाः पुरुषाः वसन्ति।

(क) विभिन्नाः प्रकृतयःयेषां ते

62. राजकुमारी सर्वविद्यानिष्णाता जाता

(ख) सर्वासु विद्यासु निष्णाता

63. यथाप्रकृति वरःअपि प्राप्यते ।

(ख) प्रकृतिम् अनतिक्रम्य

64. ज्ञानोदधिः अनन्तपारः ।

(क) ज्ञानस्य उदधिः

65. पितरौ सभाजयितुं गमिष्यावः ।

(क) मातरं च पितरं च

66. धर्मार्थकामाः उपासनीयाः।

(क) धर्मश्च अर्थश्च कामश्च

67. प्रकृतेः सौन्दर्यम् अवलोकयन् ऋतध्वजः प्रविशति।

(ख) प्रकृतिसौन्दर्यम्

एकादशः पाठः

68. तान् नरेषु अधमान आसुरीषु योनिषु क्षिपामि।

(क) नराधमान्

69. परमात्मा अनश्नन एव अभिचाकशीति।

(ग) न अश्नन्

70. अभयं सत्वसंशुद्धिः ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।

(क) सत्वस्य संशुद्धिः

71. यक्ष्ये दास्यामि इति अज्ञानविमोहिताः।

(ख) अज्ञानेन विमोहिताः

72. उग्रकर्माणः क्षयाय प्रभवन्ति।

(ग) उग्रं कर्म येषां ते

73. अनेकचित्तविभ्रान्ताः अशुचौ नरके पतन्ति।

(क) अनेकत्र चित्तं विभ्रान्तं येषां ते

(iii) प्रत्ययाः

किसी भी शब्द अथवा धातु के बाद जुड़ने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं। यों तो प्रत्यय के पांच प्रकार होते हैं और वे शब्दों में जुड़ कर उनके अर्थों में या तो परिवर्तन करते हैं या उनका विस्तार करते हैं। इस अध्याय में हम पाठ्यक्रम के अनुसार कुछ कृदन्त, तद्धित और स्त्री प्रत्ययों के ऊपर दृष्टि डालेंगे। कृदन्त- प्रत्ययाः-क्त, क्तवतु, तव्यत्, अनीयर् शतृ, शानच्, क्तिन् च।

कृदन्त प्रत्यय धातुओं में जुड़ते हैं।

क्त-पठ्+क्त-पठित

गम्+क्त-गत

क्तवतु- पठ्+क्तवतु-पठितवत्

लिख्+क्तवतु-लिखितवत्

गम्+क्तवतु-गतवत्

पठितवान्	पठितवन्तौ	पठितवन्तः(पु.)
पठितवती	पठितवत्यौ	पठितवत्यः (स्त्री.)
पठितवत्	पठितवन्ती	पठितवन्ति(नपुं)

तव्यत्- पठ्+तव्यत्- पठितव्य

कृ+तव्यत्- कर्तव्य

श्रु+तव्यत्-श्रोतव्य

अनीयर्-कृ+अनीयर्-करणीय

स्मृ+अनीयर्-स्मरणीय

शतृ-गम्+शतृ-गच्छन्

हस्+शतृ-हसन्

शानच्-सेव्+शानच्-सेवमानः

मुद्+शानच्-मोदमानः

क्तिन्-गम्+क्तिन्-गतिः

मन्+क्तिन्–मतिः

तद्धित– **प्रत्ययाः** तद्धित प्रत्यय संज्ञा सर्वनाम आदि में जुड़ते हैं।

मतुप, इन्, ठक्, त्व, तल्।

मतुप्– धन+मतुप्–धनवान्

श्री+मतुप्–श्रीमान्

इन–गुण+इन्– गुणिन्

बल+इन्–बलिन्

ठक्–इतिहास+ठक्–ऐतिहासिक

भूत+ठक–भौतिक

त्व–गुरु+त्व–गुरुत्व

घन+त्व–घनत्व

तल–जड़+ तल– जड़ता

विद्वस्+ तल्– विद्वत्ता

स्त्री– प्रत्ययाः–टाप, ङीप् च।

टाप्

आचार्य+टाप्– आचार्या

बालक+टाप्–बालिका

ङीप्

नद्+ङीप्–नदी

विद्वस्+ङीप्–विदुषी

अभ्यासाः

अधोलिखितविक्येषु स्थूलपदानां प्रकृतिपदसंयोगं विभाजनं वा प्रदत्तेभ्यः विकल्पेभ्यः चिनुत

प्रथमः पाठः

1. सत्यान्न <u>प्रमदितव्यम्</u>।

क.प्र+ मद्+ तव्यत्

ख.प्र+ मद्+ शानच्

ग.प्र+ मद्+ अनीयर्

2. युक्ताः आ+युज्+क्त च यथा वर्तेरन् तथा वर्तेथाः।

(क) आयुज्क्ता (ख) आयुक्ताः (ग) आयुषः

तृतीयः पाठः

3. श्लाघ् + अनीयर् काले अत्रभवती वारयितुं नोत्सहे।

(क) श्लाघनीयर् (ख) श्लाघनीये

(ग) श्लानीये

4. लक्ष्मणस्य एषा भृकुटिः नियति इव वि + अव + स्था + क्त

(क) व्यवस्थिता (ख) व्यवस्थात (ग) विअवस्थितः

5. ताते धनुर्न मयि सत्यम्- अव+ईक्ष+शानच् ।

(क) अवेक्ष्यमाणे (ख) अवीक्षशानच (ग) अवीक्षमाने

6. शोकादवचनात् राजा हस्तेनैव विसर्जितः।

(क) वि+सर्ज+तः (ख) वि+सृज्+क्त (ग) वि+सर्जि+क्त

7. मैथिल+ङीप्! किं व्यवसितम्?

(क) मैथिलि! (ख) मिथिला (ग) मैथिली

8. हन्त!निवेदितम् अप्रभुत्वम्।

(क) अप्रभु+त्वम् (ख) अप्रभु+त्वल (ग) अप्रभु+त्व

9. सहधर्मचारिन्+ङीप् खल्वहम्।

(क) सहधर्मचारिणी (ख) सहधर्मचारिणि (ग) सहधर्मचारिन्

10. मया पुत्रवत्+ङीप् च या।

(क) पुत्रवति (ख) पुत्रवती (ग) पुत्रवानी।।

11. वर्षाणि खलु वस्तव्यं चतुर्दश वने त्वया।

(क) वस्+तव्यम् (ख) वस्त+व्यम् (ग) वस्+तव्यत्

12. किं क्षमा निर्मनस्विता।

(क) निर्+मनस्वि+ तल्

(ख) निर्+मनस्वि + ता

(ग) निर्+मनस्वि + त्व

चतुर्थः पाठः

13. शुद्धि+ मतुप तदन्वये दिलीपः प्रसूतः ।

(क) शुद्धिमत् (ख) शुद्धिमतुप (ग) शुद्धिमति

14. वैवस्वतः मनु म मनीषिणां मन+णिच+अनीयर् आसीत्।

(क) माननीयः (ख) माननीयर् (ग) मननीयः

15. तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः ।

(क) प्र+सू+क्तिन् (ख) प्र+सू+तः (ग) प्र+सू+क्त

पञ्चमः पाठः

16. दौवारिकः तु तम् नयन एव प्राचलत्।

(क) नय् +अन् (ख) नी अत् (ग) नी+ शतृ

17. परं संन्यास + इनि पण्डिताः बालाश्च न किमपि प्रष्टव्याः ।

(क) संन्यासिनि (ख) संन्यासिनी (ग) संन्यासिनः

18. समीपमागत्य संन्यासिना उक्तम्।

(क) वच् + क्त (ख) उच्+क्त (ग) वक्+क्त

19. सम्+वृ+क्त किञ्चिदन्धकारे दौवारिकः आगतं प्रत्यागतं च करोति स्म।

(क) संवृक्तें (ख) संवृत्ते (ग) संवृक्ते

20. भिक्षावटुना अनु+गम्+शानच् (कर्मणि) संन्यासी दृष्टः।

(क) अनुगमानः (ख) अनुगच्छन् (ग) अनुगम्यमानः

21. पृष्ठे हस्तं वि+नि+अस्+शतृ गौरसिंहः उवाच।

(क) विन्यस्यन् (ख) विनिअसन् (ग) विनियायमानः

22. सन्यासिनः न किमपि प्रष्टव्याः।

(क) पृच्छ+तव्यत् (ख) प्रष्ट+ तव्यत् (ग) पृष्ट+ तव्यत्

23. यदि त्वं मां प्र+विश्+शतृ न प्रतियुन्धेः!

(क) प्रविशत् (ख) प्रविश्शत (ग) प्रविशन्तम्

षष्ठः पाठः

24. गुणी गुणं वेत्ति,न वेत्ति निर्बलः।

(क) गुण+डीप् (ख) गुण+इनि (ग) गुण+ई

25. रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहुः।

(क) प्र+सिध्+क्त (ख) प्र+सिद्ध+क्त (ग) प्र+सिध्+तम्

26. कर्माणि आरभमाणं परुषं श्रीनिषेवते।

(क) आ+र+क्तवतु (ख) आ+रभ+शानच (ग) आ+रभ+शतृ

27. वस्तुतः रूपं विद्यावताम् ।

(क) विद्या+वत् (ख) विद्या+मत् (ग) विद्या+मतुप्

28. पाण्डित्येन सम्भृता मन + क्तिन् यस्य, सः तु मितभाषी एव भवति।

(क) मन्क्त (ख) मन्त (ग) मतिः

29. रूपवताम् अपेक्षया विद्याः मानं लभन्ते।

(क) रूप+ताम् (ख) रूप+मतुप (ग) रूप+मताम्

30. बल+इन् बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।

(क) बलिनः (ख) बलिना (ग) बली

31. विद्वत्वं अनुपमं गुणम्।

(क) विद्वस्+त्व (ख) विवस्+त्वम् (ग) विद्व+त्व

सप्तमः पाठः

32. राजाज्ञा पालनीया एव।

(क) पालनीय+टाप (ख) पालनीय+आ (ग) पालनी+या

33. अन + इष् + शतृ अपि वत्सराजः भोज रात्रौ वनं नीतवान्।

(क) अनिच्छन् (ख) अनिषत् (ग) अनिषत

34. कथा लोकेषु प्रसृता।

(क) प्रसृत+आ (ख) प्रसृत+अ (ग) प्रसृत+टाप्

35. योगिना भोजः जीव्+क्त।

(क) जीवितः (ख) जीवित (ग) जीवन

36. भोजःतत्र समानीतः।

(क) सम्+आ+ने+क्त

(ख) सम्+आ+नी+क्त

(ग) सम्+आ+नी+तः

37. भोजराजो मया रक्ष+क्त एव अस्ति।

(क) रक्षिता (ख) रक्षितः (ग) रक्षिक्त

38. मुञ्जस्य राज्ञी अपि तपोवनभूमिम् अगच्छत्।

(क) राजन+ई (ख) राजन्+डीप (ग) राज्ञ+ई

39. भोजः किमपि वत्सराजं कथितवान्।

(क) कथ्+ क्तवत् (ख) कथ्+ मतुप् (ग) कथित+ वान्

40. वत्सराजः तं न हतवान्।

(क) हन्+ क्तवतु (ख) हत+ मतुप (ग) हत+ वान्

41. नैकेनापि समं गम्+क्त+टाप् वसुमती

(क) गतम् (ख) गता (ग) गतः

नवमः पाठः

42. कुपात्रेषु दीयमानं धनं क्षयमेति।

(क) दा+शानच् (ख) दी+शानच् (ग) दीय+शानच्

43. इत्यासीद् गुरुपादानां मतम्।

(क) मन्+क्त (ख) मन्+तम् (ग) मत+अम्

44. एकाकिनी एव नर्तिष्यसि ।

(क) एकाकी+इनी (ख) एकाकिन्+डीप (ग) एकाकिन्नई

45. प्रकृतिसौन्दर्यम् अवलोकयन् शत्रुजितः प्रविशति ।

(क) अव+लोक्+शतृ (ख) अव+लोक्+यन् (ग) अवलोक+शतृ

46. मया कतिपय बिन्दवः एव प्राप्ताः ।

(क) प्र + आप् + क्त

(ख) प्राप्त ताः

(ग) प्राप्त+ क्त

47. मदालसा सर्वविद्यानिष्णाता जन्+क्त+टाप्।

(क) जाता (ख) जाताः (ग) जातम्

48. अहम् आचार्या इति पदं प्राप्य शिक्षणं प्रदास्यामि।

(क) आचार्य+ई (ख) आचार्य+टाप (ग) आचार्य+आ

49. माता एव प्रथम+टाप् आचार्या।

(क) प्रथमटा (ख) प्रथमटा (ग) प्रथमा

50. भार्या भर्त्रा रक्षितव्य+टाप्।

(क) रक्षिता (ख) रक्षितव्या (ग) रक्षितव्यटाप्

एकादशः पाठः

51. अभिजातस्य सत्यम् अलोलुपत्वम् इति दैवी संपदं भवन्ति ।

(क) अलोलुप त्वम् (ख) अलोलुप+तव (ग) अलोलुप+त्व

52. अहम् ईश्वरः, अहम् भोग +इनि।

(क) भोगिनि (ख) भोगन् (ग) भोगी

53. आढ्यः अभिजनवान् अस्मि।

(क) अभिजन+मतुप् (ख) अभिजन+मत् (ग) अभिजन+वान्

54. दैवी संपद् विमोक्षाय भवति ।

(क) दैव+ई (ख) दैव+ङीप् (ग) देव+ई

55. सिद्धोऽहं बल+मतुप सुखी।

(क) बलमान् (ख) बलवान् (ग) बलमत्

56. ततो यान्ति अधमां गम्+क्तिन्।

(क) गम्क्तिम् (ख) गम्तिम् (ग) गतिम्

57. असौ मया हन्+क्त।

(क) हतः (ख) हतम् (ग) हता

58. तान् अहं द्विषतः क्रूरान् संसारेषु नराधमान्।

(क) द्विष्+अतः (ख) विष्+तः (ग) द्विष्+शतृ

उत्तरमाला

प्रथमः पाठः

1. सत्यान्न प्रमदितव्यम्।

(क) प्र+ मद्+ तव्यत्

2. युक्ताः आ+युज्+क्त च यथा वर्तेरन् तथा वर्तेथाः।

(ख) आयुक्ताः

तृतीयः पाठः

3. श्लाघ्+ अनीयर् काले अत्रभवतीं वारयितुं नोत्सहे।

(ख) श्लाघनीये

4. लक्ष्मणस्य एषा भृकुटिः नियति इव वि+अव+स्था+क्त

(क) व्यवस्थिता

5. ताते धनुर्नं मयि सत्यम्- अव+ईक्ष+शानच्।

(क) अवेक्ष्यमाणे

6. शोकादवचनात् राज्ञा हस्तेनैव विसर्जितः।

(ख) वि+सृज+क्त

7. मैथिल+ङीप्! किं व्यवसितम्?

(क) मैथिलि!

8. हन्त!निवेदितम् अप्रभुत्वम्।

(ग) अप्रभु+त्व

9. सहधर्मचारिन्+ङीप् खल्वहम्।

(क) सहधर्मचारिणी

10. मया पुत्रवान्+ङीप् च या।

(ख) पुत्रवती

11. वर्षाणि खलु वस्तव्यं चतुर्दश वने त्वया।

(ग) वस्+तव्यत्

12. किं क्षमा निर्मनस्विता ।

(क) निर्+मनस्वि + तल्

चतुर्थः पाठः

13. शुद्धि+ मतुप तदन्वये दिलीपः प्रसूतः ।

(ग) शुद्धिमति

14. वैवस्वतः मनु म मनीषिणां मन + णिच+ अनीयर् आसीत्।

(क) माननीयः

15. तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।

(ग) प्र+सू+क्त

पञ्चमः पाठः

16. दौवारिकः तु तम् नयन एव प्राचलत्।

(ग) नी+ शतृ

17. परं संन्यास + इनि पण्डिताः बालाश्च न किमपि प्रष्टव्याः ।

(ग) संन्यासिनः

18. समीपमागत्य संन्यासिना उक्तम्।

(क) वच् + क्त

19. सम्+वृज्+क्त किञ्चिदन्धकारे दौवारिकः आगतं प्रत्यागतं च करोति स्म।

(ख) संवृत्ते

20. भिक्षावटुना अनु+गम्+शानच्(कर्मणि) संन्यासी दृष्टः ।

(ग) अनुगम्यमानः

21. पृष्ठे हस्तं वि+नि+अस्+शतृ गौरसिंहः उवाच।

(क) विन्यस्यन्

22. सन्यासिनः न किमपि प्रष्टव्याः ।

(क) पृच्छ+ तव्यत्

23. यदि त्वं मां प्र+विश्+शतृ न प्रतियुन्धेः!

(ग) प्रविशन्तम्

षष्ठः पाठः

24. गुणी गुणं वेत्ति,न वेत्ति निर्बलः ।

(ख) गुण+इनि

25. रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहुः ।

(क) प्र+सिध्+क्त

26. कर्माणि आरभमाणं पुरुषं श्रीनिषेवते ।

(ख) आ+रभ+शानच्

27. वस्तुतः रूपं विद्यावताम् ।

(ग) विद्या+मतुप्

28. पाण्डित्येन सम्भृता मन + क्तिन् यस्य, सः तु मितभाषी एव भवति।

(ग) मतिः

29. रूपवताम् अपेक्षया विद्याः मानं लभन्ते।

(ख) रूप+मतुप्

30. बल+इन् बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः ।

(ग) बली

31. विद्वत्वं अनुपमं गुणम्।

(क) विद्वस्+त्व

सप्तमः पाठः

32. राजाज्ञा पालनीया एव।

(क) पालनीय+टाप्

33. अन + इष् + शतृ अपि वत्सराजः भोज रात्रौ वनं नीतवान्।

(क) अनिच्छन्

34. कथा लोकेषु प्रसृता ।

(ग) प्रसृत+टाप्

35. योगिना भोजः जीव+क्त।

(क) जीवितः

36. भोजःतत्र समानीतः।

(ख) सम्+आ+नी+क्त

37. भोजराजो मया रक्ष+क्त एव अस्ति।

(ख) रक्षितः

38. मुञ्जस्य राज्ञी अपि तपोवनभूमिम् अगच्छत्।

(ख) राजन्+ङीप्

39. भोजः किमपि वत्सराजं कथितवान्।

(क) कथ्+ क्तवतु

40. वत्सराजः तं न हतवान्।

(क) हन्+ क्तवतु

41. नैकेनापि समं गम्+क्त+टाप् वसुमती

(ख) गता

नवमः पाठः

42. कुपात्रेषु दीयमानं धनं क्षयमेति।

(क) दा+शानच्

43. इत्यासीद् गुरुपादानां मतम्।

(क) मन्+क्त

44. एकाकिनी एव नर्तिष्यसि ।

(ख) एकाकिन्+ङीप्

45. प्रक्रितिसौन्दर्यम् अवलोकयन शत्रुजितः प्रविशति ।

(क) अव+लोक्+शतृ

46. मया कतिपय बिन्दवः एव प्राप्ताः. ।

(क) प्र + आप् + क्त

47. मदालसा सर्वविद्यानिष्णाता जन्+क्त+टाप्।

(क) जाता

48. अहम् आचार्या इति पदं प्राप्य शिक्षणं प्रदास्यामि।

(ख) आचार्य+टाप्

49. माता एव प्रथम+टाप् आचार्या।

(ग) प्रथमा

50. भार्या भ; रक्षितव्य+टाप।

(ख) रक्षितव्या

एकादशः पाठः

51. अभिजातस्य सत्यम् अलोलुपत्वम् इति दैवी संपदं भवन्ति।

(ग) अलोलुप+त्व

52. अहम् ईश्वरः, अहम् भोग+इनि।

(ग) भोगी

53. आढ्यः अभिजनवान् अस्मि।

(क) अभिजन+मतुप्

54. दैवी संपद् विमोक्षाय भवति ।

(ख) दैव+ङीप्

55. सिद्धोऽहं बल+मतुप् सुखी।

(ख) बलवान्

56. ततो यान्ति अधमां गम्+क्तिन्।

(ग) गतिम्

57. असौ मया हन्+क्त।

(क) हतः

58. तान् अहं द्विषतःक्रूरान् संसारेषु नराधमान्।

(ग) द्विष्+शतृ

(iv) कारक व उपपद -विभक्ति

उपपदविभक्तिः- जब किसी शब्द विशेष के कारण शब्द में विभक्ति लगे तो वह उपपद विभक्ति कहलाती है।

जैसे- **बालकाय** संस्कृतं रोचते।

यहाँ 'रुच्' धातु के कारण बालक शब्द में 'चतुर्थी' विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

आइए जानते हैं कुछ प्रमुख विशेष शब्द जिनके साथ विभक्तिविशेष का प्रयोग किया जाता है।

द्वितीया विभक्तिः- गति अर्थ वाली धातुओं के कर्म में, अभितः, (चारों ओर), उभयतः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), सर्वतः (सब ओर), समया (समीप), निकषा (समीप) धिक् (धिक्कार), प्रति (ओर, की तरफ) पृच्छ (पूछना) अन्तरेण (बिना विषय में) विना (बिना) याच् (मांगना) पच् (पकाना) आदि के साथ द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे-**ग्रामं** परितः/अभितः वृक्षाः सन्ति।

विद्यालयम् उभयतः मार्गौ स्तः।

उद्यानं सर्वतः हरीतिमा अस्ति।

अहं **वाराणसीं** प्रति गच्छामि।

नगरं निकषा/ समया नदी वहति।

धिक् **दुराचारिणम्**।

ज्ञानम् अन्तरेण न मुक्तिः ।

परिश्रमं विना सफलता न लभ्यते।

स:**पितरं** धनं याचते।

पाचक: **तण्डुलान्** पचति।

शिष्य: **शिक्षकं** प्रश्नान् पृच्छति।

तृतीया विभक्ति:- सह, साकं, समं, सार्धं (साथ अर्थ में), किम्, कार्यम्, अर्थ: प्रयोजनम् (ये चारों शब्द यदि प्रयोजन अर्थ में हों तो उनके साथ), अलम् (बस करो, मत करो, आवश्यकता नहीं है), शरीर का जो अंग दोष से विकृत दिखाई दे उसमें , ऊन:, हीन:, न्यून:, शून्य:, सदृश: सम: समान: तुल्य:

आदि के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे- **पित्रा** सह पुत्री आलपति।

मात्रा साकं पुत्र: आपणं गच्छति।

मित्रेण समं भानु: खेलति।

सा **क्रीडकै:** सार्धं आगच्छति।

अलम् **विवादेन**।

स: **अक्ष्णा** काण:।

ज्ञानेन सदृश: पुण्यं नास्ति।

ज्ञानेन हीन: पशुभि: समान: भवति।

धैर्येण शून्य: उत्तेजित: भवति।

कर्ण: **अर्जुनेन** तुल्य: पराक्रमी आसीत्।

चतुर्थी विभक्ति:- नम: (नमस्कार करना), स्वस्ति (कल्याण हो), स्वाहा (यज्ञ में डाली जाने वाली आहुति), अलम् (शक्ति में पर्याप्त होना), दा, रुच्, क्रुद्ध, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय्, स्पृह्, कथ्, निविद्, उपदिश् आदि धातुओं के साथ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे- **आचार्याय** नम:।

प्रजाभ्य: स्वस्ति।

अग्नये स्वाहा।

भीमसेनः **दुर्योधनाय** अलम्।

मह्यं मिष्टान्नं रोचते।

सा **शाटिकायै** स्पृहयति।

सा **मित्राय** कथां कथयति।

छात्रः **शिक्षकाय** निवेदयति।

पञ्चमी विभक्तिः- भय और रक्षा अर्थ वाली धातुओं के साथ, दिशा वाची शब्दों के साथ, घृणा अर्थ में, आलस्य अर्थ में, निवारण अर्थ में, जिस से तुलना की जाए उसमें, प्रभृति, बहिः, आरभ्य, अनन्तरं, ऊर्ध्वं,दूरम्, अन्तिकं, पृथक्, विना, नाना

आदि शब्दों के साथ पंचमी विभक्ित का प्रयोग होता है।

जैसे अहं **व्याघ्रात्** बिभेमि।

आरक्षी **दुष्टेभ्यः** रक्षति।

वीरः **शत्रुभ्यः** त्रायते।

स्वाध्यायात् मा प्रमदः।

सन्मित्रं **पापात्** निवारयति।

कमलः **विमलात्** बलवत्तरः।

गृहात् दूरं मा गच्छ।

सः **ग्रामात्** बहिः अवकरं क्षिपति।

सरोवरात् अन्तिकं वृक्षाः सन्ति।

षष्ठी विभक्तिः- कृते, दक्षिणतः, वामतः, उपरि (ऊपर), उपरिष्टात् (ऊपर की ओर), अधः (नीचे), अधस्तात् (नीचे की ओर), पुरः (सामने), पुरस्तात् (सामने की ओर), पश्चात् (पीछे) , अग्रे (आगे), दक्षिणतः, सदृशः, समः, समानः, तुल्यः आदि शब्दों के साथ, व बहुतों में से एक को छांटने में ,जिसमें से छांटा जाए उसमें षष्ठी विभक्ित होती है।जैसे वृक्षस्य उपरि वानरः कूर्दति। पर्वतस्य अधः पतनेन मृत्युः एव। ग्रामस्य दक्षिणतः एकं विशालं वनम् अस्ति। अहं धनस्य कृते परिश्रमं करोमि। कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।

सप्तमी विभक्तिः- निपुणताबोधक शब्दों में, स्नेह प्रेम व आदर सूचक धातुओं और शब्दों के साथ, विश्वास तथा श्रद्धा अर्थ वाली धातुओं और शब्दों के साथ, साधु असाधु दूर अन्तिक आदि शब्दों के साथ भी सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे माता **पुत्रे** स्निह्यति।

अहं **मातरि** विश्वसिमि।

लता **नृत्यकलायां** कुशला/निपुणा/प्रवीणा/पटुः ।

सैनिकः मित्रेषु साधुः रिपुषु असाधुः ।

आइए अब पाठ्यपुस्तक पर आधारित कुछ उदाहरणों पर दृष्टिपात करते हैं और उनका अभ्यास करते हैं

प्रदत्तेभ्यः विकल्पेभ्यःसमुचितं उपपद- विभक्ति- रूपं चिनुत

प्रथमः पाठः

1. आचार्यः ..... अनुशास्ति।

   (क) अन्तेवासिना (ख) अन्तेवासिनम् (ग) अन्तेवासिने

2. ..... न प्रमदितव्यम् ।

   (क) स्वाध्यायात् (ख) स्वाध्यायस्य (ग) स्वाध्येन

3. ..... प्रियधनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः ।

   (क) आचार्यम् (ख) आचार्येण (ग) आचार्याय

4. ..... न प्रमदितव्यम्।

   (क) देवपितृकार्यस्य (ख) देवपितृकार्याभ्याम् (ग) देवपितृकार्यात्

5. ..... न प्रमदितव्यम्

   (क) धर्मात् (ख) धर्मेण (ग) धर्मस्य

तृतीयः पाठः

6. ..... सह सीता वनं गन्तुम् इच्छति।

   (क) रामेण (ख) रामस्य (ग) रामाय

7. अतः परं मातुः ..... श्रोतुं न इच्छामि

(क) परिवादं (ख) परिवादाय (ग) परिवादः

8. हा धिक्! ..... अविज्ञाय उपालभसे।

(क) अस्मदं (ख) अस्मान् (ग) अहम्

9. अरिः ..... प्रहरति।

(क) शरीर (ख) शरीरे (ग) शरीरस्य

10. तस्याः कस्मिन् ..... स्पृहा, येन अकार्यं करिष्यति।

(क) फले (ख) फलाय (ग) फलात्

11. त्रिषु पातकेषु किं ..... रुचिरम्।

(क) रोषणेन (ख) रोषणात् (ग) रोषणाय

12. यत्कृते महति ..... राज्ये मे न मनोरथः।

(क) क्लेशम् (ख) क्लेश (ग) क्लेशे

चतुर्थः पाठः

13. दिलीपस्य ..... सदृशः आगमः आसीत्।

(क) प्रज्ञया (ख) प्रज्ञाम् (ग) प्रज्ञायाः

14. वैवस्वतः मनुः ..... आद्यः आसीत्।

(क) महीक्षित् (ख) महीक्षिताम् (ग) महीक्षितः

15. तद्गुणैः ..... आगत्य चापलाय प्रणोदितः।

(क) कर्णम् (ख) कर्णे (ग) कर्णस्य

16. प्रजानामेव भूत्यर्थं स ..... बलिमग्रहीत्।

(क) तुभ्यम् (ख) ताभ्यः (ग) तेभ्यः

17. ..... तदन्वये दिलीपःप्रसूतः।

(क) शुद्धिमति (ख) शुद्धिमत् (ग) शुद्धिमते

पञ्चमः पाठः

18. ..... समीपम् आगत्य दौवारिकः उवाच ।

(क) दीपेषु (ख) दीपम् (ग) दीपस्य

19. दौवारिक! इत आयाहि किमपि ..... कथयिष्यामि ।

(क) कर्णात् (ख) कर्णस्य (ग) कर्णे

20. महाराजशिववीरस्याज्ञां वयं ..... वहामः।

(क) शिरसा (ख) शिरसि (ग) शिरस्

21. अहं ..... परिष्कृतपारदभस्म दद्याम्।

(क) तुभ्यम् (ख) त्वाम् (ग) त्वयि

22. ते केचन अन्ये नीचाः भवन्ति ये ..... आत्मानम् अन्धतमसि पातयन्ति।

(क) उत्कोचलोभेन (ख) उत्कोचलोभस्य (ग) उत्कोचलोभात् ।

23. द्वादशवर्षेण. ..... अनुगम्यमानः संन्यासी दृष्टः।

(क) भिक्षावट्वें (ख) भिक्षावटुना (ग) भिक्षावटुभिः

षष्ठः पाठः

24. ..... अन्ते च वारि अमृतं भवति। (भोजन)

(क) भोजनस्य (ख) भोजनम् (ग) भोजने

25. खलानां. .....महान् यत्नः भवति।

(क) दोषेण (ख) दोषेषु (ग) दोषात्

26. शठः ..... अपि शिक्ष्यमाणः सज्जनतां न उपैति।

(क) सहनैः (ख) सहस्रेभ्यः (ग) सहस्रात्

सप्तमः पाठः

27. राजा राज्य ..... दत्त्वा तदुत्सङ्गे भोज मुमोच।

(क) मुञ्जम् (ख) मुञ्जाय (ग) मुञ्जस्य

28. कश्चन कापालिक. ..... समागतः।

(क) सभायाम् (ख) सभाम् (ग) सभया

29. ..... स जीवितो भविष्यति।

(क) शिवप्रसादेन (ख) शिवप्रसादात् (ग) शिवप्रसादस्य ।

30. मुञ्जः.....सह वनम् अगच्छत्।

(क) राज्ञीभिः (ख) रानीभिः (ग) राग्यः

31. न ..... अपि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति।

(क) एकेन (ख) एकस्य (ग) एकात्

नवमः पाठः

32. ..... शिक्षणं प्रदास्यामि।

(क) शिशून् (ख) शिशूणाम् (ग) शिशुभ्यः

33. आकारये अहं ..... तुम्बुरुम् ।

(क) कुलगुरुः (ख) कुलगुरुणा (ग) कुलगुरुम्

34. आचार्येति पदं प्राप्य शिष्येभ्यः ..... शिक्षयिष्यामि ।

(क) जीवनकलाम् (ख) जीवनकला (ग) जीवनकलानि

35. अहं शिशुभ्यः..... प्रदास्यामि।

(क) शिक्षणम् (ख) शिक्षणस्य (ग) शिक्षणात्

36. दुर्लभो जनः ईदृशः यः गृहस्थप्रयोगशालायां ..... स्वतन्त्रतां दद्यात्।

(क) स्वपत्नी (ख) स्वपत्न्याः (ग) स्वपत्न्यै

37. अपि श्रुताः ..... मम सखी विचाराः

(क) भवद्भिः (ख) भवान् (ग) भवन्तः कुस

38. आगम्यतां ..... पितृभ्यां च समाचारं श्रावयिष्यावः

(क) गुरुभ्यः (ख) गुरुन् (ग) गुरुणा

एकादशः पाठः

39. कोऽन्योऽस्ति सदृशो ..... ।

(क) माम् (ख) मम (ग) मया

40. दैवी सम्पद् ..... भवति।

(क) विमोक्षाय (ख) विमोक्षस्य (ग) विमोक्षात्

उत्तरसंकेतः

प्रथमः पाठः

1. आचार्यः ..... अनुशास्ति।

   (ख) अन्तेवासिनम्

2. ..... न प्रमदितव्यम् ।

   (क) स्वाध्यायात्

3. ..... प्रियधनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः ।

   (ग) आचार्याय

4. ..... न प्रमदितव्यम् ।

   (ख) देवपितृकार्याभ्याम्

5. ..... न प्रमदितव्यम्

   (क) धर्मात्

तृतीयः पाठः

6. ..... सह सीता वनं गन्तुम् इच्छति ।

   (क) रामेण

7. अतः परं मातुः ..... श्रोतुं न इच्छामि ।

   (क) परिवादम्

8. हा धिक्! ..... अविज्ञाय उपालभसे।

   (ख) अस्मान्

9. अरिः ..... प्रहरति।

   (ख) शरीरे

10. तस्याः कस्मिन् ..... स्पृहा, येन अकार्यं करिष्यति।

    (क) फले

11. त्रिषु पातकेषु किं ..... रुचिरम्।

    (ग) रोषणाय

12. यत्कृते महति ..... राज्ये मे न मनोरथः ।

(ग) क्लेशे

चतुर्थः पाठः

13. दिलीपस्य ..... सदृशः आगमः आसीत्।

(क) प्रज्ञया

14. वैवस्वतः मनुः.....आद्यः आसीत्।

(ख) महीक्षिताम्

15. तद्गुणैः ..... आगत्य चापलाय प्रणोदितः ।

(क) कर्णम्

16. प्रजानामेव भूत्यर्थं स ..... बलिमग्रहीत्।

(ख) ताभ्यः

17. ..... तदन्वये दिलीपःप्रसूतः ।

(क) शुद्धिमति

पञ्चमः पाठः

18. ..... समीपम् आगत्य दौवारिकः उवाच।

(ग) दीपस्य

19. दौवारिक! इत आयाहि किमपि ..... कथयिष्यामि।

(ग) कर्णे

20. महाराजशिववीरस्याज्ञां वयं ..... वहामः।

(क) शिरसा

21. अहं.....परिष्कृतपारदभस्म दद्याम्।

(क) तुभ्यम्

22. ते केचन अन्ये नीचाः भवन्ति ये ..... आत्मानम् अन्धतमसि पातयन्ति।

(क) उत्कोचलोभेन

23. द्वादशवर्षेण.....अनुगम्यमानः संन्यासी दृष्टः ।

(ख) भिक्षावटुना

षष्ठः पाठः

24. ..... अन्ते च वारि अमृतं भवति। (भोजन)

(क) भोजनस्य

25. खलानां ..... महान् यत्नः भवति।

(ख) दोषेषु

26. शठः ..... अपि शिक्ष्यमाणः सज्जनतां न उपैति।

(क) सहस्रैः

सप्तमः पाठः

27. राजा राज्य ..... दत्त्वा तदुत्सङ्गे भोज मुमोच।

(ख) मुञ्जाय

28. कश्चन कापालिकः ..... समागतः।

(क) सभायाम्

29. ..... स जीवितो भविष्यति।

(क) शिवप्रसादेन

30. मुञ्ज. ..... सह वनम् अगच्छत्।

(क) राज्ञीभिः

31. न ..... अपि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति।

(क) एकेन

नवमः पाठः

32. ..... शिक्षणं प्रदास्यामि ।

(ग) शिशुभ्यः

33. आकारये अहं ..... तुम्बुरुम् ।

(ग) कुलगुरुम्

34. आचार्येति पदं प्राप्य शिष्येभ्यः ..... शिक्षयिष्यामि ।

(क) जीवनकलाम्

35. अहं शिशुभ्यः ..... प्रदास्यामि ।

(क) शिक्षणम्

36. दुर्लभो जनः ईदृशः यः गृहस्थप्रयोगशालायां ..... स्वतन्त्रतां दद्यात्।

(ग) स्वपत्न्यै

37. अपि श्रुताः ..... मम सखी विचाराः

(क) भवद्भिः

38. आगम्यतां ..... पितृभ्यां च समाचारं श्रावयिष्यावः

(क) गुरुभ्यः

एकादशः पाठः

39. कोऽन्योऽस्ति सदृशो .....

(ग) मया

40. दैवी सम्पद् ..... भवति।

(क) विमोक्षाय

'घ' (I) भागः पठितावबोधनम्

पाठ–1 अनुशासनम्

(क) वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) कम् अनूच्य आचार्यः अन्तेवासिनम् अनुशास्ति?

(ख) कं मा व्यवच्छेत्सीः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) केभ्यः न प्रमदितव्यम्?

(ख) आचार्याय किम् आहरणीयम्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''प्रियं धनम्'' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(ख) ''आचार्यः'' इत्यस्य पदस्य क्रियापदं किम्?

(ख) यान्यनवद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि। अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः, युक्ता, आयुक्ताः, अलूक्षाः, धर्मकामाः स्युः, यथा ते तत्र वर्तेरन् तथा तत्र वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवं चैतदुपास्यम्।

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) कानि कर्माणि सेवितव्यानि?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) ब्राह्मणाः कीदृशाः स्युः?

(ख) कर्मविचिकित्सायां वा वृत्तविचिकित्सायां केन प्रकारेण वर्तितव्यम्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः'' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम् ?

(ख) ''अपराणि'' इत्यस्य पदस्य पर्यायपदं किम् ?

(ग) 'अ' वाक्यांशस्य मेलनं 'आ' वाक्यांशेन सह कुरुत–

'अ' वाक्यांशस्य	'आ' वाक्यांशस्य
1. वेदमनूच्याचार्य	(क) प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः।
2. आचार्याय प्रियं धनमाहत्य	(ख) अन्तेवासिनमनुशास्ति।
3. देवपितृकार्याभ्याम्	(ग) तानि त्वयोपास्यानि।
4. यान्यस्माकं सुचरितानि	(घ) न प्रमदितव्यम्

(घ) अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितानां पदानां प्रसंगानुसारं शुद्धम् अर्थं लिखत–

1. वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति।
2. सत्यं वद।
3. तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि।
4. ये तत्र ब्राहमणाः सम्मर्शिनः।

उत्तराणि

(क) 1. एकपदेन उत्तरत–

(क) वेदम्

(ख) प्रजातन्तुम्

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) सत्यात्, धर्मात्, कुशलात्, भूत्यै, स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां देवपितृकार्याभ्याम् च न प्रमदितव्यम्।

(ख) आचार्याय प्रियं धनम् आहरणीयम्।

3. भाषिकं कार्यम्–

(क) प्रियम्

(ख) अनुशास्ति

(ख) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) अनवद्यानि

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः, युक्ता आयुक्ताः, अलूक्षा धर्मकामाः स्युः।

(ख) कर्मविचिकित्सायां वा वृत्तविचिकित्सायां, ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः, युक्ता आयुक्ताः, अलूक्षा धर्मकामा : स्युः, यथा ते तत्र वतेरन् तथा तत्र वर्तेथाः।

(3) भाषिकं कार्यम्–

(क) ब्राह्मणाः

(ख) इतराणि

(ग) वाक्यांशमेलनम्

1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग)

(घ) पदानां शुदधार्थं लेखनम्-

1. शिष्यम् 2. कथय
3. अन्यानि 4. विचारशीलाः

पाठ–3 मातुराज्ञा गरीयसी

(क) (प्रविश्य)

काञ्चुकीयः – परित्रायतां परित्रायतां कुमारः।

रामः – आर्य! कः परित्रातव्यः।

काञ्चुकीयः – महाराज!

रामः – महाराजः इति। आर्य! ननु वक्तव्यम्। एकशरीर-संक्षिप्ता पृथिवी रक्षितव्येति। अथ कुत उत्पन्नोऽयं दोषः?

काञ्चुकीयः – स्वजनात्।

रामः – स्वजनादिति। हन्तः नास्ति प्रतीकारः।

शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा।

कस्य स्वजनशब्दो मे लज्जामुत्पादयिष्यति ॥1॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) अरिः कुत्र प्रहरति?

(ख) हृदये कः प्रहरति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) काञ्चुकीयः किं कथयति?

(ख) स्वजनशब्दः मे काम् उत्पादयिष्यति?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''एकशरीरसंक्षिप्ता पृथिवीः'' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ख) ''मनसि'' इत्यस्य पदस्य पर्यायपदं किम्?

(ख) काञ्चुकीयः – तत्र भवत्याः कैकेय्याः।

रामः – किमम्बायाः, तेन हि उदर्केण गुणेनात्र भवितव्यम्।

काञ्चुकीयः – कथमिव?

राम: – श्रूयताम्,

यस्या: शक्रसमो भर्ता मया पुत्रवती च या।

फले कस्मिन् स्पृहा तस्या येनाकार्यं करिष्यति ।।2।।

काञ्चुकीय: – कुमार! अलमुपहतासु स्त्रीबुद्धिम् स्वमार्जवमुपनिक्षेप्तुम्। तस्या एव खलु वचनात् भवदभिषेको निवृत्त:।

राम: – आर्य! गुणा: खल्वत्र।

काञ्चुकीय: – कथमिव?

राम: – श्रूयताम्

वनगमननिवृत्ति: पार्थिवस्यैव ताव-

न्मम पितृपरवत्ता बालभाव: स एव।

नवनृपतिविमर्शे नास्ति शंका प्रजाना-

मथ च न परिभोगैर्वञ्चिता भ्रातरो से ।।3।।

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) कस्या: शक्रसमो भर्ता?

(ख) कैकेयी केन पुत्रवती?

(ग) प्रजानां शंका कुत्र नास्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) केन गुणेनात्र भवितव्यम्?

(ख) कुत्र स्वमार्जवं निक्षेप्तुम् अलम्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''मम'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ख) ''उपहतासु स्त्रीबुद्धिषु'' अनयो: पदयो: विशेषणपदं किम्?

(ग) काञ्चुकीयः – अथ च तयाऽनाहूतोपसृतया भरतोऽभिषिच्यतां राज्य इत्युक्तम् अत्राप्यलोभः?

रामः – आर्यः! भवान् खल्वस्मत्पक्षपातादेव नार्थमवेक्षते। कुतः,
शुल्के विपणितं राज्यं पुत्रार्थे यदि याच्यते।
तस्या लोभोऽत्र नास्माकं भ्रातृराज्यापहारिणाम् ।।4।।

काञ्चुकीयः – अथ .....

रामः – अतः परं न मातुः परिवादं श्रोतुमिच्छामि। महाराजस्य वृत्तान्तस्तावदभिधीयताम्।

काञ्चुकीयः – ततस्तदानीम्,

शोकादवचनाद् राज्ञा हस्तेनैव विसर्जितः।
किमप्यभिमतं मन्ये मोहं च नृपतिर्गतः ।।5।

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) शुल्के विपणितं राज्यं कस्मै याच्यते?

(ख) कः मोहं गतः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) मातुः परिवादं कः न श्रोतुम् इच्छति?

(ख) कीदृशं राज्यं कैकय्या पुत्राय याचितम्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''भवान्'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ख) ''न अर्थम् अवेक्षते'' इत्यत्र क्रियापदं किम्?

(नेपथ्ये)

(घ) कथं कथं मोहमुपगत इति।
यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयाम्।।

राम: – (आकर्ण्य पुरतो विलोक्य)

अक्षोभ्यः क्षोभितः केन लक्ष्मणो धैर्यसागरः।
येन रुष्टेन पश्यामि शताकीर्णमिवाग्रतः ॥6॥

(ततः प्रविशति धनुर्बाणपाणिर्लक्ष्मणः)

लक्ष्मण: – (सक्रोधम्) कथं कथं मोहमुपगत इति।

यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयां
स्वजननिभृतः सर्वोप्येवं मृदुः परिभूयते।
अथ न रुचितं मुञ्च त्वं मामहं कृतनिश्चयो
युवतिरहितं लोकं कर्तुं यतश्छलिता वयम् ॥7॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) ततः धनुर्बाणपाणिः कः प्रविशति?

(ख) कः लोकं युवतिरहितं कर्तुं कथयति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) लक्ष्मणः कं निश्चयं करोति?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''लक्ष्मणो धैर्यसागरः'' इत्यनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ख) ''क्षोभ्यः'' पदस्य विपर्ययपदं किम्?

(ङ)

सीता – आर्यपुत्र! रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम्। अपूर्वः खल्वस्यायासः।

राम: – सुमित्रामातः! किमिदम्?

लक्ष्मण: – कथं कथं किमिदं नाम।

क्रमप्राप्ते हृते राज्ये भुवि शोच्यासने नृपे।
इदानीमपि सन्देहः किं क्षमा निर्मनस्विता ॥8॥

राम: – सुमित्रामात:! अस्मद्राज्यभ्रंशो भवत उद्योगं जनयति। आ: अपण्डित: खलु भवान्।

भरतो वा भवेद् राजा वयं वा ननु तत् समम्।
यदि तेऽस्ति धनुश्श्लाघा स राजा परिपाल्यताम् ॥9॥

लक्ष्मण: – न शक्नोमि रोषं धारयितुम्। भवतु भवतु। गच्छामस्तावत्। (प्रस्थित:)

राम: – त्रैलोक्यं दग्धुकामेव ललाटपुटसंस्थिता।
भृकुटिर्लक्ष्मणस्यैषा नियतीव व्यवस्थिता ॥10॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) रोदितव्ये काले केन धनुर्गृहीतम्?

(ख) राम: ''अपण्डित:'' कं कथयति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) लक्ष्मणस्य धनुश्श्लाघा कस्मिन् कार्ये अस्ति?

(ख) त्रैलोक्यं दग्धुकामेव का संस्थिता?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''गच्छामस्तावत्'' अत्र क्रियापदं किम्?

(ख) ''ललाटपुटसंस्थिता भृकुटि:'' अनयो: पदयो: विशेष्यपदं किम्?

(च) सुमित्रामात:! इतस्तावत्।

लक्ष्मण: – आर्य! अयमस्मि ॥

राम: – भवत: स्थैर्यमुत्पादयता मयैवमभिहितम्। उच्यतामिदानीम्।

ताते धनुर्नमयि सत्यमवेक्ष्यमाणे
मुञ्चानि मातरि शरं स्वधनं हरन्त्याम्।

दोषेषु बाह्यमनुजं भरतं हनानि
किं रोषणाय रुचिरं त्रिषु पातकेषु ॥11॥

लक्ष्मणः – (सवाष्पम्) हा धिक्! अस्मानविज्ञायोपालभसे।

यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे न मनोरथः।

वर्षाणि किल वस्तव्यं चतुर्दश वने त्वया ॥12॥

रामः – अत्र मोहमुपगतस्तत्रभवान्। हन्त! निवेदितमप्रभुत्वम्। मैथिलि!

मङ्गलार्थेऽनया दत्तान् वल्कलाँस्तावदानय।

करोम्यन्यैर्नृपैर्धर्मं नैवाप्तं नोपपादितम् ॥13॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) लक्ष्मणस्य मनोरथः कुत्र नास्ति?

(ख) रामेण कति वर्षाणि वने वस्तव्यम्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) रामेण कानि त्रीणि पातकानि कथितानि?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''पुण्येषु'' इत्यस्य पदस्य विलोमपदं किम्?

(ख) ''दत्तान् वल्कलान्'' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(ग) ''मया एवम् अभिहितम्'' अत्र क्रियापदं किम्?

(छ) सीता – गृह्णात्वार्यपुत्रः।

रामः – मैथिलि! किं व्यवसितम्?

सीता – ननु सहधर्मचारिणी खल्वहम्।

रामः – मयैकाकिना किल गन्तव्यम्।

सीता – अतो नु खल्वनुगच्छामि।

रामः – वने खलु वस्तव्यम्।

सीता – तत् खलु मे प्रासादः।

राम – श्वश्रूश्वशुरशुश्रूषापि च ते निर्वर्तयितव्या।

सीता – एनामुद्दिश्य देवतानां प्रणामः क्रियते।

रामः – लक्ष्मण! वार्यतामियम्।

लक्ष्मणः – आर्य! नोत्सहे श्लाघनीये काले वारयितुमत्रभवतीम्।

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) रामस्य सहचारिणी का?

(ख) केन एकाकिना गन्तव्यम्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) लक्ष्मणः श्लाघनीये काले कां वारयितुं नोत्सहते?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''श्लाघनीये काले'' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(ख) ''खल्वनुगच्छामि'' अत्र क्रियापदं किम्?

(ज) (I) 'अ' वाक्यांशस्य मेलनं 'आ' वाक्यांशेन सह कुरुत-

'अ' वाक्यांशः	'आ' वाक्यांशः
1. शरीरेऽरिः प्रहरति	(क) स राजा परिपाल्यताम्
2. यस्याः शक्रसमो भर्ता	(ख) पुत्रार्थे यदि याच्यते।
3. शुल्के विपणितं राज्यम्	(ग) हृदये स्वजनस्तथा।
4. यदि तेऽस्ति धनुश्श्लाघा	(घ) मया पुत्रवती च या।

(II) 'अ' वाक्यांशस्य मेलनं 'आ' वाक्यांशेन सह कुरुत-

'अ' वाक्यांशः	'आ' वाक्यांशः
1. यत्कृते महति क्लेशे	(क) हस्तेनैव विसर्जितः
2. भृकुटिर्लक्ष्मणस्यैषा	(ख) राज्ये मे न मनोरथः
3. क्रमप्राप्ते हते राज्ये	(ग) नियतीव व्यवस्थिता।
4. शोकादवचनाद् राज्ञा	(घ) भुविशोच्यासने नृपे।

(झ) अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितानां पदानां प्रसंगानुसार शुद्धम् अर्थं लिखित-

1. शरीरेऽरि: प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा।
2. यस्या: शक्रसमो भर्ता मया पुत्रवती च या।
3. तस्या एव खलु वचनात् भवदभिषेको निवृत्त:।
4. अपूर्व: खल्वस्यायास:।

उत्तराणि

(क) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) शरीरे

(ख) स्वजन:

(2) **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) काञ्चुकीय: ''परित्रायतां पारित्रायतां कुमार'' इति कथयति।

(ख) स्वजनशब्द: मे लज्जाम् उत्पादयिष्यति।

(3) **भाषिककार्यम्-**

(क) पृथिवी: (ख) हृदये

(ख) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) कैकेय्या: (ख) रामेण

(ग) नवनृपतिविमर्शे

(2) **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) उदर्केण गुणेनात्र भवितव्यम्।

(ख) उपहतासु स्त्रीबुद्धिषु स्वमार्जवं निक्षेप्तुम् अलम्।

(3) **भाषिककार्यम्-**

(क) रामाय (ख) उपहतासु

(ग) (1) **एकपदेन उत्तरत–**

(क) पुत्राय (ख) नृपतिः

(2) **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) मातुः परिवादं रामः न श्रोतुम् इच्छति।

(ख) शुल्के विपणितं राज्यं कैकय्या पुत्राय याचितम् ।।

(3) **भाषिककार्यम्**–

(क) काञ्चुकीयाय

(ख) अवेक्षते

(घ) (1) **एकपदेन उत्तरत–**

(क) लक्ष्मणः

(ख) लक्ष्मणः

(2) **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) लक्ष्मणः लोकं युवतिरहितं कर्तुं वाञ्छति।

(3) **भाषिककार्यम्**–

(क) लक्ष्मणः

(ख) अक्षोभ्यः

(ङ) (1) **एकपदेन उत्तरत–**

(क) सौमित्रिणा

(ख) लक्ष्मणम्

(2) **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) लक्ष्मणस्य धनुश्श्लाघा राज्ञः परिपालने अस्ति।

(ख) लक्ष्मणस्य भृकुटिः त्रैलोक्यं दग्धुकामेव संस्थिता।

(3) **भाषिककार्यम्**–

(क) गच्छामः

(ख) भृकुटिः

(च) (1) **एकपदेन उत्तरत–**

(क) महति क्लेशे राज्ये

(ख) चतुर्दश वर्षाणि

(2) **पूर्ववाक्येन उत्तरत–**

(क) रामेण –ताते धनुर्नमयि, मुञ्चानि मातरि शरं, अनुजं भरतं हनानि, एतानि त्रीणि पातकानि कथितानि।

(3) **भाषिककार्यम्**-

(क) पातकेषु

(ख) दत्तान्

(ग) अभिहितम्

(छ) (1) **एकपदेन उत्तरत–**

(क) सीता

(ख) रामेण

(2) **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) लक्ष्मणः श्लाघनीये काले सीतां वारयितुं नोत्सहते।

(3) **भाषिककार्यम्**-

(क) श्लाघनीये

(ख) अनुगच्छामि

(ज) (I) वाक्यांशमेलनम्

1. (ग) 2. (घ) 3. (ख) 4. (क)

(II) वाक्यांशमेलनम्

1. (घ) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क)

(झ) पदानां शुदधार्थं लेखनम्-

1. शत्रुः 2. इन्द्रसमः

3. अवरूद्धः 4. प्रयासः

पाठ–4 प्रजानुरञ्जको नृपः

(क) त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्॥
शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) रघुवंशीयाः नृपाः किमर्थं मितभाषिणः?

(ख) रघुवंशीयाः नृपाः कस्यै गृहमेधिनः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) रघुवंशीयाः राजानः कदा विषयैषिणः?

(ख) रघुवंशीयाः नृपाः कदा मुनिवृत्तिनः?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''बाल्ये'' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(ख) ''युवा-अवस्थायाम्'' इत्यर्थे किं पदम्।

(ख) रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन्।
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः॥
वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव ॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) कविः केषाम् अन्वयं वक्ष्यति?

(ख) महीक्षिताम् आद्यः कः आसीत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) कविः कीदृशः सन् अपि रघूणाम् अन्वयं वक्ष्यति?

(ख) मनीषिणां माननीयः कः आसीत्

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''तद्गुणैः'' इत्यत्र ''तत्' पदं केभ्यः प्रयुक्तम्?

(ख) ''वक्ष्ये'' इत्यस्याः क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

(ग) तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इव राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव ॥
आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।
आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः॥
प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः ॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) दिलीपः कः इव आसीत्?

(ख) दिलीपस्य प्रज्ञा केन समा आसीत्?

(ग) दिलीपस्य आगमः कया सदृशः आसीत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) रविः रसं कथमादत्ते?

(ख) दिलीपः किमर्थं प्रजाभ्यः बलिम् अग्रहीत्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''अन्तः'' अस्य पदस्य विलोमपदं किम्?

(ख) ''सूर्यः'' इत्यस्य पदस्य पर्यायपदं किम्?

(घ) ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव ॥

1. एकपदेन उत्तरत्–

(क) दिलीपस्य ज्ञाने किम् आसीत्?

(ख) दिलीपस्य त्यागे किम् आसीत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत्–

(क) दिलीपस्य गुणाः कथं सप्रसवा इव आसन्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''सहोदराः'' अस्य पदस्य किं पर्यायपदम्?

(ख) ''अवगुणाः'' इत्यस्य विलोमपदं किम्?

(ङ) प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः ॥
द्वेष्योऽपि संमतः शिष्टस्तस्यार्तस्य यथौषधम्
त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता ॥
स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागराम्।
अनन्यशासनामुर्वीं शशासैकपुरीमिव ॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) दिलीपः कासां पिता आसीत्?

(ख) दिलीपस्य कृते शिष्टः द्वेष्यः अपि किमिव सम्मतः आसीत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत्–

(क) दिलीपः कथं प्रजानां पिता आसीत्?

(ख) दिलीपस्य कृते कः उरगक्षता-अंगुलीव त्याज्यः आसीत्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) सः ''इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ख) ''शशास'' इत्यस्याः क्रियायाः कर्तृपदं किम्

(च) अधोप्रदत्तानां श्लोकानाम् अन्वयस्य रिक्तस्थानपूर्तिं मञ्जूषा प्रदतैः पदैः कुरुत-

1. शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥

अन्वयः - शैशवे ....., यौवने विषयैषिणाम्, ... मुनीवृत्तीनां, ... योगेन तनुत्यजाम्।

मञ्जूषा

वार्द्धके, अभ्यस्तविद्यानाम्, अन्ते

2. रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन्।
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः ॥

अन्वयः - तनुवाग्विभवः ..... सन्..... कर्णम् आगत्य ..... प्रचोदितः रघूणाम् ..... वक्ष्ये।

मञ्जूषा

अन्वयम्, अपि, तद्गुणैः, चापलाय

3. वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव ॥

अन्वयः - वैवस्वतः ..... माननीयः, छन्दसाम् .... इव ..... आद्यः ..... नाम आसीत्।

मञ्जूषा

प्रणवः, महीक्षिताम्, मनीषिणाम्, मनुः

4. तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इव राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव॥

अन्वयः - शुद्धिमति तदन्वये ..... इन्दु ....., शुद्धिमत्तरः, ... इव दिलीपः .....।

मञ्जूषा

प्रसूतः, क्षीरनिधौ, इव, राजेन्दुः

5. प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद् भरणादपि।

स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः ॥

अन्वयः – सः ....., रक्षणात्, ... अपि प्रजानां पिता। तासाम् ..... केवलं .....।

मञ्जूषा

जन्महेतवः, भरणात्, विनयाधानात्, पितरः

(छ) अधोप्रदत्तानां श्लोकानां भावार्थस्य रिक्तस्थानपूर्तिं मञ्जूषा प्रदतैः पदैः कुरुत-

1. आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।

आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः ।

भावार्थः–यथा राज्ञः दिलीपः ..... विशालः आसीत् तथैव तस्य ..... अपि विशाला आसीत्। बुद्धेः अनुसारं .... अभ्यासमपि करोति स्म। शास्त्रोक्तविधिना कार्यं करोति स्म तदनुरूपमेव ..... प्राप्नोति स्म।

मञ्जूषा

शास्त्राणाम्, शरीरेण, फलम्, बुद्धिः

2. ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।

गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव ॥

भावार्थः–राजा दिलीपः ज्ञाने सत्यपि ..... धारयति, ... सति अपि अपरान् .... करोति, महान्तं ..... कृत्वा अपि स्वकीयां प्रशंसां न करोति। एवं राज्ञः दिलीपस्य गुणाः गुणानुसारित्वात् सहोदराः इव सन्ति।

मञ्जूषा

शक्तौ, त्यागम्, क्षमाम्, मौनम्

3. प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद् भरणादपि।

स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः॥

भावार्थः–राजा दिलीपः .... इव स्वकीयायाः प्रजायाः विनम्रतादि-शिक्षाप्रदाने, तस्याः .... भरणपोषणे च रतः आसीत्। ..... पितरः तु जन्मनः कारणमात्रम् आसन् परं प्रजायाः यथार्थे पिता तु ..... एव आसीत्।

मञ्जूषा

दिलीपः, पिता, रक्षणे, प्रजायाः

4. द्वेष्योऽपि संमतः शिष्टस्तस्यार्तस्य यथौषधम्।
त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता ॥

भावार्थः–राजा दिलीपः द्वेष्यं ..... अपि तथैव स्वीकरोति यथा .... कटु-औषधम्। . ... च प्रिये सति अपि तं तथैव त्यजति यथा ..... क्षता अङ्गुली विषप्रसरणभयात् त्यज्यते।

मञ्जूषा

रोगी, सर्पेण, सज्जनम्, दुष्टस्य

(ज) (I) 'अ' वाक्यांशस्य मेलनं 'आ' वाक्यांशेन सह कुरुत-

'अ' वाक्यांशः	'आ' वाक्यांशः
1. त्यागाय सम्भृतार्थनाम्	(क) स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
2. आकारसदृश-प्रज्ञः	(ख) प्रणवश्छन्दसामिव।
3. आसीन्महीक्षितामाद्यः	(ग) प्रज्ञया सदृशागमः।
4. प्रजानामेव भूत्यर्थम्	(घ) सत्याय मितभाषिणाम्।

(II) 'अ' वाक्यांशस्य मेलनं 'आ' वाक्यांशेन सह कुरुत-

'अ' वाक्यांशः	'आ' वाक्यांशः
1. स वेलावप्रवलयाम्	(क) यौवने विषयैषिणाम्।
2. ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ	(ख) त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
3. आगमैः सदृशारम्भः	(ग) परिखीकृतसागराम्
4. शैशवेऽभ्यस्तविद्यानाम्	(घ) आरम्भसदृशोदयः।

(झ) अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितानां पदानां प्रसंगानुसारं शुद्धम् अर्थं लिखित-

1. त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।
2. शैशवेऽभ्यस्तविद्यानों यौवने विषयैषिणम्।
3. आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव।
4. तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुदधिमतरः।

उत्तराणि

(क) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) सत्याय

(ख) प्रजायै

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) रघुवंशीयाः राजानः यौवने विषयैषिणः।

(ख) रघुवंशीयाः नृपाः वार्धक्ये मुनिवृत्तिनः।।

(3) भाषिककार्यम्-

(क) शैशवे

(ख) यौवने

(ख) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) रघूणाम् राज्ञाम्

(ख) मनुः

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) कविः तनुवाग्विभवः अपि रघूणाम् अन्वयं वक्ष्यति?

(ख) मनीषिणां माननीयः मनुः आसीत्।

(3) भाषिककार्यम्-

(क) रघूणां राज्ञां कृते

(ख) अहम् (कालिदासः)

(ग) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) राजेन्दुः इव

(ख) आकारेण समा

(ग) प्रज्ञया सदृशः

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) रविः सहस्रगुणमुत्स्रष्टुं रसं आदत्ते।

(ख) दिलीपः भूत्यर्थं प्रजाभ्यः बलिम् अग्रहीत्।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) आरम्भः

(ख) रविः

(घ) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) मौनम्

(ख) श्लाघाविपर्ययः

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) दिलीपस्य गुणाः गुणानुबान्धित्वात् सप्रसवा इव आसन्।

(3) भाषिकं कार्यम्–

(क) सप्रसवाः

(ख) गुणाः

(ङ) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) प्रजानाम्

(ख) आर्तस्य औषधम् इव

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) दिलीपः विनयाधानात्, रक्षणात्, भरणात् च प्रजानां पिता आसीत्।

(ख) दिलीपस्य कृते प्रियऽपि दुष्टः उरगक्षताङ्गुलीव त्याज्यः आसीत्।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) दिलीपाय

(ख) सः

(च) अन्वयस्य रिक्तस्थानपूर्तिः-

1. (1) अभ्यस्तविद्यानाम्
   (2) वार्द्धके
   (3) अन्ते
2. (1) अपि
   (2) तद्गुणैः
   (3) चापलाय
   (4) अन्वयम्
3. (1) मनीषिणाम्
   (2) प्रणवः
   (3) महीक्षिताम्
   (4) मनुः
4. (1) क्षीरनिधौ
   (2) इव
   (3) राजेन्दुः
   (4) प्रसूतः
5. (1) विनयाधानात्
   (2) भरणात्
   (3) पितरः
   (4) जन्महेतवः

(छ) भावार्थानाम् रिक्तस्थानपूर्तिः

1. (1) शरीरेण
   (2) बुद्धिः
   (3) शास्त्राणाम्
   (4) फलम्

2. (1) मौनम्

(2) शक्तौ

(3) क्षमाम्

(4) त्यागम्

3. (1) पिता

(2) रक्षणे

(3) प्रजायाः

(4) दिलीपः

4. (1) सज्जनम्

(2) रोगी

(3) दुष्टस्य

(4) सर्पेण

(ज) (I) वाक्यांशमेलनम्

1. (घ) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क)

(II) वाक्यांशमेलनम्

1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (क)

(झ) पदानां शुद्धार्थलेखनम्-

1. अल्पभाषिणाम् 2. युवा-अवस्थायाम्

3. ओंकारः 4. जातः

पाठ–5 दौवारिकस्य निष्ठा

(क) संवृत्ते किञ्चिदन्धकारे भुशुण्डीं स्कन्धे निधाय निपुणं निरीक्षमाणः, आगत-प्रत्यागतं च विदधानः, प्रतापदुर्गदौवारिकः कस्यापि पादक्षेपध्वनिमिवाश्रौषीत्। ततः स्थिरीभूय पुरतः पश्यन् सत्यपि दीपप्रकाशे कमप्यनवलोकयन् गम्भीरस्वरेणैवम् अवादीत्–''कः कोऽत्र भोः?'' इति।

अथ क्षणानन्तरं पुनः स एव पादध्वनिरश्रावीति भूयः साक्षेपमवोचत्–''क एष मामनुत्तरयन् मुमूर्षुः समायाति बधिरः?

ततो ''दौवारिक! शान्तो भव किमिपि व्यर्थं मुमूर्षुरिति बधिर इति च वदसि?'' इति वक्तारमपश्यतैवाऽऽकर्णि मन्द्रस्वरमेदुरा वाणी। अथ ''तत् किं नाज्ञायि अद्यापि भवता प्रभुवर्याणामादेशो यद् दौवारिकेण प्रहरिणा वा त्रिःपृष्टोऽपि प्रत्युत्तरमददद् हन्तव्यः इति'' इत्येवं भाषमाणेन द्वाःस्थेन ''क्षम्यतामेष आगच्छामि, आगत्य च निखिलं निवेदयामि'' इति कथयन् द्वादशवर्षेण केनापि भिक्षावटुनानुगम्यमानः कोऽपि काषायवासाः धृततुम्बीपात्रः भव्यमूर्तिः संन्यासी दृष्टः। ततस्तयोरेवम् अभूदालापः–

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) दौवारिकः किं शृणोति?

(ख) दौवारिकः भुशुण्डीं कुत्र निधाय भ्रमति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) दौवारिकः साक्षेपं किम् अवोचत्?

(ख) संन्यासी केन अनुगम्यमानः आसीत्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''भव्यमूर्तिः संन्यासी'' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(ख) ''मुमूर्षुः समायाति बधिरः'' अत्र क्रियापदं किम्?

(ग) ''प्रकाशे'' इति पदस्य विलोमपदं किम्?

(ख) संन्यासी - कथमस्मान् संन्यासिनोऽपि कठोरभाषणैस्तिरस्करोषि?

दौवारिकः - भगवन्! संन्यासी तुरीयाश्रमसेवीति प्रणम्यते, परन्तु प्रभूणामाज्ञामुल्लंघ्य निजपरिचयमददेवाऽऽयातीत्याक्रुश्यते।

संन्यासी - सत्यं क्षान्तोऽयमपराधः, परं संन्यासिनो ब्रह्मचारिणः पण्डिताः, स्त्रियो बालाश्च न किमपि प्रष्टव्याः। आत्मानम् अपरिचाययन्तोऽपि प्रवेष्टव्याः।

दौवारिकः - संन्यासिन्! संन्यासिन्! बहूक्तम्, विरम, न वयं दौवारिका ब्रह्मणोऽप्याज्ञां प्रतीक्षामहे, केवलं महाराजशिववीरस्याज्ञां वयं शिरसा वहामः। प्राह्णे महाराजस्य सन्ध्योपासनसमये भवादृशानां प्रवेशसमयो भवति, न तु रात्रौ।

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) दौवारिकः संन्यासिनः कैः तिरस्करोषि?

(ख) कः तुरीयाश्रमसेवी?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) दौवारिकः कस्य आज्ञां वहति?

(ख) संन्यासिनः मते प्रवेशकाले के किमपि न प्रष्टव्याः?

3. भाषिककार्यम्–

(क) 'वयम्' इति सर्वनामपदं केभ्यः प्रयुक्तम्?

(ख) 'वहामः' इत्यस्य क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ग) संन्यासी - तत् किं कोऽपि न प्रविशति रात्रौ?

दौवारिकः - (साक्षेपम्) कोऽपि कथं न प्रविशति? परिचिता वा, प्राप्तपरिचयपत्रा वा, आहूता वा प्रविशन्ति, न तु ये केऽपि समागता भवादृशाः।

संन्यासी - दौवारिक! इत आयाहि किमपि कर्णे कथयिष्यामि।

दौवारिकः - (तथा कृत्वा) कथ्यताम्।

संन्यासी - यदि त्वं मां प्रविशन्तं न प्रतिरुन्धेः तदधुनैव परिष्कृतपारदभस्म तुभ्यं दद्याम् यथा त्वं गुञ्जामात्रेणापि द्वापञ्चाशत्संख्याकतुलापरिमितं ताम्रं सुवर्णं विधातुं शक्नुयाः।

दौवारिकः - हेहे, कपटसंन्यासिन्! कथं विश्वासघातं स्वामिवञ्चनं च शिक्षयसि ते केचनान्ये भवन्ति नीचा ये उत्कोचलोभेन स्वामिनं वञ्चयित्वा आत्मानम् अन्धतमसि पातयन्ति न वयं शिवगणास्तादृशाः। (संन्यासिनो हस्तं धृत्वा) इतस्तु सत्यं कथय कस्त्वम्? कुत आयातः? केन वा प्रेषितः?

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) कर्णे कः कथयितुम् इच्छति?

(ख) दौवारिकः हस्तेन कं गृह्णाति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) रात्रौ के प्रवेष्टुं शक्नुवन्ति?

(ख) दौवारिकस्य मते के नीचाः भवन्ति?

3. भाषिकं कार्यम्–

(क) ''त्वम्'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ख) ''सत्यं कथय कस्त्वम्'' अत्र कर्तृपदं किम्?

(ग) ''दिवसे'' इत्यस्य पदस्य विलोमपदं किम्?

(घ) संन्यासी - (स्मित्वा) अथ त्वं मां कं मन्यसे?

दौवारिकः - अहं तु त्वां कस्यापि देशद्रोहिणो गूढ़चरं मन्ये। (हस्तमाकृष्य) तदागच्छ दुर्गाध्यक्षसमीपे, स एवाभिज्ञाय त्वया यथोचितं व्यवहरिष्यति।

ततः संन्यासी तु 'त्यज! नाहं पुनरायास्यामि, नाहं पुनरेवं कथयिष्यामि, महाशयोऽसि दयस्व इति बहुधा अकथयत्, दौवारिकस्तु तमाकृष्य नयन्नेव प्रचलितः।

अथ दीपस्य समीपमागत्य संन्यासिनोक्तम् ''दौवारिक! न मां प्रत्यभिजानासि?''

ततः पुनर्निपुणं निरीक्षमाणो दौवारिकस्तं पर्यचिनोत्–'आः! कथं श्रीमान् गौरसिंहः? आर्य! क्षम्यतामनुचितव्यवहार एतस्य ग्राम्यवराकस्य।' तदवधार्य तस्य पृष्ठे हस्तं विन्यस्यन् संन्यासिरूपो गौरसिंहः समवोचत्–

''दौवारिक! मया दृढं परीक्षितोऽसि, यथायोग्य एव पदे नियुक्तोऽसि, त्वादृक्षा एव वस्तुतः पुरस्कारभाजनानि भवन्ति लोकद्वयं च विजयन्ते।''

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) दौवारिकः कम् आकृष्य प्रचलितः?

(ख) संन्यासीरूपः गौरसिंहः कस्य पृष्ठे हस्तं विन्यस्यति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) दौवारिकः कं दुर्गाध्यक्षसमीपे नेतुम् इच्छति?

(ख) गौरसिंहेन कः दृढं परीक्षितोऽस्ति?

3. भाषिकं कार्यम्–

(क) ''श्रीमान् गौरसिंहः'' इत्यनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(ख) ''गुप्तचरम्'' इति पदस्य किं पर्यायपदमत्र प्रयुक्तम्?

(ग) ''तम्'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ङ) अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितानां पदानां प्रसंगानुसार शुद्धम् अर्थं लिखित-

1. मुमूर्षुः समायाति बधिरः।
2. क्षम्यतामेष आगच्छामि, आगत्य च निखिलं निवेदयामि।
3. संन्यासी तूरीयाश्रमसेवीति प्रणम्यते।
4. स एवाभिज्ञाय त्वया यथोचितं व्यवहरिष्यति।

उत्तराणि

(क) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) पादक्षेपध्वनिम्

(ख) स्कन्धे

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) दौवारिकः साक्षेपमवोचत् – क एषः मामनुत्तरयन् मुमूर्षुः समायाति बधिरः?

(ख) संन्यासी भिक्षाबटुना अनुगम्यमानः आसीत्।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) भव्यमूर्तिः

(ख) समायाति

(ग) अन्धकारे

(ख) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) कठोरभाषणैः

(ख) संन्यासी

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) दौवारिकः महाराज शिववीरस्य आज्ञां वहति।

(ख) संन्यासिनः मते प्रवेशकाले ब्रह्मचारिणः, पण्डिताः, स्त्रियो बालाश्च किमपि न प्रष्टव्याः।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) दौवारिकेभ्यः

(ख) वयम्

(ग) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) संन्यासी

(ख) संन्यासिनम्

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) रात्रौ परिचिता वा, प्राप्तपरिचयपत्रा वा, आहूता वा प्रवेष्टुं शक्नुवन्ति।

(ख) ये उत्कोचलोभेन स्वामिनं वञ्चयित्वा आत्मानम् अन्धतमसि पातयन्ति, ते नीचा भवन्ति।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) संन्यासिने

(ख) त्वम्

(ग) रात्रौ

(घ) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) सन्यासिनम्

(ख) दौवारिकस्य

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) दौवारिकः सन्यासिनं दुर्गाध्यक्षसमीपे नेतुम् इच्छति।

(ख) गौरसिंहेन दौवारिकः दृढ़ं परीक्षितोऽस्ति।

(3) भाषिकं कार्यम्–

(क) श्रीमान्

(ख) गूढचरम्

(ग) सन्यासिने

(ङ) पदानां शुदधार्थं लेखनम्-

1. आगच्छति।
2. सर्वम्।
3. चतुर्थः
4. ज्ञात्वा।

पाठ–6 सूक्ति–सौरभम्

(क) स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा
विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे
विभूषणं मौनमपण्डितानाम् ॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) अज्ञतायाः छादनं किम्?

(ख) मौनं केन विनिर्मितम्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) सर्वविदां समाजे मौनं केषां विभूषणम्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) 'मूर्खाणाम्' इत्यस्य किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(ख) ''विधात्रा'' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?

(ख) रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहु-

र्विद्यावतां वस्तुत एव रूपम्।

अपेक्षया रूपवतां हि विद्या

मानं लभन्तेऽतितरां जगत्याम्॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) वस्तुतः रूपं केषाम् एव भवति?

(ख) के रूपं प्रसिद्धं न आहुः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) बुधाः रूपवताम् अपेक्षया किं लभन्ते?

3. भाषिककार्यम्–

(क) 'मूर्खाः' इत्यस्य पदस्य किं विलोमपदम्?

(ख) 'संसारे' इत्यस्य पदस्य पर्यायपदं किम्?

(ग) न दुर्जनः सज्जनतानुपैति शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः।

चिरं निमग्नोऽपि सुधा-समुद्रे न मन्दरो मार्दवमभ्युपैति ॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) दुर्जनः काम् न उपैति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) मन्दरः सुधासमुद्रे निमग्नोऽपि किं न अभ्युपैति?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''अभ्युपैति'' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

(ख) ''दुर्जनता'' इत्यस्य पदस्य विलोमपदं किम्?

(घ) कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु यत्नः सुमहान् खलानाम्।
निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव ॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) खलानां कुत्र यत्नः भवति?

(ख) सूक्तिरसः कीदृशः भवति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) क्रमेलकः कुत्र प्रविश्य कण्टकजालमेव निरीक्षते?

3. भाषिककार्यम्–

(क) 'सज्जनानाम्'' इति पदस्य विलोमपदं किम्?

(ख) ''निरीक्षते'' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

(ङ) उत्साह-सम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढ़सौहृदञ्च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) निवासहेतोः का स्वयं याति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) लक्ष्मीः कीदृशं जनं प्रति स्वयं याति?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''याति'' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

(ख) ''दृढ़मित्रता'' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(च) दीर्घप्रयासेन कृतं हि वस्तु निमेषमात्रेण भजेद् विनाशम्।
कर्तुं कुलालस्य तु वर्षमेकं भेत्तुं हि दण्डस्य मुहूर्तमात्रम्॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) निमेषमात्रेण किं विनाशं भजेत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) कुलालेन कृतं कुम्भादिं भेत्तुं कस्य मुहूर्तमात्रम् अलम्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) 'लघुप्रयासेन' अस्य विलोमपदं किम्?

(ख) ''वस्तु'' इत्यस्य कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्

(छ) आरभेत हि कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः।
कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते ॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) श्रीः कीदृशं पुरुषं निषेवते?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) का कर्माण्यारभमाणं पुरुषं निषेवते?

3. भाषिककार्यम्–

(क) 'लक्ष्मीः' इत्यस्य पदस्य पर्यायपदं किम्?

(ख) ''कर्माण्यारभमाणं पुरुषम्'' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ज) एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी ॥

1. **एकपदेन उत्तरत–**
   (क) चन्द्रेण का आह्लादिता भवति?
   (ख) सर्वं कुलं केन आह्लादितं भवति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**
   (क) कीदृशेन पुत्रेण कुलं आह्लादितं भवति?
3. **भाषिककार्यम्–**
   (क) ''एकेन सुपुत्रेण'' इत्यत्र विशेष्यपदं किम्?
   (ख) ''रात्रिः'' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(झ) गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः
करी न सिंहस्य बलं न मूषकः ॥

1. **एकपदेन उत्तरत–**
   (क) गुणी किं वेत्ति?
   (ख) वसन्तस्य गुणं कः वेत्ति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**
   (क) सिंहस्य बलं कः न जानाति?
   (ख) निर्बलः किं न वेत्ति?
3. **भाषिककार्यम्–**
   (क) 'निर्बलः' इत्यस्य विलोमपदं किम्?
   (ख) 'गजः' इत्यर्थे अस्मिन् श्लोके किं पदं प्रयुक्तम्?

(ञ) अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषावहम् ।

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) अजीर्णे किं भेषजम्?

(ख) जीर्णे बलप्रदं किं भवति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) वारि अमृतं कदा (कुत्र) भवति?

(ख) वारि विषापहं कदा भवति?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''जीर्णे'' इत्यस्य पदस्य विलोमपदं किम्?

(ख) ''जलम्'' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(ट) अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) शास्त्रं सर्वस्य किम् अस्ति?

(ख) शास्त्रं यस्य लोचनं नास्ति सः कीदृशः भवति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) अत्र शास्त्रस्य के गुणाः कथिताः?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''नेत्रम्'' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(ख) ''प्रत्यक्षम्'' अस्य पदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

(ठ) अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्रं
पाण्डित्यसम्भृतमतिस्तु मितप्रभाषी।
कांस्यं यथा हि कुरुतेऽतितरां निनादं

तद्वत् सुवर्णमिह नैव करोति नादम् ॥

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) अजस्रं कः प्रलपति?

(ख) अतितरां निनादं कः करोति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) मितप्रभाषी कः भवति?

(ख) कांस्यवत् नादं किं न करोति?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''काञ्चनम्'' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(ख) अत्र ''तत्'' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ङ) अधोप्रदत्तानां श्लोकानाम् अन्वयस्य रिक्तस्थानपूर्तिं मञ्जूषाप्रदतैः शब्दैः कुरुत–

1. स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा, विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।।

अन्वयः - विधात्रा स्वायत्तम् ..... मौनम् ..... छादनं विनिर्मितम्।
विशेषतः ..... समाजे अपण्डितानां ..... (भवति)।

मञ्जूषा

विभूषणम्, एकान्तगुणम्, अज्ञतायाः, सर्वविदाम्

2. न दुर्जनः सज्जनतामुपैति शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः।
चिरं निमग्नोऽपि सुधा-समुद्रे न मन्दरो मार्दवमभ्युपैति ।।

अन्नयः - शठः दुर्जनः सहस्रैः ..... शिक्ष्यमाणः सज्जनतां न.....।
मन्दरः ..... चिरं निमग्नः अपि ..... न अभ्युपैति।

मञ्जूषा

उपैति, सुधासमुद्रे, मार्दवम्, अपि

3. उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।

शूरं कृतज्ञं दृढ़सौहृदञ्च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः।।

अन्वयः – लक्ष्मीः ..... अदीर्घसूत्रं, ... व्यसनेषु असक्तम्, ... कृतज्ञं, दृढ़ सौहृदं च ..... स्वयं याति।

मञ्जूषा

क्रियाविधिज्ञम्, उत्साहसम्पन्नम्, निवासहेतो, शूरम्

4. आरभेत हि कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः।

कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते।।

अन्वयः – श्रान्तः ..... हि पुनः पुनः ..... आरभेत। ..... हि कर्माणि .... पुरुषं निषेवते।

मञ्जूषा

आरभमाणम्, श्रान्तः, कर्माणि, श्रीः

5. अनेकसंशयोच्छेदि, परीक्षार्थस्य दर्शकम्।

सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः।।

अन्वयः – अनेकसंशयोच्छेदि, ... दर्शकम् ..... लोचनम् ..... यस्य न अस्ति सः ..... एव।

मञ्जूषा

अन्धः, परोक्षार्थस्य, सर्वस्य, शास्त्रम्

(ढ) अधोप्रदत्तानां श्लोकानां भावार्थानां रिक्तस्थानपूर्तिं मञ्जूषाप्रदत्तैः शब्दैः कुरुत–

1. दीर्घप्रयासेन कृतं हि वस्तु निमेषमात्रेण भजेद् विनाशम्।

कर्तुं कुलालस्य तु वर्षमेकं भेत्तुं हि दण्डस्य मुहूर्तमात्रम्।।

भावार्थः– महता सुदीर्घप्रयासेन .... वस्तु क्षणे एव .... गच्छति। यथा ..... वर्षे निर्मितं घटं दण्डस्य ..... क्षणे एव विनाशं याति।

मञ्जूषा

विनाशम्, निर्मितम्, प्रहारेण, कुम्भकारेण

2. एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।

आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी।

भावार्थः- यथा एकाकिना ..... एव रात्रिः ..... भवति, तथैव एकेन ..... सुपुत्रेण ..... वंशः प्रसन्नतां याति।

मञ्जूषा

सर्वः, विद्यायुक्तेन, चन्द्रेण, सुशोभिता

3. गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः

बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।

पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः

करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ।।

भावार्थः - गुणवान् नरः एव ..... जानाति न तु गुणहीनः यथा ..... एव वसन्तस्य गुणं जानाति काकः न। बलवान् ..... एव बलं जानाति, बलहीनः नरः न, यथा गजः एव ..... बलं जानाति, मूषकः न।

मञ्जूषा

सिंहस्य, नरः, गुणान्, पिकः

4. अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।

भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषावहम्।

भावार्थः - अजीर्ण-अवस्थायां .... औषध इव भवति, जीर्ण-अवस्थायां जलं .... भवति। भोजनस्य .... जलं अमृततुल्यं भवति, भोजनस्य ..... जलं विषतुल्यं भवति।

मञ्जूषा

अन्ते, मध्ये, जलम्, बलप्रदम्

(ज) (I) 'अ' वाक्यांशस्य मेलनं 'आ' वाक्यांशेन सह कुरुत-

'अ' वाक्यांशः	'आ' वाक्यांशः
1. स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा	(क) विद्यावतां वस्तुत एव रूपम्।
2. रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहुः	(ख) क्रमेलकः कण्टकजालमेव।
3. न दुर्जनः सज्जनतामुपैति	(ग) विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
4. निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य	(घ) शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः।

(II) 'अ' वाक्यांशस्य मेलनं 'आ' वाक्यांशेन सह कुरुत-

'अ' वाक्यांशः	'आ' वाक्यांशः
1. चिरं निमग्नोऽपि सुधासमुद्रे	(क) लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः।
2. शूरं कृतज्ञं दृढ़सौहदञ्च	(ख) न मन्दरो मार्दवमभ्युपैति।
3. दीर्घप्रयासेन कृतं हि वस्तु	(ग) भोजनान्ते विषावहम्।
4. भोजने चामृतं वारि	(घ) निमेषमात्रेण भजेद् विनाशम्।

(III) 'अ' वाक्यांशस्य मेलन 'आ' वाक्याशेन सह कुरुत-

'अ' वाक्यांशः	'आ' वाक्यांशः
1. कर्तु कुलालस्य तु वर्षमेकम्	(क) बली बलं वेति व वेति निर्बलः।
2. सर्वस्य लोचनं शास्त्रम्	(ख) भेत्तुं हि दण्डस्य मुहूर्तमात्रम्।
3. गुणी गुणं वेत्ति न वेति निर्गुण	(ग) यथा चन्द्रेण शर्वरी।
4. आह्लादिंत कुलं सर्वम्	(घ) यस्य नास्त्यन्ध एव सः।

(त) अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितानां पदानां प्रसंगानुसार शुद्धम् अर्थं लिखित-

1. स्वायत्तमेकान्तगुणं <u>विधात्रा</u>।
2. रूपं प्रसिद्धं न <u>बुधास्तदाहुः</u>
3. निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य <u>क्रमेलक</u>ः कण्टकजालमेव।
4. कर्माण्यारभमाणं हि पुरूषं <u>श्री</u>निषेवते।
5. आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण <u>शर्वरी</u>।

उत्तराणि

(क) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) मौनम्

(ख) विधात्रा

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) सर्वविदां समाजे मौनं अपण्डितानां विभूषणम्?

(3) भाषिककार्यम्–

(क) अपण्डितानाम्

(ख) विनिर्मितम्

(ख) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) विद्यावताम्

(ख) बुधाः

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) बुधाः रूपवताम् अपेक्षया विद्यामानं लभन्ते

(3) भाषिककार्यम्–

(क) बुधाः

(ख) जगत्याम्

(ग) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) सज्जनताम्

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) मन्दरः सुधा-समुद्रे निमग्नोऽपि मार्दवम् न अभ्युपैति।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) मन्दरः

(ख) सज्जनता

(घ) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) दोषेषु

(ख) कर्णामृतम्

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) क्रमेलकः केलिवनं प्रविश्य कण्टकजालमेव निरीक्षते।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) खलानाम्

(ख) क्रमेलकः

(ङ) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) लक्ष्मीः

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) लक्ष्मीः शूरं कृतज्ञं दृढ़सौहृदञ्च जनं प्रति स्वयं याति।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) लक्ष्मीः

(ख) दृढ़सौहृदञ्च

(च) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) वस्तु

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) कुलालेन कृतं कुम्भादिं भेत्तुं दण्डस्य मुहूर्तमात्रम् अलम्।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) दीर्घ प्रयासेन

(ख) भजेत्

(छ) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) कर्माण्यारभमाणम्

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) श्रीः कर्माण्यारभमाणं पुरुषं निषेवते।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) श्रीः

(ख) पुरुषम्

(ज) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) शर्वरी (ख) सुपुत्रेण

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) विधायुक्तेन सुपुत्रेण कुलम् आह्लादितं भवति।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) सुपुत्रेण (ख) शर्वरी

(झ) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) गुणम् (ख) पिकः

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) सिंहस्य बलं मूषकः न जानाति।

(ख) निर्बलः बलं न वेत्ति।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) बली (ख) करी

(ञ) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) वारि (ख) वारि

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) वारि भोजने अमृतं भवति।

(ख) वारि भोजनान्ते विषावहं भवति।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) अजीर्णे

(ख) वारि

(ट) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) लोचनम् (ख) अन्धः

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) अत्र अनेकसंशयोच्छेदि, परोक्षार्थस्य दर्शकम्, सर्वस्य लोचनम् शास्त्रस्य एते गुणाः कथिताः।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) लोचनम् (ख) परोक्षम्

(ठ) (1) एकपदेन उत्तरत–

(क) अल्पज्ञः पुरुषः (ख) कांस्यम्

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) पाण्डित्यसम्भृतमतिः मितप्रभाषी भवति।

(ख) सुवर्णं कांस्यम्वत् नादं न करोति।

(3) भाषिककार्यम्–

(क) सुवर्णम्

(ख) कांस्याय

(ड) श्लोकानाम् अन्वयस्य रिक्तस्थानपूर्तिः

1. (1) एकान्तगुणम् (2) अज्ञतायाः
   (3) सर्वविदाम् (4) विभूषणम्
2. (1) अपि (2) उपैति
   (3) सुधासमुद्रे (4) मार्दवम्
3. (1) उत्साहसम्पन्नम् (2) क्रियाविधिज्ञम्
   (3) शूरम् (4) निवासहेतोः

4. (1) श्रान्तः (2) कर्माणि

(3) श्रीः (4) आरभमाणम्

5. (1) परोक्षार्थस्य (2) सर्वस्य

(3) शास्त्रम् (4) अन्धः

(ढ) भावार्थानाम् रिक्तस्थानपूर्तिः

1. (1) निर्मितम् (2) विनाशम्

(3) कुम्भकारेण (4) प्रहारेण

2. (1) चन्द्रेण (2) सुशोभिता

(3) विद्यायुक्तेन (4) सर्वः

3. (1) गुणान् (2) पिकः

(3) नरः (4) सिंहस्य

4. (1) जलम् (2) बलप्रदम्

(3) मध्ये (4) अन्ते

(ज) (I) वाक्यांशमेलनम्

1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (ख)

(II) वाक्यांशमेलनम्

1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग)

(III) वाक्यांशमेलनम्

1. (ख) 2. (घ) 3. (क) 4. (ग)

(त) पदानां शुदधार्थ लेखनम्-

1. ईश्वरण। 2. विद्वांसः।

3. उष्ट्रः। 4. लक्ष्मीः।

5. रात्रिः।

पाठ–7 नैकेनापि समं गता वसुमती

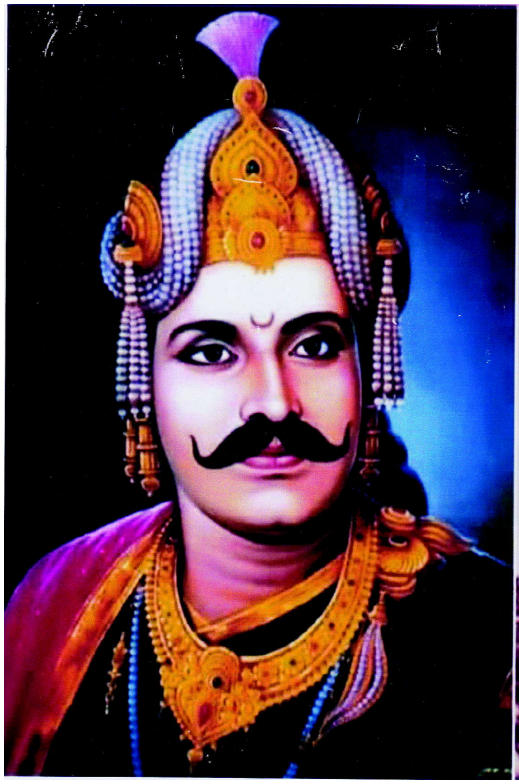

(क) पुरा धाराराज्ये सिन्धुल–संज्ञो राजा चिरं प्रजाः पर्यपालयत्। तस्य वार्धक्ये भोज इति पुत्रः समजनि। सः यदा पञ्चवार्षिकस्तदा पिता ह्यात्मनो जरां ज्ञात्वा मुख्यामात्यानाहूयानुजं मुञ्जं महाबलमालोक्य पुत्रं व बालं संवीक्ष्य विचारयामास–यद्यहं राज्यलक्ष्मीभारधारणसमर्थं सहोदरमपहाय राज्यं पुत्राय प्रयच्छामि, तदा लोकापवादः। अथ वा बालं मे पुत्रं मुञ्जो राज्यलोभाद्विषादिना मारयिष्यति तदा दत्तमपि राज्यं वृथा। पुत्रहानिर्वशोच्छेदश्च इति विचार्य राज्यं मुञ्जाय दत्त्वा तदुत्सङ्गे भोजमात्मानं मुमोच।

ततः क्रमाद् राजनि दिवंगते संप्राप्तराज्य-संपत्तिर्मुञ्जो मुख्यामात्यं बुद्धिसागरनामानं व्यापारमुद्रया दूरीकृत्य तत्पदेऽन्यं नियोजयामास। अथ कदाचन सभायां ज्योतिः-शास्त्रपारंगतः कश्चन ब्राह्मणः समागम्य राजानम् आह-देव! लोकाः मां सर्वज्ञं कथयन्ति। तत्किमपि यथेच्छं पृच्छ।

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) राज्ञः नाम किम् आसीत्?

(ख) सभायाम् आगतः ब्राह्मणः कस्मिन् शास्त्रे पारंगत आसीत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) राजा किं विचार्य राज्यं मुञ्जाय दत्तवान्?

(ख) लोकाः कं सर्वज्ञं कथयन्ति?

3. **भाषिककार्यम्-**

(क) ''नृपे'' इत्यस्य पदस्य किं पर्यायपदम्?

(ख) ''तस्य'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ग) ''शास्त्रपारंगतः ब्राह्मणः'' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(ख) ततो मुञ्जः प्राह-भोजस्य जन्मपत्रिकां विधेहि इति। विप्रः जन्मपत्रिकां विधााय उक्तवान्-

पञ्चाशत्पञ्चवर्षाणि सप्तमासदिनत्रयम्।

भोजराजेन भोक्तव्यः सगौडो दक्षिणापथः॥

भोजविषयिणीम् इमां भविष्यवाणीं निशम्य मुञ्जो विच्छावदनोऽभूत्। ततो राजा ब्राह्मणं संप्रेष्य निशीथे शयनमासाद्य व्यचिन्तयत्-यदि राजलक्ष्मीर्भोजकुमारं गमिष्यति, तदाहं जीवन्नपि मृतः। ततश्च अभुक्त एव सः एकाकी किमपि चिन्तयत्विा बंगदेशाधीश्वरं वत्सराजं समाकारितवान् वत्सराजश्च धारानगरीं सम्प्राप्य राजानं प्रणिपत्योपविष्टः।

राजा च सौधं निर्जनं विधाय वत्सराजं प्राह-त्वया भोजो भुवनेश्वरी-विपिने रात्रौ हन्तव्यः, छिन्नं च तस्य शिरः मत्पार्श्वे अन्तःपुरम् आनेतव्यम्। एतन्निशम्य वत्सराजः उत्थाय नृपं नत्वा प्रावोचत्-यद्यपि देवादेशः प्रमाणम्, पुनरपि किंचिद् वक्तुकामोऽस्मि, सापराधमपि मे वचः क्षन्तव्यम्। देव! पुत्रवधो न कदापि हिताय भवतीति।

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) विप्रः कस्य जन्मपत्रिकां अरचयत्?

(ख) केन सगौडो दक्षिणापथः भोक्तव्यः भवेत्?

(ग) कस्य वधः न कदापि हिताय भवति

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) राजा निशीथे शयनमासाद्य किम् अचिन्तयत्?

(ख) वत्सराजः कस्य देशस्य राजा आसीत्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) "मुञ्जः विच्छायवदनः" अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ख) ''रात्रौ'' इत्यस्य पदस्य पर्यायपदं किम्?

(ग) ''सः'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ग) वत्सराजस्य इदं वचनमाकर्ण्य कुपितो राजा प्राह-त्वं मम सेवकोऽसि, मया यत्कथ्यते त्वया तद् विधेयम्। पुनः वत्सराजः राजाज्ञा पालीनयैवेति मत्वा तूष्णीं बभूव। अनन्तरम् अनिच्छन्नपि वत्सराजः भोजं रथे निवेश्य रात्रौ वनं नीतवान्। तत्र आत्मनो वधयोजनां ज्ञात्वा भोजः किमपि वत्सराजं कथितवान्। तद्वचनैः वैराग्यमापन्नौ वत्सराजः तं न हतवान्, अपितु गृहमागत्य भोजं गृहाभ्यन्तरे भूमौ निक्षिप्य ररक्ष। पुनः कृत्रिमरूपेण भोजस्य मस्तकं कारयित्वा राजभवनं गत्वा वत्सराजो राजानं प्राह-श्रीमता यदादिष्टं तत्साधितमिति। ततो राजा भोजवधं ज्ञात्वा तं पृष्टवान्-वत्सराज! खड्गप्रहारसमये तेन किमुक्तम्?

वत्सराजेन च राज्ञे भोजस्य अन्तिमसन्देशरूपेण तत्प्रदत्तः श्लोकः समर्पितः-

मान्धाता च महीपतिः कृतयुगालंकारभूतो गतः

सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः।

अन्ये वापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिवं भूपते!

नैकेनापि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति॥

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) वत्सराजः भोजं रथे निवेश्य कुत्र नीतवान्?

(ख) वत्सराजः कं न हतवान्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) वत्सराजस्य वचनमाकर्ण्य कुपितः राजा किं प्राह?

(ख) वत्सराजः भोजं कुत्र निक्षिप्य ररक्ष?

3. **भाषिककार्यम्-**

(क) ''कुपितः राजा'' अनयोः पदमोः विशेषणपदं किम्?

(ग) ''त्वं मम सेवकोऽसि'' अत्र ''त्वम्'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ग) ''वसुमती नूनं त्वया समं यास्यति'' अत्र क्रियापदं किम्?

(घ) शोकसन्तप्तो मुञ्जः प्रायश्चित्तं कर्तुं आत्मनो वह्नौ प्रवेशनं निश्चितवान्। राज्ञः वह्निप्रवेशकार्यक्रमं श्रुत्वा वत्सराजः बुद्धिसागरं नत्वा शनैः-शनैः प्राह-तात! मया भोजराजो रक्षित एवास्ति। पुनः बुद्धिसागरेण तस्य कर्णे किमपि कथितम्, यन्निशम्य वत्सराजः ततो निष्क्रान्तः। पुनः राज्ञो वह्निप्रवेशकाले कश्चन कापालिकः सभां समागतः।

सभामागतं कापालिकं दण्डवत् प्रणम्य मुञ्जः प्रावोचद्-हे योगीन्द्र! महापापिना मया हतस्य पुत्रस्य प्राणदानेन मां रक्षेति। अथ कापालिकस्तं प्रावोचद्-राजन्! मा भैषीः। शिवप्रसादेन स जीवितो भविष्यति। तदा श्मशानभूमौ कापालिकस्य योजनानुसारं भोजः तत्र समानीतः। 'योगिना भोजो जीवितः' इति कथा लोकेषु प्रसृता। पुनः गजेन्द्रारूढो

भोजो राजभवनमगात्। संतुष्टो राजा मुञ्जः भोजं निजसिंहासने निवेश्य निजपट्टराज्ञीभिश्च सह तपोवनभूमिं गत्वा परं तपस्तेपे। भोजश्चापि चिरं प्रजाः पालितवान्।

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) कः प्रायश्चित्तं कर्त्तुं निश्चितवान्?

(ख) गजेन्द्रारूढः कः राजभवनमगात्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) राज्ञः वह्निप्रवेशकाले कः सभाम् आगतवान्?

(ख) का कथा लोकेषु प्रसृता?

3. भाषिककार्यम्–

(क) ''मया'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ख) ''संतुष्टः राजा'' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ग) ''अगात्'' अस्य क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ङ) अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितानां पदानां प्रसंगानुसार शुद्धम् अर्थं लिखित-

1. तस्य वार्धक्ये भोज इति पुत्रः समजनि।
2. राज्यं मुञ्जाय दत्वा तदुत्सङ्गे भोजं मुमोच।
3. विप्रः जन्मपत्रिकां विधाय उक्तवान्
4. नैकेनापि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति।

उत्तराणि

(क) 1. एकपदेन उत्तरत–

(क) सिन्धुलः

(ख) ज्योतिः शास्त्रे

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) पुत्रहानिर्वंशोच्छेदश्च इति विचार्य राजा राज्यं मुञ्जाय दत्तवान्।

(ख) लोकाः ज्योतिः - शास्त्रपारंगतं ब्राह्मणं सर्वज्ञं कथयन्ति।

3. भाषिककार्यम्–

(क) राजनि (ख) सिन्धुल-संज्ञाय राज्ञे

(ग) शास्त्रपारंगत:

(ख) 1. एकपदेन उत्तरत–

(क) भोजस्य (ख) भोजेन (ग) पुत्रस्य

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) राजा निशीथे शयनमासाद्य अचिन्तयत्–यदि राजलक्ष्मी: भोजकुमाारं गमिष्यति, तदाहं जीवन्नपि मृत:।

(ख) वत्सराज: बंगदेशस्य राजा आसीत्।

3. भाषिककार्यम्–

(क) मुञ्ज: (ख) निशीथे (ग) मुञ्जाय

(ग) 1. एकपदेन उत्तरत–

(क) वनम् (ख) भोजम्

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) वत्सराजस्य वचनमाकर्ण्य कुपित: राजा प्राह-त्वं मम सेवकोऽसि, मया यत्कथ्यते त्वया तद् विधेयम्।

(ख) वत्सराज: भोजं गृहाभ्यन्तरे भूमौ निक्षिप्य ररक्ष।

3. भाषिककार्यम्–

(क) कुपित: (ख) वत्सराजाय

(ग) यास्यति

(घ) 1. एकपदेन उत्तरत–

(क) मुञ्ज: (ख) भोज:

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) राज्ञः वह्निप्रवेशकाले कश्चन कापालिकः सभाम् आगतवान्।

(ख) ''योगिना भोजः जीवितः'' इति कथा लोकेषु प्रसृता।

3. भाषिककार्यम्–

(क) वत्सराजाय (ख) राजा (ग) भोजः

(ङ) पदानां शुदधार्थलेखनम्-

1. वृद्ध-अवस्थायाम् 2. अंके

3. रचयित्वा। 4. पृथ्वी

पाठ–9 मदालसा

(क) (ततः प्रविशति प्रकृतिसौन्दर्यमवलोकयन् महाराजस्य शत्रुजितः पुत्रः ऋतध्वजः)

ऋतध्वजः – अहो शोभनं गन्धर्वराजविश्वावसोः राजोद्यानम्। आम्रमञ्जरीणां परां शोभां दृष्ट्वा कोकिलानां च मधुरवचांसि श्रुत्वा कस्य यूनो हृदयं सहसा उत्कण्ठितं न भविष्यति? वामपार्श्वे रमणीनामालाप इव श्रूयते। अत्रैव स्थित्वा श्रोष्यामि।

कुण्डला – सखि मदालसे! त्वं तु केवलं विद्याध्ययने एव रता कियन्तं कालं यावत् ब्रह्मचर्यव्रतं धारयिष्यसि?

मदालसा – ज्ञानोदधिस्तु अनन्तपारो गभीरश्च। मया सागरतटे स्थित्वा कतिपयबिन्दव एव प्राप्ता अद्यावधि।

कुण्डला – विनयशीले! विद्या ददाति विनयम् अत एव एवं भणसि। कुलगुरुतुम्बुरुमहाभागैस्तु गन्धर्वराजाय अन्यदेव सूचितम्।

मदालसा – किं श्रुतं त्वया यद् गुरुवर्यैः माम् अधिकृत्य पित्रे कथितम्?

कुण्डला – अथ किम्। राजकुमारी मदालसा सर्वविद्यानिष्णाता जाता परं तया स्वयं वरः न प्राप्तः अतः तस्यै योग्यवरस्य अन्वेषणं कार्यम् इत्यासीद् गुरुपादानां मतम्।

1. एकपदेन उत्तरत-

(i) कस्य उद्यानं शोभनम् अस्ति?

(ii) विद्या किं ददाति?

(iii) मदालसायाः सख्युः नाम किम्?

(iv) कासां मधुरवचांसि भवन्ति?

(v) मदालसा कस्मिन् कार्ये रता आसीत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) यूनः हृदयं किं दृष्ट्वा श्रुत्वा च उत्कण्ठितं भवति?

(ii) ज्ञानोदधिः कीदृशः भवति?

(iii) गुरुवर्यैः पित्रे मदालसाम् अधिकृत्य किं कथितम्?

3. भाषिककार्यम्-

(i) 'परां शोभाम्' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ii) 'विद्या ददाति विनयम्' अत्र क्रियापदं किम्?

(iii) 'युवकस्य' इति पदस्य पर्यायपदं नाट्यांशे किं प्रयुक्तम्?

(ख) मदालसा – (हसित्वा) नहि जानन्ति ते यदहं तु विवाहबन्धनं तु स्वीकर्तुं न इच्छामि।

कुण्डला – किं करिष्यसि तदा?

मदालसा – ब्रह्मवादिनी भविष्यामि। आचार्येति पदं प्राप्य शिष्येभ्यः जीवनकलां शिक्षयिष्यामि।

कुण्डला – ज्ञाने तेऽभिरुचिम् अध्ययने अध्यापने च। परं यथा लतेयं सहकारमवलम्बते तथैव नारी जीवनयात्रायां कमपि सहचरम् अपेक्षते यः तस्याः अवलम्बनं स्यात्।

मदालसा – नास्ति मत्कृते आवश्यकता अवलम्बनस्य। स्वयं समर्था जीवनपथे चलितुमहं न कस्यापि संकैतैः नर्तितुं पारयामि।

कुण्डला – नर्तिष्यसि तदा एकाकिनी एव?

मदालसा – (विहस्य) यदि त्वं शीघ्रमेव पतिगृहं गमिष्यसि तदा एकाकिनी भविष्यामि परम् एकः उपायः अपि चिन्तितः मया।

कुण्डला – कः उपायः?

मदालसा – संगीतसाहित्यमाध्यमेन ब्रह्मविद्यां सरसां विधाय बहुभ्यः शिशुभ्यः शिक्षणं प्रदास्यामि।

1. एकपदेन उत्तरत–

(i) मदालसा कस्य बन्धनं स्वीकर्तुं न इच्छति?

(ii) मदालसा केभ्यः जीवनकलां शिक्षयिष्यति?

(iii) अध्ययने अध्यापने कस्याः अभिरुचिः अस्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) एकाकिन्या मदालसया कः उपायः चिन्तितः?

(ii) नारी जीवनयात्रायां कम् अपेक्षते?

3. भाषिककार्यम्–

(i) 'एक उपायः' अनयोः विशेषणपदं किम्?

(ii) 'अहं तु विवाहबन्धनं स्वीकर्तुं न इच्छामि' अत्र 'अहं' इति पदं कस्यै प्रयुक्तम्?

(iii) 'त्वं शीघ्रमेव पतिगृहं गमिष्यसि' अत्र क्रियापदं किम्?

(ग) **कुण्डला** – गृहस्थाश्रमं प्रविश्य स्वशिशूनां चरित्रनिर्माणं मातुरधीनम्। तत्र का विचारणा?

मदालसा – यथाहं पश्यामि पुरुषः भार्यायां स्वाधिपत्यं स्थापयति। द्रौपदीं स्वीयां सम्पत्तिं मन्यमानः युधिष्ठिरः तां द्यूते हारितवान् यथा सा निर्जीवं वस्तु आसीत्।

कुण्डला – निर्जीवा तु नासीत् परं युधिष्ठिरस्य एषा एव चिन्तनसरणिः आसीत् इति प्रतीयते।

मदालसा – हरिश्चन्द्रः स्वपत्नीं शैव्यां पुत्रं रोहितं च जनसंङ्कुले आपणे विक्रीतवान्। नास्ति मे मनोरथः ईदृशं पत्नीपदमङ्गीकर्तुम्।

कुण्डला – कटुसत्यं खल्वेत्। परं सखि! अस्मिन् संसारे विभिन्नप्रकृतिकाः पुरुषाः वसन्ति। स्वप्रकृत्यनुकूलः वरः अपि प्राप्यते। त्वं तु नवनवोन्मेषशालिन्या प्रतिभया विहितैः नूतनैः प्रयोगैः अस्मान् सर्वान् विस्मापयसि। गृहस्थाश्रमोऽपि एका प्रयोगशाला यस्यां त्वं स्वज्ञानविज्ञानयोः प्रयोगं कर्तुं शक्ष्यसि।

1. एकपदेन उत्तरत–

(i) युधिष्ठिरः कां द्यूते हारितवान्?

(ii) पुरुषः कस्यां स्वाधिपत्यं स्थापयति?

(iii) हरिश्चन्द्रस्य पुत्रस्य नाम किम्?

(iv) कः एका प्रयोगशाला अस्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) अस्मिन् संसारे कीदृशाः पुरुषाः वसन्ति?

(ii) मदालसा कथं सर्वान् विस्मापयति?

3. भाषिककार्यम्–

(i) 'निर्जीवं वस्तु' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ii) 'नास्ति मे मनोरथः' इत्यत्र कर्तृपदं किम्?

(iii) 'युधिष्ठिरः तां द्यूते हारितवान्' इति वाक्ये 'ताम्' इति सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्?

(घ) मदालसा – कुण्डले! दुर्लभो जनः ईदृशः यः गृहस्थप्रयोगशालायां स्वपत्न्यै स्वतन्त्रतां दद्यात्।

ऋतध्वजः – (स्वगतम्) अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम्। (प्रकाशम्) उपस्थितोऽहं शत्रुजितः पुत्रः ऋतध्वजः। आज्ञा चेत् अहमपि अस्यां परिचर्चायां सम्मिलितो भवेयम्।

कुण्डला – स्वागतम् अतिथये। अपि श्रुताः भवद्भिः मम सखीविचाराः?

ऋतध्वजः – आम्। अत एव प्रष्टुमुत्सहे किं गन्धर्वराजविश्वासु-महाभागाः अपि स्वपत्नीं युधिष्ठिर इव हारितवन्तः। हरिश्चन्द्र इव विक्रीतवन्तः?

कुण्डला – मदालसे तूष्णीं किमर्थं तिष्ठसि? देहि प्रत्युत्तरम्।

ऋतध्वजः – एकस्य अपराधेन सर्वा जातिः दण्ड्या इति विचित्रो न्यायः तव सख्याः।

मदालसा – अत्रभवन्तः नारीस्वाधीनतामधिकृत्य किं कथयन्ति?

ऋतध्वजः – माता एव प्रथमा आचार्या इत्यस्ति मे अवधारणा। नारी एव समस्तसृष्टेः निर्मात्री। परं कथनेन किम्? परीक्ष्य एव ज्ञास्यति अत्रभवती। परीक्षार्थमुद्यतोऽस्मि गृहस्थाश्रमप्रयोगशालायाम्।

मदालसा – स्वीकृतः प्रस्तावः।

कुण्डला – दिष्ट्या वर्धेथां युवाम्। मित्रवर, गन्धर्वकन्या मदालसा गान्धर्वविवाहविधिना वृणोति अत्रभवन्तम्। आकारये अहं कुलगुरुं तुम्बुरुम्। असौ अग्निं साक्षीकृत्य आशीर्वचांसि वक्ष्यति।

ऋतध्वजः – प्रथमं तु सखीवचनं श्रोष्यावः। तदनु स्वयमेव कुलगुरुं पितरौ च सभाजयितुं गमिष्यावः।

1. एकपदेन उत्तरत–

(i) का प्रथमा आचार्या अस्ति?

(ii) नारी समस्तसृष्टेः का अस्ति?

(iii) कुलगुरुः कं साक्षीकृत्य आशीर्वचांसि वक्ष्यति?

(iv) ऋतध्वजस्य पितुः नाम किम्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) कीदृशः जनः दुर्लभोऽस्ति?

(ii) ऋतध्वजः किं प्रष्टुम् उत्सहते?

(iii) मदालसायाः विचित्रः न्यायः कः?

3. भाषिककार्यम्–

(i) 'स्वीकृतः प्रस्तावः' इत्यत्र क्रियापदं किम्?

(ii) 'आकारये अहं कुलगुरुं तुम्बुरुम्' अत्र अहम्' इति सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्?

(iii) ''जनः ईदृशः' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(iv) 'स्त्री' इत्यस्य पर्यायपदं नाट्यांशात् चित्वा लिखत।

(ङ) **कुण्डला** – परस्परप्रीतिमतोः भवतोः उपदेशस्य नास्ति कोऽपि अवकाशः तदापि सखीस्नेहः मां भाषयति-भर्त्रा सदैव भार्या भर्तव्या रक्षितव्या च। यतोहि धर्मार्थकामसंसिद्धये यथा भार्या भर्तुः सहायिनी भवति तथा न कोऽपि अन्यः। परस्परमनुव्रतौ पतिपत्न्यौ त्रिवर्गं साधयतः। पतिः यदि प्रभूतं धनम् अर्जयित्वा गृहमानयति तत् खलु पत्न्यभावे कुपात्रेषु दीयमानं क्षयमेति।

ऋतध्वजः – लक्ष्म्याः रक्षार्थं पत्न्याः सहयोगः अनिवार्यः।

मदालसा – कुण्डले! लक्ष्मीपूजायां न मे प्रवृत्तिः। यदि लक्ष्मीः पूज्या प्रिया च अतिथिवर्यस्य, तदा इदानीमेव मे नमस्कारः।

ऋतध्वजः – स्वाभिमानिनि प्रिये! समक्षं ते कथं कापि सपत्नी स्थातुं शक्नोति? लक्ष्मीस्तु तव दासी भविष्यति नैव सपत्नी। गार्हस्थ्यं तु त्वदधीनं भविष्यति। आत्मानं भाविसन्ततिं च ज्ञानविज्ञानानुसन्धात्र्या हस्ते समर्पयितुमीहे। आगम्यताम् गुरुभ्यः पितृभ्यां च समाचारं श्रावयावः।

1. एकपदेन उत्तरत–

(i) लक्ष्म्याः रक्षार्थं कस्य सहयोगः अनिवार्यः?

(ii) केन भार्या भर्तव्या रक्षितव्या च?

(iii) परस्परप्रीतिमतोः भवतोः कस्य अवकाशः अस्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) मदालसायाः कस्यां प्रवृत्तिः नास्ति?

(ii) केषां सिद्धये भार्या भर्तुः सहायिनी भवति?

3. भाषिककार्यम्-

(i) 'भर्ता' इत्यस्य किं पर्यायपदं नाट्यांशे प्रयुक्तम्?

(ii) 'कुपात्रेषु दीयमानं क्षयमेति' इत्यत्र क्रियापदं किम्?

(iii) 'प्रभूतं धनम्' इत्यनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(च) अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितानां पदानां प्रसंगानुसार शुद्धम् अर्थ लिखित-

1. कस्य यूनो हृदयं सहसा उत्कण्ठितं न भवति।
2. रमणीनाम् आलाप इव श्रूयते।
3. मदालसे तूष्णीं किमर्थं तिष्ठसि।
4. माता एवं प्रथम आचार्या इत्यस्ति में अवधारणा।
5. दिष्ट्या वर्धैथां युवाम्।

उत्तराणि

(क) **1. एकपदेन उत्तरत-**

(i) विश्वावसोः

(ii) विनयम्

(iii) कुण्डला

(iv) कोकिलानां

(v) विद्याध्ययने

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) आम्रमञ्जरीणां परां शोभां दृष्ट्वा कोकिलानां च मधुरवचांसि श्रुत्वा यूनः हृदयम् उत्कण्ठितं भवति।

(ii) ज्ञानोदधिः तु अनन्तपारो गभीरः च भवति।

(iii) गुरुवर्यैः पित्रे मदालसाम् अधिकृत्य कथितम् यत्-राजकुमारी मदालसा सर्वविद्यानिष्णाता जाता परं तया स्वयं वरः न प्राप्तः अतः तस्यै योग्यवरस्य अन्वेषणं कार्यम् इति।

3. भाषिककार्यम्-

(i) शोभाम् (ii) ददाति (iii) यूनः

(ख) **1. एकपदेन उत्तरत-**

(i) विवाहस्य (ii) शिष्येभ्यः (iii) मदालसायाः

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) एकाकिन्या मदालसया उपायः चिन्तितः यत् संगीत-साहित्य माध्यमेन ब्रह्मविद्यां

सरसां विधाय बहुभ्यः शिशुभ्यः शिक्षणं प्रदास्यामि।

(ii) नारी जीवनयात्रायां कमपि सहचरम् अपेक्षते।

3. भाषिककार्यम्-

(i) एकः (ii) मदालसायै

(ग) **1. एकपदेन उत्तरत-**

(i) द्रौपदीम् (ii) भार्यायाम् (iii) रोहितः (iv) गृहस्थाश्रमः

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) अस्मिन् संसारे विभिन्नप्रकृतिकाः पुरुषाः वसन्ति।

(ii) मदालसा नवनवोन्मेषशालिन्या प्रतिभया विहितैः नूतनैः प्रयोगैः अस्मान् सर्वान् विस्मापयति।

3. भाषिककार्यम्-

(i) वस्तु (ii) मनोरथः (ii) द्रौपदीम्

(घ) **1. एकपदेन उत्तरत-**

(i) माता (ii) निर्मात्री (iii) अग्निम् (iv) शत्रुजितः

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) दुर्लभो जनः ईदृशः यः गृहस्थप्रयोगशालायां स्वपत्न्यै स्वतन्त्रतां दद्यात्।

(ii) ऋतध्वजः प्रष्टुम् उत्सहते यत् किं गन्धर्वराज-विश्वावसुमहाभागाः अपि स्वपत्नीं युधिष्ठिर इव हारितवन्तः हरिश्चन्द्रः इव विक्रीतवन्तः?

(iii) एकस्य अपराधेन सर्वा जातिः दण्ड्या इति विचित्रो न्यायः मदालसायाः।

3. भाषिककार्यम्-

(i) स्वीकृतः (ii) कुण्डलायै (ii) ईदृशः (iv) नारी

(ङ) **1. एकपेदन उत्तरत–**

(i) पत्न्याः (ii) भर्त्रा (iii) उपदेशस्य

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) मदालसायाः लक्ष्मीपूजायां प्रवृत्तिः नास्ति।

(ii) धर्मार्थकामसिद्धये भार्या भर्तुः सहायिनी भवति।

3. भाषिककार्यम्–

(i) पतिः (ii) एति (ii) धनम्

(च) 1. युवकस्य 2. वार्तालापः 3. मौनम्

4. विचारः 5. भाग्येन

पाठ–11 कार्याकार्यव्यवस्थितिः

अधोलिखितानि पद्यानि पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत–

(क) ''अभयं सत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।

दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।।

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) मनुष्यस्य कुत्र व्यवस्थितिः स्यात्?

(ख) कस्य संशुद्धिः महत्त्वपूर्णा?

(ग) केषु दया करणीया?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) अत्र के गुणाः दैवी-सम्पद्-रूपेण निरूपिताः?

(ख) श्रीकृष्णः अत्र कं सम्बोधयति?

3. भाषिककार्यम्-

(क) 'कोमलत्वम्' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(ख) 'अशान्तिः' इत्यस्य किं विलोमपदमत्र?

(ग) 'करुणा' इत्यस्य किं पर्यायपदमत्र?

(ख) ''दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम्।।
दैवी संपद् विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव।।''

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) विमोक्षाय का मता?

(ख) दैवीं सम्पदं कः न शोचते?

(ग) प्रथमे श्लोके कीदृशी सम्पद् व्याख्याता?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) आसुरी-सम्पदः कानि लक्षणानि अत्र कथितानि?

(ख) निबन्धाय का मता?

3. भाषिककार्यम्-

(क) 'आसुरीम्' इति विशेषणपदस्य किं विशेष्यपदमत्र?

(ख) 'प्राप्तः' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(ग) 'माधुर्यम्' इत्यस्य किं विलोमपदमत्र?

(ग) "प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाऽऽचारो न सत्यं तेषु विद्यते।।
एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः।।"

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) आसुराः जनाः कस्य क्षयाय प्रभवन्ति?

(ख) कीदृशाः जनाः प्रवृत्तिं निवृत्तिं च न विदुः?

(ग) उग्रकर्माणः के सन्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) कीदृशाः जनाः जगतः क्षयाय प्रभवन्ति?

(ख) आसुरेषु जनेषु किं किं न विद्यते?

3. भाषिककार्यम्-

(क) 'दृष्टिम्' इत्यस्य किं विशेषणपदमत्र प्रयुक्तम्?

(ख) 'विनाशाय' इत्यर्थे किं पदमत्र?

(ग) 'न सत्यं तेषु विद्यते' अत्र क्रियापदं किम्।

(घ) "इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।।
असौ मया हतः शत्रुः हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी।।

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) मया कः हतः?

(ख) अहं किं प्राप्स्ये?

(ग) इदं मया कदा लब्धम्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) पुनः किं मे भविष्यति?

(ख) आसुरी-सम्पदायुक्तः जनः किं चिन्तयति?

3. भाषिककार्यम्-

(क) 'प्राप्तम्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(ख) 'मित्रम्' इत्यस्य किं विलोमपदमत्र?

(ग) 'भविष्यति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदम् किमत्र?

(ङ) "अहंकारं बलं दर्पं क्रोधं मोहं च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः।।
तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु।।"

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) के प्रद्विषन्तः भवन्ति?

(ख) तान् अहं कीदृशीषु योनिषु क्षिपामि?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) श्रीकृष्णः नराधमान् कुत्र क्षिपति?

(ख) आत्मपरदेहेषु कीदृशाः जनाः प्रद्विषन्ति?

3. भाषिककार्यम्–

(क) 'इच्छम्' इतिपदस्य किं समानार्थकम् अत्र?

(ख) 'क्षिपामि' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ग) 'नरश्रेष्ठान् इत्यस्य विलोमपदं चिनुत।

(च) ''आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्।।
त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।''

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) नरकस्य कतिविधं द्वारमत्र कथितम्?

(ख) मूढाः कीदृशीं योनिम् आपन्नाः भवन्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) मूढाः अधमां गतिं कथं यान्ति?

(ख) एतत्त्रयं किमर्थं त्यजेत्?

3. भाषिककार्यम्–

(क) 'गतिम्' इतिपदस्य किं विशेषणपदमत्र?

(ख) 'मूर्खाः' इत्यर्थे कि पदं प्रयुक्तम्?

(ग) 'माम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(छ) अधोलिखितेषु अन्वयेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–

I. आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्।

अन्वयः

कौन्तेय! ततः (ते) (i) .....जन्मनि (ii) .....आसुरीं योनिम् आपन्ना

(iii) .....अप्राप्य एव (iv) .....गतिं यान्ति।

II. असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।

ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी।।

अन्वयः

असौ

(i) .....मया हतः (ii) .....अपि च (अहम्) हनिष्ये

(iii) .....भोगी अहम् (vi) .....अहं सिद्धः बलवान् सुखी (चास्मि)।

(ज) अधोलिखितस्य पद्यस्य भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत–

''प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।

न शौचं नापि चाऽऽचारो न सत्यं तेषु विद्यते।।

भावार्थः–

श्री कृष्णः कथयति यत् आसुरी-सम्पद्-युक्ताः जनाः कर्तव्याकर्तव्यभेदं न

(i) .....। एतस्मात् एव आसुराणां जनानां कर्तव्यकर्मणि

(ii) .....न भवति, तथा च दुष्टकार्येभ्यः

(iii) .....न भवति। एतादृशेषु जनेषु पवित्रता,

(iv) .....सत्यवचनम् इत्यादि तु किञ्चिदपि न विद्यते।

मञ्जूषा

(निवृत्तिः, श्रेष्ठम्-आचरणम्, जानन्ति, प्रवृत्तिः)

(झ) प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत–

I. जना न विदुरासुराः।

(क) विदुरः जनः न अस्ति।

(ख) आसुराः मनुष्याः न जानन्ति।

(ग) जनान् आसुरान् विदुः।

II. त्रिविधं नरकस्येदं द्वारम्।

(क) नरकस्य द्वारं त्रिविधं कथितम्।

(ख) द्वारपालस्य नाम त्रिविधम् अस्ति।

(ग) नरकासुरस्य इदं द्वारम् अस्ति।

(ञ) 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह मेलनं कुरुत–

I.

'क'	'ख'
(i) आसुरीं योनिमापन्ना	(i) संसारेषु नराधमान्।
(ii) त्रिविधं नरकस्येदं	(ii) मोहजालसमावृताः।
(iii) तानहं द्विषतः क्रूरान्	(iii) मूढा जन्मनि जन्मनि।
(iv) अनेकचित्तविभ्रान्ता	(iv) द्वारं नाशनमात्मनः।

II.

'क'	'ख'
(i) इदमद्य मया लब्धम्	(i) हनिष्ये चापरानपि
(ii) ईश्वरोऽहमहं भोगी	(ii) इमं प्राप्स्ये मनोरथम्
(iii) असौ मया हतः शत्रुः	(iii) न सत्यं तेषु विद्यते
(iv) न शौचं नापि चाऽऽचारो	(iv) सिद्धोऽहं बलवान् सुखी

(ट) अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितानां पदानां प्रसंगानुसारं शुद्धम् अर्थं लिखत–

1. आसुरीं योनिमापन्ना <u>मूढा</u> जन्मनि जन्मनि।
2. प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरके <u>अशुचौ</u>।
3. तेजः क्षमा <u>धृतिः</u> शौचद्रोहो नातिमानिता।
4. दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः <u>पारुष्यमेव</u> च।
5. मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि <u>पाण्डव</u>।
6. <u>आढ्यः</u> अभिजनवानस्मि।
7. क्षिपामि <u>अजस्रम्</u> अशुभान् आसुरीष्वेव योनिषु।

उत्तरमाला

(क) 1. (क) ज्ञानयोगे (ख) सत्त्वस्य (ग) भूतेषु

2. (क) अत्र अभयं सत्त्वसंशुद्धिः, दानं, दमः, यज्ञः, स्वाध्यायः, तपः, आर्जवम्, अहिंसा, सत्यम्, अक्रोधः, त्यागः, शान्तिः, अपैशुनः, भूतेषु दया, अलोलुप्त्वं, मार्दवं, ह्रीः अचापलं च दैवीसम्पद्रूपेण निरूपिताः।

(ख) श्रीकृष्णः अत्र अर्जुनं सम्बोधयति।

3. (क) मार्दवम् (ख) शान्तिः (ग) दया

(ख) 1. (क) दैवीसम्पद् (ख) पाण्डवः अर्जुनः (ग) आसुरी सम्पद्

2. (क) दम्भः दर्पः अभिमानः, क्रोधः, पारुष्यम् अज्ञानं च आसुरीसम्पदः लक्षणानि कथितानि।

(ख) निबन्धाय आसुरी सम्पद् मता।

3. (क) संपदम् (ख) अभिजातः (ग) पारुष्यम्

(ग) 1. (क) जगतः (ख) आसुराः (ग) आसुराः

2. (क) नष्टात्मानः, अल्पबुद्धयः उग्रकर्माणः च जनाः जगतः क्षयाय प्रभवन्ति।

(ख) शौचम्, आचारः, सत्यं च आसुरेषु जनेषु न विद्यते

3. (क) एताम् (ख) क्षयाय (ग) विद्यते

(घ) 1. (क) शत्रुः (ख) मनोरथम् (ग) अद्य

2. (क) पुनः धनं मे भविष्यति।

(ख) आसुरी सम्पदा-युक्तः जनः चिन्तयति यत् असौ शत्रुः मया हतः, अपरान्, शत्रून् अपि अहं हनिष्ये। अहमेव ईश्वरः, भोगी, सिद्धः, बलवान्, सुखी च अस्मि।

3. (क) लब्धम् (ख) शत्रुः (ग) धनम्

(ङ) 1. (क) अभ्यसूयकाः (ख) आसुरीषु

2. (क)श्रीकृष्णः नराधमान् आसुरीषु योनिषु एव क्षिपति।

(ख) अहंकारं, बलं, दर्पं, कामं क्रोधं च संश्रिताः जनाः आत्मपरदेहेषु द्विषन्ति।

3. (क) कामम् (ख) अहम् (ग) नराधमान्

(च) 1. (क) त्रिविधम् (ख) आसुरीम्

2. (क) मूढाः माम् अप्राप्यैव अधमां गतिं यान्ति।

(ख) कामः, क्रोधः लोभः च त्रिविधं नरकस्य द्वारमस्ति, तस्मात् एतत्त्रयं त्यजेत्।

3. (क) अधमाम् (ख) मूढाः (ग) श्रीकृष्णाय

(छ) I (i) मूढाः (ii) जन्मनि (iii) माम् (iv) अधमाम्

II(i) शत्रुः (ii) अपरान् (iii) अहम् (iv) ईश्वरः

(ज) (i) जानन्ति (ii) प्रवृत्तिः (iii) निवृत्तिः (iv) श्रेष्ठम् आचरणम्

(झ) I (ख) आसुराः मनुष्याः न जानन्ति।

II(क) नरकस्य द्वारं त्रिविधं कथितम्।

(ञ) 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह मेलनं कुरुत–

I	(क)	(ख)
	(i) आसुरीं योनिमापन्ना	(iii) मूढा जन्मनि जन्मनि।
	(ii) त्रिविधं नरकस्येदं	(iv) द्वारं नाशनमात्मनः।
	(iii) तानहं द्विषतः क्रूरान्	(i) संसारेषु नराधमान्।
	(iv) अनेक-चित्तविभ्रान्ता	(ii) मोहजालसमावृताः।

II	(क)	(ख)
	(i) इदमद्य मया लब्धम्	(ii) इमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
	(ii) ईश्वरोऽहं भोगी	(iv) सिद्धोऽहं बलवान् सुखी।
	(iii) असौ मया हतः शत्रुः	(i) हनिष्ये चापरानपि।
	(iv) न शौचं नापि चाऽऽचारो	(iii) न सत्यं तेषु विद्यते।

(ट) 1. मूर्खाः 2. अपवित्रे 3. धैर्यम् 4. कठोरता

5. अर्जुनः 6. धनिकः 7. निरन्तरम्

संस्कृत साहित्येतिहासपरिचयः

कुल अंक - 10

प्रश्न - पाठ्यपुस्तके समागतानां कवीनां देश-काल-कृतिसम्बद्धानां प्रश्नानाम् समुचितम् उत्तरं चिनुत - (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1 ×3 =3

ध्यातव्य बिन्दु

- इस प्रश्न के समुचित समाधान के लिए पाठ्यपुस्तक में संकलित समस्त कवियों के जीवन-परिचय का सम्यक् अध्ययन करें।
- पाठ का नाम - कृति व कवि का नाम अच्छे से समझकर स्मरण करें।
- पाठ व कवि परिचय के लिए यहाँ दिये गए रेखाचित्र का उपयोग करें।

क्रम संख्या	कविः	पाठस्य नाम	कृतिः/रचना	देशः/स्थानम्	कालः
1.	भासः	मातुराज्ञा गरीयसी	प्रतिमानाटकम् चारुदत्तम्	उज्जयिनी	300-200 ई. पू.
2.	कालिदासः	प्रजानुरञ्जको नृपः	रघुवंशम् कुमारसम्भवम् अभिज्ञान शाकुन्तलम् रघुवंशम्	उज्जयिनी	100 ई.पू.
3.	अम्बिकादत्त-व्यासः	दौवारिकस्य निष्ठा	शिवराज-विजयः	जयपुरम्	1858-1900ई.
4.	भर्तृहरिः	सूक्तिसौरभम्	नीतिशतकम्	उज्जयिनी	षष्ठी शताब्दी
5.	बिल्हणः	सूक्तिसौरभम्	विक्रमाङ्कदेव-चरितम्	काश्मीरः	11 शताब्द्याः उत्तरार्द्धः
6.	चाणक्यः	सूक्तिसौरभम्	चाणक्यनीतिः अर्थशास्त्रम्	मगध राज्यम्	300-400ई.पू.
7.	बल्लाल-सेनः	नैकेनापि समं गता वसुमती	भोजप्रबन्धः	बंगाल राज्यम्	1200 ई.

8.	आचार्या वेदकुमारी घई	मदालसा	पुरन्ध्रीपञ्चकम्	जम्मू काश्मीरः	16-12-1931 तः अधुना यावत्
9.	महर्षिः वेदव्यासः	कार्याकार्य-व्यवस्थितिः	श्रीमद्भगव द्गीता (महाभारत)	यमुनाद्वीपः	अज्ञात

अभ्यासार्थ प्रश्नाः

1. 'बल्लालसेन' इति अस्य लेखकस्य रचना का ?
2. "दौवारिकस्य निष्ठा" इति पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः ?
3. कालिदासस्य कालः कः ?
4. "अम्बिकादत्तव्यासः" इति अस्य लेखकस्य रचना का ?
5. आचार्या वेद-कुमारी-घई- महोदयायाः जन्म कदा अभवत् ?
6. नैकेनापि समं गता वसुमती" इति पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः ?
7. "महाभारतम्" इति अस्याः रचनायाः लेखकः कः?
8. "कुमारसंभवम्" इति अस्याः रचनायाः लेखकः कः ?
9. "प. अम्बिकादत्त-व्यासस्य कालः कः ?
10. भोजप्रबन्धम् इति अस्याः रचनायाः लेखकः कः ?
11. "मदालसा"इति पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः ?
12. महाकवेः भासस्य कालः कः?
13. "चारुदत्तम्" इति कस्य रचना अस्ति?
14. "मातुराज्ञा गरीयसी" इति पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः ?
15. "पुरन्ध्रीपञ्चकम्" इति रूपकसङ्ग्रहः कस्य रचना ?
16. "अनुशासनम्" इति पाठः कस्याः उपनिषदः सङ्गृहीतः ?
17. "प्रजानुरञ्जको नृपः" इति पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः ?

18. "भासः" इति अस्य लेखकस्य कति नाटकानि ?

19. पञ्चतन्त्रम् इति अस्याः रचनायाः लेखकः कः ?

20. "कार्याकार्यव्यवस्थितिः" इति पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः ?

21. "नीतिशतकम्" इति कस्य लेखकस्य रचना ?

22. आचार्य-विष्णुशर्मणः कालः कः?

23. "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" इति अस्य नाटकस्य लेखकः कः ?

24. "विष्णुशर्मा" इति अस्य लेखकस्य कृतिः का ?

25. "बल्लालसेनस्य" कालः कः?

26. "विक्रमाङ्कदेवचरितम् इत्यस्य रचयिता कः ?

27. श्रीमद्भगवद्गीतायाः रचयिता कः ?

प्रश्न महाकाव्य-गद्यकाव्य-चंपूकाव्यस्य च विधानां समुचितं वैशिष्ट्यं चिनुत - (केवलं प्रश्नत्रयम्)

ध्यातव्य बिन्दुः

- प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ें व समझें ।
- प्रश्नों के उत्तर देने के लिए महाकाव्य, गद्य, तथा चंपूकाव्य से संबंधित यहाँ दी गयी सामग्री को अवश्य पढ़ें।

महाकाव्य

लौकिक संस्कृत भाषा में काव्य-रचना का आरम्भ वाल्मीकि से हुआ। वाल्मीकि को मधुर उक्तियों का मार्गदर्शी महर्षि कहा गया है। विषय का अलंकृत वर्णन, सरल एवं मनोरम पदों से आकर्षक अर्थों की अभिव्यक्ति की रीति वाल्मीकि ने ही दिखाई। उन्होंने राम को नायक बनाकर आदिकाव्य प्रस्तुत किया। वाल्मीकि द्वारा अपनाई गई काव्य पद्धति कुछ काल तक सर्गबन्ध रचना नाम से प्रचलित रही, बाद में इसे महाकाव्य कहा गया। संस्कृत भाषा में कई महाकाव्यों की रचना के बाद उनके लक्षणों का निरूपण काव्यशास्त्रियों ने किया। भामह, दण्डी आदि आचार्यों के अनुसार महाकाव्य का जो लक्षण निश्चित किया है, वह इस प्रकार है–

महाकाव्य सर्गों में बँधा होता है। इसका नायक कोई देवता या उदात्त गुणों से युक्त उच्च कुल में उत्पन्न क्षत्रिय राजा होता है। कभी-कभी एक ही वंश में उत्पन्न अनेक

राजा भी इसके नायक हो सकते हैं, जैसा कि कालिदास के रघुवंश में है। महाकाव्य में शृङ्गार, वीर और शान्त इन तीन रसों में से कोई एक प्रधान रस होता है। अन्य रस भी सहायक के रूप में आते हैं। नाटकों में स्वीकृत कथावस्तु की सन्धियों के समान महाकाव्य में भी कथावस्तु के स्वाभाविक विकास हेतु मुख, प्रतिमुख आदि सन्धियों का प्रयोग होता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से कोई एक पुरुषार्थ महाकाव्य के उद्देश्य के रूप में होता है। इसके आरम्भ में नमस्कार, आशीर्वचन अथवा मुख्य कथा का सूचक मंगलाचरण होता है। इसमें कहीं दुष्टों की निन्दा और कहीं सज्जनों की प्रशंसा होती है।

महाकाव्य में सर्गों की संख्या आठ से अधिक होती है। एक सर्ग में प्रायः एक ही छन्द का प्रयोग होता है। उसके अन्त में छन्द का परिवर्तन किया जाता है। सर्ग के अंत में भावी कथा की सूचना दी जाती है। महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, प्रभात, आखेट, ऋतु, पर्वत, वन, समुद्र, संयोग, वियोग, मुनि, राजा, यज्ञ, युद्ध, यात्रा, विवाह, मन्त्रणा आदि का अवसर के अनुकूल वर्णन होता है। महाकाव्य का नामकरण कवि, कथानक, नायक आदि के आधार पर होता है।

संस्कृत महाकाव्यों के विकास-क्रम में क्रमशः कालिदास, अश्वघोष, भारवि, भट्टि, माघ, कुमारदास तथा श्रीहर्ष के नाम मुख्य रूप से लिए जाते हैं। इनकी रचनाएँ महाकाव्य साहित्य में अमर हैं। इनका विवरण निम्नलिखित है– कालिदास संस्कृत कवियों में श्रेष्ठ हैं। इन्हें परवर्ती कवियों ने कविकुल-गुरु की उपाधि दी है। उन्होंने दो महाकाव्य (कुमारसम्भव तथा रघुवंश), दो खण्डकाव्य (ऋतुसंहार तथा मेघदूत) और तीन नाटक (विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र तथा अभिज्ञानशाकुन्तल) लिखे हैं।

दुर्भाग्यवश कालिदास का काल निश्चित नहीं है। कुछ लोग इनका काल प्रथम शताब्दी ई. पू. में मानते हैं, तो दूसरे लोग इन्हें गुप्तवंश के चन्द्रगुप्त द्वितीय का समकालिक सिद्ध करते हैं। कालिदास ने अपने काव्यों में वाल्मीकि की शैली को स्वीकार किया है। इस महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में दिलीप की गो-सेवा, चतुर्थ सर्ग में रघु की दिग्विजय यात्रा, षष्ठ सर्ग में इन्दुमती का स्वयंवर एवं त्रयोदश सर्ग में राम का अयोध्या लौटना वर्णित है। ये रघुवंश के उत्तम स्थल हैं। रघुवंश के अन्तिम (उन्नीसवें) सर्ग में राजा अग्निवर्ण के विलासमय जीवन का चित्र खींचा गया है और रघुकुल का पतन दिखाया गया है। रघुवंश गृहस्थ जीवन का समर्थन करता है और रघुवंशी राजाओं के उच्च आदर्शों का प्रतिपादक है।

इन दोनों महाकाव्यों में कालिदास ने वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है और उनमें सभी रसों को प्रकाशित करने की क्षमता वाला प्रसाद गुण विद्यमान है।

अश्वघोष

अश्वघोष के दो महाकाव्य हैं बुद्धचरित और सौन्दरनन्द। इनका समय प्रथम शताब्दी ई. है। ये कुषाणवंश के राजा कनिष्क के समकालिक थे। अश्वघोष मूलतः अयोध्या के रहने वाले ब्राह्मण थे, जो बाद में बौद्ध बन गए थे। ये बहत बड़े आचार्य और वक्ता थे। इन्होंने इन दो महाकाव्यों के अतिरिक्त एक नाटक (शारिपुत्र-प्रकरण) भी लिखा था, जो खण्डित रूप में मध्य एशिया से प्राप्त हुआ है।

- **बुद्धचरित**- यह भगवान् बुद्ध के जीवन और उपदेशों का वर्णन करता है। इसमें मूलतः 28 सर्ग थे, किन्तु आज इसके प्रथम चौदह सर्ग ही उपलब्ध हैं। वैसे पूरे महाकाव्य के तिब्बती और चीनी भाषा में अनुवाद भी हो चुके थे, जो उपलब्ध हैं। बुद्धचरित पर *रामायण* का बहुत अधिक प्रभाव है। इसके कई दृश्य *रामायण* से समता रखते हैं। घटनाओं का चयन तथा आयोजन करने में अश्वघोष अधिक प्रभाव डालते हैं। बौद्ध होते हुए भी प्राचीन वैदिक परम्पराओं के प्रति उनमें गहन निष्ठा है। बुद्धचरित के पूर्वार्द्ध में बुद्ध के निर्वाण तक का वर्णन है। शेष भाग में उनके उपदेशों तथा उत्तरकालिक जीवन का चित्रण है।
- **सौन्दरनन्द**- यह अश्वघोष का दूसरा महाकाव्य है, जिसमें 18 सर्ग हैं। इसमें बुद्ध के सौतेले भाई नन्द की धर्मदीक्षा का वर्णन है। इस महाकाव्य के आरम्भिक भाग में कवि ने नन्द और उसकी पत्नी सुन्दरी के परस्पर अनुराग को शृंगार रस के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

नन्द के बुद्ध के विहार में चले जाने पर दोनों की विरह-व्यथा का पृथक्-पृथक् वर्णन किया गया है। नन्द के मानसिक संघर्ष का चित्रण करने में कवि ने पूर्ण सफलता पाई है। बौद्ध धर्म के उपदेशों का अत्यन्त रोचक उपमाओं के द्वारा इसमें प्रतिपादन किया गया है। जो नन्द काम में आसक्त था, वही धर्मोपदेशक बन जाता है। अश्वघोष के दोनों महाकाव्य वैदर्भी रीति में लिखे गए हैं। उनमें अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से है। अश्वघोष ने बौद्धधर्म के उपदेशों को काव्य का रूप देकर प्रस्तुत किया है, जिससे लोग संन्यास-धर्म के प्रति प्रवृत्त हों। भोग के प्रति अनासक्ति और संसार की असारता दिखाने में कवि को पूरी सफलता मिली है।

भारवि

भारवि ने संस्कृत महाकाव्य को एक नई दिशा दी। इनके पहले के कवि कथावस्तु के विकास पर अधिक ध्यान देते थे, वर्णनों पर कम। भारवि ने कथानक से अधिक सम्बद्ध वस्तु के वर्णन-वैचित्र्य को महत्त्व दिया। महाकाव्य की इस पद्धति को अलंकृत पद्धति या विचित्र मार्ग कहा गया है।

भारवि का काल 500 ई. से 600 ई. के बीच माना गया है। ऐहोल अभिलेख (634 ई.) में भारवि का नाम कालिदास के साथ लिया गया है। उस समय तक ये प्रसिद्ध कवि हो गए थे।

- **किरातार्जुनीय**- यह भारवि की एकमात्र रचना है। इसमें 18 सर्ग हैं। इन्द्रकील पर्वत पर दिव्य अस्त्र प्राप्त करने वाले अर्जुन और किरातवेशधारी भगवान् शंकर का युद्ध इस काव्य में मुख्य रूप से वर्णित है। भगवान् शंकर ने प्रसन्न होकर अर्जुन को दिव्य अस्त्र प्रदान किया। इसका कथानक बहुत छोटा है, किन्तु भारवि की वर्णन पद्धति से इस महाकाव्य को विस्तार मिला है। चतुर्थ से एकादश सर्ग तक कवि ने ऋतु, पर्वत, अप्सराओं की क्रीड़ा, सूर्योदय, सूर्यास्त आदि का विस्तृत वर्णन किया है, जिसमें अलंकरण और कल्पना का आधिक्य है तथा स्वाभाविकता का अभाव है। भारवि का अर्थ-गौरव प्रसिद्ध है। इनके श्लोकों में बहुत से ऐसे अंश हैं, जो नीति वाक्य या लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हैं, जैसे हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः (ऐसी बातें दुर्लभ होती हैं, जो हितकर भी हों और मनोहर भी), सहसा विदधीत न क्रियाम् (कोई कार्य सहसा नहीं करना चाहिए) इत्यादि। भारवि ने चित्र काव्य का पर्याप्त प्रयोग किया है। कहीं एक ही व्यञ्जन से बना श्लोक है, तो कहीं दो व्यञ्जनों से। इस रचना में भारवि ने पाण्डित्य का प्रदर्शन किया है। इसलिए भारवि की कविता को नारियल के फल के समान कहा गया है, जो ऊपर से रूक्ष है, किन्तु भीतर से सरस है।

भट्टि

अपने काव्य में व्याकरण के नियमों का प्रयोग कर भट्टि ने संस्कृत शास्त्रकाव्य-परम्परा का आरम्भ किया। वे काव्य के द्वारा सरलता से व्याकरण सिखाते हैं। उन्होंने अपना यह काव्य वल्लभी नगरी (गुजरात) में श्रीधरसेन नामक राजा के संरक्षण में लिखा है। श्रीध रसेन नाम के चार राजा 500 ई. से 650 ई. के बीच हुए। अतः भट्टि का समय अधिक से अधिक 650 ई. तक हो सकता है। सामान्यतः विद्वानों ने इनका समय छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं सातवीं शताब्दी के आरंभ में माना है।

- **रावणवध या भट्टिकाव्य–** इनका रावणवध या भट्टिकाव्य 22 सर्गों में निबद्ध है। इसमें रामायण की कथा सरल तथा संक्षिप्त रूप से वर्णित है। मनोरञ्जन के साथ संस्कृत व्याकरण का पूर्ण ज्ञान देना इस महाकाव्य का उद्देश्य है। भट्टि ने कहा है कि व्याकरण की आँख रखने वालों के लिए यह काव्य दीपक के समान है। व्याकरण के अतिरिक्त अलंकारशास्त्र के ज्ञान का भी प्रदर्शन भट्टि ने इस महाकाव्य में किया है।

कुमारदास

कुमारदास का समय छठी शताब्दी माना जाता है। कुछ लोग इन्हें आठवीं शताब्दी का भी मानते हैं। इनका जन्मस्थान सिंहल द्वीप (श्रीलंका) है।

- **जानकीहरण–** *जानकीहरण* कुमारदास द्वारा 20 सर्गों में रचित राम की कथा पर आश्रित महाकाव्य है। कालिदास के रघुवंश का अनुकरण इन्होंने अपने महाकाव्य में किया है। राजशेखर ने इनकी प्रशंसा में कहा है–

  जानकीहरणं कर्तु रघुवंशे स्थिते सति।

  कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः।।

  रघुवंश (इस नाम का महाकाव्य, रघुवंशी राजा) के रहते हुए जानकीहरण (इस नाम का महाकाव्य, सीताहरण) करने की क्षमता यदि किसी में है, तो वह कुमारदास में है या रावण में।

  जानकीहरण महाकाव्य अपने शीर्षक से केवल सीताहरण से सम्बद्ध प्रतीत होता है, किन्तु इसमें राम के जन्म से लेकर अभिषेक तक की पूरी कथा है।

माघ

माघ राजस्थान के भीनमाल या श्रीमाल नगर के निवासी थे। इनके पितामह वहाँ के राजा के प्रधानमंत्री थे। इनका समय 700 ई. माना जाता है। माघ की एकमात्र रचना शिशुपालवध महाकाव्य है। माघ इस काव्य की रचना में भारवि और भट्टि से बहुत प्रभावित हैं। भारवि से प्रतिस्पर्धा तो उनके महाकाव्य में प्रारम्भ से अन्त तक दिखाई पड़ती है। भारवि शिव का यशोगान करते हैं, तो माघ विष्णु का। माघ अलङ्कृत काव्य रचना में भारवि से आगे बढ़ गए हैं।

- **शिशुपालवध–** शिशुपालवध 20 सर्गों का उत्कृष्ट महाकाव्य है, जिसमें कृष्ण द्वारा शिशुपाल के वध की कथा वर्णित है। छोटे कथानक को माघ ने महाकाव्य में विस्तृत

वर्णनों से बहुत बड़ा बना दिया है। व्याकरण, राजनीति, वेद, दर्शन, संगीत आदि विविध शास्त्रों के अपने ज्ञान को माघ ने इसमें प्रदर्शित किया है। इस महाकाव्य को लिखने में माघ का ऐसा उद्देश्य प्रतीत होता है कि महाकाव्य के छोटे से छोटे लक्षण को समाविष्ट करके इसे आदर्श महाकाव्य का रूप दिया जा सके। भाषा और छन्द दोनों पर माघ का अद्‌भुत अधिकार है। भारवि के समान इन्होंने चित्रकाव्य का भी प्रयोग किया है। इस महाकाव्य को पण्डितों के समाज में बहुत प्रशंसा मिली है जिसका प्रमाण यह सुभाषित है मेघे माघे गतं वयः।

श्रीहर्ष

यद्यपि माघ के बाद अन्य अनेक कवि हुए, किन्तु श्रीहर्ष को जो ख्याति मिली, वह अन्य किसी को नहीं मिली। श्रीहर्ष विशिष्ट पण्डित-परम्परा में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने नैषधीयचरित महाकाव्य के अतिरिक्त वेदान्त का एक क्लिष्ट ग्रन्थ खण्डनखण्डखाद्य भी लिखा था। इनकी शैली पाण्डित्य से भरी हुई है। माघ के समान श्रीहर्ष भी पाण्डित्य प्रदर्शन करते हैं, किन्तु पदों का लालित्य भी सर्वत्र बनाए रखते हैं।

श्रीहर्ष का समय बारहवीं शताब्दी है। ये कान्यकुब्जनरेश जयचन्द्र की सभा में रहते थे। श्रीहर्ष ने अनेक ग्रन्थ लिखे जिनकी सूचना उन्होंने नैषधीयचरित के सर्गों के अन्त में दी है।

- **नैषधीयचरित–** *नैषधीयचरित* में निषध देश के राजा नल के जीवन का वर्णन है। नल और दमयन्ती के परस्पर प्रेम तथा विवाह की संक्षिप्त कथा को कल्पनाशक्ति के सहारे श्रीहर्ष ने 22 सर्गों में फैलाया है। उनके प्रेम में हंस तथा देवता बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान करते हैं। नैषधीयचरित में श्रीहर्ष ने अपने प्रौढ़ पाण्डित्य का इतना अधिक प्रदर्शन किया है कि यह शास्त्र-काव्य बन गया है। साधारण संस्कृतज्ञ इसके साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते। विद्वानों के गर्वरूपी रोग को दूर करने के लिए यह औषध माना गया है (नैषधं विद्वदौषधम्)। इस महाकाव्य को भारवि और माघ के काव्यों से भी उत्कृष्ट कहा गया है

  तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
  उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।।

अर्थात् भारवि की शोभा तब तक है, जब तक माघ का उदय नहीं हुआ और जब नैषध काव्य का उदय हो गया, तो कहाँ माघ और कहाँ भारवि?

भारवि, माघ और श्रीहर्ष इन तीनों के महाकाव्यों (किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, और नैषधीयचरित) को संस्कृत विद्वान् बृहत्त्रयी कहते हैं। इन तीनों ने अलंकृत पद्धति का अनुसरण किया है। कालिदास के तीन काव्यों (रघुवंश, कुमारसम्भव और मेघदूत) को सरल शैली का आश्रय लेने के कारण लघुत्रयी कहा जाता है। इन छः काव्यों का संस्कृत परम्परा में विशेष रूप से प्रचार है।

अन्य महाकाव्य

संस्कृत भाषा में महाकाव्य-रचना बहुत लोकप्रिय रही है। उपर्युक्त महाकाव्यों के अतिरिक्त प्राचीन काल में भी अनेक महाकाव्य लिखे गए थे और यह परम्परा आज तक चली आ रही है। यहाँ कुछ महाकाव्यों के नाम दिए जाते हैं। हरविजय नामक महाकाव्य कश्मीरी कवि रत्नाकर द्वारा लिखा गया, जिसका समय 850 ई. माना जाता है। इस महाकाव्य में भगवान् शिव की अन्धकासुर पर विजय का विस्तार से वर्णन है। इसमें 50 सर्ग हैं। महाकाव्य की विशालता के कारण रत्नाकर की कीर्ति बहुत फैल गई। रत्नाकर के समकालीन शिवस्वामी ने बौद्धग्रन्थ अवदानशतक की एक कथा पर आश्रित कप्फणाभ्युदय नामक महाकाव्य लिखा। यह 20 सर्गों का बौद्ध महाकाव्य है। कश्मीर के ही निवासी क्षेमेन्द्र ने तीन प्रसिद्ध महाकाव्यों का प्रणयन किया। ये हैं रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी और बृहत्कथामञ्जरी। ये तीनों प्रसिद्ध कथाओं पर आश्रित हैं। क्षेमेन्द्र ने 1067 ई. में अपना अन्तिम महाकाव्य दशावतारचरित लिखा। क्षेमेन्द्र का जीवनकाल 995 ई. से 1070 ई. तक है।

एक अन्य कश्मीरी कवि (मंख) ने श्रीकण्ठचरित नामक महाकाव्य 25 सर्गों में लिखा, जिसमें शिव द्वारा त्रिपुर के पराजय का वर्णन है। इनका समय बारहवीं शताब्दी ई. है। अन्य प्रदेशों के कवियों ने भी समय-समय पर महाकाव्यों की रचना की। नीलकण्ठ दीक्षित ने सत्रहवीं शताब्दी में शिवलीलार्णव महाकाव्य 12 सर्गों में लिखा। रामभद्र दीक्षित का पतञ्जलिचरित (आठ सर्ग), वेंकटनाथ का यादवाभ्युदय, धनेश्वर सूरि का शत्रुञ्जय महाकाव्य, वाग्भट का नेमिनिर्माणकाव्य, वीरनन्दी का चन्द्रप्रभचरित, हरिश्चन्द्र का ध र्मशर्माभ्युदय इत्यादि महाकाव्य भी प्रसिद्ध हैं। कुछ महाकाव्य विभिन्न देवताओं तथा शास्त्रीय विषयवस्तु के निरूपण के लिए भी लिखे गए हैं। हेमचन्द्र (1088-1172 ई.) का कुमारपालचरित 28 सर्गों का महाकाव्य है, जिसके प्रथम 20 सर्गों में व्याकरण के नियमों के अनुसार संस्कृत भाषा के रूपों का प्रयोग दिखाया गया है और अन्तिम 8 सर्गों में प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषा के व्याकरण-सम्बद्ध रूपों का प्रयोग है। इसे द्व्याश्रयकाव्य भी कहते हैं।

आधुनिक युग में भी संस्कृत महाकाव्यों की रचना हो रही है। वर्तमान महापुरुषों तथा घटनाओं को विषय बनाकर अनेक महाकाव्य लिखे गए हैं। महापुरुषों में गुरुगोविन्द सिंह, शिवाजी, स्वामी दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्रबोस, जवाहरलाल नेहरु आदि पर अनेक संस्कृत महाकाव्य लिखे गए हैं। आधुनिक काल में प्राचीन विषयों पर भी अनेक महाकाव्य लिखे गए हैं। यही नहीं, विदेशी महापुरुष भी संस्कृत महाकाव्य के विषय बने हैं। नाटक के समान महाकाव्य भी आधुनिक संस्कृत कवियों की अत्यधिक लोकप्रिय विधा है।

ध्यातव्य बिन्दुः

- महाकाव्य– सर्गबन्ध रचना
- महाकाव्य का नामकरण कवि, कथानक अथवा नायक के नाम पर आधारित।
- कालिदास के दो प्रसिद्ध महाकाव्य

  (i) कुमारसम्भव– सर्ग-आठ, रीति-वैदर्भी।

  विषय : शिव-पार्वती के विवाह तथा कुमार कार्तिकेय के जन्म की कथा।
- कालिदास के शृंगार रस के प्रति विशिष्ट आकर्षण का द्योतक।

  (ii) **रघुवंश**- सर्ग- 19, रीति-वैदर्भी।

  विषय -- इक्ष्वाकुवंश के विभिन्न राजाओं का विस्तृत वर्णन,

  गृहस्थ जीवन की श्रेष्ठता का प्रतिपादन।

  रघुवंशी राजाओं के उच्च आदर्शों का द्योतन।

  सभी रसों के प्रकाशक प्रसाद गुण से परिपूर्ण
- अश्वघोष के दो महाकाव्य

  (i) **बुद्धचरित–** सर्ग-28, उपलब्ध सर्ग-14

  विषय - भगवान् बुद्ध के जीवन और उपदेशों का वर्णन।

  (ii) **सौन्दरनन्द–** सर्ग-18, रीति- वैदर्भी।

  विषय– नन्द और सुन्दरी के परस्पर अनुराग का शृंगारपूर्ण वर्णन।

  बुद्ध के सौतेले भाई नन्द की धर्मदीक्षा का वर्णन।

  बौद्धधर्म के उपदेशों की रोचक एवं काव्यमय प्रस्तुति।

- किरातार्जुनीय

  लेखक-भारवि

  सर्ग-18

  विषय– इन्द्रकील पर्वत पर दिव्य अस्त्र प्राप्त करने वाले अर्जुन और किरातवेशधारी भगवान् शंकर के युद्ध का वर्णन।

इस महाकाव्य के प्रसिद्ध नीतिवाक्य–

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।
सहसा विदधीत न क्रियाम्।।

समय- छठी शताब्दी।

- रावणवध (भट्टिकाव्य)

  लेखक- भट्टि।

  समय– छठी शताब्दी का उत्तरार्द्ध एवं सातवीं शताब्दी का आरम्भ।

  विषय- रामायण की कथा का सरल एवं संक्षिप्त रूप में वर्णन।

- जानकीहरण

  लेखक– कुमारदास।

  विषय– राम की कथा पर आधारित।

  समय– छठी शताब्दी।

- शिशुपालवध

  लेखक- माघ।

  समय– 700 ई.।

  विषय– कृष्ण द्वारा शिशुपाल के वध की कथा का वर्णन।

- नैषधीयचरित

  लेखक- श्रीहर्ष।

  समय– बारहवीं शताब्दी।

  विषय– निषध देश के राजा नल एवं दमयन्ती के प्रणय का वर्णन।

- बृहत्त्रयी

  किरातार्जुनीय (भारविकृत), शिशुपालवध (माघकृत) एवं नैषधीयचरित (श्रीहर्षकृत) बृहत्त्रयी कहलाते हैं।

- हरविजय

  लेखक– रत्नाकर (कश्मीरी कवि)।

  समय– 850 ई.।

  विषय– भगवान् शिव की अन्धकासुर पर विजय का विस्तृत वर्णन।

- कप्फणाभ्युदय

  लेखक- शिवस्वामी।

  विषय बौद्धग्रन्थ अवदानशतक की कथा पर आश्रित।

- रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी और बृहत्कथामञ्जरी

  लेखक– क्षेमेन्द्र।

  विषय- प्रसिद्ध कथाओं पर आश्रित।

- दशावतारचरित

  लेखक-क्षेमेन्द्र।

  समय– 995 ई. से 1070 ई.।

- श्रीकण्ठचरित

  लेखक– मंख (कश्मीरी कवि)।

  समय– बारहवीं शताब्दी।

  विषय- शिव द्वारा त्रिपुर की पराजय का वर्णन।

  सर्ग– 25 सर्ग।

- शिवलीलार्णव

  लेखक– नीलकण्ठ दीक्षित।

  समय– सत्रहवीं शताब्दी।

  सर्ग– बारह सर्ग।

- पतञ्जलिचरित

  लेखक– रामभद्र दीक्षित।

  सर्ग–आठ।

- यादवाभ्युदय

  लेखक– वेंकटनाथ।

- शत्रुञ्जय

  लेखक– धनेश्वर सूरि।

- नेमिनिर्माणकाव्य

  लेखक– वाग्भट।

- चन्द्रप्रभाचरित

  लेखक– वीरनन्दी।

- धर्मशर्माभ्युदय

  लेखक- हरिश्चन्द्र।

- कुमारपालचरित (द्वयाश्रयकाव्य)

  लेखक– हेमचन्द्र।

  सर्ग– 28।

- द्वयाश्रयकाव्य

  ऐसा काव्य जो दो कथानकों पर आधारित हो।

- वर्तमान संस्कृत महाकाव्य

  अनेक महापुरुषों यथा गुरुगोविन्द सिंह, शिवाजी, स्वामी दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, सुभाषचन्द्र बोस आदि पर लिखे गए।

गद्यकाव्य एवं चम्पूकाव्य

संस्कृत गद्य का आरम्भ ब्राह्मण-ग्रन्थों और उपनिषदों के गद्य में देखा जा सकता है। बहुत दिनों तक सरल स्वाभाविक शैली में गद्य लिखने की परम्परा चलती रही। प्राचीन शिलालेखों में गद्य का काव्यमय रूप प्राप्त होता है। इस दृष्टि से रुद्रदामन का गिरिनार शिलालेख (150 ई.) तथा हरिषेण रचित समुद्रगुप्त-प्रशस्ति (360 ई.) महत्त्वपूर्ण हैं। ये दोनों साहित्यिक गद्य के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। गद्यकाव्य को स्मरण रखने का श्रम, आलोचकों की उपेक्षा और गद्यकाव्य का ऊँचा मानदण्ड इन तीनों कारणों से गद्यकाव्य की रचना कम हुई। पद्यविधा की सुकुमारता, लयात्मकता, संगीतात्मकता, रचनात्मक सुविधादि गुणों के कारण पद्य रचना द्वारा लोकयश एवं प्रशंसा प्राप्त करना कवियों के लिए सरल कार्य था। परन्तु गद्य रचना में इन गुणों को उत्पन्न करना थोड़ा कठिन था। इसीलिए अधिकांश कवियों की सहज प्रवृत्ति पद्य रचना की ही ओर अधिक रही। गद्य रचना के सन्दर्भ में यह उक्ति भी प्रसिद्ध है **गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति**। गद्य काव्य के मुख्यत: दो भेद हैं– कथा और आख्यायिका। प्राय: छठी-सातवीं शताब्दी ई. में कुछ महत्त्वपूर्ण गद्य कवि हुए, जैसे– *दण्डी, सुबन्धु* और *बाणभट्ट*।

दण्डी

दण्डी ने *दशकुमारचरित* के रूप में एक अद्‌भुत कथा-काव्य दिया है। दण्डी का समय विवादास्पद है, किन्तु अधिकांश विद्वान् इनका काल छठी शताब्दी मानते हैं। परम्परा से दण्डी के तीन ग्रन्थ प्रामाणिक माने जाते हैं। इनमें दूसरा ग्रन्थ काव्यादर्श और तीसरा अवन्तिसुन्दरीकथा है। इस तीसरे ग्रन्थ के रचयिता के विषय में कुछ विवाद है। दशकुमारचरित अव्यवस्थित रूप में मिलता है। इसके तीन भाग प्राप्त हैं पूर्वपीठिका (पाँच उच्छ्वास), मूलभाग (आठ उच्छ्वास) तथा उत्तरपीठिका (एक उच्छ्वास)। मूलभाग में आठ कुमारों की कथा का वर्णन है। पूर्वपीठिका को मिलाकर दस कुमारों की कथा पूरी हो जाती है। तीनों भागों की शैली में थोड़ा भेद दिखाई पड़ता है।

दशकुमारचरित का कथानक घटना प्रधान है, जिसमें अनेक रोमांचक घटनाएँ पाठकों को विस्मय और विषाद के बीच ले जाती हैं। कहीं भयंकर जंगल में घटनाक्रम पहुँचाता है, तो कहीं समुद्र में जहाज टूटने पर कोई तैरता हुआ मिलता है। घटनाएँ और विषय-वर्णन दोनों ही समान रूप से दण्डी के लिए महत्त्व रखते हैं। कथावस्तु कहीं भी वर्णनों के क्रम में अवरूद्ध नहीं होती। दण्डी के चित्रण में सामान्य समाज की प्रधानता है। जिसमें निम्न कोटि का जीवन बिताने वाले धूर्त, जादूगर, चालाक, चोर, तपस्वी,

सिंहासनच्युत राजा, पतिवञ्चक नारी, ठगने वाली वेश्याएँ, ब्राह्मण, व्यापारी और साधु। दण्डी का हास्य और व्यंग्य भी उच्च कोटि का है। दण्डी अपने वर्णनों में कहीं सहज और कहीं गम्भीर प्रतीत होते हैं।

दण्डी की सबसे बड़ी विशेषता सरल और व्यावहारिक किन्तु ललित पदों से युक्त गद्य लिखने में है। वे लम्बे समासों, कठोर ध्वनियों और शब्दाडम्बर से दूर रहते हैं। भाषा के प्रयोग में ऐसी स्वाभाविकता किसी अन्य गद्य कवि में नहीं मिलती। दण्डी का पद लालित्य संस्कृत आलोचकों में विख्यात है– **दण्डिनः पदलालित्यम्**। दशकुमारचरित की विषयवस्तु भी किसी आधुनिक रोमांचकारी उपन्यास से कम रोचक नहीं है।

सुबन्धु

बाणभट्ट ने हर्षचरित की प्रस्तावना में वासवदत्ता को कवियों का दर्पभंग करने वाली रचना कहा है। इसी प्रकार कादम्बरी को उन्होंने दो कथाओं (वासवदत्ता तथा बृहत्कथा) से उत्कृष्ट कहा है। इससे ज्ञात होता है कि सुबन्धु बाण से पहले हो चुके थे। वासवदत्ता सुबन्धु की उत्कृष्ट गद्य रचना है, इसमें कथानक बहुत संक्षिप्त है। राजकुमार कन्दर्पकेतु स्वप्न में अपनी भावी प्रियतमा को देखता है और अपने मित्र के साथ उसकी खोज में निकल जाता है। वह विन्ध्यावटी में एक मैना के मुख से वासवदत्ता का वृत्तान्त सुनता है। उधर वासवदत्ता भी स्वप्न में कन्दर्पकेतु को देखकर उसके प्रति प्रेमासक्त हो जाती है। दोनों पाटलिपुत्र में मिलते हैं। प्रेमी-युगल जादू के घोड़े पर चढ़कर भाग जाते हैं और विंध्याचल में पहुँचकर सो जाते हैं। राजकुमार जब जागता है, तब वासवदत्ता को नहीं पाता। बहुत ढूँढ़ने के बाद वह एक प्रतिमा को देखता है। स्पर्श करते ही प्रतिमा वासवदत्ता बन जाती है। बाद में दोनों का विवाह हो जाता है।

इस संक्षिप्त कथानक को विस्तृत वर्णन और कल्पनाशक्ति से सुबन्धु बहुत फैलाते हैं। उनका लक्ष्य रोचक और सरस कथा का आख्यान नहीं है, अपितु वे वर्णन-कौशल से चमत्कार उत्पन्न कर गौरव अर्जित करना चाहते हैं। नायक-नायिका के रूप का वर्णन करने में, उनके गुण-गान में, उनकी तीव्र विरह-वेदना, मिलन की आकांक्षा और संयोग-दशा के चित्रण में सुबन्धु ने पर्याप्त शक्ति लगाई है। इस कार्य में सुबन्धु के व्यापक अनुभव तथा पाण्डित्य ने बड़ी सहायता की है।

सुबन्धु अपने श्लेष के प्रयोग पर बहुत गर्व करते हैं। वे इस कथा के अक्षर-अक्षर में श्लेष भरने का दावा करते हैं। अन्य अलंकारों का भी उन्होंने प्रचुर प्रयोग किया है। यत्र-तत्र पद्यों का प्रयोग करके अपनी शैली को उन्होंने बहुत रोचक बनाया है। वासवदत्ता

वास्तव में सुबन्धु की शैली का चमत्कार दिखाने का सुन्दर अवसर देती है। लम्बे समासों का प्रयोग तथा अनुप्रासों का अत्यधिक उपयोग सुबन्धु के शैली की विशेषता है। समासों में स्वरमाधुर्य है और अनुप्रासों में संगीत है। अपने युग के अनुरूप उन्होंने चमत्कार-प्रदर्शन किया है।

बाणभट्ट

संस्कृत गद्य साहित्य में सर्वाधिक प्रतिभाशाली गद्यकार बाण ही हैं। इनके विषय में अन्य संस्कृत-कवियों की अपेक्षा अधिक जानकारी प्राप्त होती है। हर्षचरित के आरम्भ में इन्होंने अपना और अपने वंश का पूरा विवरण दिया है। ये वात्स्यायन-गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम चित्रभानु था। अल्पावस्था में ही ये अनाथ हो गए थे। किंतु विद्वानों के परिवार में जन्म लेने के कारण इन्होंने सभी विद्याओं का अभ्यास किया था। युवावस्था में अनेक कलाओं और विद्याओं के जानकार मित्रों की मण्डली बनाकर इन्होंने पर्याप्त देशाटन किया था। जब अनेक अनुभवों से सम्पन्न होकर बाण अपने ग्राम प्रीतिकूट (शोण के तट पर) लौटे, तो हर्षवर्धन ने अपने अनुज कृष्ण के द्वारा इन्हें अपनी राजसभा में बुलाया। बाण राजकृपा से हर्ष की सभा में रहने लगे। हर्षवर्द्धन का समय 607 ई. से 648 ई. है। इसलिए बाण का भी यही समय होना चाहिए।

बाण ने दो गद्यकाव्य लिखे– हर्षचरित तथा कादम्बरी। परम्परा बाणभट्ट को चण्डीशतक का भी लेखक मानती है।

- **हर्षचरित–** हर्षचरित एक आख्यायिका-काव्य है। गद्यकाव्य के उस भेद को आख्यायिका कहते हैं, जिसमें किसी ऐतिहासिक पुरुष या घटनाओं का वर्णन किया जाता है। हर्षचरित आठ उच्छ्वासों में विभक्त है। आरम्भिक ढाई उच्छ्वासों में बाण ने अपने वंश का तथा अपना वृत्तान्त दिया है। राजा हर्षवर्द्धन की पैतृकराजधानी स्थाण्वीश्वर का वर्णन कर वे हर्षवर्द्धन के पूर्वजों का वर्णन करते हैं। इसके बाद राजा प्रभाकरवर्द्धन के पूरे जीवन का विवरण देकर वे राज्यवर्द्धन, हर्षवर्द्धन तथा राज्यश्री इन तीनों भाई-बहन के जन्म का भी रोचक वृत्तान्त देते हैं। पञ्चम उच्छ्वास से इस परिवार के संकटों का आरम्भ होता है। प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु, राज्यश्री का विधवा होना, राज्यवर्द्धन की हत्या, राज्यश्री का विन्ध्याटवी में पलायन, हर्षवर्द्धन द्वारा उसकी रक्षा ये सभी घटनाएँ क्रमशः वर्णित हैं। दिवाकरमित्र नामक बौद्ध संन्यासी के आश्रम में हर्षवर्द्धन व्रत लेता है कि दिग्विजय के बाद वह बौद्ध हो जाएगा। यहीं हर्षचरित का कथानक समाप्त हो जाता है।

बाण ने हर्ष की प्रारंभिक जीवनी ही लिखी, उसके राज्य संचालन की घटनाओं का उल्लेख नहीं किया है। बाण की भेंट हर्ष से तब हुई थी, जब हर्ष समस्त उत्तर-भारत का सम्राट् था, इसलिए यह समस्या बनी हुई है कि बाण ने हर्ष का पूरा जीवनचरित क्यों नहीं लिखा? उन्होंने हर्षवर्द्धन की विशेषताएँ तो बतलाई हैं, उसके साहसिक कार्यों का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन भी प्रारम्भ में ही किया है, किन्तु उसके राज्यकाल की प्रमुख घटनाओं का क्रमबद्ध रूप से वर्णन नहीं किया। इतिहास का संक्षिप्त रूप यहाँ काव्य के विशाल आवरण से ढक गया है।

हर्षचरित में बाणभट्ट का पाण्डित्य और व्यापक अनुभव प्रकट हुआ है। विस्तृत वर्णन, सजीव संवाद, सुन्दर उपमाएँ, झंकार करती शब्दावली तथा रसों की स्पष्ट अभिव्यक्ति ये सभी गुण बाण की गद्य-शैली में प्रचुर रूप में प्राप्त होते हैं। राज्यश्री के विवाह-वर्णन में जहाँ आनन्द और उल्लास का सजीव विवरण मिलता है, वहीं प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु मार्मिक रूप से वर्णित है।

- **कादम्बरी–** यह कवि-कल्पित कथानक पर आश्रित होने के कारण कथा नामक गद्यकाव्य है। उच्छ्वास, अध्याय आदि में इसका विभाजन नहीं किया गया है। पूरी कथा का दो-तिहाई भाग ही बाण ने लिखा। इसका एक-तिहाई भाग उनके पुत्र ने लिखकर जोड़ा, जो अपने पिता के अपूर्ण ग्रन्थ से दुःखी था। कादम्बरी की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड (नायक) तथा पुण्डरीक (उसका मित्र) के तीन जन्मों से सम्बन्ध रखती है। आरम्भ में विदिशा के राजा शूद्रक का वर्णन है। उसकी राजसभा में चाण्डाल कन्या वैशम्पायन नामक एक मेधावी तोते को लेकर आती है। यह तोता राजा को अपने जन्म और जाबालि के आश्रम में अपने पहुँचने का वर्णन सुनाता है। जाबालि ने तोते को उसके पूर्व जन्म की कथा सुनाई थी। तदनुसार राजा चन्द्रापीड और उसके मित्र वैशम्पायन की कथा आती है। चन्द्रापीड दिग्विजय के प्रसंग में हिमालय में जाता है, जहाँ अच्छोद सरोवर के निकट महाश्वेता के अलौकिक संगीत से आकृष्ट होता है। वहाँ कादम्बरी से उसकी भेंट होती है और वह उसके प्रति आसक्त हो जाता है। महाश्वेता एक तपस्वी कुमार पुण्डरीक के साथ अपने अधूरे प्रेम की कहानी सुनाती है। उसी समय चन्द्रापीड अपने पिता तारापीड के द्वारा उज्जैन बुला लिया जाता है, किन्तु वह वियोगजन्य व्यथा से पीड़ित रहता है। पत्रलेखा से कादम्बरी का समाचार सुनकर वह प्रसन्न होता है। यहीं बाण की कादम्बरी समाप्त हो जाती है। महाश्वेता वैशम्पायन को तोता बनने का शाप देती है। यह वैशम्पायन चन्द्रापीड का

मित्र है, शाप के बाद वह मर जाता है। इससे चन्द्रापीड भी दु:खी होकर मर जाता है। महाश्वेता तथा कादम्बरी, राजकुमार के शरीर की रक्षा करती हैं। अन्त में सभी को जीवन प्राप्त होता है।

कादम्बरी में कथा को ही नहीं, वर्णनों को भी बाण ने अपनी कल्पनाशक्ति से फैलाया है। इसमें सभी स्थल बाण की लोकोत्तर शक्ति तथा वर्णन-क्षमता का परिचय देते हैं। काव्यशास्त्र के सभी उपादानों (रस, अलंकार, गुण एवं रीति) का औचित्यपूर्ण प्रयोग करने के कारण कादम्बरी बाण की उत्कृष्ट गद्य रचना है। इसमें विषय की आवश्यकता के अनुसार वर्णन शैली अपनाई गई है। इसलिए उनकी शैली को **पाञ्चाली** कहा जाता है, जिसमें शब्द और अर्थ का समान गुम्फन होता है। बाण ने पात्रों का सजीव निरूपण किया है, रस का समुचित परिपाक दिखाया है और मानव-जीवन के सभी पक्षों पर दृष्टि रखी है। इसलिए आलोचकों ने एक स्वर से कहा है कि **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।** अर्थात् उनके वर्णन से कुछ भी नहीं बचा है। कादम्बरी में मन्त्री शुकनास ने राजकुमार चन्द्रापीड को जो विस्तृत उपदेश दिया है, वह आज भी तरुणों के लिए मार्गदर्शक है।

अम्बिकादत्त व्यास

- **शिवराजविजय–** एक आधुनिक गद्यकाव्य है, जो महान् देशभक्त शिवाजी के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर आधारित आधुनिक उपन्यास की शैली में लिखा गया है। इसके लेखक पं. अम्बिकादत्त व्यास (1858-1900 ई.) हैं। व्यास जी मूलत: जयपुर (राजस्थान) के निवासी थे, किन्तु उनका कार्यक्षेत्र बिहार था। शिवराजविजय का कथानक ऐतिहासिक है, जिसमें कवि ने कल्पना का भी प्रचुर प्रयोग किया है। इससे घटनाएँ गतिशील और प्रभावशाली हो गई हैं। व्यास जी की भाषा-शैली में प्रसादगुण, कथा-प्रवाह और कल्पना की विशदता मिलती है। विषयवस्तु की दृष्टि से यह गद्यकाव्य शिवाजी और औरंगजेब के सङ्घर्ष की घटनाओं पर आश्रित है। यशवन्त सिंह, अफजल खाँ आदि कई ऐतिहासिक पात्रों को इसमें चित्रित किया गया है। शिवाजी भारतीय आदर्श, संस्कृति तथा राष्ट्रशक्ति के रक्षक के रूप में दिखाए गए हैं। उनका ऐतिहासिक व्यक्तित्व इस गद्यकाव्य में पूर्णत: चित्रित है। इसमें जहाँ-तहाँ फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। पूरी रचना 12 नि:श्वासों में विभक्त है। यह आधुनिक गद्य साहित्य का गौरव ग्रन्थ है।

अन्य गद्यकाव्य

संस्कृत भाषा में गद्य रचना कम हुई है, फिर भी विभिन्न कालों में कवियों ने अपना कौशल गद्यकाव्य की रचना में दिखाया है। इन सभी में प्रायः बाण के अनुकरण की प्रवृत्ति है। धारा नगरी के जैन कवि धनपाल (दसवीं शताब्दी ई.) ने तिलकमञ्जरी लिखकर बाण की शैली का अनुकरण किया। वे बाण के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं। आधुनिक काल में पण्डिता क्षमाराव (1890–1954 ई.) का नाम गद्य लेखकों में अग्रणी है। उन्होंने कथामुक्तावली, विचित्रपरिषद्यात्रा इत्यादि कई गद्यकाव्य लिखे हैं।

ध्यातव्य बिन्दु

संस्कृत में गद्य का आरम्भ ब्राह्मण तथा उपनिषद् ग्रन्थों से हुआ।

गद्यकाव्य के महत्त्वपूर्ण कवि–

दण्डी

सुबन्धु

बाणभट्ट

- दण्डी द्वारा विरचित *दशकुमारचरित* कथा-काव्य है। जिसमें दशकुमारों की कथा वर्णित है।

दण्डी की अन्य रचनाएँ–

काव्यादर्श

अवन्तिसुन्दरीकथा

- **सुबन्धु–** सुबन्धु द्वारा रचित वासवदत्ता गद्यकाव्य है। इसमें राजकुमार कन्दर्पकेतु और राजकुमारी वासवदत्ता का प्रणय चित्रित है।
- **बाणभट्ट–** गद्य साहित्य में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कवि हैं। इनके दो प्रसिद्ध गद्यकाव्य हैं। हर्षचरित और कादम्बरी।

  कादम्बरी बाणभट्ट की उत्कृष्ट गद्य रचना है।
- **शिवराजविजय–** श्री अम्बिकादत्त व्यास द्वारा रचित शिवराजविजय आधुनिक गद्यकाव्य है।

- इनके अतिरिक्त संस्कृत में अनेक गद्यकाव्य हैं–

  धनपाल द्वारा रचित तिलकमञ्जरी

  क्षमाराव द्वारा रचित– कथामुक्तावली

  सोड्ढल द्वारा रचित– उदयसुन्दरीकथा।

चम्पूकाव्य

संस्कृत साहित्य में गद्यकाव्य तथा पद्यकाव्य के अतिरिक्त दोनों के मिश्रण के रूप में चम्पूकाव्य का भी उदय हुआ। यद्यपि यह स्वरूपतः नीति-कथाओं के समान गद्य और पद्य से समन्वित होता है, किन्तु नीति-कथाओं और चम्पू में मौलिक अन्तर है। चम्पू मूलतः एक काव्य है, जिसमें कवि अलङ्करण के सभी साधनों का उपयोग करता है। एक ओर इसमें गद्यकाव्य का सौन्दर्य होता है, तो दूसरी ओर महाकाव्य में पाए जाने वाले श्लोकों के समान अलङ्कृत पद्य भी रहते हैं। बाह्य सौन्दर्य इसमें मुख्य होता है और कवि की कला का चमत्कार रहता है। विषयवस्तु की प्रधानता नहीं रहती। इसका उद्देश्य काव्यगत आनन्द देना है। नीति-कथाओं और लोक-कथाओं के समान चम्पूकाव्य सरल शैली में नहीं लिखे जाते। गद्य और पद्य दोनों का उत्कर्ष इसमें वर्तमान रहता है– **गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते।** चम्पूकाव्य को गद्यकाव्य के समान ही उच्छ्वासों में विभक्त किया जाता है। संस्कृत में समय-समय पर लिखे गए कुछ प्रमुख चम्पूकाव्यों का विवरण इस प्रकार है।

1. नलचम्पू और मदालसाचम्पू

ये दोनों त्रिविक्रमभट्ट द्वारा लिखे गए चम्पूकाव्य हैं। इनका काल दसवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्ध माना जाता है। त्रिविक्रमभट्ट राष्ट्रकूट नरेश इन्द्रराज के संरक्षण में रहते थे। नलचम्पू को *दमयन्तीकथा* भी कहते हैं। इसमें नल और दमयन्ती की प्रणय कथा वर्णित है। इसमें सात उच्छ्वास हैं। रचना अपूर्ण प्रतीत होती है, क्योंकि नल द्वारा दमयन्ती के निकट सन्देश ले जाने तक की ही कथा इसमें वर्णित है। नलचम्पू सरस तथा प्रसादपूर्ण रचना है। इसमें श्लेष की अधिकता है। त्रिविक्रमभट्ट के श्लेष बहुत सरल और आकर्षक हैं। इन्होंने विरोध और परिसंख्या अलंकारों का भी प्रचुर प्रयोग किया है।

इनकी दूसरी रचना मदालसाचम्पू है, जो प्रणय-कथा है। इसमें कुवलयाश्व से मदालसा का प्रेम वर्णित है। कुवलयाश्व से मदालसा का विवाह होता है, किन्तु तुरन्त वियोग भी हो जाता है। अन्त में उसे मदालसा की प्राप्ति होती है। कला की दृष्टि से

उत्कृष्टता होने पर भी कथा के विकास और रोचकता की दृष्टि से यह कृति लोकप्रिय रही है।

2. यशस्तिलकचम्पू

यह जैन कवि सोमप्रभसूरि की रचना है। लेखक का काल दसवीं शताब्दी ई. का उत्तरार्द्ध है। यह ग्रन्थ अत्यन्त विस्तृत है। इसमें आठ उच्छ्वास हैं। जैन सिद्धान्तों को इसमें काव्य रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस चम्पूकाव्य का नायक राजा यशोधर है। पत्नी की धूर्तता से राजा की मृत्यु होती है। नाना योनियों में जन्म लेकर अन्ततः वह जैन धर्म में दीक्षित होता है। यह कथा गुणभद्र के उत्तरपुराण पर आश्रित है। इसी कथा पर पुष्पदन्त ने जसहरचरिउ नामक अपभ्रंशकाव्य तथा वादिराजसूरि ने संस्कृत काव्य यशोधरचरित लिखा था। इस कृति द्वारा सोमप्रभसूरि के गहन अध्ययन, प्रगाढ़ पाण्डित्य, भाषा पर स्वच्छन्द प्रभुत्व तथा काव्य के क्षेत्र में अभिनव प्रयोगों की रुचि का पता लगता है। इसके आरम्भिक श्लोकों में कवि ने अनेक पूर्ववर्ती कवियों का उल्लेख किया है।

एक अन्य जैन कवि हरिचन्द्र ने राजकुमार जीवन्धर को चरितनायक बनाकर जीवन्ध रचम्पू लिखा। इनका काल भी दसवीं शताब्दी ई. है। यह चम्पू 11 लम्बकों में विभक्त है। जैन धर्म के सिद्धान्तों को इसमें सरल भाषा में प्रतिपादित किया गया है।

3. उदयसुन्दरीकथा

यह छः उच्छ्वासों में नागराजकुमारी उदयसुन्दरी तथा प्रतिष्ठान के राजा मलयवाहन के विवाह का वर्णन करने वाला चम्पूकाव्य है। इसके रचयिता का नाम सोड्ढल है। लेखक का समय 1040 ई. के आसपास है। उदयसुन्दरीकथा पर बाणभट्ट की शैली का बहुत प्रभाव है। सोड्ढल ने इसकी रचना हर्षचरित के आदर्श पर की है।

4. रामायणचम्पू

इसे चम्पूरामायण भी कहते हैं। इसे मूलतः राजा भोज ने लिखा, किन्तु उन्होंने केवल सुन्दरकाण्ड तक ही इसकी रचना की। युद्धकाण्ड की रचना लक्ष्मणभट्ट ने की तथा उत्तरकाण्ड की वेंकटराज ने। भोज का काल ग्यारहवीं शताब्दी ई. पूर्वार्द्ध है। इसका आधार वाल्मीकीय रामायण है। कथानक, भाव, भाषा, गुण-दोष इत्यादि सभी पर वाल्मीकि का प्रभाव लक्षित होता है। इसमें भोज ने कई प्रकार की शैलियाँ अपनायी हैं। कहीं वे माघ की शैली में लिखते हैं, कहीं कालिदास की शैली में। भोज शब्दों के संयोजन में पूर्ण निपुण हैं। इस चम्पू में कलापक्ष के साथ मार्मिक स्थलों के भाव-सौंदर्य को भी प्रकट किया गया है। इसमें गद्य भाग कम है, पद्यों की विपुलता है।

5. भारतचम्पू

इसके लेखक सोलहवीं शताब्दी ई. के कवि अनन्तभट्ट हैं। इसमें महाभारत की कथा का 12 स्तबकों में वर्णन किया गया है। वर्णन अत्यन्त प्रांजल है, किन्तु कहीं-कहीं क्लिष्टता भी है। कल्पना की नवीनता और वैदर्भी शैली का प्रयोग इसका वैशिष्ट्य है। यह चम्पू संस्कृत जगत् में बहुत प्रसिद्ध है।

6. अन्य चम्पूकाव्य

संस्कृत में प्रायः 250 चम्पूकाव्य लिखे गए हैं। इनके कथानक *रामायण, महाभारत, भागवतपुराण, शिवपुराण* तथा जैन साहित्य से लिए गए हैं। नृसिंहचम्पू नाम से पृथक्-पृथक् कई कवियों ने ग्रन्थ लिखे। केशवभट्ट ने छः स्तबकों में, दैवज्ञसूरि ने पाँच उच्छ्वासों में तथा संकर्षण ने चार उल्लासों में नृसिंहचम्पू की रचना की। शेषश्रीकृष्ण-रचित पारिजातहरणचम्पू कृष्णलीला से सम्बद्ध है। नीलकण्ठदीक्षित कृत नीलकण्ठविजयचम्पू, वेंकटाध्वरि कृत विश्वगुणादर्शचम्पू, कविकर्णपूर-रचित आनन्दवृन्दावनचम्पू तथा जीवगोस्वामी कृत गोपालचम्पू कुछ प्रसिद्ध चम्पूकाव्य हैं।

बीसवीं शताब्दी ई. के पूर्वार्द्ध में प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् म. म. हरिहरकृपालु द्विवेदी के जीवन को आधार बनाकर रघुनन्दन त्रिपाठी ने हरिहरचरितचम्पू तथा उत्तरार्ध में पण्डित जयकृष्ण मिश्र ने भारत की स्वतन्त्रता पर आधारित संस्कृत का बृहत्तम चम्पू मातृमुक्तिमुक्तावली की रचना की।

ध्यातव्य बिन्दुः

- चम्पूकाव्य गद्य और पद्य का मिश्रण है।
- दो प्रमुख चम्पूकाव्य– नलचम्पू एवं मदालसाचम्पू के रचयिता त्रिविक्रमभट्ट हैं।
- जैन कवि सोमप्रभसूरि द्वारा रचित यशस्तिलकचम्पू जैन सिद्धान्तों को काव्यरूप में प्रस्तुत करता है।
- अन्य जैन कवि हरिचन्द्र ने राजकुमार जीवन्धर को नायक बनाकर जीवन्धरचम्पू लिखा।
- सोड्ढल रचित उदयसुन्दरीकथा में नागराजकुमारी उदयसुन्दरी तथा प्रतिष्ठान के राजा मलयवाहन के विवाह का वर्णन है।
- रामायणचम्पू को चम्पूरामायण भी कहते हैं जिसके सुन्दरकाण्ड तक की रचना राजा भोज ने युद्धकाण्ड की रचना लक्ष्मणभट्ट ने तथा उत्तरकाण्ड की रचना वेंकटराज ने की।

• अनन्तभट्ट ने महाभारत की कथा के आधार पर भारतचम्पू की रचना की है।

पद्यसाहित्यस्य वैशिष्ट्यानि

1. पद्यं संस्कृतसाहित्यस्य उत्कृष्टतमा विधा मन्यते।
2. पद्यं गीतिमयं गेयं वा भवति।
3. छन्दोबद्धा रचना पद्यं कथ्यते।
4. पद्ये वर्ण-मात्रा-यति-गति-लयादीनां विचारः क्रियते।
5. पद्ये अक्षराणां मात्राणां च संख्या निश्चिता भवति।
6. संस्कृतपद्यसाहित्ये हृदयस्य कोमलभावानां प्रकाशनं भवति।
7. पद्यकाव्यानां वर्ण्यविषयः प्रायः शृंगारः, नीतिः, धर्मः प्राकृतिकसौन्दर्यं वा भवति।
8. पद्यसाहित्ये पदावली सरसा, सरला सुमधुरा च भवति।
9. संस्कृतपद्यसाहित्यं त्रिविधं वर्तते -1 महाकाव्यम् 2. खण्डकाव्यम्
   3. मुक्तककाव्यम् चेति।
10. सर्गबन्धो महाकाव्यं कथ्यते।
11. महाकाव्ये न्यूनातिन्यूनम् अष्टसर्गाः भवन्ति।
12. शृंगारवीरशान्तेषु एकः रसः प्रधानः भवति।
13. प्रमुखानि महाकाव्यानि-रघुवंशम् कालिदासः, बुद्धचरितम्-अश्वघोषः, किरातार्जुनीयम् - भारविः, शिशुपालवधम्-माघः, नैषधीयचरितम्-श्रीहर्षः, आदिकाव्यम् (रामायणम्) - वाल्मीकिः।
14. महाकाव्यस्य लक्षणन्यूनं खण्डकाव्यं भवति।
15. खण्डकाव्यमेव गीतिकाव्य-नाम्नापि ज्ञायते।
16. खण्डकाव्ये अधिकाधिकं सप्तसर्गाः भवन्ति।
17. प्रमुखानि खण्डकाव्यानि– मेघदूतम्-कालिदासः, नीतिशतकम् शृंगारशतकम्, वैराग्य-शतकम्

गद्यकाव्यस्य प्रमुखाः विशेषताः

1. छन्दोरहिता रचना गद्यं कथ्यते।

2. संस्कृतस्य गद्यसाहित्यम् अत्यन्तं प्राचीनम् अस्ति।
3. गद्यसाहित्ये दुरूहत्वं क्लिष्टत्वं च भवति।
4. संस्कृतगद्यसाहित्ये समासशैल्याः आधिक्यं भवति।
5. ओजः संस्कृतगद्यस्य प्राणाः। उक्तमपि - ओजः समासभूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्।
6. संस्कृतगद्यसाहित्यस्य कथानकानां मूलं लोककथाः सन्ति।
7. गद्यस्य भेदद्वयं मन्यते - कथा आख्यायिका च।
8. कथायाः कथानकं काल्पनिकम् आख्यायिकायाः च ऐतिहासिकं भवति।
9. प्रमुखगद्यकाव्यानि सन्ति - हर्षचरितम्, कादम्बरी - बाणभट्टः, दशकुमारचरितम् - दण्डी, वासवदत्ता - सुबन्धुः।
10. गद्यस्य विषये प्रसिद्धम् अस्ति 'गद्यं कवीनां निकषम् वदन्ति।

चम्पूकाव्यस्य वैशिष्ट्यानि

1. गद्यपद्यमयी रचना चम्पूकाव्यं कथ्यते।
2. शृंगारवीरशान्तादिरसानां प्रयोगः चम्पूकाव्ये क्रियते।
3. चम्पूकाव्ये सर्गाणां नामानि उच्छ्वासः लम्भकः इत्यादिपदैः क्रियन्ते।
4. विविधानां कथावस्तूनां प्रयोगः चम्पूकाव्येषु दृश्यते।
5. चम्पूकाव्येषु सरलगद्यानां प्रयोगः क्रियते।
6. प्रमुखचम्पूकाव्यानि- नलचम्पूः त्रिविक्रमभट्टः, यशस्तिलकचम्पूः सोमदेवसूरिः, जीवंधरचम्पूः हरिश्चन्द्रः, रामायणचम्पूः भोजराजः, भारतचम्पूः- अनन्तकविः, विश्वगुणादर्शचम्पूः- वेंकटाध्वरिः।

अभ्यासार्थ प्रश्नाः

1. संस्कृतसाहित्ये कविकुलगुरुः इत्युपाधिना कः प्रसिद्धः?
2. महाकाव्यस्य आरम्भे नमस्कारात्मकम् आशीर्वचनात्मकम् .....वा मंगलाचरणं भवति ।
3. महाकाव्यस्य नामकरणं प्रायः कवेः कथानकस्य ..... च नाम्ना क्रियते ।
4. महाकविना कालिदासेन विरचितं महाकाव्यद्वयं प्राप्यते रघुवंशम् ..... च ।

5. बुद्धचरितं सौन्दरनन्दं च केन विरचितम् ?
6. बौद्धधर्मस्य उपदेशान् काव्यात्मकरूपेण कः प्रस्तुतवान् ?
7. अर्जुनेन सह किरातवेशधारिणः भगवतः शिवस्य युद्धवर्णनं कस्मिन् महाकाव्ये प्राप्यते?
8. मनोरञ्जनेन सह संस्कृतव्याकरणस्य ज्ञानप्रदानं कस्य महाकाव्यस्य प्रमुखोद्देश्यम् अस्ति?
9. महाकविना कुमारदासेन विरचितं महाकाव्यं किमस्ति ?
10. 'शिशुपालवधम्' इति महाकाव्यस्य लेखकः कः ?
11. नल - दमयन्त्योः प्रेमकथाम् अधिकृत्य लिखितं महाकाव्यं किम् अस्ति ?
12. मेघे माघे गतं वयः इति पंक्तिः कस्य महाकाव्यस्य प्रशंसायां कथिता ?
13. कः काश्मीरनिवासी कविः हरविजयम् इति महाकाव्यम् अरचयत् ?
14. महाकविना क्षेमेन्द्रेण कति महाकाव्यानि विरचितानि ?
15. भगवता शिवेन त्रिपुरस्य पराजयः कस्य महाकाव्यस्य मुख्यं कथानकम् अस्ति ?
16. किं महाकाव्यं द्वयाश्रयकाव्य-रूपेण प्रसिद्धं जातम् ?
17. सर्गबद्धा रचना ..... कथ्यते ।
18. सहसा विदधीत न क्रियाम् इति सूक्तिः कस्मिन् महाकाव्ये विद्यते?
19. बृहत्त्रय्याम् नैषधचरितम्, शिशुपालवधम् ..... च सन्ति।
20. महाकवेः श्रीहर्षस्य समयः ..... शताब्दी अस्ति ।
21. संस्कृतगद्यस्य प्राचीनतमं रूपं कुत्र प्राप्यते ?
22. 'समुद्रगुप्त-प्रशस्तिः' इति शिलालेखं कः अरचयत्?
23. वृत्तबन्धोज्झितं ..... कथ्यते।
24. प्रमुखगद्यकारेषु सुबन्धुः दण्डी ..... च गण्यन्ते ।
25. गद्यं कवीनां ..... वदन्ति ।
26. 'दशकुमारचरितम्' इति प्रसिद्ध गद्यकाव्यं कः अरचयत् ?
27. महाकवेः सुबन्धोः श्लेषालंकार-विशिष्टा प्रसिद्धा रचना का ?
28. गद्यकाव्यस्य द्वौ भेदौ स्तः ..... आख्यायिका च ।

29. सम्राट्-हर्षवर्धनस्य जीवनम् उपलक्ष्य लिखितं काव्यम् ..... अस्ति ।

30. बाणभट्टस्य गद्यकाव्यद्वयं प्राप्यते -हर्षचरितं ..... च ।

31. कादम्बरी-काव्ये राजकुमार-चन्द्रापीडाय कः उपदिशति ?

32. आधुनिकः गद्यकारः अम्बिकादत्तव्यासः ..... अरचयत् ।

33. 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' इत्यस्याम् उक्तौ कस्य यशोगानं विद्यते ?

34. कस्य महाकवेः पदलालित्यम् प्रसिद्धम् ?

35. गद्यपद्यमयं काव्यं ..... इत्यभिधीयते ।

36. नलचम्पूः मदालसाचम्पूः इत्यनयोः लेखकः कः ?

37. हर्षचरितम् अनुसृत्य सोड्ढलेन विरचितं चम्पूकाव्यम् किम् अस्ति?

38. भारतस्य स्वातंत्र्यम् अधिकृत्य विलिखितं बृहत्तमं चम्पूकाव्यं किं विद्यते?

प्रश्न - नाट्यसाहित्यं समुचितं वर्णयत -

नाट्य-साहित्य

संस्कृत भाषा में विपुल नाट्य-साहित्य है। नाट्य-कृति में जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का अनुकरण किया जाता है। दृश्यकाव्य होने के कारण नाट्य को रूपक भी कहते हैं। नाट्याचार्यों ने दस प्रकार के रूपक बतलाए हैं। इनमें सबसे उत्कृष्ट नाटक माना गया है। अतः प्रायः लोग नाट्य, रूपक, रूप और नाटक का प्रयोग समान अर्थ में करते हैं। संस्कृत भाषा में बहुत प्राचीन काल से रूपक लिखे जाते रहे हैं। यह परम्परा आज तक चल रही है। लिखने के साथ-साथ बहुत से रूपकों का अभिनय भी होता रहा है। राजसभाओं में विशिष्ट अवसरों पर संस्कृत रूपकों का अभिनय होता था। इसी प्रकार ग्रामों और नगरों में भी नाटक-मण्डलियाँ जनता के मनोरंजन के लिए नाटक खेलती थीं। जन सामान्य में संस्कृत का प्रयोग शिथिल हो गया तब लोक-प्रचलित भाषाओं में नाटक खेले जाने लगे। आज स्थिति यह हो गई है कि संस्कृत नाटक विशिष्ट तथा प्रबुद्ध वर्गों के बीच ही अभिनीत होते हैं।

संस्कृत रूपकों की उत्पत्ति कैसे हुई? इस पर पाश्चात्त्य विद्वानों ने पुत्तलिका नृत्य, धार्मिक नृत्य, वीर पूजा, यूनानी प्रभाव इत्यादि सिद्धान्त दिए हैं। भरत ने अपने नाट्यशास्त्र में आख्यान दिया है कि ब्रह्मा ने ऋग्वेद से पाठ्य (संवाद), सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस लेकर नाट्य-वेद नामक नई विधा (जिसे पंचम वेद कहा

गया) विकसित की। शिव और पार्वती ने क्रमशः ताण्डव और लास्य नामक नृत्य की व्यवस्था करके इस विद्या को समृद्ध किया। नाट्य शास्त्र के अनुसार भरत के पुत्रों और शिष्यों ने अप्सराओं और गन्धर्वों के साथ मिलकर अमृतमन्थन और त्रिपुरदाह नामक रूपकों का अभिनय किया था। ये ही प्रथम रूपक थे। वस्तुतः संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति इसी देश में जनसामान्य के मनोरंजन के लिए हुई है।

नाट्यशास्त्र रूपकों के सम्बन्ध में व्यापक विधान करता है। इसमें रूपकों के भेद, कथा-वस्तु, पात्र, रस, अभिनय, गीत, नृत्य, रंगमंच की व्यवस्था, भाषा का प्रयोग आदि विषयों के विस्तृत नियम बतलाए गए हैं। इसका समय प्रथम शताब्दी ई. पू. से पहले माना गया है। इसमें नियमों की व्यापकता देखते हुए कहा जा सकता है कि बहुत प्राचीन काल में ही नाटक से सम्बद्ध विज्ञान विकसित हो गया था। इससे नाटकों के पर्याप्त मात्रा में लिखे जाने का भी अनुमान होता है। यहाँ कुछ प्रमुख संस्कृत नाटकों का परिचय दिया जा रहा है।

भास के नाटक

सन् 1912 ई. में टी. गणपति शास्त्री को त्रिवेन्द्रम (केरल) में 13 रूपकों की प्राप्ति हुई, जिन्हें उन्होंने भास की कृतियाँ बतलाकर प्रसिद्ध किया। इन रूपकों को भासनाटकचक्र का संयुक्त नाम दिया गया। इसके पूर्व तक भास का नाम प्रसिद्ध संस्कृत नाटककार के रूप में जाना जाता था, किन्तु उनकी कृतियाँ नहीं मिली थीं। आरम्भ में उन सभी रूपकों को भासकृत मानने में विद्वानों को आपत्ति हुई, किन्तु धीरे-धीरे यह विवाद समाप्त हो गया। इन रूपकों में परस्पर इतना अधिक साम्य पाया गया कि इन्हें भासरचित मानने में कोई आपत्ति नहीं हुई।

भास के काल के विषय में विवाद है। गणपति शास्त्री ने उनका काल तीसरी शताब्दी ई. पू. माना है। कुछ भारतीय विद्वान उनका स्थितिकाल 400 ई. पू. तक ले जाते हैं। अधि संख्य विद्वानों का यह विचार है कि भास कालिदास (ई.पू.प्रथम शताब्दी) के पूर्ववर्ती हैं, क्योंकि कालिदास ने अपने नाटक मालविकाग्निमित्रम् में भास का नाम स्मरण किया है।

भास की रचनाओं को चार भागों में बाँटा जाता है। प्रतिमा नाटक और अभिषेक रामायण पर आश्रित हैं। बालचरित, पञ्चरात्र, मध्यमव्यायोग, दूतवाक्य, दूतघटोत्कच, कर्णभार तथा ऊरुभंग नामक रूपक महाभारत पर आश्रित हैं। स्वप्नवासवदत्त तथा प्रतिज्ञायौगन्धरायण उदयन और वासवदत्ता की प्रसिद्ध कथा पर आश्रित हैं। अविमारक और चारुदत्त कल्पित रूपक हैं। इन रूपकों में स्वप्नवासवदत्त सर्वाधिक विख्यात है।

नाट्य-कला की दृष्टि से भी इसका महत्त्व है। भास के सभी रूपक नाट्य-कला की विकासावस्था के सूचक हैं। भाषा की सरलता, छोटे वाक्यों का प्रयोग, अभिनय की सुगमता, उचित हास्य-प्रयोग तथा कला की दृष्टि से भास के नाटक बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। चारुदत्त चार अंकों का रूपक है, जो बाद में शूद्रक के मृच्छकटिक की रचना का आधार बना। भास की कल्पना शक्ति तथा कथानक को सजाने का कौशल बहुत उत्कृष्ट है। भास के रूपकों में उस काल की सामाजिक और सांस्कृतिक सूचनाएँ पर्याप्त रूप से मिलती हैं। इनमें पात्रों का सजीव अंकन किया गया है तथा रस की योजना भी उत्कृष्ट रूप में हुई है।

कालिदास के नाटक

कालिदास ने तीन नाटक लिखे थे– मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय तथा अभिज्ञानशाकुन्तल। इनमें अन्तिम नाटक संस्कृत वाङ्मय में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

- **मालविकाग्निमित्र–** यह एक ऐतिहासिक नाटक है, जिसमें शुगवंशीय राजा अग्निमित्र का दासी के वेश में रहने वाली विदर्भ-राजकुमारी मालविका के प्रति प्रेम वर्णित है। इसमें पाँच अंक हैं। अग्निमित्र की महारानी धारिणी शरणागत मालविका को अपना लेती है और नृत्य आदि ललित-कलाओं की शिक्षा दिलाती है। राजा अपने अन्तःपुर में उसका नृत्य देखकर मुग्ध हो उठता है। अन्तःपुर में विरोध और तनाव होने पर भी विदूषक की सहायता से राजा और मालविका की भेंट हो जाती है। अन्ततः महारानी धारिणी अपने आप मालविका का हाथ अग्निमित्र के हाथ में दे देती है। इसमें अग्निमित्र के पिता पुष्यमित्र के द्वारा किए गए अश्वमेध यज्ञ का भी संकेत है तथा अग्निमित्र के पुत्र वसुमित्र की यवनों पर विजय का भी वर्णन है। इस नाटक में राजप्रासाद के प्रणय-षडयन्त्रों का सजीव चित्रण है। प्रेम-प्रपंच की घटनाएँ चुभते संवादों और रसपूर्ण विनोद से भरी हैं। कालिदास की इस प्रथम नाट्य कृति में उनके कलात्मक विकास का बीज निहित है।
- **विक्रमोर्वशीय–** यह कालिदास का दूसरा नाटक है। इसमें राजा पुरुरवा और अप्सरा उर्वशी की प्रेम-कथा का वर्णन है। यह कथा ऋग्वेद और ब्राह्मण-ग्रन्थों में भी आई है। परम्परा से मिले हुए कथानक को कालिदास ने बड़े कौशल से पाँच अंकों में फैलाया है। पुरुरवा स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी को देखकर मुग्ध हो जाता है और उर्वशी का भी नायक के प्रति अनुराग होता है। महारानी राजा को उर्वशी से प्रेम करने की अनुमति देती है और उर्वशी को भी एक वर्ष के लिए पुरुरवा के साथ रहने की

अनुमति मिल जाती है। चतुर्थ अंक में उर्वशी एक लता के रूप में बदल जाती है। पुरुरवा विलाप करता है। राजा के प्रेम से प्रभावित होकर इन्द्र उर्वशी को आजीवन राजा के साथ रहने की अनुमति दे देते हैं। इस नाटक में शृङ्गार के संयोग और विप्रलम्भ दोनों रूपों का अत्यन्त मार्मिक प्रयोग हुआ है। इसमें कालिदास की नाट्यकला और काव्यकला भी अधिक विकसित दिखाई पड़ती है। प्रकृति का मानवीय भावों के साथ अधिक सामंजस्य इसमें दिखाया गया है। उदाहरण के लिए उर्वशी के लता-रूप में परिणत हो जाने पर महाराज पुरुरवा सामने बहती नदी को ही अपनी प्रेयसी समझ बैठते हैं और उन्मादग्रस्त होकर उसका वर्णन करते हैं।

- **अभिज्ञानशाकुन्तल–** यह कालिदास का अमर नाटक है, जिसने समस्त संसार के लोगों को प्रभावित किया है। इसमें सात अंक हैं। दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रेम-कथा इसमें चित्रित है। दुष्यन्त हस्तिनापुर का राजा है तथा शकुन्तला कण्व मुनि के आश्रम में पलने वाली एक सुन्दर कन्या है। आश्रम में दुष्यन्त कण्व की अनुपस्थिति में शकुन्तला से गान्धर्व विवाह करता है। कुछ दिन वहाँ रहकर वह राजधानी लौट जाता है। जाते समय वह शकुन्तला को शीघ्र बुला लेने का वचन देता है, किन्तु दुर्वासा के द्वारा शकुन्तला को दिए गए शाप के कारण वह उस वचन को भूल जाता है। इधर कण्व आश्रम में लौटकर गर्भवती शकुन्तला को पतिगृह भेजने की तैयारी करते हैं। आश्रम के सभी चेतन व अचेतन पदार्थ इस दृश्य से व्याकुल हैं। चतुर्थ अंक में शकुन्तला की विदाई का यह दृश्य उत्कृष्ट है। दुर्वासा के शाप के कारण दुष्यन्त शकुन्तला को पहचान नहीं पाता। उसके द्वारा दी गई अँगूठी भी शकुन्तला खो चुकी है। इसलिए पहचान का कोई उपाय भी नहीं रहता। अन्ततः शकुन्तला मारीच आश्रम में ले जाई जाती है, जहाँ वह भरत नाम के पुत्र को जन्म देती है। इधर जब दुष्यन्त को वह अंगूठी मिल जाती है तब सब कुछ स्मरण हो जाता है। वह बहुत पश्चात्ताप करता है। संयोगवश इन्द्र की सहायता करके लौटते समय दुष्यन्त मारीच आश्रम में जाता है और उसकी शकुन्तला तथा भरत से भेंट हो जाती है। इस प्रकार नाटक की सुखद समाप्ति होती है। इस नाटक में कालिदास की नाट्यकला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची है। घटनाओं का संयोजन, प्रेम का क्रमिक विकास, प्रकृति का मनोरम चित्रण, शकुन्तला की विदाई का कारुणिक दृश्य, विदूषक का हास्य, संवादों की अभिव्यंजना, शृङ्गार-रस का यथेष्ट निष्पादन, दुर्वासा के शाप की कल्पना ये सभी मिलकर इस नाटक को बहुत ऊँचाई पर पहुँचाते हैं। कालिदास उपमा का प्रयोग करने में अत्यन्त कुशल हैं।

भारतीय परम्परा में इस नाटक के चतुर्थ अंक को और उसके भी चार श्लोकों को श्रेष्ठ बतलाया गया है।

काव्येषु नाटकं रम्यं, तत्र रम्या शकुन्तला।

तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्।

जर्मन महाकवि गेटे ने इस नाटक की बहुत प्रशंसा की है कि वसन्त का पुष्प और ग्रीष्म का फल यदि एक साथ देखना हो, तो शकुन्तला में देखें। मानव-जीवन के मार्मिक पक्षों का निरूपण इसमें बहुत कुशलता से हुआ है।

अश्वघोष का शारिपुत्रप्रकरण

इसके लेखक अश्वघोष (प्रथम शताब्दी ई.) हैं। यह रूपक नौ अंकों में लिखा गया था। इसके कुछ अंश ताल-पत्रों पर लिखित मध्य एशिया में मिले हैं। इन पत्रों को संकलित करके प्रो. ल्यूडर्स ने वर्तमान शताब्दी के आरम्भ में जर्मनी में इनका प्रकाशन किया था। इसमें शारिपुत्र और मौद्गलायन द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार किए जाने की कथा है। आंशिक रूप से प्राप्त होने के कारण इसके कथानक का पूरा ज्ञान तो नहीं मिलता, किन्तु इसके विदूषक का प्राकृत-प्रयोग, छन्दों का प्रयोग, नाटक का अंकों में विभाजन इत्यादि तत्त्व संस्कृत नाट्य-विज्ञान के विकास का संकेत देते हैं। इस नाटक के साथ दो अन्य नाटकों के भी खण्डित अंश मिले थे। कुछ आधुनिक विद्वान् इन्हें भी शारिपुत्रप्रकरण का ही अंश मानते हैं। इसमें कीर्ति, धति आदि प्रतीकात्मक पात्रों का सर्वप्रथम प्रयोग है। अश्वघोष के इस नाटक में शैली का संयम उनके महाकाव्यों के समान ही मिलता है।

शूद्रक का मृच्छकटिक

शूद्रक-रचित मृच्छकटिक 10 अंकों का रूपक है, जिसे प्रकरण नामक भेद में रखा जाता है। प्रकरण में कथावस्तु कल्पित और सामाजिक होती है, राजकीय वातावरण से यह दूर रहती है। व्यापारजीवी ब्राह्मण चारुदत्त इसका नायक है, जो उदारता के कारण निर्धन हो गया है। इसकी नायिका वसन्तसेना उज्जयिनी की प्रसिद्ध गणिका है। वह चारुदत्त से प्रेम करती है। उसके प्रेम में उन्मत्त राजा का श्यालक (साला) शकार इसका विरोध करता है। वह वसन्तसेना का गला दबा देता है और हत्या के झूठे आरोप में चारुदत्त को न्यायालय में पहुँचा देता है, किन्तु वसन्तसेना मरती नहीं। इसी बीच राजविप्लव होता है और पालक के स्थान पर आर्यक राजा बनता है। अकस्मात् ही जीवित वसन्तसेना के वध्यस्थान पर उपस्थित हो जाने के कारण, चारुदत्त को दी गई मृत्युदण्ड की सजा समाप्त

हो जाती है और रूपक की सुखात्मक परिणति होती है।

चारुदत्त का पुत्र रोहसेन मिट्टी की गाड़ी का खिलौना नहीं चाहता, स्वर्णशकट चाहता है। नायिका वसन्तसेना उसकी गाड़ी पर अपने सोने के आभूषण डाल देती है। मिट्टी की गाड़ी का कथानक बहुत मार्मिक है। अतः इस रूपक का नाम मृच्छकटिक (मृत्-मिट्टी, शकटिक-खिलौने की गाड़ी) पड़ा है। यह प्रकरण विशुद्ध सामाजिक कथावस्तु पर आश्रित है। इसलिए किसी नगर के राजपथ पर घटी घटनाओं का इसमें यथार्थ चित्र मिलता है।

इसमें चारुदत्त जैसे पात्र के गुणों पर मुग्ध होकर वसन्तसेना जैसी गणिका अपने व्यवसाय को छोड़ देती है। दूसरी ओर इसमें शकार जैसा खलनायक भी है, जो राजा का साला होने के कारण अहंकारी है और दुष्टता करता रहता है। इसमें जुआ खेलने वाले जुआरी, घर में काम करने वाली दासी, राजतन्त्र की दुर्गति करने वाला राजा, चोरी करके अपनी प्रेमिका को आभूषण देने वाला प्रेमी, मित्र की निर्धनता में भी साथ देने वाला हास्य-पात्र विदूषक, पतिव्रता धूता (चारुदत्त की पत्नी) और धन से अधिक सद्गुणों की पूजा करने वाली गणिका वसन्तसेना जैसे अनेक पात्र हैं, जो इस प्रकरण में रोचकता और रोमांच उत्पन्न करते हैं। अपने युग के समाज और संस्कृति को यह सजीव रूप में उपस्थित करने वाला एक क्रान्तिकारी रूपक है।

मृच्छकटिक के लेखक शूद्रक के व्यक्तित्व और काल के विषय में बहुत विवाद है। इसकी प्रस्तावना में शूद्रक के राज्य करने और उसकी मृत्यु का भी उल्लेख है। निश्चित रूप से यह प्रस्तावना बाद में जोड़ी गई है। शूद्रक को कुछ लोग काल्पनिक पात्र मानते हैं। सामान्यतः तीसरी-चौथी शताब्दी ई. के उज्जैन का चित्र अंकित होने के कारण मृच्छकटिक की रचना इस काल में मानी जा सकती है।

विशाखदत्त का मुद्राराक्षस

यह विशाखदत्त-रचित सात अंकों का नाटक है, जो राजनीतिक कथानक से संबद्ध है। इसकी कथावस्तु मौर्य-वंश की स्थापना से जुड़ी है। विशाखदत्त का समय पाँचवी-छठी शताब्दी माना जाता है। लेखक राजनीति तथा अनेक शास्त्रों का महान् पण्डित था। इस नाटक में चाणक्य के द्वारा नन्द-राजाओं के विध्वंस का वर्णन किया गया है। इसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य को पाटलिपुत्र के सिंहासन पर बैठाया जाता है। चाणक्य स्वयं राजनीति से संन्यास लेना चाहता है। इसलिए वह नन्दों के भूतपूर्व मन्त्री राक्षस को चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री बनाने का प्रयत्न करता है, किन्तु राक्षस नन्दों के प्रति स्वामिभक्ति रखता है। वह

न चाणक्य को प्रतिष्ठित होते देखना चाहता है, न चन्द्रगुप्त को। वह मलयकेतु नामक राजा के साथ मिलकर चन्द्रगुप्त को राज्यच्युत करने की योजना बनाता है। इसलिए चाणक्य का काम बहुत कठिन है, फिर भी वह अपनी कूटनीति से राक्षस को असहाय बना देता है, मित्रों से उसे पृथक् कर देता है और अन्ततः राक्षस चन्द्रगुप्त का मन्त्री पद स्वीकार करने के लिए विवश हो जाता है। चाणक्य की कूटनीति में सर्वाधिक सहायता राक्षस की मुद्रा (मुहर के रूप में प्रयुक्त होने वाली अंगूठी) से मिलती है, जो संयोगवश चाणक्य के हाथ लग जाती है। यह मुद्रा ही राक्षस की पराजय का कारण बनती है। इसके आधार पर नाटक का नामकरण हुआ है।

इस नाटक में चाणक्य और राक्षस की कूटनीतियों का संघर्ष दिखाया गया है। यह परम्परा से हटकर लिखा गया नाटक है, क्योंकि इसमें न कोई नायिका है और न शृंगार रस ही है। यहाँ राजनीतिक संघर्ष की भव्य क्रीड़ा है, जहाँ दो परस्पर विपक्षी राजनीतिज्ञ भिड़े हुए हैं। राक्षस की पराजय इसलिए होती है कि वह भावुक और स्वामिभक्त है। चाणक्य उसकी योग्यता पर मुग्ध है। इसलिए स्वयं प्रधानमंत्री न बनकर वह राक्षस को ही इस पद पर बैठाने के लिए प्रयत्न करता है। संस्कृत के सभी नाटकों की अपेक्षा कथानक की सुव्यवस्थित अन्विति में यह नाटक आगे है। घटनाएँ योजना के अनुसार चलती हैं। उनमें विलक्षण सजावट है। अन्त में राक्षस का मन्त्रीपद स्वीकार करना सभी के लिए लाभदायक होता है; पाटलिपुत्र का राज्य, योग्य राजा और योग्य मन्त्री पाकर दृढ़ होता है। इस प्रकार चाणक्य का त्याग और राष्ट्रभक्ति भी इसमें प्रदर्शित है। इसमें प्रदर्शित कूटनीति आज के युग में भी अनुकरणीय है।

हर्ष के रूपक

राजा हर्ष या हर्षवर्धन का समय सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध है। ये स्थाण्वीश्वर (कुरूक्षेत्र के पास) के इतिहास प्रसिद्ध राजा थे। उन्होंने बाण, मयूर आदि कवियों को आश्रय दिया था। इनके समय में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था। इन्होंने तीन रूपक लिखे, जिनमें दो नाटिकाएँ हैं– प्रियदर्शिका और रत्नावली तथा एक नाटक है–नागानन्द।

- **प्रियदर्शिका–** प्रियदर्शिका और रत्नावली एक ही प्रकार की कथावस्तु पर आश्रित नाटिकाएँ हैं। प्रत्येक में चार अंक हैं। दोनों के नायक उदयन हैं, परन्तु नायिका पृथक-पृथक हैं। प्रियदर्शिका नाटिका में प्रेमिका का नाम आरण्यका है, जो बाद में प्रियदर्शिका कही जाती है। राजा उदयन महारानी के भय से छिप-छिपकर नायिका से

मिलता है। नायिका राजप्रासाद में ही शरणागत के रूप में रहती है। विदूषक राजा के प्रेम-व्यापार में सहायक होता है।

- **रत्नावली–** इस नाटिका की नायिका सागरिका है, क्योंकि उसकी रक्षा सागर से की गई थी। यही बाद में रत्नावली कही जाती है। उदयन का चरित्र धीरललित नायक का है, जो निश्चिन्त, कला-प्रेमी तथा सुखजीवी है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रियदर्शिका नाटिका का संशोधन करने के लिए हर्ष ने रत्नावली की रचना की थी। दोनों पर कालिदास के मालविकाग्निमित्र का बहुत प्रभाव है।
- **नागानन्द–** यह दोनों से कथानक और प्रभाव में भिन्न है। यह जीमूतवाहन की कथा से सम्बद्ध है। इसमें पांच अंक हैं। इसके पूर्वार्द्ध में जीमूतवाहन और मलयवती की प्रेम-कथा का वर्णन है, किन्तु उत्तरार्द्ध में जीमूतवाहन के आत्मत्याग की कथा है। वह गरुड़ से नाग की रक्षा करता है और शंखचूड़ के स्थान पर स्वयं गरुड़ का भक्ष्य बनता है। गरुड़ उसके त्याग से प्रसन्न होकर सभी नागों को जीवित कर देते हैं। इस प्रकार यह महायान बौद्ध धर्म के आदर्श के अनुकूल बोधिसत्त्व की कथा को नाटक के रूप में प्रस्तुत करता है। मानव-जाति को अहिंसा की शिक्षा देना इसका उद्देश्य है। इस नाटक को हर्ष ने उस समय लिखा था, जब वे बौद्ध मत स्वीकार कर चुके थे। बौद्धों के बीच इस नाटक का बहुत प्रचार रहा है। नाटक दु:खान्त रूप धारण कर लेता, किन्तु गौरी देवी के दिव्य प्रसाद की कथा के समावेश से सुखान्त बन जाता है।

हर्ष ने अपने रूपकों को सरल भाषा में प्रसादगुण से युक्त शैली में लिखा है। उन्होंने जहाँ नाटिकाओं में शृंगार रस की धारा बहायी है, वहाँ नागानन्द में शान्त रस को मुख्य रस रखा है। कला और कथानक की दृष्टि से उत्कृष्ट न होने पर भी ऐतिहासिक दृष्टि से हर्ष के रूपकों का महत्त्व है। नाट्य-संविधान की दृष्टि से रत्नावली बहुत महत्त्व रखती है, क्योंकि काव्यशास्त्र के आचार्यों ने इस नाटिका के अनेक स्थलों को प्रचुर मात्रा में उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है।

भवभूति के रूपक

भवभूति कालिदास के बाद दसरे उत्कृष्ट नाटककार माने जाते हैं। सभी नाटककारों की अपेक्षा उन्होंने अपने विषय में अधिक सूचना दी है। वे विदर्भ-प्रदेश के निवासी थे। वे यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के अध्येता ब्राह्मण-वंश में उत्पन्न हुए थे। उनका दूसरा नाम श्रीकण्ठ था। उनका समय 700 ई. के आसपास माना जाता है। भवभूति कई शास्त्रों के

पण्डित तथा अद्‌भुत शैलीकार थे। इन्होंने तीन रूपक लिखे जिनमें महावीरचरित और उत्तररामचरित राम की कथा पर आश्रित नाटक हैं, मालतीमाधव प्रकरण है।

- महावीरचरित इसमें सीता-विवाह से आरम्भ करके राज्याभिषेक तक राम के जीवन की घटनाएँ सात अंकों में वर्णित हैं। इसका प्रमुख विषय है राम को नष्ट करने के लिए किए गए रावण के प्रयत्नों की विफलता तथा राम का सकुशल अयोध्या लौट आना। नाटक की कथावस्तु राम-रावण के बीच राजनीतिक षड्यन्त्र के आधार पर विकसित हुई है। इसमें रावण का मन्त्री माल्यवान् महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रावण का राम के प्रति क्रोध तभी से है, जब उसे सीता और जनक द्वारा सीता के वर के रूप में अस्वीकार कर दिया गया था। अन्य राक्षसों के वध से रावण बौखला उठता है। परशुराम और बालि की कथाएँ राम को नष्ट करने की माल्यवान् की योजना का अंश हैं। राम को वनवास दिलाने में मन्थरा वेश में शूर्पणखा कैकेयी के पास जाती है। यह भी भवभूति की कल्पना है। अन्त में रावण और माल्यवान् की युद्धनीति विफल हो जाती है। इस नाटक में भवभूति नाटककार से अधिक कवि के रूप में प्रकट होते हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के प्रभाव में रहकर भवभूति ने इसकी रचना की है। इसलिए राजनीतिक षड्यन्त्र और नाट्यकला में सामंजस्य नहीं रह पाया है।
- **मालतीमाधव**- यह 10 अंकों का एक प्रकरण है। इसमें भूरिवसु की पुत्री मालती तथा देवरात के पुत्र माधव के विवाह की मुख्य कथा है। दोनों के विवाह का निश्चय उन दोनों के पिता तभी कर चुके थे, जब वे स्वयं विद्यार्थी थे, किन्तु वे अपनी योजना कार्यान्वित नहीं कर सके थे। कारण यह था कि भूरिवसु जिस राजा का मन्त्री था, वह राजा मालती का विवाह अपने चचेरे भाई नन्दन के साथ कराना चाहता था। इसलिए कामन्दकी नामक योगिनी को मालती और माधव के विवाह का भार दिया जाता है। इसके साथ-साथ मकरन्द और मदयन्तिका का प्रेम-प्रसंग भी चलता है। यहाँ मुख्य प्रेमी गौण हो गए हैं और गौण प्रेमी अधिक रोचक हो गए हैं। मालती का अपहरण कापालिकों द्वारा किया जाता है और अघोरघण्ट नामक कापालिक मालती की बलि देने की तैयारी करता है। संयोगवश माधव अघोरघण्ट को मारकर मालती को बचा लेता है। उन दोनों का गुप्त विवाह हो जाता है। उधर मकरन्द का मालती के वेश में नन्दन से विवाह कराया जाता है, जिससे नाटक में हास्य-तत्त्व की सृष्टि होती है।

  भवभूति इस नाटक की रचना में कामशास्त्र तथा नाट्यशास्त्र के प्रभाव में थे।

इसीलिए उन्होंने प्रेम की सभी सूक्ष्म अवस्थाओं का वर्णन किया है तथा विभिन्न रसों के परिपाक का भी प्रयास किया है। इस नाटक में शृंगार मुख्य रस है, किन्तु भयानक, अद्‌भुत, रौद्र आदि रस भी यथेष्ट हैं। श्मशान, तान्त्रिक साधना आदि का निरूपण इसमें बहुत रोचक और काव्यात्मक है।

- **उत्तररामचरित–** यह भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक है। **उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।** इसमें राम के उत्तरवर्ती जीवन के करुण पक्ष का नाट्य रूप प्रस्तुत किया गया है। इसमें सात अंक हैं। रावण को मारकर जब राम अयोध्या लौटते हैं, तब उनके सुख के दिन क्षणिक रूप में आते हैं, क्योंकि वे गुप्तचर से सीता के विषय में लोकापवाद सुनते हैं। राम के आदेश से लक्ष्मण सीता को गंगा तट पर वन में छोड़ देते हैं। सीता गर्भवती हैं। वह वाल्मीकि के आश्रम में पहुँच जाती हैं, जहाँ उनके कुश और लव दो पुत्र होते हैं। राम सीता के त्याग से भीतर-ही-भीतर घुटते रहते हैं, किन्तु अपने दु:ख को प्रकट नहीं कर पाते। शम्बूक का वध करने के लिए वे दण्डकारण्य पहुँचते हैं, जहाँ पंचवटी के दृश्य को देखकर विह्वल हो उठते हैं। भवभूति ने इस नाटक के तृतीय अंक में छाया-दृश्य की योजना की है, जिसमें सीता अदृश्य राम को देखती है। राम का भीतरी भाव यहाँ मुक्त रूप से प्रकट होता है। राम अयोध्या में अश्वमेध यज्ञ करते हैं। यज्ञ का अश्व भ्रमण करते हुए वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचता है, जहाँ लव उसे पकड़ लेता है। लक्ष्मण का पुत्र चन्द्रकेतु अश्वरक्षक है, इसलिए लव से उसका युद्ध होता है। लव जृम्भास्त्र का प्रयोग करता है, जिससे राम की सेना सो जाती है। राम स्वयं युद्धभूमि में आकर अपने पुत्रों को पहचानते हैं। सप्तम अंक में अयोध्या में वाल्मीकि द्वारा रचित रामविषयक नाटक का अभिनय होता है, जिसमें सीता के परित्याग के बाद की घटनाएँ दिखाई जाती हैं। नाटक के बीच नाटक का यह प्रयोग गर्भनाटक कहलाता है। इसमें सीता को लोकापवाद से मुक्त करके राम से मिला दिया जाता है। इस प्रकार नाटक की सुखद परिणति होती है।

इस नाटक में भवभूति ने नाट्य तथा काव्य का अद्‌भुत सामंजस्य दिखाया है। इस नाटक का कथानक करुण रस से भरा है। इसमें निम्न कोटि का हास्य बिल्कुल नहीं है। अभिज्ञानशाकुन्तल में जहाँ आनन्द और सौन्दर्य का वातावरण है, वहाँ उत्तररामचरित गम्भीर और कारुणिक वातावरण प्रस्तुत करता है। इसलिए इस नाटक में वर्णित प्रकृति भी भयावह और विस्मय उत्पन्न करने वाली है। गम्भीरता, आध्यात्मिकता और दाम्पत्य-प्रेम की उदात्तता में भवभूति अद्वितीय हैं।

अपने तीन रूपकों में भवभूति एक योजना के अनुसार काम करते हैं। महावीरचरित जहाँ जीवन के प्रथम चरण से सम्बद्ध नायक और नायिका को चुनकर वीर रस को मुख्य रस बनाता है, वहाँ मालतीमाधव नायक-नायिका और शृङ्गार रस को प्रमुखता देता है। उत्तररामचरित में नायक-नायिका की प्रौढ़ावस्था के कारण करुण रस को चुना गया है। इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन को उन्होंने तीन नाटकों में व्यवस्थित किया है।

भट्टनारायण का वेणीसंहार

इसके लेखक भट्टनारायण हैं। इनका समय सातवीं या आठवीं शताब्दी ई. है। भट्टनारायण बंगाल के राजा आदिशूर के द्वारा निमन्त्रित पाँच कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में से एक थे। वेणीसंहार छः अंकों का वीर रस प्रधान नाटक है। इसका कथानक महाभारत पर आश्रित है। दुःशासन द्वारा हाथों से घसीटकर द्यूतभवन में लाई गई द्रौपदी की वेणी (खुले केश) का दुःशासनवध के बाद भीम द्वारा रक्त-रंजित हाथों से बाँधा जाना इस नाटक का मुख्य कथानक है, जिससे इसका नामकरण भी हुआ है। भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि जिस वेणी को दुःशासन ने खींचा है, उसे उसी के रक्त से रंजित हाथों से मैं बाँधूंगा। बहुत बड़ा कथानक हो जाने से कहीं-कहीं इसका स्वरूप कथात्मक हो गया है। भट्टनारायण ने भीम, द्रौपदी, कर्ण तथा अश्वत्थामा के चरित्र-चित्रण बहुत कुशलतापूर्वक किए हैं। नाटक के बीच में दुर्योधन और भानुमती के प्रेम का दृश्य बहुत प्रभावपूर्ण है, किन्तु विद्वानों ने नाटक के वीर रस प्रधान वातावरण में इसे अनुचित कहा है।

कथानक के संयोजन में नाटककार कोई योगदान नहीं कर सका है, किन्तु कुछ रोचक और प्रभावपूर्ण दृश्य उसने अवश्य दिए हैं। भट्टनारायण की शैली ओजगुण से परिपूर्ण गौडी है, जिसमें लम्बे समास भरे हैं। वीर रस प्रधान होने के कारण इसकी बहुत प्रसिद्धि है। नाट्यशास्त्रियों ने इससे बहुत उद्धरण दिए हैं।

अन्य नाटक

संस्कृत भाषा में लिखे गए नाटकों की संख्या हजार से भी अधिक है। इसमें प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। रूपकों के विभिन्न भेदों की रचना संस्कृत में होती रही है। इस प्रकार प्रकरण, भाण, प्रहसन, व्यायोग इत्यादि विविध रूपकों का लेखन होता रहा है। सर्वाधिक प्रचलित रूपक नाटक ही है। संस्कृत में कुछ नाटक प्रतीकात्मक भी हैं, जो भावात्मक विषयों को (जैसे– मोह, काम, क्रोध, विवेक, शान्ति, भक्ति) पात्र बनाकर लिखे गए हैं। ऐसे नाटकों में जयन्त भट्ट (नवीं शताब्दी ई.) का आगमडम्बर अथवा षण्मतनाटक, कृष्णमिश्र (ग्यारहवी शताब्दी ई.) का प्रबोधचन्द्रोदय, यशःपाल (तेरहवीं

शताब्दी ई.) का मोहराजपराजय, वेदान्तदेशिक (चौदहवीं शताब्दी ई.) का संकल्पसूर्योदय, कर्णपूर (सोलहवीं शताब्दी ई.) का चौतन्यचन्द्रोदय इत्यादि प्रमुख हैं।

भट्टनारायण के बाद जितने नाटककार हुए, उन्होंने प्रायः लक्षण-ग्रन्थों के आधार पर नाटक लिखे। इससे इस विधा का स्वाभाविक विकास समाप्त हो गया। ऐसे नाटककारों में मुरारि (अनर्घराघव), दामोदर मिश्र (हनुमन्नाटक), राजशेखर (बालरामायण, बालभारत, कर्पूरमञ्जरी तथा विद्धशालभञ्जिका इत्यादि प्रमुख हैं।

प्राचीन काल के चार भाणों का एक संग्रह मद्रास से 1922 ई. में प्रकाशित हुआ था। इसमें शूद्रक का पद्मप्राभृतक, वररुचि की उभयाभिसारिका, ईश्वरदत्त का धूर्तविटसंवाद तथा श्यामिलक का पादताडितक भाण थे। इनमें समाज के तथाकथित उच्च-वर्ग की विरूपता तथा निम्न-वर्ग का सजीव और रोचक चित्रण है। सातवीं शताब्दी के पल्लव नरेश महेन्द्रविक्रम का मत्तविलासप्रहसन तात्कालिक धार्मिक पाखण्ड का वर्णन करता है। बारहवीं शताब्दी ई. के वत्सराज ने छः प्रकार के रूपकों की रचना की थी। ये हैं किरातार्जुनीय (व्यायोग), रुक्मिणीहरण (ईहामृग), त्रिपुरदाह (डिम), समुद्रमन्थन (समवकार), कर्पूरचरित (भाण) तथा हास्यचूडामणि (प्रहसन)। इसी प्रकार विभिन्न युगों में विभिन्न प्रकार के रूपक लिखे गए।

आधुनिक काल में संस्कृत नाटकों के कथानक में विविधता पाई जाती है। महापुरुषों की जीवनी, प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाएँ, राजनीतिक व्यवस्थाएँ, सामाजिक कुरीतियाँ इत्यादि विविध विषयों के कथानक नाटकों में लिए जाते हैं।

ध्यातव्य बिन्दु

- रूपक दृश्य-काव्य का एक नाम है जिसके दस प्रकार हैं। रूपक के दस प्रकारों में नाटक सबसे प्रमुख है।
- आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक पौराणिक मतों को स्वीकार किया है। भरत मुनि के अनुसार ब्रह्मा ने नाट्य वेद को उत्पन्न किया और शङ्कर तथा पार्वती ने इसे समृद्ध किया।
- टी. गणपति शास्त्री ने भास के तेरह नाटकों की खोज की। जिसका विभाजन चार भागों में किया गया है

(क) रामायण पर आश्रित–	1. प्रतिमा	2. अभिषेक
(ख) महाभारत पर आश्रित–	1. बालचरित	2. पञ्चरात्र

3. मध्यमव्यायोग 4. दूतवाक्य
5. दूतघटोत्कच 6. कर्णभार
7. ऊरुभंग

(ग) उदयन की कथा पर आश्रित– 1. स्वप्नवासवदत्त 2. प्रतिज्ञायौगन्धरायण

(घ) कल्पित रूपक– 1. अविमारक 2. चारुदत्त

- कालिदास के तीन प्रमुख नाटक हैं– *मालाविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय* और *अभिज्ञानशाकुन्तल*
- अश्वघोष के द्वारा रचित शारिपुत्र प्रकरण में शारिपुत्र और मौद्रगलायन के द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार किए जाने की कथा है।
- शूद्रक–रचित मृच्छकटिक दस अंकों का सामाजिक रूपक है।
- विशाखदत्त द्वारा रचित मुद्राराक्षस सात अंकों का राजनीतिक नाटक है।
- हर्ष ने तीन रूपक लिखे थे, जिसमें दो नाटिकाएँ – *प्रियदर्शिका* और *रत्नावली* तथा एक नाटक *नागानन्द* है।
- भवभूति ने तीन रूपक लिखे हैं, जिनमें *महावीरचरित* और *उत्तररामचरित* राम की कथा पर आश्रित नाटक हैं और *मालतीमाधव* प्रकरण है।
- भट्टनारायण ने वेणीसंहार की रचना की जिसकी विषयवस्तु महाभारत पर आधारित है।
- संस्कृत भाषा में अन्य नाटकों की संख्या हजार से अधिक है।

संस्कृतनाटकानां प्रमुखाः विशेषताः

1. संस्कृतस्य नाटकानि रसप्रधानानि भवन्ति।
2. नाटकानां प्रधानः रसः शृंगारः वीरः वा भवति।
3. नाटकं रूपकस्य दशभेदेषु विशिष्टं भवति।
4. संस्कृतनाटकेषु पात्राणां नियता संख्या न भवति।
5. संस्कृतनाटकानि प्रायः **सुखान्तानि** भवन्ति।
6. नाटकानाम् आरम्भः ईशवन्दनारूपेण मङ्गलाचरणेन नान्द्या वा भवति समाप्तिः च भरतवाक्येन भवति यत्र प्रधानं पात्रं देशस्य समाजस्य च उन्नतेः कामनां करोति।

7. संस्कृतनाटकेषु न्यूनतमाः पञ्च अधिकाधिकाः च दश अंकाः भवन्ति।
8. विदूषकस्य कल्पना संस्कृतनाटकानां मौलिकी विशेषता अस्ति। अयं नाटके प्रायः नायकस्य मित्रं हास्योत्पादकः च पात्रः भवति।
9. नाटके सर्वश्राव्यं प्रकाशं कथ्यते। यदा पात्रः मनसि एव चिन्तयति तत् स्वगतं कथ्यते।
10. राजभवने अन्तःपुरगमनसमर्थः वृद्धब्राह्मणपात्रः कञ्चुकी भवति।
11. प्रमुखनाटकानि सन्ति - प्रतिमानाटकम्, चारुदत्तम्, स्वप्नवासवदत्तम्, उरुभङ्गम्, दूतवाक्यम् - महाकविः भासः, अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कालिदासः, मृच्छकटिकम् - शूद्रकः, मुद्राराक्षसम् - विशाखदत्तः, उत्तररामचरितम् - भवभूतिः।

अभ्यासार्थ प्रश्नाः

1. पंचमो वेदः कः कथितः?
2. नाट्यविकासे ब्रह्मणा सामवेदात् किं स्वीकृतम्?
3. रूपकस्य कति भेदाः सन्ति?
4. भासनाटकचक्रे कति नाटकानि सन्ति?
5. 'स्वप्नवासवदत्तम्' इति रूपकं कस्य रचना?
6. कालिदासेन विरचितं विश्वप्रसिद्धं नाटकमस्ति .....?
7. 'शारिपुत्रप्रकरणम्' इति रूपकं कः अरचयत्?
8. शूद्रकेन विरचितं सुविख्यातं रूपकं किम्?
9. राजनीतिक-कथानकयुक्तं नायिकारहितं च प्रसिद्धं नाटकं किम्?
10. 'तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्' इति पंक्तिः कस्य नाटकस्य प्रशंसायां प्रसिद्धा?
11. हर्षवर्धन-रचिताः कति नाटिकाः प्राप्यन्ते?
12. उत्तरे रामचरिते ..... विशिष्यते?
13. 'गर्भनाटकम्' इति कस्मिन् नाटके नियोजितम्?
14. 'उत्तररामचरितम्' इति रूपकं कः अरचयत्?
15. 'वेणीसंहारम्' इति नाटकं कः अरचयत्?

16. रूपकस्य सर्वाधिकः प्रचलितभेदः कः?

17. 'अनर्घराघवम्' इत्यस्य रचयिता कः?

18. काव्येषु ..... रम्यम्।

19. शान्तरसप्रधानस्य नागानन्द-नाटकस्य नायकः कः?

20. भगवान् शिवः किं प्रदाय नाट्यविद्यां समृद्धाम् अकरोत्?

21. दामोदरमिश्र-विरचितं प्रसिद्धं नाटकं किम्?

संस्कृतसाहित्येतिहासः

उत्तरतालिका

कवयः सन्दर्भ-ग्रन्थाः च

1. भोजप्रबन्धः
2. शिवराजविजयात्
3. 100 ई० पू०
4. शिवराजविजयः
5. 16-12-1931 दिनाँके
6. भोजप्रबन्धात्
7. महर्षि-व्यासः
8. कालिदासः
9. 1858-1900
10. बल्लालसेनः
11. पुरंध्रीपञ्चकम् इति नाट्यसंग्रहात्
12. 300-200 ई0 पू0
13. भासस्य
14. प्रतिमानाटकात्
15. आचार्या वेदकुमारी घई महोदयायाः
16. तैत्तिरीयोपनिषदः

17. रघुवंशात्
18. चतुर्दश
19. विष्णुशर्मा
20. श्रीमद्भगवद्गीतायाः
21. भर्तृहरेः
22. दशम-शताब्दी
23. कालिदासः
24. पञ्चतन्त्रम्
25. द्वादश शताब्दी
26. बिल्हणः
27. वेदव्यासः

महाकाव्य-गद्यकाव्य-चंपूकाव्यं च

1. महाकविः कालिदासः
2. कथानिर्देशात्मकम्
3. नायकस्य
4. कुमारसम्भवम्
5. अश्वघोषेन
6. महाकविः अश्वघोषः
7. किरातार्जुनीयम् इति महाकाव्ये
8. रावणवधम् इति महाकाव्यस्य
9. जानकीहरणम्
10. महाकविः माघः
11. नैषधचरितम्
12. शिशुपालवधस्य
13. रत्नाकरः

14. त्रीणि
15. श्रीकण्ठचरितस्य
16. कुमारपालचरितम्
17. महाकाव्यम्
18. किरातार्जुनीयम् इति
19. महाकाव्ये किरातार्जुनीयम्
20. द्वादशशताब्दी
21. ब्राह्मणग्रन्थेषु
22. हरिषेणः
23. गद्यम्
24. बाणभट्टः
25. निकषम्
26. दण्डी
27. वासवदत्ता
28. कथा
29. हर्षचरितम्
30. कादम्बरी
31. शुकनासः
32. शिवराजविजयम्
33. महाकवेः बाणभट्टस्य
34. दण्डिनः
35. चम्पूकाव्यम्
36. त्रिविक्रमभट्टः
37. उदयसुन्दरीकथा
38. मातृमुक्तिमुक्तावली

नाट्यसाहित्यम्

1. नाट्यवेदः
2. गीतम्
3. दश
4. चतुर्दश
5. महाकवेः भासस्य
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
7. अश्वघोषः
8. मृच्छकटिकम्
9. मुद्राराक्षसम्
10. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
11. तिस्रः
12. भवभूतिः
13. उत्तररामचरिते
14. भवभूतिः
15. भट्टनारायणः
16. नाटकम्
17. मुरारिः
18. नाटकम्
19. जीमूतवाहनः
20. ताण्डवम्
21. हनुमन्नाटकम्

(इति)

परिशिष्टम् (i)

विद्यार्थिनां कृते सामान्यनिर्देशाः

(क) अपठितानुच्छेदाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तरप्रदानात् पूर्वं ध्यानेन अनुच्छेदः पठनीयः।

(ख) प्रश्नानां भाषा निर्देशं च सम्यक् रूपेण अवबुध्य उत्तरलेखनं करणीयम्।

(ग) शीर्षकलेखनसमये अनुच्छेदस्य मूलप्रेष्यसंदेशं मनसि ध्यातव्यम्।

(घ) पत्रलेखनसमये प्रश्नमवबुध्य मञ्जूषा-प्रदत्त-सार्थकपदैः रिक्तस्थानपूर्तिः करणीया। सम्पूर्णं पत्रं लेखनीयम्।

(ङ) सम्पूर्णा कथा लेखनीया।

(च) अनुच्छेदलेखनसमये तथ्यमिदं मनसि ध्यातव्यम् यत् मञ्जूषा-प्रदत्तपदानां प्रयोगः अनिवार्यः नास्ति। आवश्यकता चेत् पदानि गृहीतव्यानि।

(छ) अनुवादसमये कर्तृक्रियान्विति: ध्यातव्या।

(ज) व्याकरणांशाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तरप्रदानात् प्राक् समुचितं विकल्पचयनं कर्तव्यम्।

(झ) गद्यांश-पद्यांश-नाट्यांशाधारितप्रश्नानां उत्तरप्रदानात् पूर्वं प्रश्नस्य भाषा अवबोद्धव्या।

(ञ) सम्पूर्णः अन्वयः लेखनीयः।

(ट) सम्पूर्णः भावार्थः लेखितव्यः।

(ठ) सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

(ड) प्रत्येकं खण्डस्य प्रश्नानाम् उत्तराणि एकस्मिन् स्थाने लेखितव्यानि।

परिशिष्टम् (ii)

आदर्शप्रश्नपत्रम्–1

(2022-23)

संस्कृतम् केन्द्रिकम् - कोड न. 322

कक्षा-द्वादशी(XII)

80 अकाः

समयः- होरात्रयम् (Three hours)

अपठित-अवबोधनम्

खण्डः (क)

1. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा दत्त-प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- 10

आधुनिकवैज्ञानिकयुगे दूरदर्शनम् एकम् आश्चर्यकरम् आविष्कारम् अस्ति । गृहस्थिताः एव जनाः दूरस्थानि चित्राणिवनेत्रयोः पुरतः पश्यन्ति, चित्रगतानां जनानां वचनानि च कर्णाभ्याम् प्रत्यक्षतः शृण्वन्ति । अयं हि विद्युत्तरंगाणां चमत्कारः। अस्य मूलरूपेण आविष्कारकः नियकाऊमहोदयः अस्ति। बेयर्डफार्सवर्थ-ज्वोरिकननामकैः वैज्ञानिकैः एतत् वर्तमानरूपं आविष्कृतम्।

दूरदर्शनप्रेषकयन्त्रैः क्रमवीक्षणपद्धत्या चित्राणि आकाशे विद्युत्तरंगैः प्रेष्यन्ते तानि च संग्राहियन्त्रैः गृहीत्वा चित्रपटे प्रवचने दूरदर्शनम् आबालवृद्धानां मनोरञ्जनस्य साधनम् स्वीकृतम् शिक्षाज्ञानकलाराजनीतिप्रभृतिषुक्षेत्रेषु अस्य अतीव सजीवचित्राणि दृष्ट्वा अल्पज्ञः अपिगम्भीरार्थम सम्यक् अवगन्तुम् आत्मसात् च कर्तुं शक्नोति । आकर्षकान् कार्यक्रमान् रूपकाणि, नृत्यानि, महापुरुषाणां जीवनवृत्तम् देश-विदेशीयचित्राणि एकान्ते स्वेच्छानुसारं गृहे आसीनाः एव वयम् द्रष्टुम् शक्नुमः।

प्रश्नाः

(अ) एकपदेन उत्तरत-(प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) दूरदर्शनस्य मूलरूपेण आविष्कारकः कः अस्ति?

(ii) दूरदर्शनस्य वर्तमानरूपं कैः वैज्ञानिकैः आविष्कृतम्?

(iii) आधुनिकयुगे किं आश्चर्यकरं आविष्कारम् अस्ति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत(प्रश्नद्वयम्) 2×2=4

(i) केषु क्षेत्रेषु दूरदर्शनस्य महत्त्वम्?

(ii) वयम् दूरदर्शने किं पश्याम:?

(iii) कुत्र दूरदर्शनस्य अतीव महत्त्वं वर्तते?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत 1×1=1

(ई) भाषिककार्यम् - (प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(क) 'अल्पं जानाति' इति वाक्यांशाय प्रयुक्तं पदं अस्ति।

(i) सर्वज्ञ: (ii) बहुज्ञ: (iii) अल्पज्ञ: (iv) विशेषज्ञ:

(ख) "आकर्षकान्" अस्य पदस्य विशेषणपदं किम्?

(i) कार्यक्रमान् (ii) साधनान् (iii) महापुरूषान् (iv) वृद्धानाम्

(ग) "आसीना: एव वयं द्रष्टुं शक्नुम:" अत्र क्रियापदं किम्?

(i) आसीना: (ii) द्रष्टुम् (iii) शक्नुम: (iv) वयम्

(घ) अत्र "स्वीकृत्य" पदस्य किं पर्यायपदं प्रयुक्तम्?

(i) दृष्ट्वा (ii) गृहीत्वा (iii) अवगन्तुम्

(iv) आविष्कृतम्

खण्ड: (ख) 15

रचनात्मकं कार्यम्

1. **भवान् विभोर: मुम्बईनगरे छात्रावासे पठति। स्वाध्ययनस्य प्रगतिविषये अध: पितृमहोदयं प्रति लिखिते पत्रे मञ्जूषात: पदानि विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत। ½×10=5**

पाटिल-छात्रावास:

(i) .....

तिथि:

आदरणीय (ii) .....

अहं विद्यालयस्य गतदिवसेषु (iv) .....व्यस्त: आसम्। भवान् ज्ञात्वा

प्रसन्नः भविष्यति यत् अस्यां परीक्षायां मया कक्षायाम् प्रथमं स्थानं (v) ....। गणिते रसायनशास्त्रे च (vi) ..... अंकाः लब्धाः। अन्यविषयेषु (vii) .. .. प्राप्य विद्यालयस्य परिवारस्य च नाम उज्ज्वलं कृतम्। भवताम् (viii) .... अहं वार्षिकपरीक्षायाम् अपि इत्यमेव अंकान् प्राप्स्ये इति विश्वसिमि।

मातृचरणयोः (ix) .....।

भवताम् आज्ञाकारी पुत्रः

(x) .....

मञ्जूषा

विभोरः, सादरं प्रणामाः, वन्दना, मुम्बईतः, पितृमहोदय, प्राप्तम्, आशीर्वादः विशेषयोग्यताम्, शतप्रतिशतम्, इकाईपरीक्षायाम्।

3. मञ्जूषाप्रदत्त-पदसहायतया अधोलिखितां कथां पूरयत- ½×10=5

महाभारतयुद्धे समाप्ते धर्मराजः युधिष्ठिरः (i) ..... अभवत्। अथैकदा श्रीकृष्णस्य (ii) ..... सः स्वभ्रातृभिः द्रौपद्या च सह पितामहं भीष्मं द्रष्टुं (iii) .....अगच्छत्। तत्र आसीत् शरशय्याम् (iv) ..... पितामहः युधिष्ठिरः तं धर्मोपदेशं दातुं प्रार्थयत। भीष्मः धर्मोपदेशं करोति। तं श्रुत्वा सहसा द्रौपदी (v) ..... अहसत्। भीष्मः अपृच्छत्-"पुत्रि! किम् ते हासकारणम्! निःसङ्कोचं वद। "द्रौपदी (vi) ..... अवदत् पूज्य पितामह ! क्षम्यताम्, मम मनसि अयं विचारः उदितः यत् (vii) .... यदा अहं विवस्त्रताभयेन कातरं प्रार्थितवती तदा (viii) ..... उपदेशबुद्धिः कुत्र गता! पितामहः शान्त्या प्रत्युवाच-पुत्रि! दुर्योधनस्य न्यायार्जितस्य अन्नस्य भक्षणेन मम बुद्धिः .....आसीत। अतः तत्र धर्मनिरूपणे असमर्थः आसम्। अधुना जाता तेनाहं धर्मस्य तत्त्वम् उपदिशामि। अर्जुनस्य शरैः मम दूषितं रक्तं निर्गतम्। बुद्धिः (x) .....।

मञ्जूषा

आदेशेन, अधिशयानः, सम्राट, कुरुसभायाम, उच्चौः, कलुषिता, युद्धभूमिम्, सविनयम्, भवतः, विशुद्धा

अथवा

अधोलिखिते संवादे रिक्तस्थानानि पूरयत- 1×5=5

रमा – भवान् कुत्र वसति?

महेशः (1) .....

रमा – दिल्लीनगरे भवान् कदा आगच्छत?

महेशः (2) .....

रमा – जोधपुरं त्यक्त्वा भवान् किमर्थम् आगतवान्?

महेशः (3) .....

रमा – दिल्लीनगरे भवान् कुत्र स्थास्यति?

महेशः (4) .....

रमा – भवतु, दिल्ली तव कृते कल्याणकारिणी भवतु।

महेशः (5) .....

4. **"जलम् एव जीवनम्" इतिविषयमधिकृत्य पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदं लिखत।**

मञ्जूषा

अस्माकम्, जलम्, जीवनस्य, अज्ञानी, फलानि, स्नानाय, महत्त्वपूर्णम्, क्षेत्राणाम्, सिञ्चनम्, विना, आधारः।

अथवा

निम्नलिखितेषु केषाञ्चन पञ्चवाक्यानां संस्कृतेन अनुवादं कुरुत- (केवलं वाक्यपञ्चकम्)

(i) रमा गीत गाती है।

Rama sings a song.

(ii) हम सब गांव जाते हैं।

We all go to the village.

(iii) विद्यालय के समीप नदी बहती है।

The river flows near the school-

(iv) राम सभी छात्रों में श्रेष्ठ है।

Ram is the best among all the students.

(v) मेरे चार मित्र हैं।

I have four friends.

(vi) बकरी बाघ से डरती है।

The goat is afraid of the tiger.

(vii) आचार्य को नमस्कार है।

Greetings to Acharya.

खण्डः (ग)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम् 20

5. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं सन्धिपदं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत- (केवलं प्रश्नषट्कम्) 1×6=6

(i) आर्तस्य यथौषधम्।

(ii) उदर्केण गुणेन + अत्र भवितव्यम्।

(iii) यान्यस्माकं सुचरितानि यानि त्वयोपास्यानि।

(iv) न वयं शिवगणास्तादृशाः।

(v) यस्य न + अस्ति + अन्ध एव सः।

(vi) सेतुर्येन महोदधौ विरचितः।

(vii) अहम् आसुरीष्वेव योनिषु क्षिपामि।

6. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं समस्तपदं विग्रहवाक्यं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत- (केवलं प्रश्नपञ्चकम्) 1×5=5

(i) अतिथिदेवो भव।

(क) अतिथिः एव देवः यस्य सः। (ख) अतिथिः एव देवः

(ग) अतिथिः च देवः च

(ii) धैर्यसागरः लक्ष्मणः केन क्षोभितः।

(क) धैर्येण सागरः (ख) धैर्यस्य सागरः

(ग) धैर्याय सागरः

(iii) **<u>आकारसदृशप्रज्ञः</u> प्रज्ञया सदृशागमः।**

(क) आकारेण सदृशी प्रज्ञा यस्य सः (ख) आकरेण सदृशी प्रज्ञा

(ग) आकारः एव प्रज्ञा यस्य यस्य सः

(iv) **कथं सन्यासिनोऽपि <u>कठोरभाषणैः</u> तिरस्करोषि?**

(क) कठोरैः भाषणैः (ख) कठोरस्य भाषणैः

(ग) कठोरं भाषणैः

(v) **शूरं <u>कृतज्ञं</u> दृढ़सौहदं च।**

(क) कृतस्य विस्मरणं करोति यः तम् (ख) कृतं जानाति यः तम्

(ग) कृतस्य ज्ञाता

(vi) **<u>अपराधेन</u> सह अपि मे वचः क्षन्तव्यम्।**

(क) अपराधसमम् (ख) अपराधम्

(ग) सापराधम्

7. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङि्कतपदानां समुचितं संयोजितं विभाजितं वा प्रकृति प्रत्ययं प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत- (केवलं प्रश्नषट्कम) 1×6=6

(i) **सत्यान्न <u>प्रमदितव्यम्</u>।**

(क) प्र + मद् + तव्यत् (ख) प्र + मद् + शानच्

(ग) प्र + मद् + अनीयर

(ii) **सः स्वाम् अनुवर्तितां <u>रक्षन</u> अश्वपृष्ठात् अवातरत।**

(क) रक्ष् + अन् (ख) रक्ष् + न् (ग) रक्ष् + शतृ

(iii) **शोकादवचनात् राज्ञा हस्तेनैव <u>विसर्जितः</u>।**

(क) वि + सर्ज + तः (ख) वि + सर्जि + क्त (ग) वि + सृज् + क्त

(iv) **<u>शुद्धि + मतुप</u> तदन्वये दिलीपः प्रसूतः।**

(क) शुद्धिमत् (ख) शुद्धिमतुप् (ग) शुद्धिमति

(v) **<u>गुणी</u> गुणं वेति, न वेति निर्बलः।**

(क) गुण + ङीप् (ख) गुण + इनि (ग) गुण + ई

(vi) राजाज्ञा <u>पालनीया</u> एव।

(क) पालनीय + टाप् (ख) पालनीय + आ (ग) पालनी + या

(viii) वत्सराजः तं न <u>हतवान्</u>।

(क) हन् + क्तवतु (ख) हत + मतुप् (ग) हत + वान्

8. समुचितं उपपदविभक्तिरूपं चिनुत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) आचार्यः ..... अनुशास्ति।

(क) अन्तेवासिना (ख) अन्तेवासिनम् (ग) अन्तेवासिन्

(ii) ..... सह सीता वनं गन्तुम् इच्छति।

(क) रामेण (ख) रामस्य (ग) रामाय

(iii) हा धिक्!.....अविज्ञाय उपालभसे।

(क) तुभ्यं (ख) अस्मान् (ग) अहम्

(iv) ..... अपि समं गता वसुमती, नूनं त्वया यास्यति।

(क) एकेन (ख) एकस्य (ग) एकात्

खण्ड -घ

पठितावबोधनम् 25

9. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- 5

संवृत्ते किञ्चिद्न्धकारे भुशुण्डीं स्कन्धे निधाय निपुणं निरीक्षमाणः, आगत-प्रत्यागतं च विदधानः, प्रतापदुर्गदौवारिकः कस्यापि पादक्षेपध्वनिमिवाश्रौषीत्। ततः स्थिरीभूय पुरतः पश्यन् सत्यपि दीपप्रकाशे कमप्यनवलोकयन् गम्भीरस्वरेणैवम् अवादीत्-"कः कः भोः?" इति। अथ क्षणानन्तरं पुनः स एव पादध्वनिरश्रावीति भूयः साक्षेपमवोचत्-" क एष मामनुत्तरयन् मुमूर्षुः समायाति बधिरः? ततो "दौवारिक! शान्तो भव किमिपि व्यर्थं मुमूर्षुरिति बधिर इति च वदसि?" इति वक्तारमपश्यतैवाऽऽकर्णि मन्द्रस्वरमेदुरा वाणी। अधस्तत् किं नाज्ञायि अद्यापि भवता प्रभुवर्याणामादेशो यद् दौवारिकेण प्रहरिणा वा त्रिःपृष्टोऽपि प्रत्युत्तरमददद् हन्तव्यः इति इत्येवं भाषमाणेन द्वाःस्थेन 'क्षम्यतामेष आगच्छामि, आगत्य च निखिलं निवेदयामि' इति कथयन् द्वादशवर्षेण केनापि

भिक्षावटुनानुगम्यमानः कोऽपि काषायवासाः धृततुम्बीपात्रः भव्यमूर्तिः संन्यासी दृष्टः। ततस्तयोरेवम् अभूदालापः

1. **एकपदेन उत्तरत-(प्रश्नद्वयम्)** ½×2 = 1

(क) दौवारिकः किं शृणोति?

(ख) दौवारिकः भुशुण्डीं कुत्र निधाय भ्रमति?

(ग) कः साक्षेपमवोचत?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-(प्रश्नद्वयम्)** 1×2=2

(क) दौवारिकः साक्षेपं किम् अवोचत?

(ख) संन्यासी केन अनुगम्यमानः आसीत?

(ग) धृततुम्बीपात्रः कः आसीत?

3. **भाषिककार्यम्-(प्रश्नद्वयम्)** 1×2=2

(क) "भव्यमूर्तिः संन्यासी" अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(ख) "मुमूर्षुः समायाति बधिरः" अत्र क्रियापदं किम्?

(ग) "प्रकाशे" इति पदस्य विलोमपदं किम्?

10. **अधोलिखितं पद्यं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- 5**

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः
करी न सिंहस्य बलं न मूषकः।।

1. **एकपदेन उत्तरत-(प्रश्नद्वयम्)** ½×2=1

(क) गुणी किं वेत्ति?

(ख) वसन्तस्य गुणं कः वेत्ति?

(ग) सिंहस्य बलं कः जानाति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत- (प्रश्नद्वयम्)** 1×2=2

(क) सिंहस्य बलं कः न जानाति?

(ख) निर्बलः किं न वेत्ति?

(ग) वायसः कस्य गुणं न वेत्ति?

3. **भाषिककार्यम्- (प्रश्नद्वयम्)** 1×2=2

(क) 'निर्बलः' इत्यस्य विलोमपदं किम्?

(ख) 'गजः' इत्यर्थे अस्मिन् श्लोके कि पदं प्रयुक्तम्?

(ग) 'गुणी गुणं वेत्ति' अत्र क्रियापदं किम्?

11. **अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत-** 5

सीता – आर्यपुत्र! रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम्। अपूर्वः खल्वस्यायासः।

रामः – सुमित्रामातः! किमिदम्?

लक्ष्मणः – कथं कथं किमिदं नाम।

क्रमप्राप्ते हृते राज्ये भुवि शोच्यासने नृपे।

इदानीमपि सन्देहः किं क्षमा निर्मनस्विता

रामः - सुमित्रामातः। अस्मद्राज्यभ्रंशो भवत उद्योगं जनयति। आः अपण्डितः खलु भवान्।

भरतो वा भवेद् राजा वयं वा ननु तत् समम्।

यदि तेऽस्ति धनुश्श्लाघा स राजा परिपाल्यताम्॥

लक्ष्मणः – न शक्नोमि रोष धारयितुम्। भवतु भवतु। गच्छामस्तावत।

(प्रस्थितः)

रामः – त्रैलोक्यं दग्धुकामेव ललाटपुटसंस्थिता।

भृकुटिर्लक्ष्मणस्यैषा नियतीव व्यवस्थिता॥

1. **एकपदेन उत्तरत - (प्रश्नद्वयम्)** ½×2=1

(क) रोदितव्ये काले केन धनुर्गृहीतम्?

(ख) रामः "अपण्डितः" कं कथयति?

(ग) कुत्र शोच्यासने नृपे?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत- (प्रश्नद्वयम्)** 1×2=2

(क) लक्ष्मणस्य धनुश्श्लाघा कस्मिन् कार्ये अस्ति?

(ख) त्रैलोक्यं दग्धुकामेव का संस्थिता?

(ग) कः रोषं धारयितुं न शक्नोति?

3. **भाषिककार्यम्- (प्रश्नद्वयम्)** 1×2=2

(क) "गच्छामस्तावत्" अत्र क्रियापदं किम्?

(ख) 'ललाटपुटसंस्थिता भृकुटिः' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ग) अत्र 'गतः' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

12. अधोलिखितस्य पद्यस्य भावार्थं मञ्जूषा- प्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत- 1×3=3

आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।

आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः

भावार्थः-यथा राजा दिलीपः विशाल (1) ..... आसीत् तथैव तस्य (2) ..... अपि विशाला आसीत्। बुद्धेः अनुसारं (3) ..... अभ्यासमपि करोति स्म। शास्त्रोक्तविधिना कार्यं करोति स्म, तदनुरूपमेव फलं प्राप्नोति स्म।

मञ्जूषा

बुद्धि, शरीरेण,शास्त्राणाम्

अथवा

प्रदत्त-भावार्थत्रयात् शुद्ध भावार्थं चित्वा लिखत- 1×3=3

1. **एकेनापि सुपुत्रेण आह्लादितं कुलं सर्वम्।**

(क) एकेन एव योग्यपुत्रेण सर्वः वंशः प्रसन्नः भवति।

(ख) एकेन एव योग्यपुत्रेण सर्वः वंशः, दुःखी भवति।

(ग) एकेन अयोग्यपुत्रेण सर्वः वंशः प्रसन्नः भवति।

2. **शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा।**

(क) अरिः हृदये प्रहरति, स्वकीयः जनः शरीरे प्रहरति।

(ख) शत्रुः शरीरे प्रहरति, आत्मीयः जनः च हृदये प्रहरति।

(ग) अरिः हृदये शरीरे च प्रहरति ।

3. **त्रिविधं नरकस्येदं द्वारम्।**

(क) नरकस्य द्वारं त्रिविधं कथितम्।

(ख) द्वारपालस्य नाम त्रिविधम् अस्ति।

(ग) नरकासुरस्य इदं द्वारम् अस्ति।

13. अधोलिखित-अन्वये रिक्तस्थानानि पूरयत- 1×3=3

आसुरी योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।

मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्।

अन्वयः

कौन्तेय! ततः (ते) (i) ..... जन्मनि (ii) ..... आसुरीं योनिम् आपन्ना (iii) .... अप्राप्य एव अधमां गतिं यान्ति।

14. 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशस्य 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशेन सह मेलनं कुरुत- ½×4=2

"अ" वाक्यांशः	"आ" वाक्यांशः
(1) स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा	(क) विद्यावतां वस्तुत एव रूपम्।
(2) रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहुः	(ख) क्रमेलकः कण्टकजालमेव।
(3) न दुर्जनः सज्जनतामुपैति	(ग) विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
(4) निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य	(घ) शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः।

15. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसंगानुसारं समुचितम् उत्तरं मञ्जूषातः चित्वा लिखत- ½×4=2

(i) त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।

(ii) संन्यासी तुरीयाश्रमसेवीति प्रणम्यते।

(iii) निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव।

(iv) तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।

मञ्जूषा

चतुर्थः, अल्पभाषिणाम्, उष्ट्रः धैर्यः

भागः (घ)

संस्कृतसाहित्येतिहासपरिचयः 10

16. समुचितस्य रचनायाः कवेः वा अभिधानं लिखत- (केवलं प्रश्नत्रयम) 1×3=3

(i) 'अम्बिकादत्तव्यासः' अस्य लेखकस्य रचना का?

(ii) 'मदालसा' इत्यस्य पाठस्य रचयिता कः?

(iii) 'अनुशासनम्' इति पाठः कस्याः उपनिषदः सङ्गृहीतः?

(iv) 'कार्याकार्यव्यवस्थितिः' इत्यस्य पाठस्य रचयिता कः?

17. महाकाव्य-गद्य-चम्पूकाव्याधारितेषू वाक्येषु मञ्जूषातः रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत–(केवलं प्रश्नत्रयम) 1×3=3

(i) ..... कवीनां निकषं वदन्ति।

(ii) खण्डकाव्यमेव ..... नाम्नापि ज्ञायते।

(iii) सर्गबन्धो .....कथ्यते।

(iv) ..... संस्कृतगद्यस्य प्राणाः।

मञ्जूषा

महाकाव्यम्, गद्यम्, ओजः, गीतिकाव्यम्

18. नाट्य-तत्त्वानां समुचितं वैशिष्ट्यं लिखत–(केवलं प्रश्नचतुष्टयम) 1×4=4

(i) प्रतिमानाटकं केन रचितम्?

(ii) नाटके हास्योत्पादकः पात्रः कः भवति?

(iii) नाटकस्य समाप्तिः केन भवति?

(iv) कालिदासस्य प्रसिद्ध नाटकं किम् अस्ति।

(v) रुपकस्य कति भेदाः सन्ति?

आदर्श-प्रश्नपत्रम - 2
(2022-2023)
वार्षिक मूल्यांकनम्
कक्षा - द्वादशी (XII)
संस्कृतम् (केन्द्रिकम्) कोड सं. - (322)

समयः - होरात्रयम् सम्पूर्णाङ्काः - 80

सामान्यनिर्देशाः

- कृपया सम्यक्तया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे -- पृष्ठानि मुद्रितानि सन्ति।
- कृपया सम्यक्तया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 18 प्रमुखाः प्रश्नाः सन्ति।
- अस्य प्रश्नपत्रस्य पठनाय 15 निमेषाः निर्धारिताः सन्ति।
- अस्मिन् कालावधौ केवलं प्रश्नपत्रं पठनीयम् उत्तरपुस्तिकायां च किमपि न लेखनीयम्।
- उत्तरलेखनात् पूर्वं प्रश्नस्य क्रमाङ्कः अवश्यं लेखनीयः।
- प्रश्नसङ्ख्या प्रश्नपत्रानुसारम् अवश्यमेव लेखनीया।
- सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लेखनीयानि।
- प्रश्नानां निर्देशाः ध्यानेन अवश्य पठनीयाः।

खण्ड (क)
अपठितावबोधनम्

1. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत-(10)

जीवने सफलतायाः आधारः पुरुषार्थः एव। अस्य अभावेन नरः सुखसमृद्धिं आप्तुम् असमर्थः भवति यशः च न प्राप्नोति। यदा यदा नरः पुरुषार्थम् अचिनोत् तदा तदा तेन सफलता प्राप्ता। पुरुषार्थिनः एव संसारे विलक्षणप्रतिभाम् अर्जितवन्तः। देशसेवया, समाजसेवया शिक्षाप्रसारेण च पुरुषार्थिभिः उल्लेखनीयानि कार्याणि कृतानि। अस्माकं इतिहासे तेषां गौरवगानं विद्यते। आपत्काले येषां मनांसि विचलितानि न भवन्ति ते एव जीवने सफलतां प्राप्नुवन्ति। पुरुषार्थिनाम् कृते तु पुरुषार्थः एव उपासना अस्ति। यः जनःस्वजीवने सफलतां प्राप्तुम् इच्छति, सः पुरुषार्थम् अवश्यमेव कुर्यात्। पुरुषार्थस्य अभावे जनः सफलतां प्राप्तुं न शक्यते।

(अ) एकपदेन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) **½×4 = 2**

(i) जीवने सफलतायाः आधारः किम्?

(ii) केषां कृते पुरुषार्थः उपासना अस्ति?

(iii) के संसारे विलक्षण प्रतिभाम् अर्जितवन्तः?

(आ) पूर्णवाक्येन लिखत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) **2×2=4**

(i) येषां मनांसि आपत्काले विचलितानि न भवन्ति ते किं कुर्वन्ति?

(ii) जीवने सफलतायाः आधारः कः?

(iii) कस्य अभावे जनः सफलता प्राप्तुं न शक्यते?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते उपयुक्तं शीर्षकं संस्कृतेन लिखत। **1×1=1**

(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) **1×3=3**

(i) ते एव जीवने सफलता प्राप्नुवन्ति' अत्र प्राप्नुवन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(क) जीवन (ख) ते (ग) सफलतां (घ) एव

(ii) अपयशः' इति पदस्य विपर्ययपदं गद्यांशे किम् प्रयुक्तम्?

(क) यशः (ख) असमर्थः (ग) सफलता (घ) गौरवगानम्

(iii) मानवः' इति पदस्य पर्यायपदं गद्यांशे किं प्रयुक्तम्?

(क) उपासना (ख) नरः (ग) पुरुषार्थः (घ) मनांसि

(iv) 'उल्लेखनीयानि' इति पदस्य विशेष्यपदं गद्यांशे किम्?

(क) कार्याणि (ख) कृतानि (ग) विचलितानि (घ) प्राप्नुवन्ति।

रचनात्मककार्यम्

पत्रम्

2. भवान् प्रणवः। चेन्नईनगरे छात्रावासे स्थित्वा अध्ययनं करोति। छात्रावासे स्वदिनचर्यायाः वर्णनम् कुर्वन् स्वमातरं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पूरयित्वा पुनः लिखत। **1/2×10=5**

(1) .....

तिथि .....

पूजनीये मातः सादरं प्रणामाः। अत्र कुशलं तत्रास्तु। भवत्याः पत्रम् प्राप्य मनसि (2).

..... जातः यत् पितृमहोदयः इदानीम् (3) ..... स्वस्थोऽस्ति। सः मम स्वास्थ्यस्य (4) ..... च विषये चिन्तितः आसीत। परं चिन्तायाः न कोऽपि विषयः। अहम् प्रतिदिनं प्रातः चतुर्वादने (5) .....व्यायामं कृत्वा (6).....पठामि। ततः स्नात्वा दुग्धादिकं च पीत्वा पादोनसप्त-वादने विद्यालयं गच्छामि। द्विवादने (7) ..... आगत्य भोजनं कृत्वा विश्रामं करोमि। सार्ध-चतुर्वादने उत्थाय गृहकार्यं करोमि। संस्कृतविषये अहम् (8) परिश्रमं करोमि। पितृमहाभागानाम (9).....प्रणामाः कथनीयाः।

भवत्याः प्रियः पुत्रः

10 .....

मञ्जूषा

विद्यालयात, सन्तोषः, अध्ययनस्य, घण्टाद्वयम्, विशेषतया चरणयोः, छात्रावासतः, उत्थाय, प्रणवः, पूर्णरूपेण

3. मजूषाप्रदत्त-पदसहायतया अधोलिखितां कथां पूरयत 1/2×10=5

एकदा शीतस्य भीषणः (i)..... अभवत। सम्राट् चन्द्रगुप्तः निश्चितवान् यत् निर्धनेभ्यः (ii)..... वितरणं भवेत। प्रधानमंत्री चाणक्यः तत्कार्यं (iii)..... । भृत्याः सर्वान् कम्बलान् तस्य कुटीरे स्थापितवन्तः । रात्रौ केचन चौराः कम्बलान् (iv) ..... तस्य कुटीरं प्राविशन्। ते अपश्यन् यत् चाणक्यः एकस्मिन् कटे कम्बलं विना एव (v) .....। तस्मिन् एव क्षणे (vi) ..... पदध्वनिं श्रुत्वा प्रबुद्धः। (vii) ..... तम् अपृच्छन- 'भवतां समीपे कम्बलानां राशिः अस्ति तथापि भवान् कम्बलं विना एव (viii).....।' चाणक्यः अवदत-'श्रृणुत! एते प्रावारकाः केवलं निर्धनेभ्यः वितरणार्थम् एव सन्ति। यदि अहम एतेषु एकं (ix) ..... तर्हि अहम् अपि चौरः भविष्यामि।' "नतमस्तका चौराः" तस्य पादयोः पतित्वा (x) ..... अकुर्वन।

मञ्जूषा

स्वीकृतवान, चोरयितुं, स्वीकरोमि, क्षमायाचनाम, प्रकोपः, कम्बलानां, सुप्तः, चाणक्यः, चौराः, स्वपिति

अथवा

अधोलिखितसंवादे रिक्तस्थानानि पूरयन्तु। 1×5=5

अनीशः – नमस्ते! किम् कुशला त्वम्?

रमा–आम्! (i) .....

अनीशः–किं तव समीपं संगणकयंत्रम् अस्ति?

रमा–आम्! (ii) .....

अनीशः (iii) .....

रमा–त्रिंशत् सहस्ररुप्यकाणि।

अनीशः किम् एतेषाम् रुप्यकाणाम् व्ययः सार्थकः अस्ति न वा?

रमा– (iv) .....। अद्यत्वे त्वं यंत्रे अनेकानि कार्याणि कर्तुम् पारयसि।

अनीशः– अहम् अपि गृहं गत्वा कमपि उपायं चिन्तयामि येन मम पिता अपि मम निवेदनं स्वीकुर्यात।

रमा– (v) .....

4. **'वृक्षाः अस्माकं मित्राणि' इति विषयमधिकृत्य पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदं लिखत।** 1×5=5

(मञ्जुषाप्रदत्तपदानां सहायता अपेक्षिता चेत् गृहीतव्या अन्यथा स्वयं चिन्तयित्वा स्वतन्त्ररूपेण लेखितव्यम्।)

मञ्जुषा

वृक्षाः, जलम, छाया, फलानि पुष्पाणि, काष्ठानि,यच्छन्ति, भूमि–संरक्षणम्, कुर्वन्ति,सत्पुरुषाः इव, पर्यावरणम् ,रक्षन्ति

अथवा

निम्नलिखित वाक्येषु केषाञ्चन पञ्चवाक्यानां संस्कृतेन अनुवाद कुरुत–
(केवलं वाक्यपञ्चकम्) 1×5=5

1. भारत हमारा देश है।
1. India is our country.
2. सभी स्वस्थ हों।
2. Everyone Be healthy.
3. सभी बालक विद्यालय जाते हैं।
3. Children are going to school.

4. संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है।

4. Sanskrit is mother of all languages.

5. पूरी पृथ्वी ही परिवार की तरह है।

5. Whole Earth is like a family.

6. जल का संरक्षण अति आवश्यक है।

6. Water conservation is necessary.

7. गुणी व्यक्ति ही गुण को जानता है, निर्गुण नहीं।

7. Only able person knows the importance of good qualities.

खण्डः (ग)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम् 20

5. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं सन्धिपदं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत (केवलं प्रश्नषट्कम्) 1×6=6

(i) **मातृदेवो** भव ।

(ii) अथ कुत **उत्पन्नोऽयं** दोषः?

(iii) तत् किं नाज्ञायि **अद्यापि** भवता।

(iv) **यद्यहं** राज्यलक्ष्मीभारधारणसमर्थं सहोदरमपहाय राज्यं पुत्राय प्रयच्छामि,

(v) स्वशिशूनां चरित्रनिर्माणं **मातुराधीनम्।**

(vi) **ईश्वरोऽहमहं** भोगी।

(vi) **न + एकेन** अपि समं गता वसुमती।

6. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं समस्तपदं विग्रहवाक्यं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत- (केवलं प्रश्नपञ्चकम्) 1×5=5

(i) लक्ष्मणः सक्रोधम् अवदत्।

(क) क्रोधेन सहितम्, (ख) क्रोधम् सह (ग) क्रोधस्य सहितम्

(ii) यस्याः भर्ता शक्रसमः अस्ति।

(क) शक्रेण समः (ख) शक्राय समः (ग) शक्रे समः

(iii) कथमस्मान् संन्यासनोऽपि कठोरभाषणैः तिरस्करोषि?

(क) कठोरैः भाषणैः (ख) कठोर भाषणैः

(ग) कठोरं भाषणम् इति

(iv) भोजनान्ते विषापहम्।

(क) भोजनस्य अन्ते (ख) भोजनम् अन्ते (ग) भोजनम् नान्ते

(v) गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः।

(क) गुणेन सहितम् (ख)निर्गुणः इति (ग) गुणानाम् अभावः

(vi) अहो शोभनं गन्धर्वराजविश्वावसोः राजोद्यानम्।

(क) राजायाः उद्यानम् (ख) राज्ञः उद्यानम् (ग) राज उद्यानम्

(vii) अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शांतिपैशनम्।

(क) न हिंसा (ख) हिंसया सहितम् (ग) हिंसायाः अभावः

7. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं संयोजितं विभाजितं वा प्रकृति प्रत्ययं प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत- (केवलं प्रश्नषट्कम) 1×6=6

(i) अपौरुषेयं श्रुतिः।

(क) श्रु + क्तिन् (ख) श्रु + ति (ग) श्रुत + इ

(ii) अहं बलवान् सिद्धः सुखी च अस्मि।

(क) बल + वान् (ख) बल + आन् (ग) बल + मतुप्

(iii) समीपमागत्य संन्यासिना उक्तम्।

(क) वच् + क्त (ख) उच् + क्त (ग) वक् + क्त

(iv) कर्माणि (आ + रभ+ शानच्) पुरुष श्रीः निषेवेते।

(क) आरभमाणम् (ख) आरभशानच् (ग) आरभाणम्

(v) अहम् ईश्वरः, अहम्(भोग +इन)।

(क) भोगिनि (ख) भोगन् (ग) भोगी

(vi) अभिजातस्य संयम् अलोलुपत्वम् इति दैवी संपदं भवन्ति।

(क) अलोलुप + त्वम् (ख) अलोलप + तव (ग) अलोलुप + त्व

(vii) या च मया पुत्रवती।

(क) पुत्रवत् + ङीप् (ख) पुत्र + ङीप् (ग) पुत्रवति + ङीप्

8. समुचितं उपपदविभक्तिरूपं चिनुत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) ..... न प्रमदितव्यम्।

(क) स्वाध्यायेन (ख) स्वाध्यायात् (ग) स्वाध्यायम्

(ii) अतः परं मातुः ..... श्रोतुं न इच्छामि।

(क) परिवादं (ख) परिवादाय (ग) परिवादः

(iii) धिक्! ..... अविज्ञाय उपालभसे।

(क) अस्मदं (ख) अस्मान् (ग) अहम्

(iv) राजा राज्यं ..... दत्वा तदुत्सङ्गेभोजमात्मानं मुमोच।

(क) मुञ्जम् (ख) मुजाय (ग) मुञ्जस्य

पठितावबोधनम्

9. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- 5

पुरा धाराराज्ये सिन्धुल-संज्ञो राजा चिरं प्रजाः पर्यपालयत्। तस्य वार्धक्ये भोज इति पुत्रः समजनि। सः यदा पञ्चवार्षिकस्तदा पिता ह्यात्मनो जरां ज्ञात्वा मुख्यामात्यानाहूयानुजं मुजं महाबलमालोक्य पुत्रं व बालं संवीक्ष्य विचारयामास-यदि राज्यलक्ष्मीभारधारणसमर्थं सहोदरमपहाय राज्यं पुत्राय प्रयच्छामि, तदा लोकापवादः।

अथ वा बालं मे पुत्रं मुञ्जो राज्यलोभाद्विषादिना मारयिष्यति तदा दत्तमपि राज्यं वृथा। पुत्रहानिर्वशोच्छेदश्च इति विचार्य राज्यं मुञ्जाय दत्त्वा तदुत्सङ्गे भोजमात्मानं मुमोच। ततः क्रमात् राजनि दिवंगते संप्राप्तराज्य-संपत्तिर्मुञ्जो मुख्यामात्यं बुद्धिसागरनामानं व्यापारमुद्रया दूरीकृत्य तत्पदेऽन्यं नियोजयामास। अथ कदाचन सभायां ज्योतिः-शास्त्रपारंगतः कश्चन ब्राह्मणः समागम्य राजानम् आह-देव! लोकाः मां सर्वज्ञं कथयन्ति। तत्किमपि यथेच्छं पृच्छ।

1. एकपदेन उत्तरत– (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1/2×2=1

(i) राज्ञः नाम किम् आसीत?

(ii) सभायाम् आगतः ब्राह्मणः कस्मिन् शास्त्रे पारंगत आसीत?

(iii) कः प्रजाः पर्यपालयत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत– (केवलं प्रश्नैकम्) 2×1=2

(i) राजा कि विचार्य राज्यं मुजाय दत्तवान?

(ii) लोकाः कं सर्वज्ञं कथयन्ति?

3. **भाषिककार्यम्– (प्रश्नद्वयम्)** 1×2=2

(क) "राजा चिरं प्रजाः पर्यपालयत्।" अत्र क्रियापदं किम्?

(ख) "मुख्यामात्यं बुद्धिसागरनामानं" अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ग) अत्र 'मरणे' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

10. **अधोलिखितं पयं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत–** 5

आरभेत हि कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः।
कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीनिषेवते।।

(अ) एकपदेन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1/2×2=1

(i) कानि आरभेत?

(ii) कं श्रीः निषेवते?

(iii) पुरुषं का निषेवते?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत- (केवलं प्रश्नैकम्) 2×1=2

(i) कर्माणि कथम् आरभेत?

(ii) श्रीः कीदृशं पुरुषं निषेवते?

(इ) भाषिककार्यम् - (प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(क) 'पुरुषं श्रीनिषेवते' अत्र क्रियापदं किम्?

(ख) 'कर्माणि आरभमाणं' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(ग) अत्र 'लक्ष्मी' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

11. **अधोलिखितं नाट्यांश पठित्वा तदाधारितान प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत–** 5

कुण्डला– जाने तेऽभिरुचिम् अध्ययने अध्यापने च। परं यथा लतेयं सहकारमवलम्बते तथैव नारी जीवनयात्रायां कमपि सहचरम् अपेक्षते यः तस्याः अवलंबनं स्यात।

मदालसा– नास्ति मत्कृते आवश्यकता अवलम्बनस्य। स्वयं समर्था जीवनपथे चलितुमहम्। न कस्यापि सङ्केतैः नर्तितुं पारयामि।

कुण्डला– नर्तिष्यसि तदा एकाकिनी एव।

(विहस्य) यदि त्वं शीघ्रमेव पतिगृहं गमिष्यसि तदा एकाकिनी भविष्यामि।

मदालसा– परं एकः उपायः अपि चिन्तितः मया।

कण्डला– कः उपाय?

मदालसा– सङ्गीतसाहित्यमाध्यमेन ब्रह्मविद्यां सरसां विधाय बहुभ्यः शिशुभ्यः शिक्षण प्रदास्यामि।

(अ) एकपदेन उत्तरत 1/2×2=1

(i) मदालसा केभ्यः शिक्षणं प्रदास्याति?

(ii) कुण्डला मदालसायाः कि जानाति?

(iii) नारी कुत्र कमपि सहचरम् अपेक्षते।

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत 2×1=2

(i) कुण्डला (विहस्य) मदालसां किं कथयति?

(ii) नारी किम् अपेक्षते?

(ग) भाषिककार्यम्- (प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(क) 'शिशुभ्यः शिक्षणं प्रदास्यामि।' अत्र क्रियापदं किम्?

(ख) 'एकः उपायः' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(ग) अत्र 'बालकेभ्यः' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

12. अधोलिखितस्य पद्यस्य भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत- 3

एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी।।

भावार्थः एकेन अपि (i) ..... विद्यासहितेन (ii)..... सम्पूर्णः वंशः (iii)..... (भवति) येन प्रकारेण चन्द्रमसा रात्रिः (प्रसन्ना भवति)।

मञ्जूषा

प्रसन्नः, सुतेन, सज्जनेन

प्रदत्त-भावार्थत्रयात् शुद्ध भावार्थं चित्वा लिखत-

(अ) दोषेषु यत्नः समुहान् खलानाम्।

(i) महतां जनानां दोषषु यत्नः भवति।

(ii) दुष्टजनानां दोषषु एवं यत्नः भवति।

(iii) दुष्टकार्येषु प्रयत्नः न करणीयः।

(आ) आढ्योभिजनवानस्मि कोऽन्यो सदृशो मया।

(i) अहमेव परिवारसमृद्धः नास्मि अन्येऽपि सन्ति।

(ii) अभिमानिता मम पार्श्वेऽस्ति न कस्यापि।

(iii) अहं कुटुम्बयुक्तः धनवान् मत्सदृशः अपरः कः।

(इ) **त्रिविधं नरकस्येदं द्वारम्।**

(क) नरकस्य द्वारं त्रिविधं कथितम्।

(ख) द्वारपालस्य नाम त्रिविधम् अस्ति।

(ग) नरकासुरस्य इदं द्वारम् अस्ति

13. अधोलिखित-अन्वये रिक्तस्थानानि पूरयत- 3

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।

सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः।

अन्वयः शास्त्रम् (i) ----------परोक्षार्थस्य (ii) ----------(शास्त्रम्)

सर्वस्य (iii) --------न अस्ति सः अन्धः एव।

14. 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशस्य 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशेन सह मेलनं कुरुत- 1/2×4=2

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(i) दीर्घप्रयासेन कृतं हि वस्तु	(क) पत्न्याः सहयोगः अनिवार्यः
(ii) लक्षम्याः रक्षार्थम्	(ख) तानि त्वयोपास्यानि
(iii) यान्यस्माकं सुचरितानि	(ग) स्वाध्यायस्तप आर्जवम्
(iv) दानं दमश्चयज्ञश्च विनाशम्।	(घ) निमेषमात्रेण भजेद्

15. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसंगानुसारं प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) 1/2×4=2

(i) त्यागाय संभृतार्थानां सत्याय **मितभाषिणाम्**।

(क) बहुजल्पकानाम् (ख) अल्पभाषिणाम् (ग) मिथ्यावादिनाम्

(ii) असौ मया **हतः** शत्रुः

(क) मारितः (ख) रक्षितः (ग) भक्षितः

(iii) मदालसे **तूष्णीं** किमर्थं तिष्ठसि।

(क) क्रोधः (ख) सुप्तः (ग) शांतः

(iv) वस्तु **निमेषमात्रेण** विनाशं भजेत।

(क) अकस्मात् (ख) केवलम् (ग) क्षणमात्रेण

(v) **दिष्टया** वर्धेथा युवाम्।

(क) दृष्टया (ख) सौभाग्येन (ग) दिशा

संस्कृतसाहित्येतिहासपरिचयः

16. समुचितस्य रचनायाः कवेः वा अभिधानं चिनुत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) "भोजप्रबन्धः" अस्याः रचनायाः लेखकः कः?

(ii) "अम्बिकादत्तव्यासः" अस्य लेखकस्य रचना का?

(iii) "आचार्या वेदकुमारी घई" कं पाठ्यांशं लिखितवती?

(iv) नैकेनापि समे गता वसमती अस्य पाठस्य रचयिता कः?

17. महाकाव्य-गद्य-चम्पूकाव्याधारितेषु वाक्येषु मञ्जूषातः रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत– 1×3=3

(i) "छन्दोयुक्त" काव्यं किं कथ्यते?

(ii) "पुरन्ध्रीपञ्चकम्" इति ग्रन्थः कस्य उदाहरणम् अस्ति।

(iii) नाटके भरतवाक्यम् कदा भवति?

(iv) गद्यकाव्यस्य ..... भेदौ स्तः।

मञ्जूषा

द्वौ, अन्ते, पद्यम्, रुपकस्य

18. नाट्य-तत्त्वानां समुचितं वैशिष्ट्यं (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) 1×4=4

(i) संस्कृतनाटकानि ..... भवन्ति।

(ii) नाटके ..... हास्यपात्रम् भवति।

(iii) नाटकस्य प्रारम्भे ..... भवति।

(iv) कालिदासस्य प्रसिद्ध नाटकं ..... अस्ति।

(v) ..... नाटकस्य अन्ते भवति।

मञ्जूषा

मंगलाचरणम्, विदूषकः, सुखान्तानि, अभिज्ञानशकुन्तलम्, भरतवाक्यम्

आदर्शप्रश्नपत्रम् -3
(2022-23)
संस्कृतम् केन्द्रिकम् - कोड न. 322
कक्षा – द्वादशी(XII)
80 अङ्काः
समयः होरात्रयम्(Three hours)
अपठित – अवबोधनम्
खण्ड (क) 10

1. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा दत्त-प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- **10**

परीक्षायाः दिनानि अतिविचित्राणि भवन्ति यथा-यथा परीक्षाकालः समीपम् आयाति तथा-तथा छात्राणां हृदयगतिः वर्धते। परीक्षा प्रायशः छात्रेभ्यः भयप्रदा एव प्रतीयते। अस्मिन् काले निद्रा न आयाति। बुभुक्षापि सम्यक्प्रकारेण नानुभूयत। कदाचित् कस्मिंश्चित् विषये अभ्यासाल्पता प्रतीयते कदाचिच्च अन्यस्मिन्। मस्तिष्कः सदैव तनावयुक्तः एव प्रतीयते। न केवलं छात्राणाम् अपितु तेषाम् अभिभावकानामपि दशा एतादृशी एव भवति। परन्तु ये छात्राः कक्षायां दत्तावधानाः तिष्ठन्ति, वर्षस्य प्रारम्भात् एव पठितस्य अभ्यासं कुर्वन्ति, ते सर्वथा शान्तमनसा सरलतया च उत्तमांकैः परीक्षाम् उत्तरन्ति। अतः सर्वैः छात्रैः एवमेव आचरणीयम्।

1.(अ) एकपदेन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1×2=2**

(i) परीक्षाकाले का न आयाति?

(ii) कस्याः दिनानि अतिविचित्राणि भवन्ति?

(iii) कः सदैव तनावयुक्तः एव प्रतीयते?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत (केवलं प्रश्नद्वयम्) **2×2=4**

(i) परीक्षाकाले किं किं भवति?

(ii) कीदृशाः छात्राः उत्तमाङ्कैः परीक्षाम् उत्तरन्ति?

(iii) परीक्षा प्रायशः छात्रेभ्यः कीदृशी प्रतीयते?

(इ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत- **1×1=1**

(ई) विकल्पेभ्यः चित्वा निर्देशानुसारम् उत्तरत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) "ये छात्राः कक्षायां दत्तावधानाः तिष्ठन्ति" अत्र क्रियापदं किम्?
(क) तिष्ठन्ति (ख) कक्षायाम्
(ग) छात्राः (घ) दत्तावधानाः

(ii) "सदैव मस्तिष्कः तनावयुक्तः एव प्रतीयते" अनयोः विशेष्यपदं किम्?
(क) सदैव (ख) तनावयुक्तः
(ग) प्रतीयते (घ) मस्तिष्कः

(iii) "यथा-यथा परीक्षाकालः समीपम् आयाति" अत्र कर्तृपदं किम्?
(क) यथा-यथा (ख) परीक्षाकालः
(ग) समीपम् (घ) आयाति

(iv) "दूरम्" इत्यस्य विलोमपदम् लिखत?
(क) भयप्रदा (ख) कक्षायाम्
(घ) परीक्षा (ग) समीपम्

खण्ड (ख)

रचनात्मककार्यम् 15

2. विद्यालय-परित्याग-प्रमाणपत्रं प्राप्तुं प्रधानाचार्यं प्रति लिखितेऽस्मिन् प्रार्थनापत्रे रिक्तस्थानानि मञ्जूषायां प्रदत्त-पदानां सहायतया पूरयत- ½×10=5

(i) .....
प्रधानाचार्यः,
राजकीयः (ii) .....,नव देहली।
मान्याःमहोदयाः!
सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् अस्मिन् वर्षे (iii) ..... भगिनी अध्ययनार्थं जयपुरं (iv) .....। अहमपि पठनाय (v) ..... गन्तुम् इच्छामि। अतः भवन्तः (vi)..... यत् (vii) ..... विद्यालय-परित्याग- (viii) ..... यच्छन्तु। एतदर्थम् अहं भवतः (ix) ..... स्थास्यामि।
धन्यवादः।
भवदीयः (x) .....
संजयः
दिनाङ्कः .....

मञ्जूषा

विद्यालयः, मह्यम्, मम, शिष्यः, अनुगृहीतः, प्रमाणपत्रम्, गता, तत्र, प्रार्थ्यन्ते, सेवायाम्

3. **मञ्जूषाप्रदत्त-पदसहायतया अधोलिखितां कथां पूरयत-** ½×10=5

एकदा एकः चित्रकारः स्व चित्राणाम् (i) ..... कृतवान्। तां द्रष्टुं नगरस्य (ii) .... जनाः तत्र समाच्छन्। एका बाला अपि चित्रं द्रष्टुम् आगता। सा अन्ते एकं (iii) ..... दृष्टवती यस्य मुखं तु केशाच्छन्नम् आसीत्, पादयोः च आस्ताम् (iv) ....। मूले च लिखितम् अवसरः। बाला तं चित्रकारं (v) ..... अपृच्छत्। चित्रकारः अवदत- एषः अवसरः अस्ति। बाला आच्छन्नस्य मुखस्य विषये यदा अपृच्छत् तदा चित्रकारः अवदत्- सर्वेषां जीवने अवसरः (vi) ..... आगच्छति परं सामान्यतया जनाः तं न (vii) .....। अवसरः (viii) .....पक्षौ प्रक्षिप्य गच्छति तदा न (ix) ... .। बाला चित्रस्य रहस्यं (x) ..... तस्मात् एव दिनात् प्रगतेः अवसरं प्रतीक्षितम् आरभत्।

मञ्जूषा

प्रत्यावर्तते, ज्ञात्वा, यदा, परिचिन्वन्ति, प्रदर्शनीवत्, तद्विषये, पक्षौ, चित्रम, अनेके, प्रदर्शनीम्

अथवा

अधोलिखिते संवादे रिक्तस्थानानि पूरयत- 1×5=5

शोभा– अरुण कुतः प्राप्तम् इदं चित्रम्?

अरुणः– (i) .....।

शोभा– शिक्षकमहोदयः प्रदत्तवान्? इदं कस्य महापुरुषस्य चित्रम् अस्ति?

अरुणः– (ii) .....।

शोभा– अहो! आचार्य चाणक्यस्य अर्थशास्त्रम् अतीव प्रसिद्धम्। तेन अपरः अपि ग्रन्थः लिखितः?

अरुणः– (iii) .....।

शोभा– आम, आम, स्मृतम्। अस्मिन् ग्रन्थे नीतिवचनानि लिखितानि। जानासि सः कस्य गुरुः आसीत्?

अरुणः– (iv) .....।

शोभा- सम्यक् उक्तं त्वया। उभौ मिलित्वा कं पराजितवन्तौ?

अरुणः– (v) .....।

शोभा- बहु शोभनम्। राजा नन्दः अत्याचारी अपि आसीत्। तस्य पराजयेन सर्वे जनाः प्रसन्नाः अभवन्।

4. निम्नलिखितेषु केषाञ्चन पञ्चवाक्यानां संस्कृतेन अनुवादं कुरुत- (केवलं वाक्यपञ्चकम्) 1×5=5

1. विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं।

   There are trees all-around the school.
2. गांव के समीप नदी बहती है।

   A river flows near the village
3. आरक्षी पीड़ित की रक्षा करता है।

   Police rescues the victim.
4. शिक्षक छात्र को पुस्तक देते हैं

   The teacher gives books to the student.
5. वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।

   Leaves fall down from the tree.
6. सफलता के लिए परिश्रम करो।

   Do hard work to get success.
7. मैं मित्र के साथ उद्यान में घूमती हूं।

   I walk in the garden with my friend.

खण्ड (ग)

अनुप्रयुक्तव्याकरणम् 20

5. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत (केवलं प्रश्नषट्कम्) 1×6=6

(i) **आचार्योऽन्तेवासिनम्** अनुशास्ति। .....

(ii) वनगमननिवृत्तिः **पार्थिवस्य + व तावत्**। .....

(iii) **शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां** रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये। .....

(iv) तया भरतोऽभिषिच्यतां राज्य **इत्युक्तम्**। .....

(v) शुल्के विपणितं राज्यं **पुत्रार्थे** यदि याच्यते। .....

(vi) प्रजानामेव **भूत्यर्थं** स ताभ्यो बलिमग्रहीत्। .....

(vii) अन्यैः नृपैः **न + उपपादितम्**। .....

6. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं समस्तपदं विग्रहवाक्यं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत- (केवलं प्रश्नपञ्चकम्) 1×5=50

(i) यानि **अनवद्यानि** कर्माणि तानि सेवितव्यानि

(क) न वद्यानि (ख) अन् अवद्यानि (ग) न अवद्यानि

(ii) यत्र कर्मणि **विचिकित्सा** स्यात्।

(क) कर्मविश्वासः (ख) कर्मविचिकित्सा (ग) कर्मणः द्विविधा

(iii) एषा **वेदोपनिषद्**।

(क) वेदे उपनिषद्

(ख) वेदानाम् उपनिषद्

(ग) वेदोपरान्तम् उपनिषद्

(iv) यानि अस्माकं **सुचरितानि**, तानि सेवितव्यानि।

(क) शोभनानि चरितानि

(ख) शोभनं चरितानि

(ग)शोभनानि चरितानि यस्य सः

(v) **धर्मकामाः** यथा वर्तेरन् तथा वर्तेथाः।

(क) धर्मे कामाः (ख) धर्मे कामाः येषां ते (ग) धर्माः कामाः च

(vi) **माता एव देवो यस्य भव।**

(क) मातृदेवः (ख)मातादेव (ग)पितरौ

7. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं संयोजितं विभाजितं वा प्रकृति प्रत्ययं प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत- (केवलं प्रश्नषटकम्) 1×6=6

(i) **श्लाघ् + अनीयर्** काले अत्रभवतीं वारयितुं नोत्सहे।

(क) श्लाघनीयर् (ख) श्लाघनीये (ग) श्लानीये

(ii) लक्ष्मणस्य एषा भृकुटिः नियति इव **वि + अव + स्था + क्त**।

(क) व्यवस्थिता (ख) व्यवस्थात (ग) विअवस्थितः

(iii) ताते धनुर्न मयि सत्यम्- **अव + ईक्ष् + शानच्।**

(क) अवेक्ष्यमाणे (ख) अवीक्षशानच (ग) अवीक्षमाने

(iv) शोकादवचनात् राज्ञा हस्तेनैव **विसर्जितः**।
(क) वि + सर्ज + तः (ख) वि + सृज् + क्त (ग) वि + सर्जि + क्त

(v) **मैथिल + ङीप्!** किं व्यवसितम्?
(क) मैथिलि (ख) मिथिला (ग) मैथिली

(vi) हन्त! निवेदितम् **अप्रभुत्वम्**।
(क) अप्रभु + त्वम् (ख) अप्रभु + त्वल (ग) अप्रभु + त्व

(vii) **सहधर्मचारिन् + ङीप्** खल्वहम्।
(क) सहधर्मचारिणी (ख) सहधर्मचारिणि (ग) सहधर्मचारिन्

8. समुचितं उपपदविभक्तिरूपं चिन्त- (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) ..... न प्रमदितव्यम्।
(क) स्वाध्यायात् (ख) स्वाध्यायस्य (ग) स्वाध्येन

(ii) प्रजानामेव भूत्यर्थं स ..... बलिमग्रहीत्।
(क) तुभ्यम् (ख) ताभ्यः (ग) तेभ्यः

(iii) ..... सह सीता वनं गन्तुम् इच्छति।
(क) रामेण (ख) रामस्य (ग) रामाय

(iv) ..... तदन्वये दिलीपःप्रसूतः।
(क) शुद्धिमति (ख) शुद्धिमत् (ग) शुद्धिमते

खण्ड (घ)

पठितावबोधनम् 25

9. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- 5

राज्ञः वह्निप्रवेश-कार्यक्रमं श्रुत्वा वत्सराजः बुद्धिसागरं नत्वा शनैः शनैः प्राह- तात! मया भोजराजो रक्षित एवास्ति। पुनः बुद्धिसागरेण तस्य कर्णे किमपि कथितम्, यन्निशम्य वत्सराजः ततो निष्क्रान्तः। पुनः राज्ञो वह्निप्रवेशकाले कश्चन कापालिकः सभा समागतः। सभामागतं कापालिक दण्डवत् प्रणम्य मुञ्जः प्रावोचत् हे योगीन्द्र! मया हतस्य पुत्रस्य प्राणदानेन मां रक्षेति। अथ कापालिकस्तं प्रावोचत् राजन्! मा भैषीः। शिवप्रसादेन सः जीवितो भविष्यति। तदा श्मशानभूमौ कापालिकस्य योजनानुसारं भोजः तत्र समानीतः। 'योगिना भोजो जीवितः इति कथा लोकेषु प्रसृता

(अ) एकपदेन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) ½×2=1

(i) भोजः कुत्र समानीतः?

(ii) राज्ञः वह्निप्रवेशकाले कः सभा समागतः?

(iii) भोजः कस्य प्रसादेन जीवितो भविष्यति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) वत्सराजः बुद्धिसागरं नत्वा किं प्राह?

(ii) लोकेषु का कथा प्रसृता?

(iii) मुञ्जः कापालिकं किं प्रार्थयत्?

(इ) यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) "अग्निः" इति पदस्य किं समानार्थकपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

(ii) "मया हतस्य पुत्रस्य प्राणदानेन मां रक्षेति" इति वाक्ये किं विशेषणपदम्?

(iii) "शिवप्रसादेन सः जीवितो भविष्यति" इति वाक्ये 'सः' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

10. अधोलिखितं पद्यं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- 5

अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्रं
पाण्डित्यसंभृतमतिस्तु मितप्रभाषी।
कांस्यं यथा हि कुरुतेऽतितरां निनादं
तद्वत्सुवर्णमिह नैव करोति नादम् ।।

(अ) एकपदेन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) ½×2=1

(i) अतितरां निनादं कः करोति?

(ii) अल्पज्ञः पुरुषः कथं प्रलपति?

(iii) पाण्डित्यसंभृतमतिः कीदृशः भवति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) कः पुरुषः अजस्रं प्रलपति?

(ii) कांस्यवत् नादं कः न करोति?

(iii) अल्पज्ञ-पण्डितयोः मध्ये कः भेदः?

(इ) यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) "निरन्तरम्" इति पदस्य किं समानार्थकपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

(ii) "अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजसम्" इति वाक्ये किं विशेषणपदम्?

(iii) "विद्वान्" इति पदस्य विलोमपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।

11. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- 5

मदालसा- (हसित्वा) नहि जानन्ति ते यदहं विवाहबंधनं स्वीकर्तुं न इच्छामि।

कुण्डला- किं करिष्यसि तदा? मदालसा- ब्रह्मवादिनी भविष्यामि।आचार्येति पदं प्राप्य शिष्येभ्यः जीवनकलां शिक्षयिष्यामि।

कुण्डला- जाने तेऽभिरुचिम् अध्ययने- अध्यापने। परं यथा लतेयं सहकारमवलम्बते तथैव नारी जीवनयात्रायां कमपि सहचरमपेक्षते यः तस्याः अवलम्बनं स्यात्।

मदालसा- नास्ति मत्कृते आवश्यकता अवलंबनस्य। स्वयं समर्था जीवनपथे चलितुमहं न कस्यापि संकेतैः नर्तितुं पारयामि।

(अ) एकपदेन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) ½×2=1

(i) मदालसा किं स्वीकर्तुं न इच्छति?

(ii) सा केभ्यः जीवनकलां शिक्षयिष्यति?

(iii) लता कम् अवलम्बते?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत-(केवलं प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) नारी जीवनयात्रायां कम् अपेक्षते?

(ii) मदालसा किं कर्तुं न पारयति?

(iii) कुत्र चलितुं मदालसा समर्था?

(इ) यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत(केवलं प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) "आम्रम्" इति पदस्य किं समानार्थकपदं नाट्यांशे प्रयुक्तम्?

(ii) "यत् अहं विवाहबंधनं स्वीकर्तुं न इच्छामि" इति वाक्ये 'अहम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(iii) "असमर्था" इति पदस्य विलोमपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।

12. अधोलिखितस्य पद्यस्य भावार्थं मञ्जूषा- प्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत 1×3=3

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः।।

भावार्थः-

विद्या अनेकानां (i) ..... निराकरणं करोति, यत् नेत्रयोः समक्षं नापि स्थितम्, तमपि

(ii) ..... वस्तुतः (iii) ..... एव वास्तविकं नेत्रम् भवति। यः अज्ञानी भवति सः अन्धेन समं भवति।

मञ्जूषा

दर्शयति, सन्देहानाम, ज्ञानम्

अथवा

प्रदत्त-भावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत- 1×3=3

(1) "नैकेनापि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति।"

(i) मृत्योः अनन्तरम् एषा पृथिवी केनापि सह न गतवती निश्चितमेव त्वया सह गमिष्यति।

(ii) एषा पृथिवी अनेकैः सह गमिष्यति।

(iii) एषा वसुमती कदापि न गच्छति।

(2) "एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम्।"

(i) गुणवता पुत्रेण एव माता निर्भया भवति।

(ii) पुत्रेण मातुः गौरवं न वर्धते।

(iii) गुणहीनेन पुत्रेण माता निर्भया भवति।

(3) "रोदितव्ये कालेसौमित्रिणा धनुर्गृहीतम्।"

(i) शोकस्य समये लक्ष्मणः युद्धाय तत्परः अस्ति।

(ii) लक्ष्मणः रामस्य वनगमनं श्रुत्वा रोदिति।

(iii) सुमित्रा अपि वनं गच्छति।

13. अधोलिखित-अन्वये रिक्तस्थानानि पूरयत- 1×3=3

कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य
दोषेषु यत्नः सुमहान् खलानाम्।
निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य
क्रमेलकः कण्टकजालमेव।।

अन्वयः- खलानां 1. ..... सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु 2. ..... यत्नः (भवति) यथा क्रमेलकः केलिवनं प्रविश्य 3. ..... एव निरीक्षते।

14. 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशस्य 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशेन सह मेलनं कुरुत ½×4=2

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(i) उत्साहसम्पन्नम्	(क) व्यसनेष्वसक्तम्
(ii) क्रियाविधिज्ञं	(ख) निवासहेतोः
(iii) शूरं कृतज्ञं	(ग) अदीर्घसूत्रम्
(iv) लक्ष्मी : स्वयं याति।	(घ) दृढ़सौहृदं च

15. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसंगानुसारं मञ्जूषातः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत- 1×4=4

(i) शरीरे **अरिः** प्रहरति।।

(ii) यानि **अनवद्यानि** कार्याणि त्वया सेवितव्यानि।

(iii) यस्याः **शक्रसमो** भर्ता मया पुत्रवती च या।

(iv) आचार्यः **अन्तेवासिनम्** अनुशास्ति।

मञ्जूषा

इन्द्रसमः शिष्यम् शत्रुः अनिन्दितानि

संस्कृतसाहित्येतिहासपरिचयः 10

16. समुचितस्य कवेः रचनायाः वा मञ्जूषातः चयनं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) "रघुवंशस्य" रचयिता कः?

(ii) भासेन कः ग्रन्थः रचितः?

(iii) अम्बिकादत्तव्यासस्य रचना का अस्ति?

(iv) "अनुशासनम्" इति पाठः कस्मात् उपनिषदः गृहीतः?

मञ्जूषा

तैत्तिरीयोपनिषद्, शिवराजविजयः, कालिदासः, प्रतिमानाटकम्

17. महाकाव्य-गद्यकाव्य- चम्पूकाव्यस्य च विधानां समुचितं वैशिष्ट्यं मञ्जूषातः चयनं कृत्वा लिखत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) ..... चम्पूकाव्यं भवति।

(ii) ..... लयात्मकता भवति।

(iii) ..... दीर्घसमासानां प्रयोगः भवति।

(iv) गद्यकाव्यस्य ..... भेदौ स्तः।

मञ्जूषा

द्वौ, गद्यकाव्ये, पद्यकाव्ये, गद्यपद्यमयम्

18. नाट्य-तत्त्वानां समुचितं वैशिष्ट्यं मञ्जूषातः चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत(केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) 1×4=4

(i) नाटकम् ..... रम्यम् भवति।

(ii) नाटकम् ..... भेदः अस्ति।

(iii) ..... अभिनयात्मकतायाः प्राधान्यं भवति।

(iv) नाटकस्य मुख्य पुरुष पात्रं भवति।

(v) नाटकस्य अन्ते भवति .....।

मञ्जूषा

भरतवाक्यम्, काव्येषु, रूपकस्य, नाटके, नायकः

आदर्श प्रश्नपत्रम्-(2022-23)
कक्षा- द्वादशी
संस्कृतम् (केन्द्रिकम्) (कोड सं.-322)

समयः होरात्रयम् **सम्पूर्णाङ्काः 80**

वार्षिकमूल्याङ्कनाय निर्मिते प्रश्नपत्रे भागपञ्चकं भविष्यति-

'क' भागः अपठित अवबोधनम्-	10 अङ्काः
'ख' भागः रचनात्मक कार्यम्	15 अङ्काः
'ग' भागः अनुप्रयुक्त - व्याकरणम्	20 अङ्काः
'घ' भागः	35 अङ्काः

(i) पठितावबोधनम् (25 अङ्काः)

(ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः (10 अङ्काः)

सामान्यनिर्देशाः

- उत्तरलेखनात् पूर्वं प्रश्नस्य क्रमाङ्कः अवश्यं लेखनीयः।
- प्रश्नसङ्ख्या प्रश्नपत्रानुसारम् अवश्यमेव लेखनीया।
- सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लेखनीयानि।
- प्रश्नानां निर्देशाः ध्यानेन अवश्यं पठनीयाः।

भागः (क)
अपठितावबोधनम्

1. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तान् प्रश्नान संस्कृतेन उत्तरत- **10**

जननी शब्दमेव नेत्रयोः समक्षं वात्सल्यस्य कारुण्यौदार्यस्य स्नेहस्य च मूर्तिं स्थापयति। तथा एव मम जननी वर्तते। उच्चशिक्षिता सा विश्वविद्यालये अध्यापयति तथापि अहंकारं तु कुत्रापि किञ्चिदपि न दृश्यते। ममतापूर्णा सा अस्मभ्यं पुत्रेभ्यः पुत्रिभ्यः च सर्वदा सुलभा अस्ति। सा न केवलम् अस्माकम् आवश्यकतानां पूर्तिं करोति अपितु दुविधायाः काले अस्मभ्यम् उचितमार्गमपि दर्शयति। आबालादेव माता अस्मान् पालयति संस्कारान् च शिक्षयति। परिवारे सर्वेषां सदस्यानां सेवां करोति। परिवारम् एकसूत्रे बध्नाति। मातुः स्थानं कः अन्यः लब्धुं शक्नोति। आत्मानम् अकिञ्चन मन्यमाना सा सर्वं कार्यं करोति। सत्यमेव उच्यते यत् लौकिके जगति ईश्वरः जननीरूपेण विद्यते।

(अ) एकपदेन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1×2=2**

(i) दुविधायाः काले जननी किं दर्शयति?

(ii) जननी कं एकसूत्रे बध्नाति?

(iii) का ममतापूर्णा अस्ति?

(ब) पूर्णवाक्येन उत्तरत– (केवलं प्रश्नद्वयम्) 2×2=4

(i) जननी इति शब्देन नेत्रयोः समक्षं किम् आयाति?

(ii) लौकिके जगति किं सत्यमेव उच्यते?

(iii) आबालादेव माता किं करोति?

(द) अस्य अनुच्छेदस्य कृते उपयुक्तं शीर्षकं संस्कृतेन लिखत? 1×1=1

(स) यथानिर्देशम् उत्तरत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) 'पालयति' इति क्रियायाः कर्ता कः अस्ति?

(क) आबालादेव (ख) माता

(ग) अस्मान् (घ) संस्कारान्

(ii) 'माता' इति पदस्य कि पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) जननी (ख) अम्बा

(ग) पालिका (घ) जनयित्री

(iii) 'मिथ्या' इति पदस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) अनृतम् (ख) सुलभा

(ग) सदा (घ) सत्यम्

(iv) अत्र 'सा' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) मात्रे (ख) भगिन्यै

(ग) जनन्यै (घ) पुत्र्यै

भागः (ख)

रचनात्मककार्यम्

2. भवान् विनयः मुम्बईनगरे निवसति। परीक्षायां सफलतायै वर्धापनं दातुं मित्रं प्रति लिखिते अस्मिन् पत्रे उचितपदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा उत्तरपुस्तिकायां पत्रं पुनः लिखत। ½×10=5

(i) .....

तिथिः .....

प्रिय मित्र मनोज!

(ii) .....

अत्र कुशलं तत्रास्तु। अद्यैव दशमकक्षायाः (iii) ..... केन्द्रीय-माध्यमिक शिक्षाबोर्ड द्वारा समुद्घोषितः। मया 'इण्टरनेट' इति माध्यमेन तव परीक्षापरिणामः (iv) ....। अस्यां परीक्षायाम् त्वं पञ्चनवतिः प्रतिशतम् (v) ..... प्राप्य समुत्तीर्णः। (vi) ..... तु शतम् एव अङ्.कान् लब्धवान् असि। योग्यतासूच्याम् अपि तव नाम दृष्ट्वा अहम् हार्दिकं मोदम् अनुभवामि। (vii) ..... कठोरः परिश्रमः सफलः जातः। त्वया न केवलम् (viii) ..... अपितु स्वकुटुम्बस्य अपि यशः वर्धितम्। प्रशंसनीयोऽसि त्वम्। अहम् एतस्यै उच्चसफलतायै तुभ्यं हार्दिकं (ix) ..... यच्छामि। भविष्ये तव का योजना इति लिखतु। मातृ-पितृचरणयोः प्रणामः।

तव मित्रम्

मञ्जूषा

संस्कृते, परीक्षापरिणामः, मुम्बईतः, सस्नेह नमस्ते, अङ्कान्, विदितः, आत्मनः, तव, विनयः वर्धापनम्

3. मञ्जूषाप्रदत्त-पदसहायतया अधोलिखितां कथां पूरयत- ½×10=5

एकदा (i) ..... अङ्गेषु विवादः जातः। सर्वाणि अङ्गानि स्व स्व (ii) ..... कर्तुम् आरभन्त। पादौ अवदताम्-आवां चलावः, गन्तव्यं (iii) ..... च नयावः। नेत्रे अकथयताम्- आवां (iv) ..... कुर्वः। नासिका अवदत्- अहं प्रात्वा सूचयामि किं ग्रहणीयं किं च न। (v) ..... अवदताम्- आवां सर्वविधान् शब्दान् शृणुवः । हस्तौ अवदताम्- आवां विना संसारः पङ्गुः स्यात्। किन्तु इदम् (vi) ..... सर्वदा विश्राममं एव करोति। इदं निष्क्रियम्। अस्मै भोजनदानं वृथा एव। इत्यम् सर्वाणि अङ्गानि उच्चैः अघोषयन्-वयम् उदराय (vii) ..... न दास्यामः। विना भोजनम् उदरस्य त्रीणि दिनानि गतानि। तदा (viii) ..... अङ्गानि शक्तिहीनानि कार्यकरणे च असमर्थानि अभवन्। अधुना तैः उदरस्य (ix) ..... ज्ञातं यत् भुक्तस्य अन्नस्य रसनिर्माणं कृत्वा सर्वेभ्यः अंगेभ्यः शक्तिं ददाति । इत्थं तेषां (x) .....नष्टः सर्वैः पूर्ववत् कार्यं च आरब्धम् ।

मञ्जुषा

कर्णौ, भोजनं, शरीरस्य, अहंकारः, उदरं, सर्वाणि, प्रशंसां, महत्त्वं, स्थानं, मार्गदर्शनम्

अथवा

अधोलिखितसंवादे रिक्तस्थानानि पूरयन्तु। 1×5=5

अध्यापिका - सुप्रभातं बालाः!

बाला:- (i) .....।

अध्यापिका- बाला:! किं भवन्त: किञ्चित् प्रष्टुम् इच्छन्ति।

बाला:- (ii) .....।

अध्यापिका- एवम्। गातुम् इच्छन्ति! परन्तु अहं तु गातुं न समर्था।

बाला:- (iii) .....।

अध्यापिका- शोभनम् । समूहगानं तु अहमपि करिष्यामि। गीतं किम् अस्ति?,

बाला:- (iv) .....।

अध्यापिका- एतत्तु बहुमधुरं गीतम्। किं वाद्ययंत्राणाम् अपि आवश्यकता अस्ति?

बाला:- (v) .....।

अध्यापिका- समीचीनम्। तदा गायाम:।

4. निम्नलिखितवाक्येषु केषाञ्चन पञ्चवाक्यानां संस्कृतेन अनुवादं कुरुत- (केवलं वाक्यपञ्चकम्) 1×5=5

(i) गुरु को नमस्कार है।
Greetings to the teacher.

(ii) प्रिया गीता पढ़ेगी।
Priya will read Geeta.

(iii) क्या आप घर जा रहे हो।
Are you going to home.

(iv) नवल के दादा जी आचार्य है।
Navel's grandfather is a teacher.

(v) आप कब आओगे?
When will you come.

(vi) वीणा गीत गाती है।
Veena sings a song.

(vii) शिक्षक छात्र को पुस्तक देता है।
Teacher gives book to child.

भाग: (ग)

अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्

5. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कुरुत - (केवलं प्रश्नषट्कम्) 1×6=6

(i) शूरं कृतज्ञं **दृढ़सौहृदञ्च** लक्ष्मी: स्वयं याति निवासहेतो:।

(ii) अनेक **संशय + उच्छेदि** परोक्षार्थस्य दर्शकम्।

(iii) वैवस्वतो **मनुर्नाम** मनीषिणां माननीय:।

(iv) कटु सत्यं **खलु + एतत्**।

(v) दीपस्य समीपमागत्य **संन्यासिनोक्तम्**।

(vi) शुल्के विपणितं राज्यं **पुत्रार्थे** यदि याच्यते।

(vii) **लक्ष्मी: + तु** तव दासी भविष्यति।

6. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं समस्तपदं विग्रहवाक्यं वा प्रदत्तविकल्पेभ्य: चिनुत- (केवलं प्रश्नपञ्चकम्) 1×5=5

(i) स: **साक्षेपम्** अवोचत्।

(क) आक्षेपेण समम् (ख) आक्षेपेण तुल्यम्

(ग) आक्षेपे सहितम् (घ) आक्षेपेण सहितम्

(ii) यानि **अनवद्यानि** कर्माणि तानि सेवितव्यानि।

(क) न वद्यानि (ख) अन् अवद्यानि

(ग) न अवद्यानि (घ) अन् वद्यानि

(iii) **धैर्यसागर:** लक्ष्मण: केन क्षोभित:।

(क) धैर्येण सागर: (ख) धैर्यस्य सागर:

(ग) धैर्याय सागर: (घ) धैर्यात् सागर:

(iv) **एकस्मिन शरीरे संक्षिप्ता** पृथ्वी रक्षितव्येति।

(क) एकशरीरासंक्षिप्ते (ख) एकशरीरसंक्षिप्तम्

(ग) एकशरीरसंक्षिप्ता (घ) एकशरीरेसंक्षिप्ता

(v) **प्राप्तपरिचयपत्रा:** एव प्रविशन्ति।

(क) प्राप्तं परिचयपत्रं येभ्य: ते (ख) प्राप्त परिचयपत्रं यस्मात् स:

(ग) प्राप्त परिचयपत्रम् येन स: (घ) प्राप्त परिचयपत्रं यै: ते

(vi) त्यागाय **मितं भाषन्ते ये तेषाम्**।

(क) मितभाषिणाम् (ख) मितभाषी

(ग) मितभाषिण: (घ) मितभाषिणम्

(vii) अधुनैव **परिष्कृतं पारदभस्म** तुभ्यं दास्यामि।

(क) उपपारदभस्म (ख) पारदभस्मपरिष्कृतम्
(ग) परिष्कृतपारदभस्मस्य (घ) परिष्कृतपारदभस्म

7. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं संयोजितं विभाजितं वा प्रकृति प्रत्ययं प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत- (केवलं प्रश्नषट्कम्) 1×6=6

(i) लक्ष्मणस्य एषा भृकुटिः नियति इव **वि + अव + स्था + क्त**
(क) व्यवस्थिता (ख) व्यवस्थात
(ग) विअवस्थितः (घ) व्यवस्था

(ii) **श्लाघ् + अनीयर्** काले अत्रभवती वारयितुं नोत्सहे।
(क) श्लाघनीयर् (ख) श्लाघनीये
(ग) श्लाघानीये (घ) श्लाघनीयस्य

(iii) हन्त! निवेदितम् **अप्रभुत्वम्**।
(क) अप्रभु + त्वम् (ख) अप्रभु + त्वल
(ग) अप्रभु + त्व (घ) अप्रभु + तल

(iv) सन्यासिनः न किमपि **प्रष्टव्याः**।
(क) पृच्छ् + तव्यत् (ख) प्रष्ट + तव्यत्
(ग) पृष्ट + तव्यत् (घ) प्रष् + तव्यत्

(v) परं **संन्यास + इनि** पण्डिताः बालाश्च न किमपि प्रष्टव्याः।
(क) संन्यासिनि (ख) संन्यासिनी
(ग) संन्यासिनः (घ) संन्यासी

(vi) दौवारिकः तु तम् **नयन्** एव प्राचलत्।
(क) नी + शतृ (ख) नी अत्
(ग) नय् + अन् (घ) नी + अन्

(vii) कर्माणि **आरभमाणं पुरुषं श्रीनिषेवते**।
(क) आ + रभ् + क्तवतु (ख) आ + रभ् + शानच्
(ग) आ + रभ् + शत (घ) आ + रभ् + मान्

6. समुचितम् उपपदविभक्तिरूपं चिनुत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) ..... न प्रमदितव्यम्।
(क) धर्मात् (ख) धर्मेण
(ग) धर्मस्य (घ) धर्मान्

(ii) दिलीपस्य ..... सदृशः आगमः आसीत्।

(क) प्रज्ञया (ख) प्रज्ञाम्

(ग) प्रज्ञायाः (घ) प्रज्ञा

(iii) वैवस्वतः मनु ..... आद्यः आसीत।

(क) महीक्षित् (ख) महीक्षितैः

(ग) महीक्षितः (घ) महीक्षिताम्

(iv) अहं ..... परिष्कृतपारदभस्म दद्याम्।

(क) तुभ्यम् (ख) त्वाम्

(ग) त्वयि (घ) तव

भागः (घ)

(i) पठितावबोधनम्

9. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- 5

वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।

(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्) ½×2=1

(i) कम् अनूच्य आचार्यः अन्तेवासिनम् अनुशास्ति?

(ii) कं मा व्यवच्छेत्सीः?

(iii) किं वद?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत– (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) केभ्यः न प्रमदितव्यम्?

(ii) आचार्याय किम् आहरणीयम्?

(iii) अन्तेवासिनं कः अनुशास्ति?

(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) "प्रियं धनम्" अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(ii) "आचार्यः" इत्यस्य पदस्य क्रियापदं किम्?

(iii) 'असत्यम्' इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र?

10. अधोलिखितं पद्यं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- **5**

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुण:
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बल:।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायस:
करी च सिंहस्य बलं न मूषक:।।

(अ) एकपदेन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) **½×2=1**

(i) क: गुणं वेत्ति?
(ii) सिंहस्य बलं क: न जानाति?
(iii) वायस: कस्य गुणं न जानाति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1×2=2**

(i) बलस्य महत्त्वं क: जानाति क: च न जानाति?
(ii) निर्गुण: जन: किं न वेत्ति?
(iii) वसन्तस्य गुणं क: जानाति?

(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) **1×2=2**

(i) "अशक्त:" इत्यस्य किं पर्यायपदं प्रयुक्तमत्र?
(ii) "गुणी गुणं वेत्ति" इत्यत्र कर्तृपदं किम्?
(iii) "अवगुणं" इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र?

11. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत- **5**

कुण्डला - सखि मदालसे! त्वं तु केवलं विद्याध्ययने एव रता कियन्तं कालं यावत् ब्रह्मचर्यव्रतं धारयिष्यसि?

मदालसा - ज्ञानोदधिस्तु अनन्तपारो गभीरश्च। मया सागरतटे स्थित्वा कतिपयबिन्दव एव प्राप्ता अद्यावधि।

कुण्डला - ज्ञानोदधिस्तु अनन्तपारो गभीरश्च। मया सागरतटे स्थित्वा कतिपयबिन्दव एव प्राप्ता अद्यावधि।

मदालसा - किं श्रुतं त्वया यत् गुरुवर्यै: मामधिकृत्य पित्रे कथितम्?

कुण्डला - अथ किम्! राजकुमारी मदालसा सर्वविद्यानिष्णाता जाता, परं तया स्वयं वर: न प्राप्त: अत: तस्यै योग्यवरस्य अन्वेषणं कार्यम् इत्यासीद् गुरुपादानां मतम्।

मदालसा - (हसित्वा) नहि जानन्ति ते यदहं विवाहबन्धनं स्वीकर्तुं न इच्छामि।

(अ) एकपदेन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) ½×2=1

(i) अनन्तपारः कः?

(ii) का सर्वविद्यानिष्णाता जाता?

(i) मदालसा किं स्वीकर्तुं न इच्छति?

(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) कुलगुरुः मदालसायाः विषये पितरं प्रति किं कथितवान्?

(ii) गुरुपादानां मतं किम् अस्ति?

(iii) कस्यै योग्यवरस्य अन्वेषणं कर्तव्यम्?

(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्) 1×2=2

(i) 'अनन्तपारः' इति पदस्य विशेष्यम् किम्?

(ii) 'धारयिष्यसि' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(iii) 'त्वं तु केवलं विद्याध्ययने रता' इत्यत्र 'त्वम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्

12. अधोलिखितस्य पद्यस्य भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत- 1×3=3

न दुर्जनः सज्जनतामुपैति शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः।
चिरं निमग्नोऽपि सुधा-समुद्रे न मन्दरो मार्दवमभ्युपैति॥

भावार्थः- दुर्जनः शठः (i) ..... सज्जनैः अपि शिक्ष्यमाणः कदाचित् (ii) . ..... न प्राप्नोति। यथा अमृतस्य समुद्रे चिरकालं यावत् (iii) ..... मन्दरः पर्वतः कोमलत्वम् न प्राप्नोति। अतः शठस्य अवबोधनं तु सर्वथा व्यर्थमेव।

मञ्जूषा

सज्जनताम्, सहस्रैः, निमग्नः

अथवा

प्रदत्त-भावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत- 1×3=3

(क) कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीनिषेवते।

(i) यः मनुष्यः कर्माणि आरभते सः समृद्धिं प्राप्नोति।

(ii) पुरुषः श्रियं न प्राप्नोति।

(iii) कर्मणा पुरुषः लक्ष्मी न निषेवते।

(ख) 'त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः'

(i) नरकस्य द्वारं त्रिविधम् उच्यते लोभः असत्यम् श्रमः च।

(ii) नरकस्य द्वारेषु प्रवेशः कठिनतमः इत्यर्जुनः कथयति।

(iii) मानवस्य आत्मनः नाशाय कामः क्रोधः लोभः च एतानि त्रीणि नरकस्य द्वाराणि एव।

(ग) "विभूषणं मौनमपण्डितानाम्"।

(i) मौनं पण्डितानां भूषणं भवति।

(ii) मौनम् अपण्डितानाम् अलङ्करणं भवति।

(iii) मौनम् विभूषणं न भवति।

13. अधोलिखित-अन्वये रिक्तस्थानानि पूरयत- 1×3=3

कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु यत्नः सुमहान् खलानाम्।
निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव।।

अन्वयः– खलानां (i) ..... सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु (ii) ..... यत्नः (भवति) यथा क्रमेलकः (iii) ..... प्रविश्य कण्टकजालम् एव निरीक्षते।

14. 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशस्य श्खश स्तम्भस्य वाक्यांशेन सह मेलनं कुरुत- ½×4=2

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(i) ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ	– विभूषणं मौनमपण्डितानाम्
(ii) कांस्यं यथा हि कुरुते	– त्यागे श्लाघाविपर्ययः
(iii) रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहुः	– अतितरां निनादं
(iv) विशेषतः सर्वविदां समाजे	– विद्यावतां वस्तुत एव रूपम्

15. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितानां पदानां प्रसंगानुसारं शुद्धम् अर्थं मञ्जूषातः चित्वा लिखत- ½×4=2

(i) यस्याः **शक्र**समो भर्ता मया पुत्रवती च या।

(ii) तदन्वये शुद्धिमति **प्रसूतः** शुद्धिमत्तरः।

(iii) क्षम्यतामेष आगच्छामि आगत्य च **निखिलं** निवेदयामि।

(iv) संन्यासी **तुरीया**श्रमसेवीति प्रणम्यते।

मञ्जूषा

चतुर्थः, सम्पूर्णम्, उत्पन्नः, इन्द्रः

संस्कृतसाहित्येतिहासपरिचयः

16. समुचितस्य रचनायाः कवेः वा अभिधानं लिखत- (केवलं प्रश्नत्रयम्) 1×3=3

(i) "पुरन्ध्रीपञ्चकम्" इति रूपकसङ्ग्रहः कस्य रचना?

(ii) "अनुशासनम्" इति पाठः कस्याः उपनिषदः सङ्गृहीतः?

(iii) "नैकेनापि समं गता वसुमती" इति पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः?

(iv) "महाभारतम्" इति अस्याः रचनायाः लेखकः कः?

17. महाकाव्य-गद्यकाव्य-चम्पूकाव्याशरितंषु वाक्येषु रिक्तस्थानपूर्तिं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः कुरुत- 1×3=3

मञ्जूषा

चम्पूकाव्यम्, निकषम्, अश्वघोषेण, कुमारसम्भवम्

(i) महाकविना कालिदासेन विरचितं महाकाव्यद्वयं प्राप्यते रघुवंशम् .....च।

(ii) बुद्धचरितं सौन्दरनन्दं च केन विरचितम्?

(iii) गद्यं कवीनां ..... वदन्ति।

(iv) गद्यपद्यमयं काव्यं ..... इत्यभिधीयते।

18. नाट्य-तत्त्वानां समुचितं वैशिष्ट्यं लिखत- (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्) 1×4=4

(i) भासनाटकचक्रे कति नाटकानि सन्ति?

(ii) 'स्वप्नवासवदत्तम्' इति रूपकं कस्य रचना?

(iii) कालिदासेन विरचितं विश्वप्रसिद्धं नाटकमस्ति .....?

(iv) शान्तरसप्रधानस्य नागानन्द-नाटकस्य नायकः क :?

(v) भगवान् शिवः किं प्रदाय नाट्यविद्यां समृद्धाम् अकरोत्?